● 'हमारी अपनी गली' में जान पेटर्सन ने जो कहानी कही है उसे उन्होंने स्वयं जिया है, झेला है।

● हिटलर द्वारा सत्ता-ग्रहण के तुरन्त बाद आतंकपूर्ण महीनों में लिखी गयी यह पुस्तक डायरी भी है, इतिहास भी है और उपन्यास भी है।

● आतंक, अत्याचार और उसके साथ ही प्रेम, मानवीयता और मुक्ति के लिए मर मिटने को भी कटिबद्ध जर्मनवासियों की अटूट निष्ठा से भरपूर इस उपन्यास में एक ऐसे देश की कहानी कही गई है जिसे एक समय पूरे विश्व से अलग-थलग कर दिया गया था।

● तस्करी क्रिया द्वारा नाजी जर्मनी से बाहर लायी गयी यह पुस्तक एक ऐसे सत्य पर से पर्दा उठाती है जिसे नाजी आतंकवादियों ने लोहे की दीवारों के अन्दर बंद कर रखा था।

● 'हमारी अपनी गली' में जान पेटर्सन ने जो कहानी कही है उसे उन्होंने स्वयं जिया है, झेला है।

● हिटलर द्वारा सत्ता-ग्रहण के तुरन्त बाद आतंकपूर्ण महीनों में लिखी गयी यह पुस्तक डायरी भी है, इतिहास भी है और उपन्यास भी है।

● आतंक, अत्याचार और उसके साथ ही प्रेम, मानवीयता और मुक्ति के लिए मर मिटने को भी कटिबद्ध जर्मनवासियों की अटूट निष्ठा से भरपूर इस उपन्यास में एक ऐसे देश की कहानी कही गई है जिसे एक समय पूरे विश्व से अलग-थलग कर दिया गया था।

● तस्करी क्रिया द्वारा नाजी जर्मनी से बाहर लायी गयी यह पुस्तक एक ऐसे सत्य पर से पर्दा उठाती है जिसे नाजी आतंकवादियों ने लोहे की दीवारों के अन्दर बंद कर रखा था।

● 'हमारी अपनी गली' में जान पेटर्सन ने जो कहानी कही है उसे उन्होंने स्वयं जिया है, झेला है।

● हिटलर द्वारा सत्ता-ग्रहण के तुरन्त बाद आतंकपूर्ण महीनों में लिखी गयी यह पुस्तक डायरी भी है, इतिहास भी है और उपन्यास भी है।

● आतंक, अत्याचार और उसके साथ ही प्रेम, मानवीयता और मुक्ति के लिए मर मिटने को भी कटिबद्ध जर्मनवासियों की अटूट निष्ठा से भरपूर इस उपन्यास में एक ऐसे देश की कहानी कही गई है जिसे एक समय पूरे विश्व से अलग-थलग कर दिया गया था।

● तस्करी क्रिया द्वारा नाज़ी जर्मनी से बाहर लायी गयी यह पुस्तक एक ऐसे सत्य पर से पर्दा उठाती है जिसे नाज़ी आतंकवादियों ने लोहे की दीवारों के अन्दर बंद कर रखा था।

हमारी अँधेरी गली



लेखक : जान पेटर्सन

अनुवादक : श्री प्रकाश

शब्दपीठ

१६४, सोहबतियाबाग, इलाहाबाद-६

प्रकाशक
शिव कुमार सहाय
शब्दपीठ
१६४, सोहबतियाबाग
इलाहाबाद-६

●

आवरण
दीना नाथ सरोदे

●

मुद्रक
धारा प्रेस
६०६, कटरा
इलाहाबाद-२

●

प्रथम संस्करण : १६७० ईसवी
मूल्य : दस रुपये मात्र

'हमारी अपनी गली' का परिचय

'हमारी अपनी गली' एक डायरी है, उपन्यास है, रिपोर्ताज है, हिटलरी जीवन-व्यवस्था के विरुद्ध ऐतिहासिक दस्तावेज़ है, या राजनैतिक खबरनामा। इस पर साहित्यकार सैद्धान्तिक बहस करते रहेंगे, लेकिन इससे किसी को मतभेद न होगा, कि यह एक साहित्यकार की क़लम का वह खून है, जिसकी सुर्खी इस वक्त भी ताज़ा है, और जिसमें अनुभवों के वह नक़्श हैं, जो उस वक्त तक क़ायम रहेंगे, जब तक इनसान उस निर्दयता और यातना का शिकार रहेगा, जिसे वर्गगत बर्बरता अपनी सत्ता कायम रखने के लिए इस्तेमाल करती है। इसका लेखक जान पेटर्सन उस बर्बरता से आतंकित जर्मनी का एक युवा कलाकार और राजनैतिक कार्यकर्ता था, जिसने नाज़ीवाद के उत्थान के परदे में बर्बरता का वह नंगा नाच देखा, जिससे इतिहास का दामन दाग़दार और मानवता की आत्मा घायल है, और जिसने छिप-छिप कर प्रताड़ितों की कराहें, घायलों की तड़प, क़ैदियों की चीखें, मुहब्बत की फ़रियादें, निश्चयों की परिपक्वताएँ, जान पर खेलने के हौसले और सत्य के समर्थन में जान की बाज़ी लगा देने की इच्छाओं को एकत्र कर लिया। इस कारण 'हमारी अपनी गली' एक ऐसी मानवीय दस्तावेज़ बन गई है, जो काल और स्थान के सीमित क्षेत्र से निकल कर हर स्वतंत्रता-प्रेमी को प्रभावित करती और विचार करने का आमंत्रण देती है।

'हमारी अपनी गली' उस रक्त-रंजित नाटक के चन्द दृश्यों की झलक पेश करती है, जिसे नाज़ीवाद और फ़ासिस्टवाद ने जर्मनी में अपना प्रभुत्व कायम करने के सिलसिले में खेला। यह उस खून की चन्द बूंदें हैं, जो

जनता को स्वतन्त्रता से वंचित करने के लिए बहाया गया उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में जब जर्मनी में क़ैसरशाही के विरुद्ध जन-संघर्ष तेज़ हुआ, और मजदूरों तथा निम्न मध्यम वर्ग की जनता ने संगठित होकर अपने अधिकारों की माँग की, इस वक्त साम्राज्यवाद ने पूँजीवाद की सहायता से प्रत्येक आन्दोलन को बार-बार कुचला, लेकिन बार-बार स्वतंत्रता की अभिलाषा सर पर कफ़न बाँध कर मैदान में निकलती रही। जब प्रथम महायुद्ध में जर्मनी की पराजय हुई, तो जन-शक्तियों ने तात्कालिक रूप से शक्ति प्राप्त कर ली। रूस की १९१७ की क्रांति ने मार्ग आलोकित कर दिया था, और ऐसा लगता था कि जर्मनी भी समाजवाद का मज़बूत गढ़ बन जायेगा। लेकिन प्रगतिशील शक्तियाँ आपस में एकता स्थापित न कर सकीं, और अपने आन्तरिक संघर्ष के कारण उस साँप को पलने और बढ़ने का मौक़ा देती रहीं, जो नाज़ीवाद के रूप में जन्म ले रहा था, जिसे जातीय श्रेष्ठता की भावना, हिंसात्मक राष्ट्रीयता की कल्पना और पूँजीवाद के गर्व ने पोषित किया था। प्रगतिशील शक्तियों की क्रियात्मक शक्तिहीनता नाज़ीवाद की तरक्की के लिए सीढ़ी बन गयी, और हिटलर के भेष में मानव-हत्या का दौर शुरू हो गया। यह कथा इसी हिंस्र पशुता के डेढ़ साल की जीवित तथा कँपा देने वाली तस्वीर है, और इसका चित्रकार दूर का दर्शक नहीं, इस चित्र-संग्रह का एक महत्वपूर्ण अंग है।

जान पेटर्सन आधुनिक जर्मन साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है। उसने एक ईंट बनाने वाले मजदूर के घर में १९०६ में जन्म लिया। पन्द्रह वर्ष की आयु से राजनैतिक आन्दोलनों में भाग लेने लगा, और १९३० ई० में जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हो गया। जर्मन जाति उस वक्त नाज़ी क्रांति के ज्वालामुखी पर बैठी काँप रही थी। थोड़े से प्रगतिवादी शरीर और प्राणों की बाज़ी लगा कर उसे इस आत्महत्या से बचाना चाहते थे। उन्हीं में जान पेटर्सन भी था।

इस पुस्तक के हर पृष्ठ पर उसके क्रिया-कलाप और [illegible] की छाप अंकित है। इसमें वह अपने साहित्यिक जीवन और व्यस्तताओं का ज़िक्र बहुत कम करता है, लेकिन वास्तविकता यह है, कि वह १९३० ई० में बर्लिन की साहित्यिक गोष्ठियों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ था। १९३१ ई० में वह जर्मन लीग के प्रोलितारी क्रांतिकारी साहित्यकारों का उन्नायक रहा, और नाज़ीवाद के विरुद्ध गुप्त आन्दोलनों में काम करने के अतिरिक्त फासिस्टवाद-विरोधी साहित्यकारों का मार्ग-दर्शन करता रहा। प्राग से प्रकाशित होने वाले एक जर्मन साहित्यिक पत्र के गुप्त सम्पादक के रूप में काम करता रहा। जब १९३५ ई० में पेरिस में फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध विश्व साहित्य सम्मेलन हुआ, उस समय उसे "स्याह नक़ाबपोश" के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। निर्वासित होकर स्विटज़रलैंड, फ्रांस और इंग्लैंड में समय काटता रहा, और कनाडा में नज़रबंद कर दिया गया। १९३८ ई० में नाज़ियों ने उसे जर्मन नागरिकता से वंचित कर दिया। विभिन्न देशों के प्रगतिशील साहित्यिक आन्दोलनों के संगठनों में शरीक रह कर, वह १९४६ ई० में बर्लिन वापस आया। "हमारी अपनी गली" कृति पर उसे १९५० ई० में सिटी आफ़ बर्लिन का गेटे पुरस्कार प्रदान किया गया। १९५९ ई० में जर्मनी का राष्ट्रीय पुरस्कार भी पेटर्सन ही को मिला। उसे अपनी साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सेवाओं के लिए कई जर्मन सम्मान उपलब्ध हो चुके है, और उसकी पुस्तकों के अनुवाद अनेक भाषाओं में लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं।

यही पेटर्सन इस कृति का जनक है। उसकी स्मरण-शक्ति असाधारण, प्रेक्षण-शक्ति गहरी, उसकी शैली जानदार और दृष्टि दूरदर्शी है। वह अपने साथियों के विवेक तथा मनोविज्ञान, प्रकट रूप तथा क्रिया-कलाप को गहरी नज़र से देखता है, और मानवीय दुख-दर्द तथा हर्ष-आनंद का कलामय चित्रण करता है। वह मानव-मैत्री, शान्तिप्रियता तथा स्वतंत्रता की भावनाओं से सरशार पुरुषों तथा स्त्रियों को उनके

सही तनाज़िर और प्रकाशमान रंग-रूप के साथ पेश करता है और कुछ संकेतों से ही दृश्यों में जान डाल देता है। जीवन के प्रति प्रेम उसकी शैली को सशक्त और आकर्षक बनाता है, और वह बग़ैर कहे हुए उस जीवन-व्यवस्था की श्रेष्ठता की छाप दिलों पर बैठा देता है, जो उसे प्राणों से अधिक प्रिय है। वह मित्रों की मृत्यु से शोकाकुल और हर ओर से दुश्मनों से घिरा हुआ है, लेकिन स्वतंत्रता तथा समाजवाद पर उसकी आस्था में कहीं कमी पैदा नहीं होती। वह नारी के प्रेम तथा मैत्री, घरेलू जिन्दगी के सारल्य तथा शान्ति के लिए बेचैन है, लेकिन उत्पीड़क नाज़ी व्यवस्था उसे इसका अवसर नहीं देती। नाज़ी दौर की डेढ़ साल की कहानी में पेटर्सन ने जब्र और ज़ुल्म की वह कहानी कह दी है, जिसमें हर असमाजवादी देश के लिए सबक छिपा है, और यही इस कृति का सबसे बड़ा महत्व है।

हिन्दुस्तान आज प्रतिक्रिया तथा प्रगति के भयानक संघर्ष में फँसा है। प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ धर्म, जाति, भाषा, तथाकथित व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा संख्या के आधिक्य के नाम पर जनतांत्रिक स्वतंत्रता, प्रगति, समानता और मिली-जुली संस्कृति का गला घोट रही हैं, और प्रगतिवादी विघटन तथा अनावश्यक दृष्टिकोण संबंधी वाद-विवाद तथा संघर्ष के शिकार हैं। प्रत्येक क्षण तबाही की खाई की ओर ले जा रहा है। यदि ये संयुक्त मोर्चा बना कर प्रतिक्रियावादी शक्तियों का मुक़ाबला नहीं करते, तो उन्हें भी उन परिणामों को भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिये, जिनसे जर्मनी के प्रगतिवादियों को गुज़रना पड़ा। अगर इतिहास हमें कोई सबक़ दे सकता है, तो इस पुस्तक में वही सबक़ निहित है। हिन्दी में इस पुस्तक का अनुवाद एक साहित्यिक सेवा होने के अलावा एक सांस्कृतिक और शैक्षणिक अभिप्राय भी रखता है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय
४ नवम्बर, १९६९ ई०

— सैयद एहतशाम हुसैन
अध्यक्ष, उर्दू विभाग

इस कहानी की कहानी



अब यह कही जा सकती है—इस कहानी के पीछे की कहानी, जिसे मैंने ऐसे समय लिखा, जो सुदीर्घ अतीत लगता है, लेकिन जो इतिहास की दृष्टि से वास्तव में अभी बीता हुआ कल ही है।

यह एक फ़ासिस्टवाद-विरोधी संघर्ष का खबरनामा है, जो वालस्ट्रैसी, बर्लिन-चार्लोटेनबर्ग में हिटलर के शक्ति-ग्रहण के साथ-साथ हुआ। ज्यों-ज्यों घटनाएँ घटित होती गयीं, मैं उन्हें लिखता गया। मैंने अपनी पांडुलिपि का कुछ भाग कनेसबेकस्ट्रैसी में अपने छोटे-से कमरे में टंकित किया, और कुछ ओरेनियनबर्ग के निकट ल्कीनर वरबेलिन झील पर।

यह कहानी डेढ़ वर्ष का समय तै करती है, जिसका अन्त १९३४ ई० के मध्य में हुआ। इसके प्रकाशन के इतिहास में इसका अँग्रेजी अनुवाद शामिल है, जो १९३८ ई० में लंदन में प्रकाशित हुआ। मूल जर्मन में इसके प्रकाशन को द्वितीय महायुद्ध के अंत, नाज़ियों की पराजय और जर्मन जाति के लिए एक नये जीवन के प्रारम्भ तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

यह जानकारी मेरे लिए हृदय-हर्षक है, कि सेवेन सीज बुक्स के इस संस्करण के द्वारा हमारी गली में रहने वाले भले लोगों का परिचय अनेक देशों के पाठकों से होगा, जहाँ अँग्रेज़ी का उपयोग होता है, और वे, अल्प-काल के लिए ही सही, पुनः जीवित हो जायेंगे, जब पाठक उनकी कहानी पढ़ेगा।

उनकी यह कहानी लिखने का काम अकसर रुक जाता था : जब वे कामरेड, जिनसे गुप्त प्रतिरोध आन्दोलन के सिलसिले में मेरा तात्कालिक सम्पर्क रहता था, गिरफ़्तार हो जाते थे, जैसा कि बहुधा ही होता था।

या फिर तब जब कि गेस्टापो ने मेरा नाम अपनी काली सूची में दर्ज कर लिया था—ऐसा दो बार हुआ। वे ऐसे अवसर थे, जब "प्रतीक्षा करो और देखो" की नीति का पालन करना आवश्यक हो जाता था। कल अपने साथ क्या लायेगा ? कल होगा भी कि नहीं ?

सप्ताह में एक बार मैं मोटर साइकिल पर बर्लिन आता था, अपनी पांडुलिपि के हाल में लिखे हुए पृष्ठ अपने थैले में लिये हुए। ओरेनियनबर्ग यातना शिविर बीच में पड़ता था, और मुझे वहाँ के पहरेदारों के पास से गुज़रना पड़ता था। बर्लिन में एक लेखक-मित्र नये पृष्ठ पढ़ता था और हम उन पर बातचीत करते थे। बाद में नाज़ियों ने उसकी हत्या कर दी, जैसे उन्होंने हमारे बहुतेरे अन्य लोगों की की थी।

मैं वालस्ट्रासे में नौ साल तक रहा था, और मैंने फ़ासिस्टवाद-विरोधी आन्दोलन में काम किया था। उन दिनों जब राजकीय पुलिस की सुरक्षा में स्टार्म-ट्रूप का ३३वाँ दस्ता हमारी गली में मार्च करता था, तो वे खाकी कमीज़ वाले हमारी खिड़कियों की ओर देखते थे, और अपने गलों पर इस तरह हाथ फेरते थे, जैसे फाँसी का फंदा खींच रहे हों। सत्ता ग्रहण करने के बाद ३३वें दस्ते वाले, हाथ में रिवाल्वर लिए हुए, हमारे निवास-स्थानों में घुस आते थे, और सारे घर की तलाशी लेते थे। मैं खुशकिस्मत था—क्योंकि कुछ समय पहले ही मैं वहाँ से हट गया था। नुक्कड़ पर स्थित थाना उन्हें मेरा नया पता दे सकता था। लेकिन किसी ने पूछ-ताछ नहीं की। जब मैं पीछे मुड़ कर उस समय पर दृष्टिपात करता हूँ, तो लगता है कि जो कुछ हुआ, उसके बहुत-कुछ अंशों को समझ पाना असम्भव है। निश्चय ही, भाग्य मेरे साथ था—और साथ देता रहा, जब पांडुलिपि बाहर भेजी गयी।

१९३४ ई० की शरद ऋतु में टंकित प्रति तैयार हुई। मैंने कुल तीन प्रतियाँ तैयार की थीं—एक मूल और दो नक़लें। मोमजामे वाले खोलों में बन्द करके दो प्रतियाँ दो विभिन्न स्थानों पर ज़मीन में गाड़

नी गई थी। एक प्रति गुप्त साधना से हैमबर्ग भेज दी गयी। वहाँ से एक गुमनाम जर्मन नाविक उसे अपने साथ जहाज पर इंगलैंड ले जाने वाला था। कई हफ्तों के बाद पता चला, कि जहाज जब बंदरगाह ही में था, तभी उसे समुद्र में फेंक देना पड़ा, ताकि अंतिम जाँच-पड़ताल में वह पकड़ न ली जाय। काफ़ी कठिनाई से हमने एक प्रति बाहर भेजने का दूसरा इन्तज़ाम किया। विश्वसनीय मित्र उसे ड्रेसडेन ले गये। वहाँ से वह छिपा कर चेकोस्लोवाकिया ले जाई जानी थी। लेकिन कई महीने गुज़र जाने पर भी ड्रेसडेन से कोई सूचना नहीं मिली। वह पांडुलिपि लापता थी—शायद खो ही गई थी। तीसरी और अंतिम प्रति बर्लिन के बाहर एक जंगली क्षेत्र के प्रवेश-स्थान पर देवदार के एक चिह्नित पेड़ के नीचे गड़ी थी। यही हमारे लिए आखिरी मौक़े के रूप में थी। अगर इस प्रति को भी कुछ हो गया, तो हमारी गली तथा फ़ासिस्टवाद-विरोधी साहसिक जर्मन प्रतिरोध की कहानी समय के वक्ष में खो कर रह जायेगी।

अब उस पांडुलिपि को नाजी जर्मनी की सीमाओं से बाहर ले जाने की मेरी पारी थी। निर्वासित जर्मन लेखकों से बातचीत करने के लिए मैं अकसर प्राग गया था। इसलिये मुझे गैरकानूनी रूप से सीमा के पार जाने तथा दूसरी सीमा चौकी के मार्ग से वापस आने का अभ्यास था। १९३४ ई० में क्रिसमस के समय हममें से दो व्यक्ति बर्फ़ पर फिसलने के वस्त्र धारण किये हुए इस खेल की छुट्टी मनाने के लिए रवाना हुए—कम-से-कम यही हम ज़ाहिर करना चाहते थे। पांडुलिपि उन दो केकों के अन्दर छिपा कर सेंक दी गयी, जिन्हें हम अपने थैलों में लिए हुए थे। मेरा मित्र, वाल्टर स्टॉल, जो अभी कुछ समय पहले ही ब्रैंडेनबर्ग यातना शिविर से रिहा हुआ था, मेरे साथ था। एस० एस० के सिपाही, कार-बाइनों से लैस, पैरों में बर्फ़ पर फिसलने के पटरे बाँधे, सीमा पर गश्त

लगा रहे थे। हम यह जानते थे। लेकिन भाग्य हमारा साथ दे रहा था। हम उनकी क़तारों के बीच से निकल गये।

प्राग में अपने निवास के दूसरे दिन, हमें पता चला कि एक फ़ासिस्ट-वाद-विरोधी उपन्यास की पांडुलिपि जर्मनी से प्राग पहुँच गई है। यही 'हमारी अपनी गली' की खोई हुई दूसरी प्रति थी। हमें इसकी कोई खबर नहीं मिली थी, इसलिये कि ड्रेसडेन वाले हमारे नेक मित्रों ने इसे पहुँचाने का काम क्रिसमस तक के लिए रोक रखा था, इस विचार से कि तब सीमा पर आवागमन खूब बढ़ जायेगा और पहरेदार व्यस्त रहेंगे। उनका विचार वही था, जो हमारा। संदेशवाहक पांडुलिपि को पहरेदारों की नज़रों के सामने से निकाल लाया था—वह एक खुली हुई टोकरी में सैंडविचों के एक ढेर के नीचे रखी हुई थी। पहरेदारों ने कुछ सैंडविचों को उठा कर देखा और उसकी जाँच की, लेकिन सौभाग्यवश उन्होंने केवल ऊपर वाली सैंडविचों को ही देखा...हम दोनों ने ही अपने काम पूरे किये। पांडुलिपि की दो प्रतियाँ अब सुरक्षित हाथों में थीं।

अप्रैल, १९३५, में ही "हमारी अपनी गली" से एक उद्धरण पेरिस में प्रकाशित हुआ, यद्यपि यह बात हमें उस समय मालूम नहीं हो सकी।

मेरे विदेशी प्रकाशकों ने पूछा, कि पुस्तक में उल्लिखित तथ्यों से कहीं वे कामरेड किसी प्रकार खतरे में तो नहीं पड़ जायेंगे, जो अभी भी जर्मनी में गुप्त रूप से कार्य कर रहे थे। पात्रों के नाम बदल कर, उनकी सूरत-शकल, पारिवारिक संबंध तथा ऐसी ही अन्य बातें छिपा कर, मैंने इस संभावना से बचत की व्यवस्था पहले ही से कर दी थी। पुस्तक प्रामाणिक थी, और घटनाएँ तथा पात्रों पर जो कुछ बीती थी, सब सच्ची थी। लेकिन आकार-प्रकार बदल दिया गया था। इसके अतिरिक्त, बर्लिन के कुछ अन्य इलाकों में गुप्त कार्य के सिलसिले में घटित घटनाएँ भी पुस्तक में शामिल कर दी गई थीं। बहरहाल, चार्लोटेनबर्ग मृत्यु सूची में दिये हुए नाम तथा उनकी मृत्यु की परिस्थितियाँ प्रामाणिक थीं। ये

शहीद अब गेस्टापो की पहुँच के बाहर थे। गेस्टापो को कोई सूत्र दिये बिना मैंने यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया था। उदाहरणार्थ, पुस्तक का एक पात्र हींज़ प्रेउस वास्तव में मेरा मित्र वाल्टर स्टॉल है। अभी हाल ही में वाल्टर से मेरी फिर भेंट हुई थी। वह उस समय के उन कामरेडों में से एक है, जो आज भी जिन्दा हैं। यातना शिविर से अपनी रिहाई के बाद उसने मुझे एरिक मुसाम को दी गयी पाशविक यातनाओं के बारे में बताया था। एरिक मुसाम ब्रैंडेनबर्ग यातना शिविर में उसके क़रीब ही बोरों पर लेटता था।

मुझे विश्वास है, कि इस पुस्तक से गेस्टापो को लोगों के वास्तविक परिचय के संबंध में कोई इशारा नहीं मिला। यदि वे लेखक का परिचय जान लेते, तो वे स्वयं परिणाम निकाल लेते। लेकिन मैंने अपने साथियों तथा उनके परिवारों को खतरे की सम्भावनाओं से मुक्त रखने के लिए यह भेद बिलकुल गुप्त रखा था। गुप्त रूप से काम करने वाले हम लोगों तथा विदेशों में हमारे मित्रों को इस खतरे का हमेशा ख्याल रहता था।

युद्ध के बाद जबर्दस्ती लादे गये निर्वासन से वापस आने पर मुझे गेस्टापो वाली अपनी रिपोर्ट देखने का मौका मिला था, जो बम वर्षा और अग्निकांडों से बच गई थी। उसमें दर्ज था, कि मेरे तथा विदेशों में मेरे अते-पते के संबंध में गेस्टापो ने अपनी जाँच-पड़ताल १९४१ ई० तक जारी रखी थी, अर्थात् द्वितीय महायुद्ध आरम्भ होने के दो साल बाद तक।

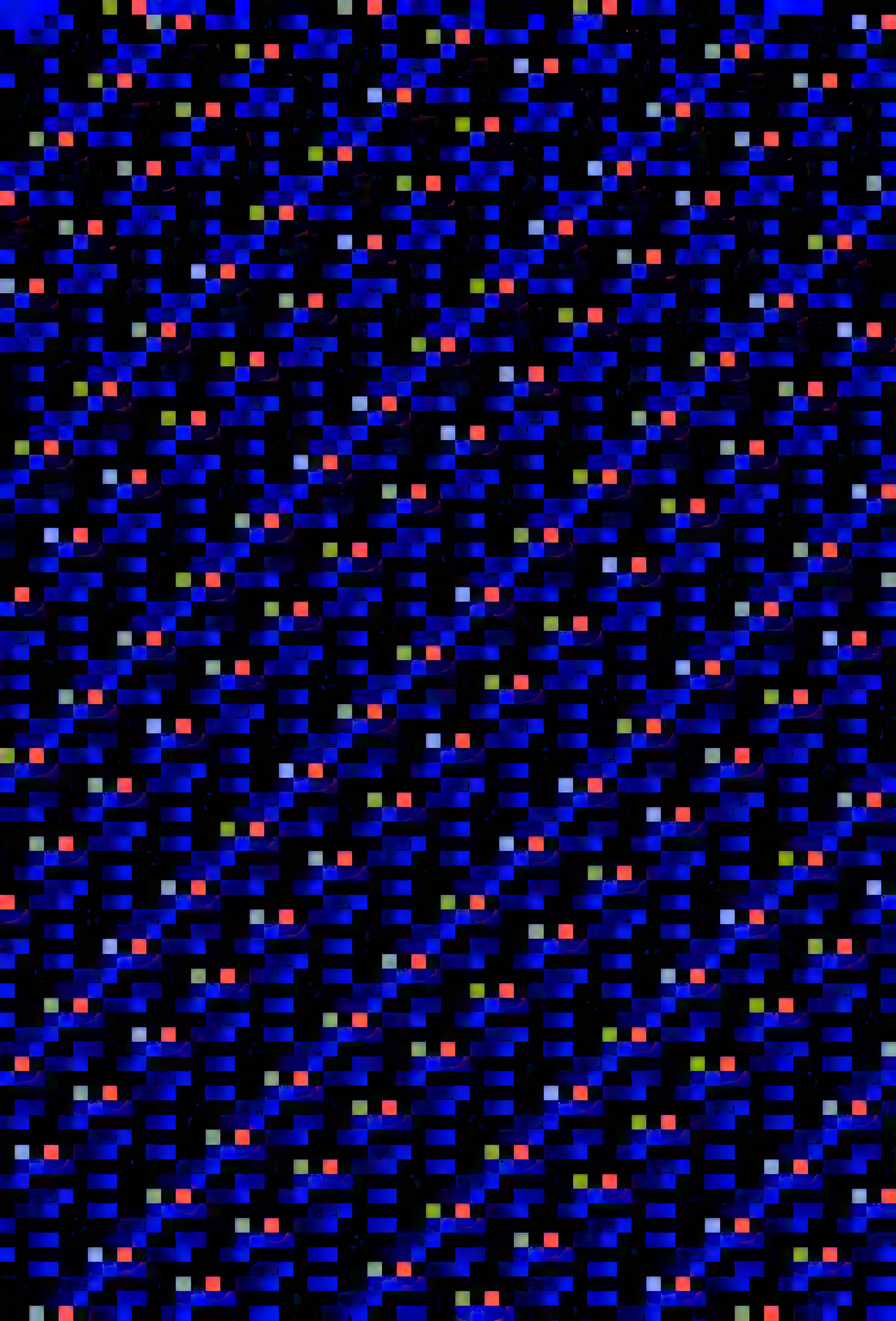
जहाँ तक मुझे मालूम है, "हमारी अपनी गली" ही एक ऐसी नाज़ी-वाद-विरोधी पुस्तक है, जो हिटलरी जर्मनी से बाहर आ कर उस समय विदेशों में प्रकाशित हो सकी। शायद, इसी के कारण, जर्मनी के बाहर का संसार यह समझ सका, कि एक 'अन्य जर्मनी' भी विश्व में वर्तमान है।

अब, पहले संस्करण के ठीक तेईस वर्ष बाद, यह पुस्तक जर्मन डिमाक्रेटिक रिपब्लिक में पुनः अंग्रेजी में प्रकाशित हो रही है। इसमें कोई भी परिवर्तन नहीं किया गया है। यह ठीक वैसी है, जैसी मैंने उन

तनावपूर्ण दिनों में वालस्ट्रैसी में लिखी थी । जब मैं पीछे मुड़ कर इस कहानी और उन लोगों पर, जो इसलिये मरे कि एक सुसंस्कृत जर्मनी जीवित रहे, दृष्टिपात करता हूँ, तो मुझे अपने देशवासियों तथा संसार के लिए उस नये खतरे का एहसास हो आता है, जो पश्चिमी जर्मनी में नाजीवाद-प्रेरित, पुनर्संचारित युद्धवाद से पैदा हो रहा है । यदि यह पुस्तक संसार को इस नये खतरे का सामना करने के लिए तैयार कर सके, और मेरे अपने जाति भाइयों को एक नये, जनतंत्रीय स्वदेश का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित कर सके, तो इसका उद्देश्य पूरा हो जायेगा ।

बर्लिन, १९६०

—जान पेटर्सन





हमारी अपनी गा

चार्लोटेनबर्ग के शहीद

३० जनवरी, १९३३ से पूर्व

ऑस्कर ओवेग : २० वर्षीय

एरिक फ्रिश्चमैन : २६ वर्षीय

इन्हें पुलिस वालों ने गोली मार दी थी

●

हैन्स क्लेफ़र्ट : १९ वर्षीय

एरिक जीमके : २२ वर्षीय

ओटो ग्रुनेबर्ग : २० वर्षीय

मैक्स स्किरमर : ३२ वर्षीय

एरिक लँगे : २४ वर्षीय

इनकी एस० ए० स्टार्म दस्ता नं० ३३ द्वारा हत्या की गयी

●

३० जनवरी, १९३३ के पश्चात्

पॉल स्कल्ज : २० वर्षीय

हैन्स स्काल : २१ वर्षीय

वाल्टर हारनेकर : २५ वर्षीय

फ्रिट्ज कोलोश्के : २४ वर्षीय

मार्टिन मिकालाक : २५ वर्षीय

पॉल वॉस : २९ वर्षीय

कार्ल माल्ज : २८ वर्षीय

हैन्स मुएलर : ४६ वर्षीय

वाल्टर ड्रेस्कर : ३० वर्षीय

जार्ज स्टोल्ट : ४३ वर्षीय

इनकी एस० ए० स्टार्म दस्ता नं० ३३ द्वारा हत्या की गयी

●

रिचर्ड हूटिंग : २६ वर्षीय

१४-६-३४ को प्लॉटजेन्सी, बर्लिन में इनका सर कलम कर दिया गया

बर्लिन, १९३३

शनिवार २१ जनवरी, १९३३। शाम का वक्त। मैं अपने दो साथियों, रिचर्ड हूटिंग और फ्रांज जेंडर के साथ वालस्ट्रैसी के बीच से पैदल चला जा रहा था। बर्लिनर स्ट्रैसी के नुक्कड़ पर हम लोग रुक गये। हमारे सर के ऊपर तेज रोशनी बिखेरते आर्क लैम्प चमक रहे थे। सामने सड़क पर कारों और ट्रामों की अनंत कतार का कभी न रुकने वाला प्रवाह। "वह देखो, एक टोली और आ गयी," मुझे कुहनी मार कर रिचर्ड बोला। तीन धूल में सनी हुई खुली लारियाँ बायीं तरफ से आयीं। आर्क लैम्प के वृत्ताकार प्रकाश को चीरती हुई लारियाँ भर-भराती चली गयीं। लारियों में भूरी वर्दी वाले लोग ठसाठस भरे हुये थे। लैम्प से बिखरते प्रकाश की किरणों में कुछ बालकों-जैसे चेहरे क्षण भर के लिए चमक उठे। उन लोगों ने हमारी ओर बड़े कौतूहल से देखा। शहर की विशालता से उनके मन में उत्पन्न अचरज उनके चेहरों पर व्यक्त था। रिचर्ड ने अंतिम लारी के रजिस्ट्रेशन नम्बर को पढ़ा।

रिचर्ड बोल उठा—"सब के सब गाँव से आ रहे हैं। गाँव के आखिरी आदमी तक को बुला लिया गया है।"

फ्रांज जेंडर ने सर हिला कर हामी भरी। बोला—"वे सभी-के-सभी फ़ार्म में काम करने वाले मजदूर हैं।"

उसने अपनी पीठ बिजली के खम्भे से टिका दी।

"मैंने भी एक बार किसानों का काम किया है। उस समय स्ट्रैबेल-हेल्म हमारे लिए काम का बन्दोबस्त किया करता था; अब यही काम एस० ए० संगठन करता है। वरना कहीं काम ही नहीं मिलता।"

१० : हमारी अपनी गली

एक खुली हुई कार सामने से गुजर गयी। छः भूरी वर्दीधारी कार की मुड़-तुड़ जाने वाली सीटों पर बैठे हुए थे।

"एस० ए० संगठन की गश्ती कारें हैं !" रिचर्ड बोल उठा।

नाज़ी प्रधान कार्यालय, होहेनजोलर्न भोज कक्ष, यहाँ से कुछ सड़कें पार करने के बाद ही है। उनकी अधिकाधिक गश्ती कारें नियमित मध्यान्तर पर सड़कों पर गश्त लगाया करती हैं। पुलिस हथियारों की खोज करने के लिए कभी उनकी तलाशी नहीं लेती।

"चलो, चला जाय," फ्रांज ने ये चन्द शब्द कहे और मुड़ गया।

मकानों की ढेर सारी कतारों की भीड़ और गैस लैम्पों के हल्के प्रकाश में वालस्ट्रैसी हमारी नजरों के सामने एक लम्बे धुँधले संकीर्ण दर्रे की तरह फैला हुआ था। द्वार मार्ग पर तीन पुलिस के सिपाही खड़े थे। उन्होंने अपनी टोपी के पट्टे को अपनी ठोढ़ी के नीचे बकसुये से बाँध रक्खा था। उनकी राइफ़लों की बैरेलें उनके कंधों के ऊपर उठी हुई थीं।

"इनकी संख्या बढ़ा दी गई है।"

सभी घरों के दरवाजों पर लोग खड़े थे। वे इस तरह फुसफुसा कर बातें कर रहे थे, जैसे उन्हें डर हो कि कहीं उनकी बातचीत से कोई जग न जाय। हमने उनकी ओर देख कर सिर हिला दिया। रिचर्ड ने अपनी दो उँगलियाँ अपनी टोपी तक उठाईं, जैसे कि वह अपने बिल्डिंग्स डिफेन्स ग्रूपों (भवन रक्षक टुकड़ियों) की कतारों के बीच चल रहा हो। सड़क में बीचोबीच एक तेज घुमाव था। वहाँ मकानों की कतार के बीच में काफ़ी खाली जगह थी। यह जगह एक भवन के निर्माण के लिए छोड़ दी गई है, जहाँ कूड़े के ढेर लगे हुये हैं, और जो एक गंदे मनहूस बाड़ से घिरा हुआ है। हमारे राजनीतिक नारे एक भ्रमणशील सर्कस के टूटे-फूटे पोस्टरों पर चिपके हुये हैं। बगल में ही चार्लोटेनबर्ग पावर वर्क्स की लाल ईंटों से बनी एक विशाल आधुनिक इमारत है। पावर हाउस के बाएँ तरफ़ बहुत कम ऊँचाई वाले लकड़ी के मकानों

की कतारें दूर तक फैली हुई हैं : बत्तियाँ अभी भी सभी खिड़कियों में जल रही हैं। जिन वर्षों में मकानों का भयंकरतम अकाल पड़ा था, उन्हीं दिनों ये अस्थायी लकड़ी की झोंपड़ियाँ बनाई गई थीं लेकिन अब ये लोगों की स्थायी निवास बन गई हैं। इनमें रहने वाले लगभग सभी केरायेदार बेरोजगार हैं।

यकायक रिचर्ड रुक गया। वह ऊपर बाएँ तरफ़ एक गिरे-पड़े मकान के एकाकी अलग-थलग शिखर की ओर देखने लगा, जो लकड़ी के मकानों के ऊपर मीनार की तरह उठा हुआ था। वहाँ खामोशी छाई थी—एक अनिष्टसूचक खामोशी। पावर हाउस की विशाल खिड़कियों से उन मशीनों की हल्की-हल्की भनभनाहट मात्र आ रही थी, जो दिन-रात चलती रहती थीं।

"हमारी पार्टी के नारे!" रिचर्ड बोल उठा।

उस मकान के शिखर पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था :

फ़ासिस्टवाद-विरोधियो! तीन नम्बर की सूची
को वोट दो! कम्युनिस्ट पार्टी! लाल मोर्चा!

रिचर्ड और एडी! हमारे जिले का सब से अच्छा आरोही एडी रात में एक रस्सी के सहारे उस मकान की छत से नीचे एक झूलते हुए लकड़ी के पटरे पर उतर आया, और उसने हमारे चुनाव-नारों को लिख डाला। पुलिस दिन में भी उस तरफ़ आने की हिम्मत नहीं करती, हालाँकि हमारे नारों के एक-एक शब्द उनकी आँखों को मिर्च की तरह दुखाते हैं। रात के समय उस मकान के शिखर पर बत्तियों से प्रकाशित खिड़कियाँ हवा में लटकती-सी मालूम होती थीं।

कुछ साल पहले उस गृह-शिखर के निकट वाला मकान का अगला हिस्सा एक गैस विस्फोट से गिर गया था। केवल हॉल का दरवाजा मात्र बचा रहा गया था, जिसका वह बचना भी दुखद प्रतीत होता था। मकान के

पिछले हिस्से की गिरती हुई दीवारें अब सड़क के सामने पड़ती थीं। खिड़कियों के पीछे फ़र्नीचर के कुछ हिस्से हमें दिखाई पड़ रहे थे, जिनकी कतारों पर धुलाई के बाद कपड़े सूखने के लिए फैलाये गये थे।

उस गृह-शिखर के निकट ही स्थित बर्नर का बियर-हाउस ही हमारा मिलने-बैठने का स्थान था। हमने सड़क पार की। हमारे संतरी बाहर ही पहरा दे रहे थे।

"लाल मोर्चा !"

"लाल मोर्चा !"

खिड़कियों के शीशों में कुछ गोल छेद थे। ये एस० ए० तूफ़ानी सैनिक टोली नं० ३३ की रिवाल्वरों से चली गोलियों के निशान थे। खिड़की के शीशों के आधे ऊपरी हिस्से में गोली पीतल की चद्दरें लगा दी गई थीं। बीमा कम्पनी अनेक बार इन खिड़कियों की मरम्मत करवा चुकी थी।

"कोई खास बात ?"

"नहीं, कामरेड हूटिंग। केवल पुलिस की मोटरें..." और इतना कहते-कहते संतरी चुप हो गया। उसने सड़क की मोड़ की ओर सिर हिला कर इशारा किया। क्षण भर के लिए मोटर की हेडलाइटों की रोशनी से हमारी आँखें चौंधिया गयीं। धीरे-धीरे मोटर हमारे सामने से निकल गयी।

झिलमिलाती सैनिक टोपियाँ ! बन्दूकें !

"वे पहले भी दो बार यहाँ आ चुके हैं। हथियारों की खोज कर रहे हैं—यहाँ—हमारे अड्डे पर !" संतरी ने उपहास के स्वर में कहा।

रिचर्ड ने दरवाजा खोला। लोगों की बातचीत का कोलाहल हमारे कानों में गूंज गठा। सफ़ेद दाढ़ी वाले मोटे होली-मालिक ने शराब के काउन्टर पर से सिर हिला कर हमारा अभिवादन किया। रक्ताभ चेहरे वाली उसकी पत्नी गिलासें साफ़ कर रही थी। धुएं के बादल छत की

ओर उठ रहे थे। संशय की भावना छाई हुई थी। मेरे स्नायुओं में तुरन्त इस वातावरण की प्रतिक्रिया हुई। बीच में पड़ी बड़ी मेज के चारों ओर उत्तेजित व्यक्तियों का एक पूरा दल खड़ा हुआ था।

"...कल नाज़ियों का पूरी साज-सज्जा सहित पूर्वाभ्यास है। क्या सोशल डिमाक्रेट लोग...?"

"मैं बहुत से लोगों से बात कर चुका हूं। वो लोग कल हमारे साथ सड़कों पर होंगे।" फ्रांज़ ने शान्त स्वर में कहा।

"२० जुलाई से बहुतेरे लोग अनुभव करने लगे हैं कि..."

अनुभव करने से बढ़ कर अब संघर्ष में जुटने की जरूरत है..."एक व्यक्ति ने सन्देहयुक्त स्वर में जवाब दिया।

'रेडी-मेड' ने अपनी जेब से एक अखबार निकाला। वह प्रेनिकमेयर्स रेडी-टु-वियर टेलरिंग इस्टैबलिशमेंट में सहायक है, और उसे 'भलेमानुस' की तरह कपड़े पहने रहना पड़ता है। वह उस अखबार में से पढ़ता है :

"...आशा की जानी चाहिए कि पुलिस के मुख्य आयुक्त देर से ही सही स्थिति की गम्भीरता को समझ जायेंगे।"

"जैसे कि पुलिस हमारा पक्ष ही तो लेगी।"

"हमारे सोशल-डिमाक्रेट मित्रों को भी इस बात पर हँसी आती है। वे लोग कल मुझसे भेंट करने वाले हैं!"

मैंने उसके कंधे के ऊपर से झाँक कर अखबार को देखा। कार्ल लीबनेख्ट हाउस की तस्वीर छपी थी, और उसके ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों मे लिखा था :

बुलो प्लाट्ज़ तक एस० ए० सैनिकों की परेड

जैसे कि यह कोई भड़कानेवाली बात ही न हो!

हमारे पीछे की तरफ़ जोर से दरवाज़ा खुला। हम घूम कर देखने लगे। एक नौजवान कामरेड ने खिड़की से अपनी साइकिल टिका कर हॉल में प्रवेश किया।

"कामरेड फ्रांज के लिए !" उसने कहा।

फ्रांज ने सर हिला कर कहा—"ठीक।"

नौजवान ने अपनी जेब से ढूँढ़ कर एक तह किया हुआ कागज का टुकड़ा निकाला और फ्रांज को पकड़ा दिया। उसके घुसते ही फ़ौरन दरवाज़ा ज़ोर की आवाज़ के साथ बंद हो गया। बात चीत रुक गयी। सभी नज़रें सफ़ेद कागज़ के उस टुकड़े पर जम गयीं।

फ्रांज ने मेरी ओर और रिचर्ड की ओर देख कर सिर हिलाया। अपने चौड़े कंधे हिलाता हुआ वह हमारे सामने से गुजरा। 'शक्तिशाली जिम !' हमने एक बार उसका यही नाम रख दिया था।

हम लोग बगल वाले कमरे में चले गये। फ्रांज ने कागज़ का वह पुर्जा हमें दे दिया।

"कल के लिए निर्देश। तुम तो जानते ही हो, रिचर्ड, कि तुम्हें अपने बिल्डिंग डिफेन्स ग्रुपों (भवन रक्षक टुकड़ियों) के साथ क्या करना चाहिए।"

"हाँ, मुझे अब जाना चाहिये।" और रिचर्ड ने दृढ़तापूर्वक हमसे हाथ मिलाया।

फ्रांज़ ने कामरेडों को एक-एक करके अन्दर बुलाना शुरू किया।

गंभीर चेहरों का एक पूरा वृत्त बन गया। उसने एक के बाद एक सब के चेहरों पर अपनी नजरें गड़ा दीं, जैसे कि वह एक बार फिर उन सब की परीक्षा लेना चाहता हो। उसने शांत किन्तु दृढ़ स्वर में ज़ोर दे कर कहना शुरू किया :

"कामरेडो, मुझे ज्यादा बातें कहने की जरूरत नहीं। हम बिना संघर्ष किये हुए बर्लिन फ़ासिस्टों को नहीं सौंप सकते। मैं बाद में नेताओं को सूचित करूँगा, कि कल हमें किस स्थान पर मिलना है। हम बिखरे हुये दलों की शक्ल में विभिन्न सड़कों पर से चलेंगे। आपको यही ध्यान रखना है, कि सब लोग समय के पक्के रहें, और कोई अपने काम में चूके

नहीं। आप तीन या पाँच आदमियों के गुट बना कर कपड़े पहने हुए ही आज रात में सो जायँ। मजदूर आपसे आशा करते हैं, कि आप उनकी रक्षा करेंगे। मेरी बातें बिलकुल स्पष्ट हैं न ?"

सभी लोगों ने मौन हामी के भाव से सिर हिलाया। कमरा खाली हो गया।

कमरे से हम चार लोग सब से आखीर में बाहर निकले—फ्रांज़, रोथेकर, 'रेडी-मेड' और मैं। हमारी पदचाप सन्नाटी सड़क पर प्रतिध्वनित हो रही थी।

इमारतों में चेतावनी पहुँचा दी गयी। रक्षा-चौकियों को सावधान कर दिया गया। अगर कल लड़ाई होगी, तो कारखाने सोमवार को बंद हो जाने चाहिये, हालांकि हममें से सबसे अच्छे योद्धाओं ने एक लम्बे अरसे से सैनिक साज-सज्जा और सैनिक थैले को छोड़ रखा था—फ्रांज़, रोथेकर और अन्य अनेक ऐसे ही लोग।

हम रोथेकर के मकान तक पहुँच गये। वह सीढ़ियों से ऊपर चला गया। टाउन हॉल की घड़ी से घंटे की आवाज़ आयी, और दीवारों के बीच खो गयी। पुलिस की कार अभी भी गश्त लगा रही थी। उसकी हेडलाइटें चन्द पलों के लिए सड़क पर प्रकाश-पुंज बिखरे देतीं, और फिर गायब हो जातीं। एक कार भोंपू की उनींदी-सी आवाज़ करती चली गयी। रह-रह कर लारियाँ घर्र-घर्र, खड़-खड़ करती हमारे बगल से निकल जातीं। भूरी वर्दी वाले अभी भी बाहर में घूम रहे थे।

रोथेकर वापस आ गया। वह फ्रांज़ के निकट खड़ा हो गया। धुँधलके में वह नाटा क्लर्क और भी बौना-सा लग रहा था, और उसका निकल का चश्मा जैसे बड़ा-सा हो गया था। उसकी शांत भाव से रुक-रुक कर बात करने की आवाज़ हम सुन रहे थे।

"फ्रांज़, अगर मुझे कुछ हो जाय, तो मुझे इसका कोई भय नहीं है—" और उसने गहरी साँस ली।

"...तुम मेरे बाद एडिथ और मेरे बेटे का ख्याल रखना, रखोगे न ?"

"परेशान मत हो, एरिक । इतना बड़ा अनिष्ट नहीं होने पायेगा ।" फ्रांज़ ने यह बात कह तो दी, मगर उसे जैसे स्वयं ही अपनी इस बात पर विश्वास नहीं था ।

"...लेकिन, एरिक, अगर ऐसा कुछ हो भी जाय, तो तुम इस संबंध में निश्चिन्त रहो !"

रोथेकर ने उसका हाथ पकड़ कर ज़ोर से दबाया ।

हम सड़कों पर टहल रहे हैं । मेरी अपनी, मेरी सब-कुछ केथी, मेरी बाँह में है । उसने अपनी नयी नेवी-ब्लू रंग की पोशाक पहन रखी है । उसका भाई फ्रांज़ हमारे आगे-आगे चला जा रहा है । उसने गोद में हिल्डी को ले रखा है । हममें से लगभग सभी लोगों ने त्योहारीय पोशाकें पहन रखी हैं ।

बर्लिन रात भर में ही जैसे सैनिक शिविर बन गया है । कंधों पर बन्दूकें रखे और अपनी टोपी के पट्टों के बक्सुये ठोढ़ी के नीचे कसे, पुलिस के गश्ती सिपाही छह और आठ की टुकड़ियों में हमारे बगल से निकल जाते हैं । हर तीसरे मकान पर दो-दो संतरी तैनात हैं ।

"पुलिस के पंद्रह हजार जवान बुला लिये गये हैं," रोथेकर धीमे स्वर में कहता है ।

हम मोबिट पहुँच गये । कलीनर टायरगार्टेन एस० ए० सैनिकों के इकट्ठे होने का मुकाम था । उस स्थान को पुलिस के सिपाहियों की दोहरी पंक्ति ने घेर रखा था । उनके पीछे एस० ए० सैनिकों के दल खड़े थे । आस-पास की सड़कों से भूरी वर्दी वाले सैनिक आ रहे थे, जिनके अगल-बगल पुलिस के जवान चल रहे थे । पार्क के प्रवेश-द्वारा पर घुड़सवार



पुलिस तैनात थी। पुलिस की लारियाँ हमारे बगल से गुजरती जा रही थीं, जिनके बगल के डाढ़े गिरा दिये गये थे, ताकि फ़ौरन भीड़ में बीच कूदा जा सके। पटरियों लोगों की भीड़ में जैसे कामी दिख रही थी। हम राहचलतुओं में ही शामिल हो गये, और धीरे-धीरे धक्के खाते आगे बढ़ने लगे। हमें इस बात का ख्याल था, कि हमारा एक-दूसरे का साथ नहीं छूटना चाहिए। लेकिन अन्य लोग भी तो हैं। फ्रांज, अर्नेस्ट, पॉल और 'फ़ौजी'।

पार्क के उस पार से ढेर सारी आवाज़ें आने लगीं: "भूरी वर्दी-धारी हत्यारे मुर्दाबाद! मुर्दाबाद! मुर्दाबाद! मुर्दाबाद!"

घुड़सवार पुलिस ने अपने घोड़े की लगाम खींच कर इधर-उधर घुमाना शुरू कर दिया। पुलिस ने पटरियों पर खड़ी भीड़ पर बेंत बर-साना शुरू कर दिया। बेंतों की मार के बावजूद लोगों के चेहरों पर दृढ़ता और सख्ती ज्यों की त्यों बनी रही। फ़ौजी टोपियों के नीचे चेहरों पर कठोरता की रेखाएँ खिंची हुई थीं। फ़ौजियों ने अपनी बन्दूकें उलट कर लोगों को मारना-भगाना शुरू कर दिया।

"भागो! तितर-बितर हो जाओ! तितर-बितर हो जाओ!"

पुलिस की मार की आवाज़ और "शेम! शेम!" की चिल्लाहट चारों ओर गूँज रही थी।

मैंने कैथी की ओर देखा। फ़र के कालर के बीच में उसका चेहरा छोटा-सा और पीला दिख रहा था। पुलिस वाले भीड़ के अन्दर घुस पड़े। हमारे बाएँ तरफ़ दो पुलिस वाले एक नौजवान मजदूर को कुछ दूर पर खड़ी लारी की ओर दौड़ाये लिये जा रहे थे। वह कुहरा हुआ दौड़ा जा रहा था। उन्होंने उसकी पीठ पर उसके हाथों को मरोड़ रक्खा था। और वे अभी भी उसे मारे जा रहे थे।

"घिनौने कुत्ते! आओ इन्हें रोका जाय!" रोबेकर गुर्राया।

मैंने उसकी बाँह पकड़ ली। "यहीं रुक रहो ! वो लोग तो इसी क इंतजार ही कर रहे हैं !"

सड़क के दूसरी तरफ़ से एक गीत सुनाई पड़ रहा था। इंटरनेशनल ! गीत में लड़खड़ाहट पैदा हुई, और फिर वह भयंकर चीखों में खो गया। भूरी वर्दीधारी सैनिकों की पंक्तियों ने मार्च करना शुरू कर दिया था। उनके अगल-बगल पुलिस की दोहरी सुरक्षा-पंक्ति चल रही थी। मुझे एस० ए० बगली सैनिकों का धक्का लगा—विशाल डील-डौल के आदमी थे वे। उनकी पतलूनों की करीने से बने किनारों वाली जेबें फूली हुई थीं। रिवाल्वर थे उनमें ! वे गा रहे थे :

> ध्वंस कर दो लाल दल का,
> मार्च करते एस० ए० सैनिक,
> साफ़ कर दो मार्ग उनका !

शोर-गुल में उनका गीत डूब गया। "लाल मोर्चा जिन्दाबाद ! भूरी वर्दीधारी मुर्दाबाद !"

संकेत की एक सीटी बजी। पुलिस वाले फिर हमारी ओर झपट पड़े। अब वे भीड़ पर बन्दूक के कुंदों से वार कर रहे थे। हम लोग एक मकान की दीवार से दुबके खड़े थे। बहुतेरे लोग बच कर द्वारमार्गों में घुस गये थे—उधर दाहिने तरफ़ ! इस भगदड़ में एक श्रमिक स्त्री पुलिस की कतार क बीच दौड़ कर चली गयी। वह क्षण भर भूरी वर्दीधारी सैनिकों की कतार के सामने खड़ी रही, और फिर अपने दोनों हाथ ऊपर हवा में उठा कर चीख उठी :

"कायरों का एक जूलूस ! पुलिस वालों को घर भेज दो ! ओ वीरो !"

एक पुलिस वाला उसे खींच ले गया।

धीरे-धीरे जुलूस नगर के केन्द्र-स्थल की ओर बढ़ता गया। पटरियों पर खड़े लोगों की संख्या बराबर बढ़ती जा रही थी। खिड़कियों से लोग

चिल्ला रहे थे : "हत्यारे ! हत्यारे !" एक गुलदान हवा में उड़ता हुआ आया, और सीधे जा कर भूरी वर्दी वालों के जुलूस पर गिरा। तीन पुलिस वाले उस मकान में झपट कर घुस पड़े, और अन्य सैनिकों ने अपनी बन्दूकों की नलियाँ उन खिड़कियों की ओर घुमा दीं।

"खिड़कियाँ बन्द करो ! खिड़कियाँ बन्द करो !" घर के अंदर से कर्णभेदी सीटी की-सी आवाज आने लगी। अधिकांश खिड़कियाँ फटाक-फटाक बन्द हो गयीं। एकाएक पटरी पर हमारा जुलूस रुक गया। जुलूस दो-तीन बार आगे बढ़ा, जिस तरह कार झटके खाती है, और अंत में रुक गया। आगे के लोग हाथ हिला रहे थे। पीछे हटो ! पीछे हटो ! मैं एक रेलिंग पर चढ़ गया। हमारे सामने पचास गज की दूरी पर सड़क एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ तक काली फ़ौजी टोपियों की कतार से भरी हुई थी, जिसको चीरता हुआ भूरा जुलूस आगे बढ़ जाता है। मामला खत्म हो गया ! रास्ता कट गया ! पटरियों पर खड़ी भीड़ आगे-पीछे होने लगी। पुलिस ने सड़क को साफ़ कर दिया ! रोथेकर उत्तेजना से अपने हाथ हिलाने लगा। उसका चेहरा लाल हो उठा था।

"अब क्या किया जाय ? अब क्या किया जाय ?"

"पहले पीछे हटना चाहिये, और फिर बगल की गलियों से आगे बढ़ना चाहिये। हमें बुलोप्लाट्ज़ तक पहुँच ही जाना चाहिये। हर किसी के कानों तक यह संदेश पहुँचा दो !"

रोथेकर भीड़ में रास्ता बनाता हुआ, फ्रांज़ और उसके दल के पास पहुँच गया।

"बगल की गलियों से हो कर आगे बढ़ो !" एक मुँह से दूसरे मुँह यह फुसफुसाहट-भरा संदेश फैलता गया।

पुलिस हमारे सामने दूसरी तरफ़ रुक गयी। उन्होंने अपनी बन्दूकों का निशाना पटरी की ओर साध रखा था। उनके पीछे भूरी वर्दीधारी खिसक गये।

"केथी !"

उसने मेरी ओर देखा । उसकी आँखों में चिनगारियाँ जल रही थीं । मैंने कहा—"अगर वो लोग हमें रोकें, तो मैं चाहता हूँ कि हम सुरंग-मार्ग में उतर जायँ । क्या तुम्हें भय लग रहा है ?"

केथी ने सिर हिला दिया । हम एक चौराहे पर पहुँच गये । पुलिस प्रदर्शनकारियों को रोक रही थी, और यातायात को चलने दे रही थी । हम दौड़ कर सड़क के पार चले गये, और छितराये हुये गुट बना कर बगल की एक छोटी गली में घूम गये । फ्रांज, रोथेकर और अन्य लोग कहाँ हैं ? ओफ़, सवारियों को आगे बढ़ने का सिगनल मिल गया । उन लोगों ने चौराहे पर पहुँचने में बहुत देर कर दी । हमें अपना काम जारी रखना चाहिए ! यहाँ पर सड़क आश्चर्यजनक रूप से शान्त है । लोग खिड़कियों से सर निकाल कर झाँक रहे थे । मकानों के दरवाजों के सामने लोग गोल बना कर खड़े फुसफुसा कर बातचीत कर रहे थे । और आगे दाहिनी तरफ़ बगल की गली से गाने की हल्की-हल्की-सी धुन आ रही थी । एकाएक पुलिस वालों की एक पंक्ति चिल्लाती हुई गली के नुक्कड़ पर आ गयी—"खिड़कियाँ बन्द करो ! मकानों के दरवाजे बन्द करो !"

मकानों के सामने खड़े लोग गायब हो गये । खिड़कियाँ खड़खड़ा कर बंद होने लगीं, दरवाजे फटाफट बंद होने लगे । जल्दी-जल्दी दरवाजों की कुंडियाँ और सिटकिनियाँ चढ़ाने की आवाज आने लगी ।

"शांत रहो ! आगे बढ़ती रहो !" मैंने केथी से फुसफुसा कर कहा ।

उसने मेरा हाथ दबाया । भारी सैनिक बूटों की खट-खट, धब-धब मकानों की दीवारों से टकरा कर पुनः प्रतिध्वनित होने लगी । सहसा किसी ने रबड़ का डंडा हमारे मुँह पर घुसेड़ दिया ।

"पीछे हटो ! आगे बढ़ो, जल्दी !"

मैंने शांत स्वर में उत्तर दिया :

"हम लोग सुरंग मार्ग में जाना चाहते हैं ?"

पुलिस ने हमारी ओर खूँखार निगाहों से देखा। उसका चेहरा गुस्से से लाल था, और उस पर पसीने की बूँदें चुहचुहा रही थीं। लेकिन केथी द्वारा जबरदस्ती धारण की गयी उदासीनता से पलड़ा पलट गया।

"दाहिने तरफ़ जाओ—जल्दी करो—ट्राम पर सवार हो जाओ। सुरंग-मार्ग बंद है !"

और फिर वह दौड़ता हुआ आगे बढ़ गया। ट्राम ! मैंने पहले उसके बारे में क्यों नहीं सोचा ? ट्राम द्वारा प्रदर्शन-स्थल तक पहुँचा जा सकता है। ट्राम ठसाठस भरी थी। कंडक्टर ट्राम-कार के बीच में अन्य लोग की तरह ससका खड़ा था। अन्य लोगों की तरह ही वह शीशे से बाहर देख रहा था। प्लैटफ़ार्म पर खड़े लोग चिल्ला कर निर्देश दे रहे थे।

"आगे की तरफ अभी जगह है ! थोड़ा और आगे दबिये !"

"अब सब लोग बाहर निकलो !" कोई चिल्लाया।

कंडक्टर ने दो बार घंटी बजाई। ट्राम-कार क्षण भर में ही खाली हो गयी। हम धीरे-धीरे चलते हुये सड़क पर गये। हमारे साथ सैकड़ों की संख्या में अन्य लोग भी थे। आश्चर्य की बात थी, कि वहाँ मुश्किल से ही कोई फ़ौजी टोपी दिखाई देती थी। 'अर्नस्ट मैकनाऊ : बाइसकिल'—मैंने सड़क के दूसरी ओर एक दूकान पर लिखा देखा। दूकान का यह नाम मेरे दिमाग़ में चिपक गया। सड़क उजाड़-सी लग रही थी। खिड़कियों तक पर कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ता था। दूकानों की खिड़कियों के सामने उनके शटर गिरे हुये थे। सामूहिक नारे की एक आवाज़ सुनाई पड़ी : "फ़ासिस्टबाद मुर्दाबाद !" और फिर तीन बार नारा लगा : "लाल मोर्चा जिन्दाबाद !" मैं भी नारा लगाता रहा, लगाता रहा। केथी मेरी बाँह पकड़ कर मुझे ज़ोर से खीचने लगी।

"घबराओ नहीं ! घबराओ नहीं !"

मुझे अपने निकट की दुकानों की खिड़कियों के शीशे झुके हुये शटरों के पीछे खड़खड़ाते सुनाई दिये। सड़क का जहाँ अंत होता था, वहाँ से एक भूरा दानव हमारी ओर घड़घड़ाता चला आ रहा था। बख्तरबंद कार थी वह! मैंने अपने चारों ओर के लोगों के चेहरों को देखा। उन चेहरों पर कोई नया भाव नहीं था। उन पर उदासीनता का ही भाव था। एक बहुत कड़ी मूँछों वाला आदमी पनाले में खड़ा था, और वह हँस रहा था। उसके हाथ उसके पतलून के जेब में थे। उसके चारों ओर खड़े अन्य लोगों ने भी हँसना शुरू कर दिया। संकेत की कर्णभेदी सीटियाँ हवा को चीरती हुई-सी गूँज रही थी। टैंक हमारे बगल से आगे निकल गया। टावर में मशीनगन की नली एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ घूम रही थी।

बचाव-रास्तों के पीछे पीले पड़ रहे चेहरों की कतारें दिख रही थीं।

जो लोग सामने खड़े थे, उन्होंने एकाएक भगदड़ मचा दी। क्या पुलीस ने बेंत चलाना शुरू कर दिया? कहाँ? नहीं, नहीं! वे लोग सड़क पर इकट्ठे होने लगे। हम भी दौड़े। क्षण भर में ही भीड़ की चार कतारें इकट्ठी हो गयीं। भीड़ बढ़ती गयी, और पूरी सड़क भर गयी। हम 'इंटरनैशनल' गीत गाने लगे। तंग गलीनुमा सड़क हमारे गीत से गुंजरित होने लगी। केथी के बगल में एक सफ़ेद दाढ़ी वाला आदमी चल रहा था। वह मुँह बाये था, और गीत के धुन के साथ उसके शरीर में हरकत हो रही थी। उसके कोट के गरेबान पर कोई चमकीली धात्विक चीज झलमला रही थी। तीन तीर! हमारी नजरें मिलीं। हम अभी भी गीत गा रहे थे। वह पुराना बूढ़ा कामरेड अपना सिर आगे-पीछे हिला रहा था। मैंने फिर देखा! उसी कतार में और भी तीर चमक रहे थे! मेरी नाड़ी की गति तेज हो गयी। मैं जोश से उत्तप्त हो उठा था। मैंने केथी को कुहनी मारी। वह मेरी बात समझ गयी, और मुस्कराई।

हम लोग कितनी देर से चल रहे थे—मिनटों से ? ऐसा लग रहा था, जैसे आधा-घंटा बीत गया हो। सामने वे गोमेंनस्ट्रैसी में घूम गये। गलत ! वे एक बंद गली में घूम गये थे। जुलूस के अगले हिस्से से चीखों और कोड़े मारने की आवाजें आ रही थीं। वे गोलियाँ भी चला रहे थे ! हमें पीछे ढकेल दिया गया। हर आदमी द्वारमार्गों की ओर दौड़ पड़ा। पीछे हटो, हर कीमत पर पीछे हटो। केथी अपना पूरा बोझ लिये मेरी बाँह से लटक गई थी। उसका मुँह घबराहट से फड़क रहा था। मैंने उसे जोर से हिलाया।

"केथी ! केथी ! आतंकित मत हो !"

हम अपने ऊपर जब्र कर के एक द्वारमार्ग की ओर गये। पुलिस के सिपाहियों की पंक्ति केवल पाँच गज़ की दूरी पर थी। पिस्तौलों की नलियाँ भीड़ की ओर तनी हुई थीं। गोलियाँ लगातार धाँय-धाँय चल रही थीं। धातु की मंद चमक, धुएँ के हल्के नीले बादल हमारी पहुँच के अन्दर थे। हमारी ओर नीली जैकेट पहने एक आदमी ने अपने हथियार एकाएक फेंक दिये। वह धीरे-धीरे अपनी एड़ी पर घूम गया, और फिर डामर पर औंधा गिर गया। हम एक द्वारमार्ग पर पहुँच गये, और हमें अंदर ढकेल दिया गया। केथी सीढ़ियों की ओर लपकी।

"यहीं रुको !"

अगर वो लोग हमारे पीछे आते हैं, तो हम लोग उनसे निपटने के लिए सीढ़ियों पर ही तैनात रहें। हम इंतजार करते रहे, इंतजार करते रहे। मुख्य द्वार के शीशे के पीछे से हम पुलिस को इधर-उधर दौड़ते देख रहे थे। हमारे बगल में एक स्त्री अपने हाथ में एक छोटी-सी लड़की को लटकाये खड़ी थी। वह बच्ची की आवाज को उसके मुँह पर हाथ लगा कर रोकने का प्रयत्न कर रही थी। उसके चेहरे पर अनेक भाव बराबर आ-जा रहे थे।

"हे ईश्वर ! हे ईश्वर ! क्या होगा—क्या होगा ?" वह बराबर यही शब्द दुहराये जा रही थी।

गोलियों की आवाजें और दूर से आने लगी थीं। मैं भीड़ से बाहर आ गया। सड़क सूनी थी। हम वहाँ से चल पड़े।

पुलिस के सिपाहियों के एक जत्थे ने, बख्तरबंद गाड़ियों और उनकी छतों पर लगी मशीनगनों के एक जाल सहित बुलोव्लाट्ज़ के चारों ओर की सड़कों पर कब्जा करके, उन्हें भूरी वर्दीधारियों के प्रदर्शन के लिए खाली कर रक्खा था।

अगले दिन सायंकाल की बात है, हम लोग फ्रांज़ जेंडर के मकान की बैठक में बैठे थे। हिल्डी बातें कर रही थी।

"मेरी माँ कहती है, कि फ़ेलिक्स सारे दिन चारों तरफ़ दौड़-धूप करता रहा। दोपहर में वह घर वापस आया, और सोफ़े पर लेट गया। फिर एक एस० ए० का आदमी इस आदेश के साथ उसे बुलाने आया, कि उसे तुरन्त तूफ़ानी सैनिक केन्द्र पर हाज़िर होना है। कुछ नये आदेश आ गये थे, और टुकड़ी का नेता इंतजार कर रहा था। मैं तुम्हें बता सकती हूँ, कि वे लोग कल से खूब मौज उड़ा रहे हैं, और कल्पना में डूबे हुये हैं।"

फ्रांज़ मेज़पोश के फुंदनों से खेलने लगा। हिल्डी अपने परिवार के बारे में हमें सब-कुछ बता चुकी थी। अपने भाई फ़ेलिक्स के संबंध में भी उसने हमें सारी बातें बता दी थीं। तूफ़ानी सैनिक टुकड़ी नं० ३३ उसे 'लैम्पपोस्ट' कह कर पुकारती थी, क्योंकि वह बाँस जैसा लम्बा था। वह एक टुकड़ी का सरगना था। उसका पिता ट्रीटिन्स हमारे निकट ही वलिनर स्ट्रैसी में एक जगह द्वारपाल का काम करता था। हिल्डी का पिता वर्षों से बेरोजगार था। वह एक अप्रशिक्षित श्रमिक था, और



उसने कभी राजनीति की परवाह नहीं की। "तुम्हें अपनी रोज़ी-रोटी कमानी है, बस!" यही उसके जीवन का सिद्धान्त था। लेकिन द्वारपाल की नौकरी में उसके लिए इतने की भी गारंटी न थी। हफ़्ते में दो बार अपनी साइकिल ले कर खरगोश और मछली के शिकार पर निकल जाता था। श्रीमती ट्रीटिन्स घर के कामकाज और अपनी पाँच-वर्षीया पुत्री इन्गी के पालन में मशगूल रहती थीं। हिल्डी टाइपिस्ट है—परिवार में वही अकेली ऐसी है जो कुछ कमाई करती है। क्योंकि तालासाज़ फ़ेलिक्स भी इन दिनों बेरोज़गार है। वह एक ही साल पहले एस० ए० में शामिल हुआ था। उसने एक बार हिल्डी से अपने मन की बात साफ़ की थी—"मैं एस० ए० में इसलिए शामिल हो गया क्योंकि मैं अपनी ज़िन्दगी खैरात के भरोसे नहीं बिताना चाहता और मुझे यह बर्दाश्त नहीं है कि मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जाय जैसे मैं कूड़ा-करकट होऊं।" उसने हिल्डी से बात और साफ़ की—"और आज मेरे पास इतने काफ़ी पैसे हैं कि मैं यहाँ घर पर आराम से ज़िन्दगी बसर कर सकूं। मैं सैनिकों की बिलेटों में सो सकता हूँ, और कुछ-न-कुछ खुराफ़ात तो हमेशा होता ही रहता है। पहले मेरी किसी बात में कोई गिनती नहीं थी, लेकिन वर्दी पहन लेने के बाद मैं भी कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति बन जाता हूँ, उसका नतीजा चाहे कुछ भी हो।"

"वह नाकारा कुछ भी करे," बूढ़े ट्रीटिन्स के लिए इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। लेकिन वह हमेशा उसके ऊपर गुर्राता ही रहता है, क्योंकि "ये नालायक वर्दीधारी मेरे घर को उजाड़ने-रौंदने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकते।" हिल्डी हमारे साथ पिछले छः महीने से थी। एक व्यावसायिक रात्रि-पाठशाला में केथी का हिल्डी से परिचय हुआ था। हिल्डी को फ्रांज से बहुत लगाव हो गया है। वे दोनों पक्के साथी, पक्के कामरेड बन गये हैं, लेकिन फ़ेलिक्स को इस संबंध में कुछ भी मालूम नहीं है।

जेंडर की माँ रसोई से कॉफी की केटली लिये हुये आयीं। उन्होंने मेज पर केकों से भरी एक तश्तरी भी रख दी। वो अपनी कुर्सी गैस-लैम्प के नीचे खींच ले गयीं और बुनाई करने लगी। मेरी बड़ी इच्छा हुई कि उन्हें प्रसन्न कर देने वाली कोई बात कहूँ, पर मुझे कुछ सूझा ही नहीं। उनकी भूरी आँखों में स्नेह छलकता था। उनके होठों के इर्द गिर्द और माथे पर गहरी रेखाएँ खिच चुकी थीं। यह रेखाएँ जीवन के उतार चढ़ाव की कठोर और सच्ची छाप थीं। केथी ने मुझे बताया था कि कारखाने में हड़ताल करवाने के कारण जब फ्राँज को नौकरी से निकाल दिया गया था उस समय माँ जेंडर ने क्या कहा था। क्षण भर वे फ्राँज की बर्खास्तगी की खबर सुन कर मौन रह गई थीं; लेकिन क्षण भर विचार करने के बाद ही उन्होंने कहा था—"हम लोग सब सँभाल लेंगे। तुम्हारी जगह तुम्हारे पिता होते तो वे भी वही करते जो तुमने किया।"

फ्राँज के पिता सोशल डिमाक्रेट थे। फ्रांस में ही उनका अवसान हो गया था।

"कभी-कभी तो खामोशी अख्तियार किये रह जाना भी एक कठिन काम हो जाता है," हिल्डी ने अपनी बातों का सिलसिला जारी रक्खा—"आज ही शाम को फेलिक्स बढ़-चढ़ कर बातें कर रहा था। वह कह रहा था, 'कल हम लोगों ने बर्लिन को कुछ कर दिखाया! हमारा आन्दोलन आगे बढ़ता ही जा रहा है। वे अब उसे रोक नहीं सकते। हमने कल देख लिया कि कम्युनिस्टों का पतन हो चुका है और वे खत्म हो चुके हैं। वे अगल-बगल की गलियों से मुँह चिढ़ा रहे थे, बस, इससे अधिक कुछ नहीं।'"

फ्राँज अपने कप में तेजी से चम्मच चलाने लगा। उसकी सुन्दर भौंहें सिकुड़ गयीं।

हिल्डी ने अपनी बात फिर शुरू की—"उन लोगों ने यही सोचा होगा कि हम लोग..."

फ्राँज ने बड़ी तीखी नज़रों से उसकी ओर देखा। हम लोगों ने कुछ नहीं कहा। लग रहा था जैसे किसी में कुछ कह सकने की सामर्थ्य ही न हो। निराशाजनक वातावरण अंत तक व्याप्त रहा।

भूरी वर्दीधारियों के प्रदर्शन के बाद तीन दिन बीत चुके थे।

आज वे नहीं, हम जुलूस निकाल रहे हैं। हम लोग बुलोप्लाट्ज़ की ओर मार्च कर रहे हैं। बर्फ़ीली ठंडक है। मकानों और ट्रामों की बंद खिड़कियों पर तुषार की पर्तें जम गई है। हमारे मुँह से बर्फ़ जैसी सफ़ेद साँसें बाहर आ रही हैं। अचानक ही शुरू हो गया तुषार-पात हमारे सड़े-गले पतले कपड़ों को छेद कर अन्दर घुसने लगा। हमारे चेहरे, हाथ सुन्न पड़ चुके हैं।

जुलूस एक मोड़ पर मुड़ा। मैंने नज़र घुमा कर देखा। चार-चार व्यक्तियों की कतारों का अनन्त ताँता और उनके ऊपर लहराते लाल झंडों की कतारें जहाँ तक आँखें देख सकती थीं वहाँ तक नज़र आ रही थीं।

"इस जिले में पहले कभी इतना शानदार जुलूस नहीं निकला!" रोथेकर ने कहा। उसकी लाल नाक पर नीली छाया झलकने लगी थी; उसके कोट का कालर उठा हुआ था। वह हमेशा से ज्यादा क्षीण और नाटा लग रहा था। जुलूस की अगली पंक्ति ने गाना शुरू कर दिया।

जनवरी मास और आधी रात,
अपने स्थान पर मुस्तैद खड़ा स्पार्टेसिस्ट...

गीत पूरे जुलूस पर छा गया। हमारे आगे-पीछे, अगैल-बगल हर ओर से उसके स्वर उठ-उठ कर वातावरण में गूँजने लगे। जुलूस में मार्च करते लोगों के पाँव 'लेफ्ट, राइड, लेफ्ट...' की थाप देते जा रहे थे।

चेहरों पर गम्भीरता और कठोरता की रेखाएँ थीं। जैसे कह रहे हों—देखो, हम इस तरह मार्च करते हैं ! बिना टैंकों के। बिना मशीनगनों के। हम बर्लिन हैं, श्रमजीवी बर्लिन !

मेरे आगे वाली पंक्ति में एक युवा कामरेड हीन्ज़ प्रेउस हमारा झंडा उठाये चल रहा है। उसके पास ओवरकोट नहीं है। उसके जूतों ने एक तरफ मुँह बा दिया है, उसके होंठ दो नीली लकीर मात्र दिखते हैं। हीन्ज़ वर्षों से बेकारी झेल रहा है। उसके बगल-बगल मार्च कर रहा है पॉल टीचर्ट, सीमेन्स कारखाने का एक टर्नर। उसका मेस का बर्तन उसके साथ है। कॉफ़ी का नीला टम्बलर उसकी बाँह के नीचे से लटक रहा है। हमारे बाईं तरफ़ पुलिस की एक लॉरी धीरे-धीरे चल रही है। उन लोगों ने भारी-भारी ओवरकोट पहन रखे हैं, लेकिन मुर्गियों की तरह एक-दूसरे से सटे बैठे है। अन्य पुलिस वाले थोड़ी-थोड़ी देर बाद जुलूस के अगल-बगल दौड़ लगाते हैं। उन्होंने अपने कानों के बचाव के लिए प्रोटेक्टर पहन रक्खे हैं। और हम लोग गाते चल रहे हैं :

गरजता, गोले उगलता तोपखाना सामने है,
स्पार्टकस के पास पैदल सैन्य दल हो...

पुलिस का एक सिपाही एकाएक जुलूस के बगल-बगल दौड़ता हुआ आया। उसके हाथ में एक नोट बुक है। वह रुक गया, नोट बुक के पेज पलटने लगा, फिर सिर ऊपर उठाया। "रुक जाओ। इस गाने पर रोक है।" वह चिल्लाया। गीत की कड़ियाँ बीच ही में टूट गयीं, लेकिन अगली पंक्ति के लोग अभी भी गीत गाये जा रहे हैं।

"अपने घरों में घुस कर बैठो। हमें तुम्हारी जरूरत नहीं है।" हमारे पीछे की पंक्तियों में से कोई व्यक्ति पुलीस की लॉरी की ओर मुँह कर के चिल्लाया।

"रविवार को एस० ए० के लोगों ने हमें कुचल-मसल डालने के गीत गाये। तुमने उन्हें तो नहीं रोका !" दूसरा व्यक्ति चिल्लाया।

"नया गीत ! नया गीत !"

मैंने देखा लॉरी में बैठे अफ़सर ने कोई आदेश दिया। पुलीस के सिपाही लॉरी से कूद-कूद कर उतर आये।

"ओउ। ओउ।"

> सोवियत राज्य के ऊपर अहर्निश
> उड़ रहे हम चौकसी से, वायु सेना लाल
> हम हैं प्रथम जग के...

नोट बुक वाला सिपाही फिर वहाँ आ पहुँचा। हम लोग शहर के बीचोबीच पहुँच चुके हैं। सड़क की पटरियों पर लोगों की कतारें-ही-कतारें खड़ी हुई हैं। पटरियों पर खड़ी जनता ने कम्युनिस्ट सलामी के रूप में मुक्के उठा कर हवा में हिलाते हुए नारे लगाये : "लाल मोर्चा जिन्दाबाद ! लाल मोर्चा जिन्दाबाद !"

लोग दूकानों के दरवाजों पर खड़े हुए हैं। खिड़कियों पर जमी बर्फ़ की पर्तों के अधगले हिस्सों से बाहर झाँकते चेहरे नजर आ रहे हैं।

> और ऊपर, और ऊपर, और ऊपर उठ रहे हम,
> घृणा पाते, तिरस्कृत होते हुये भी...

पुलिस के सिपाही ने गीत की टेक से ही उस गीत को पहचान लिया होगा और अपनी नोट बुक में उसे ढूँढ़ लिया होगा।

"बन्द करो ! इस गीत पर रोक है ! रोक है !" और उसकी आवाज जैसे चीत्कार में बदल गयी।

हमने आज्ञा का पालन किया। लेकिन जुलूस की अगली पंक्तियों में गाना नहीं रुका। वे इस आज्ञा को सुन ही न पाये होंगे। पुलीस का एक जत्था हमारे बगल से दौड़ता हुआ निकल गया। उनके हाथों में रबर के हण्टर बरसने को तैयार थे। सीटी की तीखी आवाज गूँज उठी।

सुरीली धुन में थरथराये
हर एक प्रोपेलर...

अगली पंक्तियों में गीत जल्दी से बीच ही में रोक दिया गया। गड़बड़ी फैल गयी और चीखें उठने लगीं—

"शेम ! शेम !"

उन लोगों ने जुलूस पर कोड़े बरसाने शुरू कर दिये। फिर भी बिल्कुल अगली पंक्तियों से ही गीत की मन्द धुनें आ रही हैं :

हम हैं पहरेदार सोवियत रूस के...

थोड़ी दूर पर हमने देखा पाँच गिरफ्तार किये गये व्यक्ति लॉरी पर बैठे हुये थे। जैसे-जैसे हम अपने लक्ष्य-स्थान के टिकट पहुँचते गये, पटरियों पर ठसाठस भरी जनता की भीड़ ने हमारा स्वागत किया। वे सभी हाथ हिला कर नारे लगाते रहे—"लाल मोर्चा जिन्दाबाद !" तीन दिन पहले रोष और घृणा थी। आज हार्दिक एकता और भाईचारे के दृश्य थे।

जरी से लैस एस० ए० वालों के,
और जनता के पेट खाली हैं !

एक साफ़ आवाज जुलूस की आवाजों के ऊपर उठी, और फिर गिनती शुरू हुई : "दो ! तीन !" अन्य अनेक आवाजों द्वारा दुहराये जा कर वाक्य-के-वाक्य मकानों की दीवारों से प्रतिध्वनित हो कर गूँजने लगे। एकाएक मार्च करते पाँव थम गये, कतारों में मार्च करते लोग विचलित हो उठे।

"वे उसे गिरफ्तार कर रहे हैं !"

"किसे ?"

"पता नहीं !"

"फ्यूजी ! फ्यूजी !"

जुलूस आगे बढ़ चला। दो पुलिस के सिपाही तेजी से हमारे बगल से निकले। फ़्यूज़ी, जो अपने घने झबरे बालों के कारण ही इस नाम से पुकारा जाने लगा था, उन दोनों के बीच में था। मैंने देखा उन लोगों ने उसे ढकेल कर लॉरी पर चढ़ा दिया उन्हीं लोगों के बीच, जो पहले ही गिरफ़्तार किये जा चुके थे।

अनन्त सड़कें हमारे पैरों के नीचे से गुजर गयीं। हम इन्टरनेशनल गीत 'साथियो बढे चलो, सूरज की ओर, मुक्ति की ओर...' दस बार, बीस बार अब तक गा चुके थे। यही वे गीत हैं जिनके साथ 'बन्द करो! इस गीत पर रोक है !' की चीख नहीं सुनने को मिलती थी।

"रुको ! रुको ! एकदम रुक जाओ !"

"क्या मामला है ?"

"हमारे आगे दूसरे क्षेत्र का जुलूस मुड़ रहा है। सड़क भरती जा रही है !"

हम इन्तज़ार करते हैं, और इन्तज़ार करते जाते हैं। नृत्यशाला की ओर से बर्फ़ीली हवा का एक झोंका आया और मेरी पीठ तक ठंडी ठिठुरन फैला गया। मैंने देखा प्रेउस के दाँत ठंड से कटकटा रहे थे। वह भी झंडा ऊँचा किये हुये है ? वह उसे छोड़ेगा नहीं। सामने, हमारी दाहिनी ओर दूसरा जूलूस धकियाता, राह बनाता सड़क की मोड़ पर घूम रहा था। हम अपने पैर पटकते रहे, अपनी बाहें थपथपाते रहे। मैं केथी के हाथ सहलाने लगा। उसका चेहरा छोटा सा है और बर्फ़ से जम-सा गया है। हमारा जुलूस कैसर विलहेम-स्ट्रैसी में घूम गया। हम लोग बुलोप्लाट्ज़ के काफ़ी निकट पहुँच गये थे। चौड़ी सड़क पर दोनों जुलूस अगल-बगल खड़े हो गये। लोग आठ-आठ की पंक्तियों में खड़े थे। वे इन्तज़ार करते रहे। हम बाईं ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे।

"आप लोग अभी तक यहाँ खड़े किस लिये हैं ?"

"इतनी जल्दी धीरज न खोइये ! आपको भी शीघ्र ही यहाँ खड़ा

होना पड़ेगा,'' दूसरे जुलूस में से किसी ने ज़ोर से हँस कर कहा। ''सारी सड़कें भर गई हैं। वे लोग कार्ल लीबकेनेच्ट हाउस के सामने से घंटों से गुज़र रहे हैं, बेटे!''

हम और दस गज़ आगे बढ़े। और फिर हम भी स्थिर खड़े हो गये। अब एक-एक पंक्ति में बारह-बारह आदमी हो गये। पूरी सड़क खचाखच भर गई थी और हर तरफ़ सर-ही-सर दिख रहे थे। सभी लोग गीत गा रहे हैं। आकाश शहर की रोशनियों को प्रतिबिम्बित करने लगा था। मकानों और दूकानों से स्त्रियाँ हाथों में भाप उगलते सॉसपैन और कप लिए हमारी ओर दौड़ी आ रही थीं।

''लो, लो, पियो; तुम लोग सर्दी से जम गये होंगे!''

उनके हाथ पावरोटी के कतरे लोगों को पकड़ाते चले जा रहे थे।

''बेकारों के लिए! वे भूखे होंगे!''

मेरे सामने खड़ा प्रेउस रोटी चबा रहा था और अपने हाथों को कप पर रख-रख कर गर्म कर रहा था।

''माहौल पिछले रविवार से बदला हुआ है, जब भूरी वर्दीधारी यहाँ आये थे।'' केथी ने कहा।

पुलिस कहाँ है? कहीं भी दिखाई नहीं पड़ती। जुलूस बढ़ता जा रहा है। वह रहा। बुलोप्लाट्ज़—पार्टी हाउस।

मकान के सामने के हिस्सों में पूरी लम्बाई तक लाल झंडे-ही-झंडे लहरा रहे थे। हमारे मुक्के सलामी देने के लिए हवा में लहरा उठे। गाना बन्द हो गया। मंच पर थॉलमैन खड़े थे। कुछ अन्य लोग भी उनके निकट खड़े थे।

मेरे पीछे खड़े किसी व्यक्ति ने फुसफुसा कर कहा—''यही है केन्द्रीय समिति।''

थॉलमैन का मुक्का और नुकीली टोपी के नीचे उसका चेहरा ही अब दिखाई पड़ रहा था। ''दो घंटों से इस बर्फ़ीली सर्दी में वहाँ खड़े

हुये थे," रोथेकर ने कहा। निकेल के चश्मे के पीछे उसकी आँखें चमक उठीं। थॉलमैन चले गये।

फट, फट, हमारे जूते बज उठे। हम बिना कुछ बोले मार्च करते हुये वहाँ से चल पड़े।

दो दिन बाद की बात है। मैं लक्ष्यहीन वालस्ट्रैसी में टहल रहा था। अभी अपराह्न हो ही रहा था। एकाएक किसी ने पीछे से मेरे कंधे को छुआ।

"हलो, एडी।"

एडी ने अपना सिर घुमा लिया ताकि उसकी दाहनी आँख मुझे देख सके। उसकी बाईं आँख की जगह एक झिलमिलाता मांस का गढ़ा मात्र था। वहाँ से उसके कान तक दो उँगलियों के बराबर चौड़ा एक लाल घाव फैला हुआ था। उनके उस कान का बाहरी हिस्सा एक साथ लपेट दिया गया मांस का छोटा-सा पिंड बन गया था। रूई की एक मोटी तह बीच में चिपकी हुई थी। बाएँ बाँह पर वह पीला फ़ीता बाँधता था, जिस पर अंधेपन के तीन काले निशान थे।

"मक्खियाँ मार रहे हो, क्यों ? कुछ समय है तुम्हारे पास ?"

"हाँ-हाँ, लेकिन क्यों ?"

"मैं सहायता केन्द्र जा रहा हूँ। हमेशा की तरह टीन लेने नहीं। जा रहा हूँ डाइरेक्टर पर अपने मन का गुबार निकालने। अपने दाँव-पेंच का पूरा भंडार साथ ले कर जा रहा हूँ।"

"ठीक है, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

एडी हर वक्त बातें करता रहता है। अपने मकान मालिक से मकान के किराये के संबंध में उसका झगड़ा हो गया था। उस पर दो महीने का किराया बाकी था। पहला महत्व पेट का है। आज मैं फ़ौंज से मिला था

था नहीं ? उसे अपनी चंदे की सूची का हिसाब-किताब कर लेना चाहिए। एरिक हाफ़मैन ने—'तीन धब्बे वाले एडी' ने—हम लोग उसे इसी नाम से पुकारते थे—युद्ध के दौरान एक हमले में भाग लिया था। उसकी आँख और एक कान के आधे हिस्से को एक हथगोला उड़ा ले गया था। उसके पास लोहे का सलीब (क्रास) है, अव्वल नम्बर, और घायलों के लिए निर्धारित सुनहला बिल्ला। जिस क्षण से मैंने उसके पास अंधों वाला फ़ीता देखा था तभी से मुझे विश्वास हो गया था कि उसके पास दाँव-पेंच की पिटारी—उसके युद्ध-पदकों की पिटारी—थी। वह पीला फ़ीता उस समय पहन लेता है जब उसे अधिकारियों के पास जाना होता है या जब वह हमारे साथ काम करता होता है। एडी की विशेषता यह थी कि वह बन्दरगाह की दीवारों पर और मकानों की त्रिअंकी छतों पर रस्सी की छोर से झूलते पटरे पर खड़े हो कर हमारे नारों को लिख देता था। लेकिन हमारे ऊपर नाजियों का हमला होने पर वह अपने घूसों का कमाल भी दिखा सकता है। वह अपनी एक आँख से ही अच्छी तरह देख सकता है। एडी दर्जनों बार अदालत में भी हाज़िर हो चुका है। जब नाज़ी गवाहों को उसकी शिनाख्त करना होता है, तो वे संदेह में पड़ जाते हैं, और इसी कारण वह बच जाता है। युद्ध में अंधे हुए लोगों के फ़ीते वाला आदमी और एक आँख वाला आदमी तब तक अदालत में हाज़िर न होता था जब तक कि जज उसके सैनिक कागजातों को तरतीब से लगा न ले। एडी को पहचानने में होने वाली यह कठिनाई आश्चर्यजनक न थी। जब तक कि किसी खतरे का आभास नहीं होता था, एडी अपनी शीशे की आँख पहने रहता था। खतरे का आभास मिलते ही वह शीशे की आँख अपनी जेब में डाल लेता और तुरन्त अंधों वाला फ़ीता पहन लेता था।

मैं सहायता केन्द्र के प्रतीक्षालय में बैठ गया। एडी को अभी-अभी डाइरेक्टर के कमरे में बुलाया गया है। गंदी भूरी दीवारों से सटा कर

रखी बेंचें ठसाठस भरी हुई थीं, और कमरे का बाकी हिस्सा भी भरा हुआ था। सभी ने प्योंदे लगे कपड़े पहन रखे थे और उनके चेहरे दुबले-पतले, मरियल-से लग रहे थे। मेरे दाहिने तरफ दो स्त्रियाँ बातें कर रही थीं।

"गोश्त ? हरी सब्जियों के अलावा गोश्त तो मैं कभी पका ही नहीं सकी।"

"तब तो तुम्हें सिर्फ़ भाप से पातगोभी ही पकानी रहती होगी, उसे उबालती भी नहीं होगी, क्योंकि उबालने से उसके सारे पौष्टिक तत्व समाप्त हो जाते हैं।"

"भाप से पकाती हूँ ? मगर वह भी तो उतना ही मँहगा पड़ता है। इसके अलावा इसमें घी भी ज्यादा खर्च होता है।"

हवा में भारीपन था, कोने में रखे स्टोव से गले को जला देने वाली गर्म लहरें उठ-उठ कर आ रही थीं। लेकिन सभी लोग उसकी ही ओर बढ़ने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि उन सबों को गर्माहट की जरूरत थी। एक नाटी विवर्ण स्त्री मेरे बाईं तरफ़ बैठी थी। वह एक बच्चे को अपनी बाहों में झुला रही थी। बच्चा धीरे-धीरे रो रहा था और हिचकियाँ ले रहा था।

"चुप हो जा मुन्ने—चुप हो जा—चुप हो जा—" वह उसे चुप करा रही थी।

" 'अभी तो ये चलेंगे। हम तुम्हें नया जोड़ा नहीं दे सकते। अधिक-से-अधिक हम इसकी मरम्मत कर सकते हैं,' उन लोगों ने एक हफ़्ता पहले ऐसा कहा था।"

झड़ते हुये सफ़ेद बालों वाला एक व्यक्ति अपने पड़ोसी को अपने जूते दिखा रहा था। जूता पायताबे के आर पार फट गया था और अगल बगल भी मुँह बाये था। उसके भूरे मोज़े फटे हिस्से के अन्दर से दिख रहे थे।

"लेकिन मैं भी ऐसा वैसा नहीं हूँ, सालों के पीछे पड़ा रहूँगा !

वे साले समझते हैं कि वे हमारी इच्छाओं से जैसे चाहें खेल सकते हैं, है न ?" उस व्यक्ति ने अपनी बात जारी रखी ।

उसका नौजवान पड़ोसी तिरस्कारपूर्वक हँस पड़ा ।

"एडोल्फ़ तुम्हें जूतों की नयी जोड़ी देगा ! वह डुसेल्डोर्फ़ बैंक से जर्मनी के प्रमुख बैंकर श्क्रॉडर की कोठी पर व्यापारिक बातचीत कर रहा है ! आपको मालूम नहीं, वह सारी बातचीत आपके जूतों के बारे में ही तो हो रही है ?" उस नौजवान ने निहायत कटु, घृणामिश्रित स्वर में पूछा ।

"दोगला !" दूसरे ने कहा । "गोबेल्स अपने अखबार ऐंग्रिफ़ में उन लोगों के खिलाफ़ लिखा करता था !..."

दफ्तर वाले कमरे का दरवाजा खुल गया । मुझे एडी की आवाज सुनाई पड़ने लगी—"तो आप मुझसे यह आशा करते हैं कि मैं भूखा रहूँ । आप मुझे लड़ाई के मैदान में खाइयों में ही छोड़ आ सकते थे, आप मुझे क्यों वहाँ से उठा लाये ? मैं आप से एक बार फिर कहे देता हूँ—मैं अभी-अभी आपके खर्चे पर खाना खाने जा रहा हूँ—एडिगार होटल में । बिलकुल आपके खर्चे पर खाने जा रहा हूँ !"

"मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ...!" दूसरे कमरे से एक तेज क्रोधित आवाज आयी ।

एडी ने जोर से दरवाजा बन्द कर दिया और हमारे पास आ गया ।

"आप लोगों में से कौन-कौन लोग भूखे हैं ?"

खामोशी छाई रही । सभी लोग उलझन में पड़े आश्चर्य से उसकी ओर देखते रहे ।

"क्या मतलब है आपका, कौन-कौन भूखा है ? खाली पेट रहने से हम सब को उदरशूल हो गया है ।" नौजवान आदमी ने कहा ।

"तो मेरे साथ आओ—पाँच आदमी ! भरपेट भोजन कराऊँगा । उसकी कीमत मैं दूँगा ।" एडी ने कहा ।

कोई अपनी जगह से नहीं हिला ।

लेकिन कुछ मिनट बाद ही हम अपने रास्ते पर चल रहे थे। हम पाँच आदमी थे। वह नौजवान, जो मेरे लिए अपरिचित था, और दो अन्य कामरेड, जिन पर मैंने कमरे में ध्यान नहीं दिया था, हमारे साथ थे।

एग्रिगार रेस्तराँ में बैठ कर एडी ने कहा—"जिसे जो कुछ खाना हो खाओ। आप लोगों को जो भी पसंद हो, मँगा लीजिये। समझ लीजिये आज इतवार है।"

मैंने एक कटलेट का आर्डर दिया। लेकिन अन्य दो कामरेड एकाएक शर्माने लगे। उन लोगों के लिए स्वयं एडी ने वेटर को आर्डर किया—"सुअर के टखने लाओ, और साथ में रोटियाँ भी लाओ। जरा बड़े टखने लाना।"

हम लोग खाने पर जुट गये। एडी बातें कर रहा था। हम व्यग्रता-पूर्वक उसकी बातों पर हामी के भाव से सिर हिला रहे थे और मुस्करा रहे थे। मुझे इस सारे कांड पर कोई प्रसन्नता नहीं हो रही थी।

हमारे खाना समाप्त करते ही एडी ने पूछा—"अब एक-एक सिगार हो जाय?" हमने अपने कंधे हिला दिये। लेकिन एडी ने आर्डर दे दिया। एडी ने स्वयं दो प्लेट खाई थीं। उसने अपने लिए दोहरा कर कुछ मँगाने से दृढ़तापूर्वक इनकार कर दिया। हमारे मग खाली हो गये थे, सिगार अंतिम छोर तक पिये जा चुके थे।

"अब आप लोग यहाँ से नौ दो ग्यारह हो जाइये। मैं यहीं रुकूँगा।" एडी ने कहा।

हमने उसे यह बात दोहराने का मौका नहीं दिया। वेटर हम लोगों को पीछे से देखता रहा। मुझे अपनी गर्दन के पिछले हिस्से पर उसकी निगाहों का स्पर्श महसूस हो रहा था। बाहर पहुँच कर मैंने खिड़की के एक कोने से झाँक कर अंदर देखा। एडी ने वेटर को इशारे से बुलाया और कुछ कहा। वेटर घबरा कर हाँफते-हाँफते मैनेजर को बुलाने के लिए भागा। मैनेजर जोर-जोर से हाथ हिला रहा था और उसका

चेहरा गुस्से से सुर्ख हो गया था। सभी मेजों के इर्द-गिर्द बैठे लोगों के सर उसी तरफ़ घूम गये। मैं भी इस चक्कर में...अपने आप को क्यों फँसाऊँ? मैं दूसरे कोने पर चला गया और वहीं खड़ा इन्तजार करने लगा। थोड़ी ही देर बाद दो पुलिस के सिपाही सड़क से दौड़ते हुये गये। कुछ ही देर बाद वे रेस्तराँ से बाहर आ गये, एडी उनके बीच में था। वे उसे अगली सड़क पर स्थित पुलिस स्टेशन की ओर ले गये। मैं काफी दूरी से उनका पीछा करता हुआ गया, फिर एक मोड़ पर रुक कर इन्तजार करता रहा। बीस मिनट बीता, आधा घन्टा बीत गया। मुझे कँपकँपी आने लगी। तभी एडी दिखाई दिया, वह पुलिस स्टेशन की इमारत से बाहर आ रहा था। अकेला। उसने मुझे इशारा किया, फिर मुस्कराया। अगली मोड़ पर मैं उससे जा मिला।

"तुम जिन्दा वापस आ गये?"

"क्यों, ऐसी भी क्या गड़बड़ी थी?" एडी हँस पड़ा। मैंने वहाँ सार्जेंट के सामने मेज पर अपने दाँव-पेंच का पिटारा खोल कर रख दिया। मैंने उससे कहा, "क्या मुझे अब भूखों मरना होगा, मुझे जो अगले मोर्चे का सैनिक था?"

"और एशिगर रेस्तराँ में क्या हुआ?"

"भई वेटर तो अपनी ही जमात का एक आदमी है," एडी ने कहा—"इसलिए मैंने मैनेजर से कह दिया कि इसमें उस बेचारे की कोई गलती नहीं थी। मैंने कहा—'आप सहायता केन्द्र को फ़ोन कीजिये, केन्द्र का डायरेक्टर सब कुछ जानता है।'"

"वो लोग तुम्हें खाने की कीमत अदा करने को मजबूर करेंगे।"

एडी ने मुझे टहोका मार कर कहा—"अजी वे कर ही क्या सकते हैं? ज्यादा से ज्यादा आठ या हो सकता है चौदह दिन की कैद दे देंगे। और इतने दिन तो मैं बैठे-बैठे गुजार सकता हूँ।"

३० जनवरी का दोपहर के समय वालस्ट्रैसी के मकानों और फ्लैटों मे यह अफ़वाह फैल गयी कि हिटलर जर्मन राज्य का अधिपति हो गया। हिटलर—नहीं, नहीं मुझे यह खबर खुद अपनी आँखों से पढ़नी चाहिये। उस मोड़ पर अखबारों के दोपहर के संस्करणों को तो लोगों ने हाकरों के हाथों से छीन-छीन कर ले लिया। अखबार की मोटी-मोटी हेडलाइनें जैसे मकानों से, सीढ़ियों से मुझे घूरती रहीं, और अब मेरे सामने मेज़ पर पड़ी हैं।

एडोल्फ़ हिटलर : जर्मन राज्य के अधिपति !

मैंने इसके नीचे की पंक्तियों को पढ़ा, बार-बार पढ़ा। फ्रॉंज़ ! मुझे फ्रॉंज़ से मिलना चाहिये ! तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैंने देखा फ्रॉंज़ ही था ! मैंने उसे अन्दर बुला लिया। उसने मुझसे हाथ मिलाया, फिर धीरे-धीरे गलियारे में चलने लगा, जैसे मेरा कमरा ढूंढ़ रहा हो, जैसे वह पहली बार वहाँ आया हो। फिर उसने अपनी टोपी उतार दी। उसके सुन्दर बाल पसीने से तर थे, उसके होंठ पतली रेखा मात्र दिख रहे थे। वह बूढ़ा-सा दिख रहा था। मुझे लगा जैसे उसे इसके पहले देखे हुये मुझे जाने कितने वर्ष बीत गये हों।

"तुम अर्नस्ट सच्वीबस के साथ चले जाओ और पाँच-पाँच के अपने जत्थों को खबर कर दो," उसने कहा—"कि शाम को सात बजे प्रदर्शन है। हमारे इकट्ठे होने का वही पुराना स्थान रहेगा। इस बात का ध्यान रखना कि सारा काम शीघ्रतापूर्वक हो जाय !"

उसकी भूरी आँखें चमक उठीं, और वह सारी बातें बहुत संक्षेप मे बताता रहा, जैसे कि वह कोई ऐसी बात दुहरा रहा हो जो बहुत पहले ही तय हो चुकी हो। वह अखबार की रिपोर्ट को पढ़ चुका है; इस समय वह उससे एक कदम आगे की बात सोच रहा है।

"मैंने जो काम बताया उसका ध्यान रखना, मुझे अब जाना चाहिये !"

मैं उससे बात करना चाहता था, उससे वह सारी बातें कह डालना चाहता था जो मेरे अन्दर घुमड़ रही थीं। लेकिन फ्रांज दरवाजे तक पहुँच चुका था। उसने सिर हिला कर मेरा अभिवादन किया और लम्बे डग भरता हुआ सीढ़ियाँ उतरने लगा।

प्रदर्शन करो—फिर से ? जैसे कि हम एक बार फिर प्रदर्शन कर के अपने आप को सन्तोष देना चाह रहे हों ! हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए रह ही क्या गया है ? परसों पहली फरवरी है। उस दिन मैं ग्रेडर परिवार में जाना चाहता था। केथी और मैं, दोनों शादी करना चाहते थे। लेकिन पिछले सप्ताह उन लोगों ने विली को अपने यहाँ ठहरा लिया। वह भागा हुआ है। उसने बीमार गणतन्त्र की फ़ौज की बैरेकों में कुछ पैम्फलेट पहुँचा दिये थे। अतः उसके आ जाने से सब कुछ ज्यों का त्यों ही रह गया। दो कमरों में हम पाँच लोग नहीं रह सकते।

शाम आयी। हम अपनी सड़क पर छोटे-छोटे जत्थे बना कर चल पड़े। हमारे जत्थे चींटियों के ऐसे छत्ते जैसे लग रहे थे, जिसे किसी ने अस्तव्यस्त कर दिया हो। सभी मकानों के मुख्य द्वार पर खड़े लोग उत्तेजित स्वर में गप कर रहे थे। हमारा सभा स्थल मनुष्यों का लहराता हुआ सागर जैसा दिख रहा था, जिसने चार-चार की पंक्तियाँ बनाना शुरू कर दिया था। बड़ा तनावपूर्ण वातावरण था। मुझे कहीं एक भी झंडा दिखाई नहीं दे रहा था। फिर मुझे इसके कारण का एहसास हुआ : झंडे फ़ौरन ही जब्त कर लिये जायँगे। प्रदर्शन की सूचना तक नहीं दी गई है। मूर्खतापूर्ण विचार है यह। ऐसा कैसे हो सकता है ? पुलिस कहाँ है ? एक भी पुलिस वाला दिखाई नहीं पड़ता।

वह हमारा जत्था था। "शाम हो गयी," मैंने शीघ्रतापूर्वक कहा।

केथी ने अपना हाथ मेरे हाथों में दे दिया। वह प्रसन्न थी।

"क्या विली भी यहाँ है ?"

मेरा प्रश्न सुन कर वह मेरी ओर आश्चर्य से देखने लगी।

"नहीं। उसे बड़ी सावधानी से रहना है।"

"मैं भवन सुरक्षा दलों के साथ मार्च करूँगा," मैंने तेजी से कहा। मैं नाराज हो उठा था—स्वयं अपने आप से बिली के सम्बन्ध में ऐसा मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछ बैठने के कारण।

"वे दल तो आगे हैं। मैं यहीं रहूँगी।" कैथी ने उत्तर में कहा।

कुछ ही क्षण व्यतीत हुये थे। आगे जुलूस चलना शुरू कर रहा था। मैं दौड़ पड़ा। बाईं ओर एकाएक एक लाल झंडा जुलूस के ऊपर लहरा उठा—फिर एक और झंडा लहराया। और पुलिस भी आ धमकी। छोटे-छोटे जत्थों में पुलिस वाले जुलूस के अगल-बगल दौड़ने लगे। उनकी टोपियों के पट्टे उनकी ठुड्डियों के नीचे कसे थे। पुलिस की एक लारी भी जुलूस के बगल में आ गयी, जिसमें नीली वर्दीधारी ठसाठस भरे हुये थे। जुलूस कितना लम्बा है! हट्टे-कट्टे नौजवानों की कतारें मार्च करती हुई आगे आ गयीं—यही भवन सुरक्षा दल हैं। रिचर्ड हूटिंग और फ्रांज जैंडर जत्थे के आगे-आगे मार्च कर रहे हैं। मेरे उनके निकट पहुँचने पर उन्होंने मुझ पर शीघ्रतापूर्वक नजर डाली।

"इस प्रदर्शन के बाद वे हमें अब और कोई प्रदर्शन नहीं करने देंगे।" मैंने फ्रांज को कहते सुना।

उसकी आवाज में बड़ी कटुता थी।

हूटिंग का चेहरा विकृत हो उठा।

"हाँ—और तब पार्टी को भी कुचला जायगा।"

> **निपट लो अत्याचारी से**
> **चुकता कर लो उससे हिसाब**
> **ओ फ़ौज गुलामों की जागो, उठो जागो!...**

हम यह गीत गाने लगे। एकाएक ऐसा लगने लगा जैसे हमारे लिये यह कोई नया गीत हो, जैसे हम इसे पहली बार गा रहे हों। इसने मुझे उद्दीप्त कर दिया। मेरे हृदय की धड़कनें तेज हो गयीं।

उठो छेड़ दो जंग—
मानवता के अधिकारों की....

गीत समाप्त हो गया। अब केवल हमारी पग-ध्वनि ही सुनाई पड़ रही थी। पुलिस के आदमी बहुत कम थे। वे वहीं रुक गये थे। वे समझ गये थे कि उनके सामने मात्र प्रदर्शनकारी ही नहीं हैं, बल्कि एक अत्यधिक उत्तेजित भीड़ भी है—दृढ़-प्रतिज्ञ और घृणा से भरी हुई। सकरी, आवश्यकता से बहुत कम रोशनी वाली सड़कें, पटरियों पर जनता की कतारों पर कतारें; वे कोई कदम उठाने के पहले बार-बार सोचेंगे...।

फ्रांज ने रिचर्ड हूटिंग की ओर देखा।

"आज कुछ ही लोग इकट्ठे हुये हैं। लेकिन अगल-बगल की सड़कें और गलियाँ भरी हुई हैं। वे सभी लोग यहाँ मौजूद हैं, बहुत से सोशल डिमाक्रेट लोग भी आये हैं।"

"अगर हम लोगों को सूचना पहुँचाने में इतनी देर न हो जाती तब तो...।"

एकाएक एक स्पष्ट, दृढ़ स्वर ने नारा लगाया—"हिटलर सरकार का नाश हो! फ़ासिस्टवाद का नाश हो!"

"नाश हो! नाश हो! नाश हो!" हजारों कंठों से आवाज फूट पड़ी।

पुलिस की लारी की हेडलाइटें, जो अभी तक खिड़कियों पर नजर रख रही थीं, अब उस स्थल की ओर घूम गयी जहाँ से नारे लगाये गये थे। पुलिस के सिपाहियों के जत्थे दौड़ पड़े। मैंने देखा वे उस स्थान पर जुलूस पर टूट पड़ने को तैयार थे। लेकिन शीघ्र ही उनके जत्थे अलग-अलग बँट गये। कुछ जुलूस के अगले हिस्से की ओर हमारे निकट आ गये, कुछ जुलूस के पिछले हिस्से की ओर दौड़ गये, जहाँ जुलूस सर्प की तरह सड़क की मोड़ पर घूम रहा था। अब जुलूस की हर

कतार से नारे उठ रहे थे। हर बार नारा लगने पर पुलिस के सिपाही नारा लगाने वाले हिस्से की ओर लपकते थे। लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि वे हमें केवल डराना-धमकाना चाहते थे, कि वे स्वयं बहुत चिन्तित और परेशान थे। ऐसे ही अन्य अवसरों पर वे इससे बहुत कम उत्तेजना पर ही शक्ति का इस्तेमाल कर बैठते थे। पुलिस की लारी धीरे-धीरे जुलूस के पीछे-पीछे आ रही थी। लारी की हेडलाइटें जैसे जुलूस की एक-एक कतार को टटोलती-सी लग रही थीं। वे किसी आश्चर्यजनक घटना से अपनी रक्षा करने के लिए सावधानी बरतते से लग रहे थे।

हम एक कारखाने के सामने से गुजरे। प्रवेश द्वार पर एक वर्दी-धारी दरबान खड़ा हुआ था। कारखाने की खिड़कियों में रोशनी जल रही थी।

"फ्रांज !"

उसने मेरी ओर देखा।

"हमें कल सुबह-सुबह ही सभी कारखानों पर पहुँच जाना चाहिये। अगर वो लोग काम जारी रक्खेंगे तो..."

"तुम लोगों को हमारे साथ बाद में आना है, लेकिन बहुत खुल कर नहीं। सारी व्यवस्था पहले ही से हो चुकी है।" उसने संक्षेप मे कहा।

एक घंटे बाद की बात है। रिचर्ड हूटिग और फ्रांज जेंडर मेरे आगे-आगे दस गज की दूरी पर चल रहे थे। सड़कें खाली थीं, उनींदी सी। वे एक मदिरालय में दाखिल हो गये। मैं भी उनके पीछे-पीछे गया। वे शराब के काउन्टर पर खड़े बियर की चुस्कियाँ ले रहे थे। इस तरह के मौके पर वे शांतिपूर्वक बियर पीने के अभ्यस्त थे। क्यों, किसलिये...?

अरे, वे लोग जाने भी लगे। सड़कें तो जैसे खत्म होती ही नहीं मालूम होतीं। क्यों, अब तो हम लोग अपने कस्बे की सरहद में रह नहीं गये ! वे फिर एक मदिरालय में गायब हो गये, और मैंने उन्हें फिर शराब के काउन्टर पर खड़े पाया। इस बेवकूफ़ी का मतलब क्या है ? मैं फ्रांज के पास जाना चाहता था, उससे वह सब-कुछ कह डालना चाहता था जो मैं उसके बारे में सोच रहा था। लेकिन यह क्या, वे बाहर चले गये। बाहर जाते हुये उन्होंने मेरी ओर देखा तक नहीं। उनके चेहरे के भाव ऐसे थे कि मेरे शब्द मेरे गले में ही अटक कर रह गये। वे इस तरह व्यवहार कर रहे थे जैसे मुझे आदम के जमाने से जानते ही न हो ! मैं फिर उनके पीछे-पीछे दौड़ चला। यह सारी हरकत कितनी मूर्खतापूर्ण है। ये लोग सनक गये हैं—पूरी तरह सनक गये हैं ! एक तीसरा मदिरालय सामने दिखाई दिया। इस समय तक मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि बेवकूफ की तरह उनके पीछे खिचा नहीं चला जाऊँगा। उन दोनों ने फिर बियर का आर्डर दिया। एक मेज पर पौंटून खेलते चंद लोगों को छोड़ कर मदिरालय के अन्दर बहुत ही कम आदमी थे। ताश के पत्ते मेज पर जड़े लकड़ी के तख्तों पर फेंके जा रहे थे। मैंने फ्रांज और रिचर्ड को अपनी खाली गिलासें रखते देखा। अगर अब वे मेरे सामने से गुजरे तो... लेकिन नहीं, धीरे-धीरे टहलते हुये वे कमरे को पार कर गये और एक दरवाजे के पीछे गायब हो गये। यह कमरा खूब भरा हुआ था। मैं एक कोने में बैठ गया। चारों ओर दिखते चेहरे मेरे लिये अपरिचित थे। फ्रांज और रिचर्ड दूसरी ओर बैठे हुये थे। एक टेढ़ी रखी मेज के सामने एक लम्बा, लाल बालों वाला व्यक्ति खड़ा हुआ था। वह एक-एक करके हर आदमी पर नजर डालता और केवल एक शब्द ही हर आदमी से बोलता—"आप ?"

हर एक के लिए यह एक पूर्ण प्रश्न था। प्रश्न के जवाब भी इतने ही संक्षिप्त मिल रहे थे।

"रोट हिल्फ़े"—"इकाई २१७"—"इंटरनेशनेल अरबीटरहिल्फ़े"—इकाई २७४"—

फ्रांज ने हम लोगों की इकाई का नम्बर बताया।

"भवन सुरक्षा दल," हुटिंग ने बताया।

"आप ?"

लाल बालों वाले व्यक्ति ने आँखें मिचमिचा कर मेरी ओर देखा। उसकी नजर से मैं घबरा उठा।

"...मैं...मैं..."

"इसे कौन जानता है यहाँ ?" मैंने उसे बड़े तीखे स्वर में प्रश्न करते सुना।

"मैं जानता हूँ—आदमी ठीक है !" दूसरी ओर बैठे फ्रांज ने जवाब दिया। उसके बगल में बैठे रिचर्ड ने भी अपनी उँगली उठा दी, जिसका अर्थ था—"मैं भी इसे जानता हूँ।" तो रिचर्ड भी मुझे अच्छी तरह जानता है ! एकाएक मेरे मन में इस बात की प्रसन्नता उभर उठी कि वह मुझे जानता है। हाँ, मुझे तो इस बात से गर्व भी अनुभव हो रहा था। वास्तव में मैं कितने दिनों से रिचर्ड को जानता हूँ ? तीन वर्ष से। देखो तो उसे, किस तरह झुक कर बैठा हुआ है। उसका थलथल शरीर अब और भी नाटा मालूम हो रहा था। उसके चेहरे पर हमेशा ऐसी गभीर भावना रहती थी, जैसे वह लगातार कठिन प्रश्नों पर माथापच्ची कर रहा हो। उसके मुँह के इर्द-गिर्द और घनी भौंहों के ऊपर माथे पर पड़ी झुर्रियों की रेखाएँ हमेशा से ज्यादा गहरी लग रही थीं। उसके घने बाल अस्तव्यस्त लटक रहे थे। यहाँ वह किस तरह बातें करेगा ? हमेशा की तरह, संक्षिप्त वाक्यों में। मोटे तौर पर उसी तरह वह हमेशा आधा भौंकता हुआ सा बोलता है। रिचर्ड।

मैं आखिरी आदमी था जिससे प्रश्न किया गया था। सामने खड़ा लाल बालों वाला व्यक्ति अब बोल रहा था :

"कामरेडो ! हमें केवल निम्नलिखित कारखानों से मतलब है . दि एरोन वर्क्स, ज्वीटुश्च, दि वर्नर वर्क्स और सीमेन्सस्टैड्ट स्थित पावर वर्क्स । परचे आज रात में झोंपड़ी वाली बस्तियों में उन्हीं स्थानों पर छपेंगे जो आपको मालूम है । कल सुबह बहुत तड़के ही आप लोग परचे ले आयें ।"

वह चुप हो गया । उसने कतारों में बैठे लोगों पर नज़र घुमाई ।

उसने फिर बोलना शुरू किया—"तब तक किसी भी संकटपूर्ण स्थिति का सामना करने को तैयार रहिये । आप लोग अपने कामरेड साथियों को यह बात पहले ही बता ही चुके होंगे । यह बात..."

दरवाज़ा खुला । एक नौजवान कामरेड वक्ता के पास गया । उसके चेहरे पर घबराहट की झलक थी, वह चुका-चुका-सा लग रहा था । उन दोनों ने धीरे-धीरे बातचीत की, फिर वह नौजवान कामरेड चला गया । उस लाल बालों वाले नेता ने फिर कहना शुरू किया :

"इस समय बर्लिन की समस्त एस० ए० सैनिक टुकड़ियाँ सरकारी कार्यालयों के इर्द-गिर्द मशाल का जुलूस बना कर निकली हुई हैं । वे पूरी तरह लड़ने को तैयार हो कर लौटेंगे—सावधान रहने का यह भी एक विशेष कारण है । सारी बातें स्पष्ट हो गयीं ? या किसी को कोई सवाल पूछना है ?

खामोशी छाई रही ।

हम लोग एक-एक करके वहाँ से निकलने लगे । सड़कों पर एकदम सन्नाटा है । इस अस्वाभाविक डरावनी खामोशी ने मेरी स्नायुओं में तनाव पैदा कर दिया । मेरा सर दर्द करने लगा ।...

•

टाउन हॉल की घड़ी ने सवा ग्यारह का घंटा बजाया । हम रोथेकर के यहाँ हॉल में खड़े थे । मुख्य दरवाजा जोर की आवाज़ के साथ खुला । गॉल टीचर्ट ने प्रवेश किया ।

"कोई नयी बात ?"

"नहीं। मशालों का जुलूस अभी समाप्त नहीं हुआ होगा।"

"हो सकता है यह हमारी कल्पना मात्र हो कि तैंतीस नम्बर वाले आज रात कुछ कर गुज़रने की कोशिश करने जा रहे हैं। उन लोगों के पास अपनी 'विजय' का उत्सव मनाने के लिए ही आज बहुत मसाला है।"

"मुझे आश्चर्य होगा अगर वे अपनी इस 'विजय' का स्वाद हमें नहीं चखाते। अब उन्हें ऐसा करने से कौन रोकने वाला है ? पुलिस ? वे नयी सरकार के इन राजनीतिक गुंडों के खिलाफ़ कोई कदम उठाने के पहले बीसों बार सोच-विचार करेंगे। नयी सरकार अभी पूरे बारह घंटे पुरानी भी नहीं हुई है- लेकिन यह उनकी रोज़ी-रोटी का सवाल है ! अपनी नौकरी या अपनी पेंशन को कौन ख़तरे में डालेगा ?"

फ्रॉंज़ कोने में खड़ा बोले जा रहा था, जहाँ रोथेकर का निकेल का चश्मा चमक रहा था।

"अभी-अभी मैंने जब सड़कों के चक्कर लगाये तो मुझे पुलिस की एक भी टोपी दिखाई नहीं दी। उन लोगों ने वास्तव में इन बातों पर सोचना-विचारना शुरू भी कर दिया है—नियमानुसार उनका एक जत्था हर एक क्षण के बाद आता रहता है !"

पॉल टीचर्ट ने अपने कोट के कालर को अपने कान तक उठा लिया था। उसने दबी ज़बान कहा—"यह बात ठीक है। अगर हम अपनी रक्षा स्वयं नहीं करते, तो हमारे ख़ात्मे का दिन आ गया। हम ब्राउन्स्व-वीग और आल्टोना में यह तमाशा देख चुके हैं। आल्टोना के साथी बिल्कुल ठीक थे।"

" 'स्टानी' को चेतावनी दे दी गयी ?" रोथेकर ने पूछा।

'स्टानी' उस स्थान का संक्षिप्त नाम है, जहाँ हमारे श्रमिक सुरक्षा दलों ने अपना मुख्यालय बना रक्खा था।

निस्सन्देह। उनके पास बाइसिकिल पर अपने गश्त लगाने वाले भी हैं।"

फ्रांज ने खखार कर अपना गला साफ़ किया।

एक भी शब्द अधिक समय तक नहीं बोला जा रहा था। फिर रौथे-कर की आवाज आयी—लग रहा था जैसे वह आवाज बहुत-बहुत दूर से आ रही हो :

"मैंने सारे मसले पर अकसर सोचा-विचारा है, फ्रांज ! हम इतने सारे लोगों ने इतने दिनों तक क्या किया है, क्या-क्या झेला है ? मैंने भी। चार साल तक युद्ध में धूल फाँकी गयी और खून से होली खेली गयी। स्पार्टेकस लीग की याद करो, सन उन्नीस में, फिर तेइस में......"

बाहर एक मोटर कार के गुजरने की आवाज आयी। हम बाहर झाँकने लगे। एक टैक्सी मात्र थी।

"...फिर तेइस में। उस समय हम भी बैठ कर इन्तजार करते थे—शुरुआत होने का। आज फिर हमारा जीवन ही खतरे में पड़ गया है !"

"क्रान्ति के अपने उतार-चढ़ाव होते ही हैं," फ्रांज ने जवाब में कहा।

टीचर्ट ने अँगड़ाई ली, जँभाई ली, फिर कहा—"कभी-कभी तो इन बातों से मुझे ऐसा एहसास होने लगता है कि सारी स्थिति बड़ी निराशाजनक है। हजारों लोग मारे जा चुके, मर चुके। पिछले वर्षों में कैद बामशक्कत, उत्पीड़न, अत्याचार का बोलबाला रहा है। नाज़ी लोग हर वक्त अपने 'ओल्ड गार्डों' की तारीफ़ के पुल बाँधते नहीं अघाते। दोगले कहीं के ! वे हर समय अपनी जेबों में अपनी रिवाल्वरें रखते थे और फिर भी बच निकलते थे—अदालतें जो उनके पक्ष में थीं। ग़द्दार 'ओल्ड गार्ड'।'

मुख्य द्वार झोंके से खुल गया । एक झटके से हमारी गर्दनें घूम गयीं । अर्नेस्ट सच्चीवस था । वह अपने हाथ हिला रहा था, साँस लेने की कोशिश कर रहा था ।

"नाज़ी लोग—एक गश्ती साइकिल वाला यहाँ आया है । वे लोग आ रहे हैं ।"

हम तेजी से बाहर की ओर झपटे ।

"वे लोग सीधे यहीं आयेंगे, पूरा-का-पूरा तूफ़ान आ रहा है," साइकिल सवार ने जल्दी-जल्दी सूचना दे डाली । वह एक नौजवान आदमी था, उसने एक नुकीली टोपी पहन रक्खी थी ।

"रिचर्ड और सुरक्षा दलों को सूचना दे दो ।" फ्राँज ने आदेश दिया ।

साइकिल सवार दौड़ता हुआ बाहर निकल गया । फ्राँज घूम कर खड़ा हो गया ।

"पदाधिकारियों को सावधान कर दो ! हर एक कुछ कामरेडों के साथ जाय । रोथेकर को मेरे ही साथ रुकना है ।"

कामरेड लोग हॉल से तेजी से निकलने शुरू हो गये थे । पर्दे खड़-खड़ा कर गिरा दिये गये थे ।

हमने इमारत के सामने के दरवाज़ों को फटाफट खोल दिया, भाग कर सामने आँगन में पहुँच गये और एक साथ काली दीवारों की ओर मुँह करके चिल्लाने लगे :

"सुनो भाइयो । जाग जाओ, जाग जाओ ! नाज़ी लोग वाल्स्ट्रैसी पर हमला कर रहे हैं ।"

सभी खिड़कियों में रोशनियाँ कौंध गयीं । लोग सीढ़ियों पर दौड़ते हुये से उतरते चले आये । सड़क की ओर वाली खिड़कियों की सिट-किनियाँ फटाफट खुलने लगीं । एक आदमी केवल ड्रेसिंग गाउन पहने हुये ही मेरे पास दौड़ा चला आया; गाउन के नीचे उसने केवल नाइट-

शर्ट पहन रखी थी। हमारी पूरी गली जाग उठी है। गली की मोड़ पर से एकाएक एक गीत के स्वर सुनाई पड़ने लगे।

सड़क को साफ़ करो भूरी टुकड़ियों के लिए
हटो-बचो कि स्टार्म ट्रु.पर आते हैं!

वे गा नहीं रहे थे चीख़ रहे थे। गीत के आगे के शब्द कान के पर्दे फाड़ देने वाली सीटियों और चीखो चिल्लाहटों के बीच खो गये।

"नाश हो! नाश हो! लाल मोर्चा! लाल मोर्चा!"

मैंने देखा एक काला जन-समूह तेजी से हमारी ओर बढ़ता चला आ रहा था।

वे लोग मार्च नहीं कर रहे थे। वे झपटते हुये आ रहे थे, गहरी भीड़ के रूप में आगे बढ़ते चले आ रहे थे। एकाएक उस जन-समूह के बिलकुल बीचोबीच विस्फ़ोट-सा हुआ। फूलों के गमले फेंके गये थे वहाँ। भीड़ के बीच से एक उन्मत्त गर्जन उठा, और फिर एक चीख-जैसी तीखी आवाज़ आयी—"खिड़कियाँ बन्द करो! सड़कें खाली कर दो!" तो वे पुलिस की भूमिका अदा करना चाहते हैं। वे और निकट आ गये। मैंने देखा उनके कंधों के पट्टों के बक्सुये और उनकी पेटियों के बक्सुये लैम्प की रोशनी में चमक रहे थे।

मैंने फ्रांज़ की बाँह पकड़ ली।

"वह देखो। वह देखो। एक पुलिस का सिपाही!"

"हाँ।"

एक अकेला पुलिस का सिपाही जुलूस के सामने दौड़ कर आ गया। उसकी लोहे की टोपी चमक रही थी। एक भूरी वर्दीधारी उसके बगल में दौड़ता हुआ आया। मैंने उस पुलिस के सिपाही को उस भूरी वर्दीधारी से बड़े उत्तेजित स्वर में बातें करते देखा। लेकिन भूरी वर्दीधारी घूम कर खड़ा हो गया और चीख़ उठा। उस अव्यवस्था और उपद्रव की आवाज़ों के ऊपर उसकी चीख़ गूँज उठी :

"अगली कतार वालो । खिड़कियों पर गोली चलाओ !"

रोथेकर ने फ्रांज के कपड़े की छोर जोर से दबोच ली। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था।

"सुअर ! सुअर ! सुअर !"

वर्दीधारी जन-समूह अस्तव्यस्त समूहों में आगे बढ़ रहा था। मकानों की दीवारों पर लगातार गोलियाँ कड़कड़ा रही थीं। अँधेरी गली में रिवाल्वर से निकलती चिनगारियाँ चमक रही थीं। गोलियों के निशाने धीरे-धीरे झुक कर हमारे इर्द-गिर्द फैलते जा रहे थे। खिड़कियों से ईंट-पत्थर, गमले उस भीड़ पर अभी भी गिर रहे थे, जिनकी आवाजें रह-रह कर गोलियों की आवाज़ के ऊपर गूँज जाती थीं। गली के हर मकान से चीखें-चिल्लाहटें आ रही थीं। "खूनी सुअर ! हत्यारे !" मेरे गले में जैसे कुछ अटक गया। मैं काँप उठा। अब मैं अपने ऊपर नियन्त्रण नहीं रख सकता। एकाएक मैंने देखा उस पुलिस के सिपाही ने जुलूस के सामने दौड़ना बन्द कर दिया। उसने अपनी बाहें आगे फैला दीं, एक पूरा चक्कर घूम गया, और फिर गिर कर ढेर हो गया। उसके निकट ही खड़ा अकेला एस० ए० का आदमी कूद कर सामने आ गया। स्पष्टतः वह और लोगों से कुछ कहना चाहता था। उसकी बाहों ने हवा में झटका लिया—फिर एकाएक गिर गयी—उसके घुटने जैसे टूट कर मुड़ गये।

जाने क्या हो गया—जाने क्या ? मैं साफ-साफ सोच भी नहीं सकता। निकट की गलियों से अकेली आकृतियाँ निकल कर भागती नज़र आ रही थीं। वे मकानों द्वारा निर्मित आलों में कूद जाती थीं। रह-रह कर गोलियाँ कौंध जाती थीं।

"अब...अब..." रोथेकर चीख उठा।

अब एस० ए० के आदमी हमारे निकट मार्च कर रहे थे। नुक्कड़ पर से घुटनों तक चढ़े भारी जूतों की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी।

आवाज़ें हल्की हवा में खो गयीं। दो काली लाशें अलकतरे पर पड़ी थीं।

कुछ मिनट बाद एक पुलीस की कार के साइरन की आवाज़ हवा को चीरती हुई गूंज उठी। कार दौड़ती हुई निकल गयी। कार की हेडलाइटें सड़क पर टेढ़ी-मेढ़ी रोशनियाँ फेंकती हुई निकल गयीं। कार की ब्रेकें चीख-सी पड़ीं। अब कार की हेडलाइटें फुटपाथ पर पड़ी काली लाशों पर चमक उठीं। दो स्टैनी पुलिस के सिपाहियों की तरफ गये, जो अपने हाथों में पिस्तौल ताने हुये थे।

मुझे कामरेडों में से एक की स्थिर आवाज़ सुनाई दी।

"नाज़ियों ने वालस्ट्रैसी पर हमला बोल दिया है।"

उसने लाशों की ओर संकेत किया।

"इन लोगों को अपनी अन्तरात्मा की पुकार सुनने का यह नतीजा मिला है, सार्जेन्ट।"

उन लोगों ने लाशों को उठा कर कार में रखने में सहायता की।

"वेस्ट एण्ड अस्पताल ले चलो। जितनी तेज़ी से चल सको चलो।"

उसी रात सीमेन्सस्टैड्ट स्थित झोपड़ियों की बस्ती की घटना है। हम नाज़ी आक्रमण के बाद सीधे वहीं आ गये थे। फ्रांज़ ने साइक्लो-स्टाइल मशीन के स्प्रिंगदार ढकने को गिरा कर जंभाई ली। मैंने स्याही से सने अपने हाथ एक चिथड़े में पोंछ डाले।

"कितना समय हो गया?"

"लगभग चार," स्ट्रूबेल ने जवाब दिया। वह अपनी जेब-घड़ी तेल के लैम्प के पास ले जा कर देख रहा था।

मैंने अपनी दर्द से दुखती पीठ को सीधी किया। कितनी सर्दी है। नींद भी आ रही है। काश मैं थोड़ी-सी नींद ले सकता। मेरी ज़बान को हल्का-सा धातु जैसा स्वाद खराब कर रहा था, ऐसा स्वाद जो थकान को मिचली में बदल देता है।

"तुम भी थक गये, क्यों ?" स्ट्रूबेल ने पूछा। उसके काले बाल अस्तव्यस्त-से उसके चेहरे पर लटक रहे थे। उन्हें देख कर मेरे मन मे यह इच्छा उठने लगती थी कि मैं उन्हें यथास्थान पहुँचा दूँ।

"तुम तो ऐसा पूछ रहे हो जैसे हम सब लोग थके ही न हों।" मेरी जगह रोथेकर ने उसे जवाब दिया। झोंपड़ी में रक्खे फटे-पुराने सोफे पर वह आधा लेट कर हाथ-पाँव फैलाने लगा। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, चश्मे के पीछे उसकी आँखें लाल हो रही थीं और उनमें जैसे ज्वाला जल रही थी।

"कोई बात नहीं, पन्द्रह सौ शीट छप चुके हैं।" फ्राँज ने हम सब को सान्त्वना दी।

और फिर उसने स्ट्रूबेल से कहा—"तुम अकेले में साइक्लोस्टाइल पर्चे नहीं निकाल सकते ?"

"नहीं।"

पूरी मेज पर पर्चों के ढेर लगे हुये हैं। वे अभी तक सूखे नहीं हैं।

"अगर अन्य लोगों ने भी इतने ही पर्चे छापे होते तो सीमेन्स में पर्चों की बाढ़ आ गई होती।" स्ट्रबेल ने प्रसन्न होकर कहा।

किसी ने कोई जवाब नहीं किया। मैं बेंत की एक टूटी कुर्सी पर बैठा ऊँघ रहा था। फ्रांज रोथेकर के बगल में बैठा हुआ था। शरीर के स्थिर हो जाने से अब नींद लेने की और अधिक आवश्यकता महसूस हो रही थी। अपनी आँखें खुली रखने में मुझे बड़ी तकलीफ़ हो रही थी।

चारों ओर लकड़ी की दीवारों पर खरगोशों की खालें टँगी हुई थी। बायें कोने में कैम्प में बिछाया जाने वाला एक लाल बिस्तर बिछा हुआ था। उसके बगल वाले संकरे दरवाजे के पीछे स्ट्रूबेल की पत्नी और तीन-वर्षीया हीनी सो रही थी। पहले स्ट्रूबेल हमारी गली में ही रहा करता था। वह तीन साल से बेरोजगारी का सामना कर रहा था।

एक दिन उसके मकान मालिक ने उसके फर्नीचर को सड़क की पटरी पर फेंक कर उसे मकान से बाहर निकाल दिया। तब कामरेडों ने स्ट्रूबेल को शरण दी। बाद में हम लोगों ने यह झोंपड़ी बनाने में उसे सहायता दी। अब वह सीमेन्सस्टैड्ट स्थित झोपड़ियों की इस बस्ती में हमारे जत्थों का राजनीतिक नेता है। सीमेन्सस्टैड्ट, नाज़ियों का एक मजबूत गढ़! सभी मध्यम श्रेणी वाले हैं यहाँ। चुनाव के समय यहाँ दस में से आठ खिड़कियों में स्वस्तिक चिन्ह वाले झंडे लहराते दिखाई देते हैं।

किसी ने मेरा कन्धा पकड़ कर हिलाया। आखिर मेरी नींद टूट ही गयी।

"चलो, वक्त हो गया।"

स्ट्रूबेल ने आलू के उस बोरे को पीछे फेंक दिया जो दरवाजे के सामने टँगा हुआ था।

"अपने भरसक पूरी कोशिश करना। पकड़े मत जाना!"

बस्ती की संकरी गलियों में गोबर और कूड़े-कर्कट की सड़ाँध की बदबू उठ रही थी। कहीं एक कुत्ता भौंक रहा था। झोंपड़ियों के ऊपर कुहरे का बादल-सा छाया हुआ था। भयंकर सर्दी थी। हम तेजी से दाहिनी तरफ़ मुड़ गये। रेल की ऊँची पटान पर बिछी पटरियाँ हमारे सामने थीं। एक लम्बी मालगाड़ी ब्रिज पर खड़खड़ाती हुई जा रही थी। इंजन हवा में धुएँ के सफ़ेद बादल उगल रहा था। स्टेशन की घड़ी पाँच बजने में कुछ मिनट कम का संकेत दे रही थी। टिकट घर खाली पड़ा था। टिकट कलेक्टर अपनी केबिन में ऊँघता बैठा था। उसने हम लोगों की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"हम लोग बाहर ही इन्तजार करेंगे," फ्रांज ने दबी जबान कहा।

आर्क लैम्प से निकलती रोशनी स्टेशन पर बिछी रेल की पटरियों

के पीछे नहर के जल में झलमला रही थी। मैं रेलिंग पर उटँग गया।

"वो लोग आ रहे हैं।"

अर्नस्ट सच्वीबस, 'रेडी मेड,' हीन्ज़ प्रेउस और एडी आ रहे थे। एडी ने अपनी काँच की आँख पहन रखी थी। हमने हाथ मिलाये।

"वाल्स्ट्रैसी पर आज रात हमला हुआ था?" सच्वीबस ने कहा। "रात दो बजे उन लोगों ने बगल की गलियों पर भी कब्जा कर लिया। पॉल टीचर्ट सभा-स्थल पर नहीं आया था। घर से वह निकल ही नहीं पायेगा, हुँ?"

इस 'हुँ' को अकसर सच्वीबस अपने वाक्य के अन्त में जोड़ देता था। उसकी यह एक आदत थी।

"तुम्हें इस सम्बन्ध में और कुछ विस्तार से मालूम है? मसलन गिरफ्तारियों के सम्बन्ध में?" फ्रांज़ ने पूछा।

"नहीं। लेकिन ऐसा सम्भव है, हुँ?"

"हमें वह काम पहले खत्म करना चाहिए जिसमें हम सारी रात लगे रहे हैं!" फ्राँज़ ने मेरी ओर और रोथेकर की ओर इशारा किया।

हमने तेज़ी से पर्चे बाँट लिये। हर एक अपनी जेब में तब तक पर्चे ठूँसता गया जब तक जेब फूल कर लटक नहीं गयी। एक खूब रौशन ट्रेन हमारे सामने ब्रिज पर से खड़खड़ाती हुई गुजरी। फ्राँज़ ने हम लोगो से फौरन उधर ही लपकने को कहा।

उसने कहा—"तुम अपने जत्थे से बात करना सच्वीबस। मैं अपने दल से निबटूँगा। ट्रेन के अगले हिस्से से अपना काम शुरू करो। हम लोग पिछले डिब्बों को सँभाल लेंगे। हम लोग पीछे की ओर जायेंगे, फिर आगे की तरफ जायँगे, और अन्त में यहीं वापस आयेंगे। यदि हममें से कोई गायब नजर आये, तो अन्य लोगों के लिए अच्छा यही होगा कि वे स्टेशन से बाहर चले आयें। स्टेशन पर अच्छी तरह देख लेना कि सब-कुछ ठीक-ठाक है या नहीं। अच्छा अब रवाना हो जाओ, जल्दी!

"मैं सात बजे के बाद नहीं रुक सकूँगा, हुं ? मेरी वितरण साइकिल मेरा इन्तज़ार कर रही होगी।" सच्वीबस ने जल्दी-जल्दी कह डाला। वह एक इत्र की दूकान में वितरक का काम करता था।

"हम लोग उसके बहुत पहले ही अपना काम पूरा कर चुकेंगे।"

हम लोग अलग-अलग चल दिये। मेरी स्नायुवों में तनाव पैदा हो गया था। थकान दूर हो चुकी थी। मेरे सर में एक भारीपन भरा दर्द और आँखों में जलन भर बाकी रह गई थी। स्टेशन पर लोगों की बहुत भीड़ थी। बिजली की ट्रेनें एक के बाद एक आती ही जा रही थीं। सीमेन्स वर्क्स की सुबह की पाली के श्रमिक ट्रेनों पर जाने लगे थे, हजारों की संख्या में। हिटलर के अधिपति बनने के बाद यह पहली सुबह हो रही थी।

ट्रेन के डिब्बों में पसीने और धुएँ की बदबू उठ रही थी। सीटों पर श्रमिक उनींदे चेहरे लिये बैठे थे। कुछ के तो सिर भी नींद के कारण लटक गये थे। रेल की यात्रा का लाभ उठा कर उन्होंने यहाँ भी नींद लेना जारी रक्खा था। हमने हर एक के हाथ में एक-एक पर्चा ठूँस दिया। मेरा सर चकराने लगा। मैंने जो कुछ आशा की थी उससे यह सब-कुछ कितना भिन्न था। कोई बहस नहीं, कोई उत्तेजना नहीं। वे मौन भाव से पर्चे लेते जा रहे थे। कुछ लोगों ने ही पर्चे को पढ़ा। अधिकांश ने पर्चे को फ़ौरन अपनी जेब में ठूँस लिया। फ़्रांज़ गाड़ी के बीचोबीच खड़ा था। उसने तेज़ आवाज़ में बोलना शुरू कर दिया :

"मज़दूर साथियो। हिटलर कल वीमार गणतंत्र का अधिपति बन गया। जर्मन पूँजीवाद ने उसे यहाँ बुलाया है। संकट से उबरने का उसे इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं दिखा कि श्रमिक वर्ग का और भी अधिक शोषण किया जाय। हिटलर जर्मनी को रोज़गारी कैंद बना देगा। आतंकवादी शासन द्वारा विरोधी दलों को कुचल डाला जायगा। कल शाम से ही एस० ए० के लोगों ने श्रमिक वर्ग के क्षेत्रों पर हमला

करना शुरू कर दिया है। मजदूर दोस्तो ! सारे विश्व के मज़दूरों की निगाहें इस संकट की घड़ी में आपकी ओर लगी हुई हैं। अब यह आप पर, कारखानों में काम करने वाले आप मज़दूरों पर निर्भर करता है कि फ़ासिस्टवाद अपने खूनी इरादे पूरे कर सके या न कर सके !"

गाड़ी की खिड़कियों से गाँव के धुँधले दृश्य और सिगनल की रंगीन रोशनी दिखाई पड़ रही थी।

फ्रांज ने अगल-बगल एक उड़ती हुई नज़र डाली, और जल्दी-जल्दी बोलना शुरू कर दिया : "हम कम्युनिस्ट, बेरोजगार और कारखाने के मजदूर आपके पास आये हैं, कंधे से कंधा मिला कर संघर्ष करने का प्रस्ताव ले कर। हम आपसे कहना चाहते हैं कि आज के दिन मशीनों के एक भी स्विच को हाथ न लगायें। एक मशीन के भी चक्कों को आज न चलने दें। चक्कों को जाम कर दें। स्थिति पर विचार-विमर्श करें। अपनी कार्यकारिणी समितियाँ चुनें। हिटलर की तानाशाही का आज केवल एक जवाब है—सारी जर्मनी में आम राजनीतिक हड़तालें ! याद रखिये, आपकी जिन्दगी और आपके बच्चों का भविष्य इस समय दाँव पर लगा हुआ है।"

फ्रांज़ उत्तेजित स्वर में बोल रहा था। मैं लोगों के चेहरों पर भावों को देख रहा था। सभी की नज़रें फ्रांज की ओर टिकी हुई थीं, लेकिन अभी भी पूरा कम्पार्टमेन्ट मूक था। उन्हें हमारी बात समझनी चाहिए, उन्हें सब-कुछ समझना चाहिए, अभी, इसी क्षण !

"लोगों से बातचीत शुरू करो।" फ्रांज ने हमसे फुसफुसा कर कहा।

ट्रेन ने एक तीखा मोड़ लिया और एक ओर को थोड़ा झुक-सी गई। मैं सीटों की एक कतार में घुस गया। वहाँ दो नौजवान मजदूर, एक बूढ़ा और एक औरत बैठी थी। औरत ने पर्चे को मोड़ कर एक चौकोर कागज़ बना डाला था और उसे अपनी उँगलियों के बीच तोड़-मरोड़ रही

थी। बूढ़ा मजदूर उसे पढ़ रहा था। अन्य दो मजदूरों ने पर्चे को अवश्य ही अपनी जेबों में ठूँस लिया होगा। तो उन लोगों ने उसे पढ़ा नहीं है।

"मजदूर भाइयो! हमें इस तरह एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ देना चाहिए। हमारी ही तरह आप भी अवश्य महसूस करते होंगे, कि कुछ-न-कुछ होना ही चाहिए। और आज, मजदूरों को स्वयं अपनी रक्षा करनी चाहिए। आप तुरन्त अपने शेड के अन्य मजदूरों से इस समस्या पर बातचीत करें।"

मैं झुक कर खड़ा हो गया था। हिलती-डुलती ट्रेन मुझे हिचकोले दे रही थी। वह औरत मुझे अपनी छोटी, परेशान आँखों से देख रही थी। उसके होंठ एक-दूसरे पर जम-से गये थे। उसकी निगाहें जैसे कह रही थीं: "हड़ताल! तुम धूर्त हो, लड़के!" नौजवान मजदूर ने कंधे हिलाये। "यह बात ठीक है—हाँ," उसने धीरे से कहा। उसकी बगल में बैठा मजदूर घबरा कर अपना खाने का डिब्बा हिलाने-डुलाने लगा। ट्रेन के बाहर गाँव पर कुहरे की एक गदी भूरी-सी पर्त जमी हुई थी।

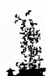
"हम लोग कुछ नहीं कर सकते। हमें तो इन्तजार करना है और देखना है कि यूनियनें क्या निश्चय करती हैं।" बूढ़े मजदूर ने कहा।

मैंने सीधे उस पर नज़र टिका दी। उसकी आँखें शान्त और भूरी थीं।

"इन्तजार मत कीजिये, कामरेड! हमें कुछ-न-कुछ शुरुआत तो किसी-न-किसी तरह कर ही देना चाहिए। अन्य लोग हमारा अनुसरण करेंगे।"

बूढ़े ने अपना सिर हिला दिया।

"बिना यूनियनों का आदेश मिले? हड़ताल की मजदूरी के बगैर? बस यों ही जंगली तरीके से पागलों की तरह हड़ताल शुरू कर दी जाय?"



बाईं ओर बैठे नौजवान ने हामी के भाव से सिर हिलाया। "असम्भव !"

"ऐसा करके तो बस हम अपनी लगी-लगाई नौकरी गँवा बैठेंगे।" उस स्त्री ने संक्षिप्त-सा वाक्य जड़ दिया।

"वे पूरे मजदूर वर्ग का कुछ नहीं बिगाड़ सकते !"

ट्रेन की ब्रेक की हिसहिसाहट शुरू हुई। ट्रेन धीमी पड़ी और फिर रुक गई। सभी दरवाजों की ओर झपट पड़े। एनामेल के साइनबोर्ड पर बाहर बड़े अक्षरों में लिखा था : 'वर्नर वर्क्स।' बर्फीली हवा सीटी-की-सी आवाज करती हुई स्टेशन पर बह रही थी। हमारे बिलकुल सामने कारखाने की ऊँची-ऊँची इमारतें खड़ी हुई थीं। खिड़कियों के चमचमाते चौखट आकाश की ओर चढ़ते हुये-से नजर आ रहे थे। खिड़कियों के शीशों के पार चौड़ी सीढ़ियाँ ठठरियों जैसी दिख रही थीं। कारखाने की ओर बढ़ते लोग छोटी-छोटी बिन्दु जैसे लग रहे थे। श्रमिकों की ठसाठस भरी हुई कतारें रेल की पटरियों पर से उतरती हुई बाईं तरफ़ बढ़ती जा रही थी। चंद क्षणों में ही हजारों मजदूर आँख से ओझल हो गये। अगर वे सब...

"उधर देखो। स्टेशन के बाहर कारखाने के फाटक पर भी—पर्चे बाँटने वाले मौजूद हैं !" रोथेकर ने कहा।

"वे झोंपड़ियों की बस्ती वाले जत्थे के लोग हैं।"

दूसरे प्लेटफार्म पर एक खाली ट्रेन आ कर रुकी। सच्चीवस और उसका दल कूद कर उतर पड़ा।

"क्या कर रहे हो, हुँ ?"

"यहीं रुके रहो। हम लोग फ़र्सटेनब्रन स्टेशन जा रहे हैं।" जवाब में फ्रांज बोला।

हम कारखाने की इमारतों द्वारा बनाई गई सँकरी गलियों में दौड़ने लगे। हरी घास से ढँके जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों और लोहे की

रेलिंगों के सामने गंदी भूरी दीवारें। एडी भी दौड़ता हुआ हमारे निकट आ गया ! "मैं भी तुम लोगों के साथ चलूंगा," उसने पहले ही ज़िद की थी। मजदूरों ने हमारे चारों ओर भीड़ लगा ली। रोथेकर ने पर्चे बाँटने शुरू कर दिये। पुलिस का एक भी सिपाही वहाँ नहीं दिख रहा था।

"बाकी पर्चे पुल पर बाँटने के लिये बचा रखो।" फ्रांज ने आदेश दिया।

पटरियों पर पर्चे बिखरे पड़े थे। लोगों ने पर्चे फेंक दिये थे, शायद डरपोक मजदूरों ने ऐसा किया था। हम अंतिम कारखाने से गुजर गये। हमारी दाहिनी तरफ फ़र्सटेनब्रन ब्रिज हमें दिखने लगा था। कारखानों को यहाँ बनी नहर से ही पानी पहुँचाया जाता है। फर्सटेनब्रन स्टेशन, कारखानों तक पहुँचाने वाला दूसरा रेलवे स्टेशन, पुल के पीछे एक टीले पर बना हुआ था। दिन के समय यहाँ सूना और सन्नाटा रहता है। लेकिन उस समय यहाँ हजारों लोग ट्रेन से उतर रहे थे। मजदूर चार-चार की कतार में उस सँकरे पुल पर चल रहे थे। हम तेजी से चन्द शब्द बोलते हुये पर्चे बाँटने लगे। यहाँ पर ज्यादा बहस-मुबाहसा करने का मौका न था। वे सभी बड़ी जल्दबाजी में थे। पर्चों का मेरा स्टाक तो शीघ्र ही समाप्त हो गया। रोथेकर का भी हाथ खाली हो गया था।

"और पुलिस वालों का यहाँ नाम निशान भी दिखाई नहीं दिया।"

फ्राँज तेजी से भागती हुई भीड़ पर नज़र गड़ाये हुये था।

"यहाँ के लिए और अधिक होना चाहिए था, इससे बहुत अधिक। बर्लिन के इस विशालतम औद्योगिक नगर में चान्सलर के रूप में हिटलर की यह पहली सुबह है। सौ आदमियों का जत्था होता और उनके बीच एक पार्टी का नेता होता। दो या तीन मिनट की बातचीत होती, बस। यही सम्पूर्ण जर्मनी के लिए चेतावनी का संकेत होता !"

कारखाने की ओर बढ़ते मजदूरों का प्रवाह जब तक टूट नहीं गया हम वहीं खड़े रहे। कुछ दौड़ते हुए गुजर गये। सायरन की तीखी आवाज ने खामोशी को चीर दिया। उसकी आवाज संगीतमय ध्वनि से उठ कर एक स्पष्ट स्थिर ध्वनि में बदल गई और फिर भरभराती हुई धीरे-धीरे शान्त हो गई। फ्रांज ने सिर हिलाया।

"चलो चलें।"

हमारे बूटों की आवाज गूँजने लगी। कोई एक शब्द भी नहीं बोल रहा था। मैं असहायता की भावना से व्याकुल हो उठा था। बाईं तरफ मकानों के समुद्र के ऊपर सीमेन्स कारखाने के टावर का चौकोर हिस्सा स्पष्ट उठा हुआ दिख रहा था। टावर के ऊपरी हिस्से से धुएँ के पतले-पतले छल्ले उठ रहे थे। यह टावर कारखाने की चिमनी और घंटाघर दोनों ही है, जिसे सीमेन्स स्टैड्ट की सफलता का प्रतीक कहा जा सकता है। टावर के चारों तरफ़ घड़ियाँ हैं और उनमें गज-गज भर की प्रकाशयुक्त सूइयाँ लगी हुई हैं। सूइयों के चारों ओर गोलाई से घंटे के निशान के रूप में चमचमाते चौकोर चिन्ह अंकित हैं। मीलों दूर से इस घड़ी में समय देखा जा सकता है। घड़ी की सूइयाँ मुझे उपहास और तिरस्कार के भाव से मुस्कराती-सी लग रही थीं, जैसे कह रही हों—"तुम लोग यहाँ के स्थाई कर्मचारियों में गड़बड़ी पैदा करना चाहते हो ? यहाँ ? वे लोग एकदम ठीक समय पर यहाँ आ जाते हैं, मिनट भर की भी देर नहीं करते। तुम लोग दूकानों पर हो रही चहल-पहल की आवाज सुन सकते हो। हा-हा-हा ! सारा काम-काज ज्यों का त्यों सामान्य रूप से चल रहा है !"

फ्रांज ने एकाएक बड़े रूखे स्वर में कहा—"हम सब लोग ठीक स्थान पर पहुँचे हुये हैं। हम लोगों ने उद्योग के किले पर धावा बोला है—बाहर से। और अन्दर से हमें प्रत्युत्तर क्या मिल रहा है ?"

उसके गालों पर मुर्दनी छा गई थी, वह थका हुआ लग रहा था। उसकी टोपी उसकी गर्दन के पीछे लटकी हुई थी। उसके चौड़े कंधे जैसे असहायता से झुक गये थे। एडी और रोथेकर के चेहरों पर भी कड़वाहट की रेखाएँ उभर आई थीं। फ्रांज के शब्दों में एक भयावह सत्य उभर उठा था। मेरे पाँव मन-मन भर के हो रहे थे और इस सब के ऊपर हमें भयंकर शरीरिक थकान भी महसूस हो रही थी। नींद ! काश मैं थोड़ी देर सो पाता।

झोंपड़ियों की बस्तियाँ बाईं तरफ शुरू होती हैं। यह हमारी झोंपड़ियों की बस्तियाँ हैं। इन्हें लोग 'छोटा मास्को' कह कर पुकारते हैं। कुछ निचली खिड़कियों में पीली रोशनी जल रही थी। टीन की एक चिमनी से धुएँ का एक झीना बादल उठ कर सीधा आकाश की ओर उड़ता जा रहा था। एक मुर्गा बाँग लगा रहा था।

रोथेकर कहने लगा—"हममें से लगभग सभी बेरोजगार हैं। आखिर क्यों ? क्योंकि संघर्ष करने वालों को फौरन कारखानों से बर्खास्त कर दिया जाता है। तुम्हें यहाँ से निकाल बाहर किया गया था, बोलो यहाँ से निकाले गये थे न तुम ? और बाहर रह कर आन्दोलन करने में वह बात नहीं आ पाती !"

फ्रांज ने अपना सर घुमाया। वह रोथेकर की ओर विचारशून्य भाव से देखने लगा।

"मजदूर संगठनों में हमारा काम...."

बीच में ही उसने एक गहरी साँस ली।

"आज तुम लोगों ने प्रत्युत्तर पा लिया ! इन्तजार करो और देखो—यूनियन के नेता !"

एडी ने तेज आवाज करते हुये थूक दिया और अपनी बाहें कपकपाईं। "कितनी भयंकर सर्दी है, है न !" और फिर वह इस तरह बोलने लगा जैसे फ्रांज की बातें अब उसकी कानों के अन्दर पहुँची हों—



"इन्तजार करो और देखो, इन्तजार करो और देखो ! मैं तुमसे बताये देता हूँ, इसके पीछे कुछ लोगों का हाथ है। उदाहरण के लिए अपने लोगों के पड़ोसी हीनी केटजेल को ही ले लो। तुम उसे जानते हो, वही हीनी। मोल्डिंग शॉप में एक और ऐसा ही आदमी है। वह कहता है साले पसीना बहाने वाले मजदूर ! तनख्वाह बहुत थोड़ी है—सप्ताह में लगभग तीस बॉब, बस। लेकिन उसके मन में यह भय ही बना रहता है कि कहीं यह सड़ियल नौकरी वह गँवा न बैठे। ऐसा बुद्धू है वह ! और फिर वह अपनी पत्नी के लिए बचत भी कर रहा है। वह एक केबिनेट ग्रामोफोन लेना चाहती है।" और वह तिरस्कार और व्यंग के भाव से हँस पड़ा। "हम उसे पत्नीभक्त, मियाँ ग्रामोफोन कहते हैं ! रविवार आया नहीं कि वह उसे ले कर सिनेमा देखने पहुँचा—और किसी चीज में उसे कोई दिलचस्पी ही नहीं। इस तरह के अनेक मूर्ख हैं। और इससे हमारे आन्दोलन के लिए बहुत बड़ा फर्क पड़ता ही है।"

हम लोग जंगफर्नहाइड स्टेशन पहुँच गये थे। ठसाठस भरी ट्रामें एक के बाद एक सामने से गुजरती जा रही थीं। ट्रेनें रेलवे ब्रिज पर खड़-खड़ धड़-धड़ करती गुजर रही थीं। उनकी बत्तियाँ अभी भी जल रही थीं, हालाँकि दिन पूरी तरह चढ़ आया था। क्लर्क लोग सीमेन्स के दफ्तरों की ओर ट्रामों और ट्रेनों द्वारा जा रहे थे।

फ्रॉज चलते-चलते रुक गया।

"हम लोगों को अब अलग-अलग हो जाना चाहिए। वाल्स्ट्रैसी में सावधान रहने की जरूरत है।"...

हिटलर जिस दिन चान्सलर बना, उस दिन हमारी गली में क्या-क्या हुआ इस संबंध में अखबारों में लम्बे-लम्बे लेख और समाचार प्रकाशित हुये। एस० ए० के सामने गोलीकांड के समय पुलिस का जो सिपाही आहत हो कर गिर गया था उसका नाम का जॉरिट्ज, और जो एस०

ए० का आदमी घायल हुआ था वह तूफानी नेता माइकोवस्की था, तेंतीसवीं तूफानी टुकड़ी का नेता। वे दोनों मर गये थे।

तेंतीसवीं टुकड़ी वालों ने एक पुलिस के सिपाही को मार डाला था, और अपनी मूर्खतावश भयभीत दशा में अपनी टुकड़ी के नेता को भी गोली मार दी थी। यह सब हम लोगों ने स्वयं अपनी आँखों से देखा था—और अब अखबारों में हमें यह पढ़ने को मिला कि वे दोनों कम्युनिस्ट उपद्रवियों की हिंसा के शिकार हुये। अखबारों में इस संबंध में एक शब्द भी देखने को नहीं मिला कि उस रात तेंतीसवीं तूफानी टुकड़ी ने हमारी गली में परेड किया था और वे उस रात हमारी गली में उपद्रव शुरू करना चाहते थे। नाज़ी अखबारों ने बर्बर व्यंग्यपूर्ण लेख लिखे थे। उन्होंने कम्युनिस्टों के हाथों बनाये गये नवीनतम शहीद के रूप में माइकोवस्की का वर्णन किया। सारी बातों से ऐसा लग रहा था कि माइकोवस्की की मौत को हमारी 'लाल' गली के खिलाफ उनकी आतंकपूर्ण कार्रवाइयों के बढ़े हुए दौर का एक बहाना बनाया जा रहा था। क्योंकि प्रेस द्वारा इस तरह जाल बुने जाने से उनका इच्छित असर पिछली रात उत्पन्न हो ही गया। बर्लिन एस० ए० की समस्त वेस्ट स्टैंडर्ड टुकड़ियों ने हमारी गली में मार्च किया। वह माइकोवस्की की 'हत्या' के प्रतिकार के लिए एक प्रदर्शन था। उनका मार्च शुरू होने के काफी समय पहले ही पुलिस हमारे कार्यालय बर्नर में आ पहुँची और उसे बंद करने का आदेश दिया। इसके बाद उन लोगों ने सभी नुक्कड़ों और कोनों पर पहरा बिठा दिया और सवारियों के लिए सड़क को बंद कर दिया। पुलिस की एक कार बराबर इस तरफ से उस तरफ और उस तरफ से इस तरफ चक्कर लगाती रही और अपनी सर्चलाइटों से इधर-उधर खड़े मकानों की खिड़कियों पर रोशनी फेंकती रही। यहाँ तक कि पुलिस ने गुप्त सम्भावित 'सुरक्षा' केन्द्रों को खोजने के लिए मकानों की छतों तक की तलाशी ली।

सड़क की ओर खुलने वाली खिड़कियों में एक भी रोशनी नहीं जल सकी। ऐसा लग रहा था जैसे वह मुर्दों की गली हो। और तब भूरी वर्दीधारी हाथों में मशाल लिये लम्बी कतारों में मार्च करते हुये गली से गुजरे। उनकी प्रतिशोधात्मक चीखों और घृणायुक्त उत्तेजनात्मक गीतों का मुकाबला कब्रगाह के सन्नाटे से किया गया।

लेकिन फिर भी हमारी खामोशी ही विजयी हुई।...

पिछले दिनों के स्नायुविक तनाव ने मेरे मन में जीवन के सुख और आराम की उत्कट इच्छा उत्पन्न कर दी थी। मैंने पहले कभी इस इच्छा के इतने उत्कट रूप का अनुभव नहीं किया था। मुझे केथी के पास जाना चाहिए। मैं उसे देखना चाहता हूँ, उसकी आवाज़ सुनना चाहता हूँ।

श्रीमती जेंडर अपनी रसोई में सिलाई की मशीन पर काम करती बैठी थीं।

"यहाँ फ्रॉज है क्या?"

एकाएक मुझे सीधे केथी को पूछ बैठने में बड़ा संकोच अनुभव हुआ।

"नहीं। लेकिन तुम अन्दर चले जाओ, वहाँ केथी है।"

वह सोफ़े पर बैठी हुई थी। उसके निकट ही मोजों का एक ढेर लगा हुआ था। उसे मेरे कमरे में आने की आहट नहीं मिली। मैंने ही कहा—"नमस्कार, केथी।"

"जॉन!" उसकी आँखें चमक उठीं। "आओ, आओ, बैठो।"

आज उसने अंगूरी रंग के कपड़े और चमड़े की प्लेटदार पेटी पहन रक्खी थी। एकदम चुस्त पोशाक थी उसकी। बहुत, बहुत अच्छी लग रही थी वह। वह मोजों की ढेर पर झुकी तो उसके सुन्दर बालों की

से एक सचित्र समाचारपत्र उठा लिया। दूसरी ही मेज पर पुलिस के मार्च करते सिपाहियों की तस्वीर छपी थी।

स्वस्तिक पताकाएँ लिए पुलिस के सिपाही
र्‌हाइन नदी के पुल पर !

तो यह सरकारी अखबार है ! मैंने अखबार मेज़ पर रख दिया।

"विली अब जा चुका है," केथी बोली।

उसने भी तस्वीर देख ली थी।

"सचमुच ?"

"उस आक्रमण के बाद उसके लिए यह बड़ी खतरनाक बात थी।"

एकाएक हमारे मन-मस्तिष्क में वही सब बातें फिर से लौट आई। निस्सन्देह, सारी बातें फिर से हमारे सामने घूमने लगीं। मुझे उससे घर पर ही भेंट करनी चाहिये थी।

"चलो, केथी, मेरे घर चलो।"...

मैंने घर का सदर दरवाजा खोला। केथी मेरे बगल में थी। अंधेरी सीढ़ियों पर हम चुपचाप रास्ता टटोलते चढ़ रहे थे।

"धीरे-धीरे खामोशी से—मकान मालकिन है !"...

चन्द रोज पहले अखबारों में यह घोषणा प्रकाशित हुई थी कि बन्दूक की गोली से मारे गये एस० ए० तूफ़ानी सैनिक टुकड़ी नं० ३३ के नेता माइकोवस्की और पुलिस के सिपाही जॉरिट्ज़ का अन्तिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ सम्पन्न किया जायगा। उन दोनों की लाशें बर्लिन डोम अर्थी पर ले जाई गईं, जहाँ हिटलर, उसके मन्त्रिमण्डल और

एस० ए० तथा एस० एस० के प्रमुख अधिकारियों की उपस्थिति में उनकी यादगार में प्रार्थना हुई। डोम के सामने तेंतीसवीं टुकड़ी और पुलिस की एक टुकड़ी ने मार्च पास्ट किया। सायंकालीन अखबारों ने इस अन्तिम संस्कार की लम्बी-लम्बी रिपोर्टें तथा तस्वीरें अपने मुख पृष्ठ पर छापीं। इस झूठ को फिर से दुहराया गया कि उन दोनों की कम्युनिस्टों द्वारा हत्या कर दी गई थी।

फ्रांज़ ने मुझे बताया कि यादगार में आयोजित प्रार्थना सभी रेडियो स्टेशनों द्वारा भी प्रसारित की गई थी। वह उसी समय एक कामरेड से मिलने गया था और वायरलेस के एनाउन्सर को (फ़ोटो में जो डोम की सीढ़ियों पर माइक के सामने खड़ा दिख रहा था) एस० ए० का इन शब्दों के साथ अभिनन्दन करते सुना था—"अब आपके समक्ष आ रही है अत्यधिक भयोत्पादक 'हत्यारी' तूफ़ानी सैनिक टुकड़ी नं० तेंतीस।"

"उन लोगों ने वर्षों से आतंक फैलाने के लिए तेंतीसवीं टुकड़ी की प्रशंसा की।" फ्रांज़ ने बड़े उदास स्वर में कहा। "ऐसा केवल इस मकसद से किया जा रहा है कि उन्हें हमारी गली में और अधिक हिंसात्मक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त हो। इस माइकोवस्की कांड का अन्त हमारे लिए निश्चित रूप से बहुत बुरा होगा। नाजी सरकार हम सब के सम्बन्ध में बिना किसी मकसद के इस तरह हो-हल्ला नहीं मचाती। हमें अपने कामरेडों को अब यह बात अच्छी तरह समझा देनी चाहिये कि हमें अब आवश्यकता से अधिक सावधान रहने की जरूरत है।"

फ्रांज़ पहले कभी इतना चिन्तित नहीं दिखाई दिया था।

"जर्मनी इटली नहीं है!" बहुत से कामरेडों का यही कथन था।

हिटलर सरकार के खिलाफ़ एक आम हड़ताल संगठित करने का हमारा पहला प्रयास असफल हो गया था।

क्या फ्राँज की ही बात सही है ? क्या हम सचमुच एक आतंकवादी जर्मन फ़ासिस्टवाद की ड्योढ़ी पर आ खड़े हुये हैं ?

सड़क एक निचली पहाड़ी पर चढ़ गई थी ।

"रोंटगेन्स्ट्रैसी । उनका शिकार-स्थल ।" फ्राँज ने सड़क के दूसरे किनारे पर बनी एक इमारत की ओर इशारा किया, जो तैंतीसवीं टुकड़ी के कार्यालय का काम देती थी । वहाँ एक भी वर्दीधारी नहीं दिख रहा था । उन लोगों का आखिर इरादा क्या है ?

हम सड़क के सब से ऊँचे हिस्से तक पहुँच चुके थे । एक चौड़ा पुल नदी के आर-पार बना हुआ था । बाईं ओर बन्दरगाह की दीवारों से गोलाकार लैम्प लटक रहे थे । एक विशाल क्रेन खामोशी से झूलती हुई पीछे आती थी और फिर आगे जाती थी । उसके पंजे माल से लदी नौकाओं के बहुत अन्दर तक घुसते चले जाते थे । इसके पीछे रोशनी से जगमगाते कारखानों की कतारें थीं । उनके मध्य भाग में एक चिमनी सायंकालीन आकाश की ओर सिर उठाये हुये थी । कोयले से भरे जालीदार डिब्बे ऊपर बिछी रेलवे लाइन पर खड़खड़ाते जा रहे थे । कोयले के ये डिब्बे स्प्री नदी के तट पर स्थित चारलोटेनबर्ग पावर वर्क्स के थे ।

एकाएक फ्राँज रुक गया । तीव्र आवाजें हवा में तैरती हुई स्प्री नदी के पार जा रही थीं । हम ध्यान से सुनने लगे । आवाजें फिर सुनाई पड़ीं—"तीन, चार, पाँच बार !"

"यह तो गोलियाँ चलने जैसी आवाजें हैं !"

मैं वह आवाजें सुनने की तकलीफ़देह मुद्रा त्याग कर आराम से खड़ा हो गया ।

"हाँ, ठीक कहते हो । आशा करनी चाहिये, यह आवाजें विलमैन से तो नहीं ही आ रही हैं ।"

विलमैन वह मदिरालय था जहाँ हमारे सुरक्षा दलों की बैठकें होती थीं। स्प्री नदी के निकट एक पीछे की गली मे वह स्थान स्थित था।

"तूफ़ानी सैनिकों की इमारत कितनी सुनसान दिख रही है," फ्रौंज़ ने धीरे से कहा।

वह मेरे ही विचारों को जैसे वाणी दे रहा था।

हम गैरेज की दीवारों के बगल-बगल चलते गये, फिर बाईं ओर घूम गये। फ्रांज़ ने फाटक पर तीन बार घंटी बजाई। मैं वहाँ पहले कभी नहीं गया था। हॉल में द्वारपाल ने दरवाज़े में बने छेद से बाहर देखा। सफ़ेद बालों वाला नाटा-सा आदमी था वह और चश्मा लगाये हुये था।

"हम दो कमरों वाले फ्लैट में जाना चाहते हैं।"

"ज़रूर, ज़रूर। दाहिने तरफ़ पहले दरवाज़े में चलिये," उस नाटे आदमी ने धीमी आवाज़ में कहा।

एक लम्बा गलियारा, फिर एक बड़ा, भद्दे ढंग की रोशनी से युक्त कमरा। तीन आदमियों ने वहाँ हमसे हाथ मिलाये। मैं उनमें से केवल एक को जानता था। वह पड़ोस के ही एक कस्बे का था। उसके अलावा एक विशालकाय गंजा आदमी था, जिसके चेहरे पर स्फूर्ति की रेखायें थीं, और था एक नाटा, मोटा-सा आदमी, जिसने दाढ़ी बढ़ा रक्खी थी। वह नाटा द्वारपाल दरवाज़े को अधखुला छोड़ कर चल दिया। गलियारे में स्लीपर घिसटाते हुये उसके चलने की आवाज़ गूंज रही थी।

"हम अभी अपनी कार्रवाई नहीं शुरू कर सकते," गंजे आदमी ने फ्रांज से कहा। "सुरक्षा दलों के नेता अभी तक यहाँ आये नहीं हैं।"

"ठीक है।"

एक बूढ़ी घड़ी टिक-टिक कर रही थी। चिड़िया का एक पिंजड़ा सोफ़े के ऊपर टँगा हुआ था। वह एक गहरे रंग के कपड़े से ढँका हुआ था। हम भारी-भरकम, नक्काशीदार कुर्सियों पर बैठे हुये थे। बाहर

घंटी बज उठी। बूढ़े द्वारपाल के स्लीपरों के घिसट कर चलने की आवाज़ गूँजी। हम दरवाज़े की ओर देखने लगे। एक गंभीर आवाज़ सुनाई दी—"हम दो कमरे वाले फ्लैट में जाना चाहते हैं।"

बूढ़े द्वारपाल की धीमी आवाज़ ने उत्तर दिया। फिर गलियारे में भारी बूटों की आवाज़ गूँज उठी। रिचर्ड हूटिंग था वह। दूसरा आदमी कौन था ? मैं उसे नहीं जानता था। हूटिंग का चेहरा बड़ा उदास लग रहा था। उसके मुँह के इर्द-गिर्द रेखायें उभर आई थीं।

"हम लोग गड़बड़ी में फँस गये थे। तैंतीसवीं टुकड़ी ने आधे घंटे पहले विलमैन पर सशस्त्र हमला कर दिया था।"

मौत जैसा सन्नाटा छा गया। हूटिंग की नज़रें हम पर टिकी हुई थीं।

"...एक कामरेड को पेट में गोली लगी—दूसरे के कंधे में गोली लगी।"

उसका चेहरा विकृत हो उठा। उसके भारी-भरकम हाथ बेचैनी से उसकी पेटी पर घूमने लगे। एक बार फिर सन्नाटा छा गया। अंत में गंजा आदमी बोला—"यह चर्चा हम कुछ देर के लिए टाल सकते हैं। सब से पहले..."

उसने अपना हाथ अपने माथे पर फिराया। फिर कहने लगा—"आप लोग जानते ही हैं, तीस जनवरी की रात को जो घटना घटी थी उसके लिए कुछ कामरेडों को गिरफ्तार कर लिया गया है। उनमें से अधिकांश स्टेनी सुरक्षा दल के हैं। सारे अखबारों ने अधिकारियों के आदेश पर उस रात के बारे में बड़ा हो-हल्ला मचाया है। ऐसा लगता है कि गोली से मारे गये तूफ़ानी सैनिक नेता माइकोवस्की को दूसरा हार्स्ट वेसेल बनाया जा रहा है। तो कामरेडो, हमें जनता के सामने असली हत्यारों के चेहरे बेनकाब कर देने चाहिये—अखबारों के द्वारा, पर्चों के द्वारा।"

कुछ क्षण के लिए केवल घड़ी की टिक-टिक सुनाई पड़ती रही।

"हमें निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिये : उस रात भयंकर रूप में हथियारबंद तूफ़ानी सैनिक वाल्स्ट्रैसी में आखिर क्या लेने गये थे ? उनकी वापसी का रास्ता तो दूसरी दिशा में था। लाशों की उचित रूप से परीक्षा क्यों नहीं की गई ? इसीलिए न कि इससे यह साबित हो जाता कि गोलियाँ बहुत थोड़ी दूरी से चलाई गई थीं ! इसीलिए न कि इससे यह साबित हो जाता कि माइकोवस्की और पुलिस के सिपाही जॉरिट्ज पर तूफ़ानी सैनिकों ने गोलियाँ चलाई थीं, जो उन दोनों के पीछे-पीछे मार्च कर रहे थे !"

गंजे आदमी ने एक के बाद एक हम सब पर नज़र डाली।

"सब से पहले आप लोग यह बात याद रखिये कि हमने जो कुछ भी अभी तक सुना है, उसके अनुसार वह सिपाही हमारा दुश्मन या विरोधी नहीं था। उसकी बीवी को अब मजबूर किया जा रहा है कि वह हमारे विरुद्ध भड़काये गये कुचक्रों में भाग ले। और वह ऐसा नहीं करेगी तो उसे पेंशन से हाथ धोना पड़ेगा। और मुश्किल यह है कि उसके एक बच्चा भी है। नाज़ी अखबार लिख रहे हैं कि वे उस सड़क का नाम बदल कर माइकोवस्की स्ट्रैसी रख देना चाहते हैं। जहाँ वे लोग मरे थे वहाँ काँसे का फलक लगाया जाने वाला है। आप समझ रहे हैं न, वे लोग हमें 'हत्यारे कम्युनिस्ट' करार देने के लिए सब कुछ करेंगे।"

रिचर्ड हूटिग ने सर ऊपर उठाया; वह कुछ कहना चाहता था।

"एक सेकेंड। मेरी एक बात और सुन लीजिये। हम लोग लाल फ़ीते सहित एक माला उस स्थान पर अर्पित करने जा रहे हैं, जहाँ उस पुलिसमैन जॉरिट्ज की हत्या की गई थी। हम उसके प्रति अपनी सहानुभूति के संकेत के रूप में और यह प्रदर्शित करने के लिए माला चढ़ाने जा रहे हैं, कि हम लोग उसकी मौत के कारण नहीं थे। सब से अहम

बात यह है कि हम इस संबंध में अपने मुँह से एक शब्द भी न निकालें। आप लोग किसी से भी इस संबंध में कुछ न कहें !"

रिचर्ड हूटिंग ने अपने बड़े-बड़े हाथों को मेज पर टेक दिया। उसने अपने हाथों पर नजर डाली, फिर बोला—"भवन रक्षा दल के हम लोग हमेशा की तरह आपका समर्थन करेंगे। क्योंकि हम लोग चार-लोटेनबर्ग के मजदूरों-श्रमजीवियों के जीवन के लिए जिम्मेदार हैं। आप लोग जानते हैं हमारे कितने आदमी अब तक मारे जा चुके हैं.." उसकी आवाज़ इतना कहते-कहते धीमी पड़ गई। "शायद मरने वालों में एक संख्या अब और बढ़ गई है।"

उसने अपने दोनों हाथ भींच लिये, उसका सर झटके से ऊपर उठ गया।

"लेकिन मैं आपको अपने साथियों की ओर से बता देना चाहता हूँ कि अपना बचाव किये बगैर हम अब आगे अपना नाम-निशान नहीं मिटने देंगे। इसमें संदेह नहीं कि कोई भी व्यक्तिगत रूप से हिंसा नहीं करेगा। लेकिन हमें अपनी जान बचाने में तो सक्षम होना ही चाहिए। एम० ए० ने आज हमारे खिलाफ़ अपना अभियान शुरू कर दिया है। हमें गैरकानूनी जमात यानी विद्रोही घोषित कर दिया गया है !"

हूटिंग चुप हो गया। मैं अत्यधिक उत्तेजित हो उठा था। तभी हूटिंग के बगल में बैठे कामरेड ने कहा—"यही ठीक है। अब इसके अलावा हम और कुछ नहीं कर सकते।"

गंजे आदमी ने उन्हें बड़ी गम्भीरता से ध्यानपूर्वक देखा। फिर बोला—"जहाँ तक अपनी रक्षा करने का प्रश्न है उसके खिलाफ़ तो कोई कुछ कह ही नहीं सकता। लेकिन हमारी ओर से कोई उत्तेजनात्मक कार्रवाई नहीं होनी चाहिए, इतना याद रखिये। हमें बाद में आप जैसे नौजवानों की बहुत जरूरत पड़ेगी।"

५

और वह खड़ा हो गया।

"एक बात और ! साइक्लोस्टाइल करने वाले लोगों का काम न रुकने पाये।"

मैंने फ्रांज और लड़कियों को बुलाया। हम लोग सिनेमा जाना चाहते थे। हिल्डी और कैथी हमारे आगे-आगे बाँह-में-बाँह डाले चल रही थी।

मेरे मस्तिष्क में एक विचार सहसा कौंध गया। 'फ्रांज मेरा दोस्त और साथी है। हम दोनों प्यार की दुनिया में भटक रहे हैं। हमारी प्रेमिकाओं में भी गहरी मित्रता है।'

लड़कियाँ नुक्कड़ पर एक विज्ञापन-स्तम्भ के सामने रुक गईं।

"प्रेम, जासूसी—वही पुराना राग," हिल्डी बोली।

"यह देखो, यह रेनी क्लेयर की फ़िल्म है," कैथी ने कहा।

"वह भी वैसी ही होगी।"

फ्रांज विज्ञापन-स्तम्भ की परिक्रमा कर रहा था।

"हे ऽ, यह देखो !"

उसकी आवाज में उत्तेजना थी। "क्या मामला है ?"

विज्ञापन-स्तम्भ ऊपर से नीचे तक ५ मार्च को रीचस्टैग चुनाव सम्बन्धी नाजी पोस्टरों से ढँका हुआ था। एक पोस्टर में रोते-कलपते अकाल पीड़ित मर्दों, औरतों और बच्चों का जुलूस दिखाया गया था। उसके नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—

हमारी अन्तिम आशा हिटलर !

सबसे ऊपर जो पोस्टर चिपकाया गया था उसमें हिटलर का चेहरा दिखाया गया था। उस पर लिखा था—



जर्मनी वासियो, मुझे चार साल का मौका दो !
और फिर निर्णय करो !

"केवल नाज़ियों के पोस्टर हैं ! विज्ञापन कंट्रैक्टरों को आदेश दिया गया है कि वे और कोई पोस्टर विज्ञापन-स्तम्भों पर न चिपकायें।" फ्राँज ने बताया।

"रेडियो पर भी सारे दिन यही राग गाया जाता है। वे बराबर यही दुहराते रहते हैं 'हिटलर को वोट दो ! हिटलर को वोट दो !' " हिल्डी ने कहा।

"लेकिन वे लोग तो पहले ही यह धमकी दे चुके है कि हमारे सारे सदस्यों को बंद कर देंगे और बहुमत मिले या न मिले सरकार चलाते ही रहेंगे।"

हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते गये।

केथी ने कहना शुरू किया—"हमारी अफ़सर, बूढ़ी महिला क्लर्क ने, जो वर्षों वहाँ रह चुकी है, हमेशा शुरू से आखीर तक जर्मन राष्ट्रवादियों, यानी हुगेनबर्ग, को वोट दिया है। वह कहा करती है—'अब हमें एक कठोर और सुदृढ़ व्यक्ति की जरूरत है और ईश्वर ने इस रूप में एडोल्फ़ हिटलर को हमारे बीच भेज दिया है !' "

जू स्टेशन पर हमेशा की तरह खूब भीड़-भाड़ थी। फ्राँज ने एकाएक मुझे टहोका लगाया। दूकानों पर लगे अखबारों की सुर्खियाँ जैसे चीख-सी रही थीं—

कार्ल लीबक्नेच्ट भवन में पुनः तलाशी !
गुप्त तहखाने पाये गये !
सशस्त्र विद्रोह के आदेशों का भी पता चला !

हम चुपचाप एक दूसरे की ओर देखने लगे। उन लोगों ने एक हफ्ते पहले पार्टी भवन पर कब्जा कर लिया था और पिछले चन्द

वर्षों में वे दर्जनों बार पार्टी भवन की तलाशी ले चुके थे। अब वहाँ 'गुप्त तहखाने' और 'सशस्त्र विद्रोह के आदेशों' को भी ढूँढ निकाला गया था!

हमारे सामने खड़े लोगों ने अपने सिर घुमाये। एक पुलीस का सिपाही, टोप की पट्टी का बकसुआ ठोढ़ी के नीचे बाँधे, और एक एस० ए० का आदमी, सिर पर भूरी टोपी चिपकाये हुये, हमारी ओर आया। एस० ए० के आदमी ने अपनी भूरी पोशाक पर सिपाहियों वाला नीला कोट पहन रक्खा था और उसकी पेटी से रबड़ का एक हन्टर और रिवाल्वर लटक रही थी।

"एस० ए० का विशेष सिपाही," फ्रांज ने धीरे से कहा।

अब हम लोग सिनेमा के बाहर खड़े थे। मुझे फ़िल्म में कोई दिल-चस्पी नहीं रह गई थी। लेकिन मैं लड़कियों को निराश नहीं करना चाहता था। फ्रांज भी बहुत कुछ इसी तरह सोच रहा था। उसने एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाला। उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं।

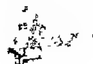
वहाँ रेकार्ड किया हुआ हल्का संगीत गूँज रहा था, लोग फुसफुसा कर बातें कर रहे थे। यह सब-कुछ एकाएक असह्य हो उठा। मैं पर्दे पर जबरन अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पा रहा था। मेरी आँखों के सामने अखबारों की सुर्खियाँ और एस० ए० के विशेष सिपाही की सूरत नाच रही थी।...

और अब हम घर लौट रहे थे। अखबार के हरकारे 'नॉचटाउसगैब्रे' अखबार के मुख्य संस्करण की सुर्खियों की बाँग लगा रहे थे :

कार्ल लीबक्नेच्ट भवन के नये नये रहस्य खुले!

गुप्त चोर दरवाजे, भूमिगत गलियारे पाये गये!

"वे एक कदम और आगे बढ़ गये," फ्रांज ने कहा—"वे चुनाव के लिए आधार-भूमि तैयार कर रहे हैं। मुझे तो ऐसा ही लगता है।



मुसोलिनी ने भी ऐसा ही जाल-बट्टा रचा था। उसकी भी जान लेने की कोशिश नहीं की गई थी ? हुँह !"

एक बगल की गली से लाउडस्पीकर से निकलते संगीत की तीव्र ध्वनि आ रही थी। एक रीच ब्राडकास्टिंग कम्पनी की कार थी। वह एकाएक चमकते-दमकते नाजी पोस्टरों के सामने पड़ गई। संगीत रुक गया।

"पाँच मार्च को हिटलर को वोट दो !" लाउडस्पीकर से चीत्कार जैसी आवाज आई। मैं क्रोध से आग-बगूला हो उठा।

हम वालस्ट्रैसी के प्रवेश द्वार पर रुक गये। हमने पूरा रास्ता बिना एक शब्द भी बोले हुए तय कर डाला था। नुक्कड़ पर हिल्डी गुलमा बेचने वाले बिल की ओर देखने लगी। वह कुकुरमुत्ते के पेड़ जैसे टेन्ट में कम्बल ओढ़े बैठा हुआ था। उसके सामने निकेल के बर्तन से भाप निकल रही थी।

"मैं आप सब लोगों को आज गुलमा खिलाऊँगी। आज के हमारे कार्यक्रम का यही समापन होगा," हिल्डी ने कहा।

हमें देख कर गुलमा-विक्रेता बिल खुश हो गया। वह हम लोगों को जानता था। मैं जानता था कि कभी-कभी फ्राँज उसके हाथ अखबार बेचा करता था, और उसने उसका नाम चन्दा देने वालों की सूची में दर्ज कर रक्खा था।

"आप लोग रोटी भी लेंगे ?"

हमने धन्यवाद देकर इनकार कर दिया।

"बड़ा गंदा मौसम है, है न ?"

"बिलकुल ठीक कहते हो।"

"आप लोग अपने बिस्तर-कपड़े बाँध रखिये, दोस्तो।"

"तुम्हारी बात पर हम ध्यान रखेंगे," फ्रांज ने उत्तर दिया—"नमस्कार !"

"नमस्कार ! मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें !"

दो दिन बाद की बात है। फ्रांज ने मुझसे हेनरिच के पास जाने को कहा। वह हमारे अखबार के लिए डिजाइनें बनाया करता था।

मैं सीढ़ियों पर चढ़ गया। उसके दरवाजे पर 'आगस्ट हेनरिच, अध्यापक' के नाम की पीतल की प्लेट लगी हुई थी। मैंने घंटी बजाई। क्षण भर बाद ही दरवाजे में बने निरीक्षण-छिद्र का पर्दा हटा, और फिर हेनरिच मेरे सामने आ खड़ा हुआ—लम्बा कद, गोल चेहरा। उसके काले बाल सीधे पीछे की ओर ही कढ़े हुये थे। बालों पर तेल चमक रहा था।

"आप, कौन हैं ?"

उसने तेजी से अपने हाथ हिलाये। "अगर आप कृपा करें तो..."

पता नहीं क्या मामला था उसका ? वह बहुत चिन्तित दिख रहा था; और व्यवहार भी विचित्र ढंग का कर रहा था।

हॉल में दीवारों पर साफ़-सुथरा चमकता हुआ वालपेपर लगा हुआ था। लाल रोग़न से रंगे हुये हुक दीवारों पर लगे थे। उसी रंग की एक छोटी मेज रक्खी थी। उसके ऊपर एक आईना था। मैंने अपना कोट एक हुक पर टाँग दिया।

"माफ़ कीजियेगा, सारा कुछ बड़ा अस्तव्यस्त हो गया है। आइये बैठक में चल कर बैठें।"

चमड़े से ढंकी लोहे की कुर्सियों पर कमीजों, टाइयों और गुरमेटे हुये मोजों का अस्तव्यस्त ढेर पड़ा हुआ था। कोने में कोच पर दो सूट पड़े हुये थे। हेनरिच ने एक कुर्सी साफ़ कर के कहा—"बैठिये।"



वह कमरे के बीच में रखी मेज के पास गया और एक मोटे ड्राइंग पेपर को रोल करने लगा। क्या यह यहाँ से जा रहा है ? नियमत: तो बिलकुल नया-नया निर्मित मकान बहुत साफ़-सुथरा, सजा-सँवर दिखा करता है। हेनरिच ने रोल किये हुये कागज़ को खोल दिया और उसे मेरे सामने ले कर खड़ा हो गया।

"आप तो इसे पहले ही देख चुके होंगे—इसे मैंने ही तैयार किया है।" मैंने महसूस किया कि वह यह बात काफ़ी संकोच के साथ कह रहा था। वह कोयले की खान का स्याही और कलम से बनाया हुआ चित्र था। पाइप और लोहे के गर्डर अस्तव्यस्त एक-दूसरे पर फैले हुये दिखाये गये थे। और उस नारकीय गढ़े के ऊपर एक हँसिये-हथौड़े वाला लाल झंडा लहरा रहा था।

"यह चित्र बगल के कमरे में टँगा रहता था, है न ?"

हेनरिच ने हामी के भाव से सिर हिलाया। फिर उसने उस चित्र को रोल कर के एक धागे से बाँध दिया।

"मैं यहाँ आने का कारण तो बता दूँ। आपको हमारे अखबार के लिये एक नई हेडिंग लिखनी है। मैं लाह की प्लेट ले कर आया हूँ।"

हेनरिच का सिर झटके से ऊपर उठ गया। उसका चेहरा तमतमाहट से काँप रहा था। क्यों ? आखिर मामला क्या था ? वह तो ऐसा व्यवहार कर रहा है जैसे मैंने उससे आकाश के तारे माँग लिये हों !

"....मैं यह काम नहीं कर सकता। मैं यह फ़्लैट छोड़ कर आज ही जा रहा हूँ—मैं इस जिले से ही कूच कर रहा हूँ।"

"यह तो मेरे लिए आश्चर्यजनक खबर है।"

उसने रोल किये हुये चित्र को मेज पर फेंक दिया।

"क्यों ? क्या आपको मालूम नहीं कि यहाँ क्या कुछ हो रहा है ?" वह इस तरह चीख-सा पड़ा जैसे हिस्टीरिया का मरीज़ हो।

क्या यह पागल हो गया है ? मुझे भी क्रोध आ गया।

'क्या मामला हो सकता है ?' मैं बड़े प्रयास से अपने गुस्से पर नियन्त्रण कर के सोचने लगा। हेनरिच मेरे पास आ गया; बालों की एक लट उसके चेहरे पर आ गिरी है।

"रीचस्टैग आग की लपटों में जल रहा है—रीचस्टैग में आग लगा दी गई है !"

मैं आँखें फाड़ कर उसकी ओर देखने लगा।

"हाँ, हाँ, रीचस्टैग !" उसने फिर दुहराया—"रेडियो पर घोषणा हुई है। रेडियो वाले इस सम्बन्ध में बराबर नवीनतम समाचार प्रसारित करते रहते हैं।"

अब जा कर मेरी समझ में आया कि उसके कहने का मतलब क्या था। रीचस्टैग—उन लोगों ने रीचस्टैग में...

"अब उनका मौका आया है !" मैंने भी चिल्ला कर कहा—"उनका वार हम पर है ! रीचस्टैग में आग लगने की बात तो उनका चुनाव प्रचार का नारा है !"

हेनरिच बेचैनी से इधर से उधर चहलकदमी करता रहा, रोल किये हुये कागज को अपने हाथों में मरोड़ता रहा।

"लेकिन मुझे तो यहाँ से चले ही जाना है...मैं अब बहुत ज्यादा नजर पर चढ़ गया हूँ—वे लोग अब हमें एकदम नेस्तनाबूद करने पर तुले हुये हैं..." वह हकलाता हुआ-सा कहता रहा। वह मेरी नजर से बचने की कोशिश कर रहा था। "कुछ भी हो—अब मैं आप लोगों के इस पचड़े में शामिल नहीं हो सकता।"

मैं उठ खड़ा हुआ। वहाँ की हर चीज जैसे मेरा दम घोंट रही

थी। चारों ओर फैले हुये कपड़े; स्वयं हेनरिच की मुखाकृति।

"अच्छा तो नमस्कार!" मैंने व्यंग्यपूर्वक कहा और चल दिया।

काफ़ी देर हो चुकी थी, लेकिन हर जगह लोग खड़े बातचीत कर रहे थे। अख़बारों को तो लोग हरकारों के हाथों से झपट्टा मार-मार कर लिये ले रहे थे।

रीचस्टैग आग की लपटों में !

मैं कूद कर बस पर चढ़ गया। मुझे वापस पहुँचना था—फ्रांज के पास।

वालस्ट्रैसी में लोगों के झुण्ड दरवाजों पर खड़े बहस-मुबाहिसा कर रहे थे। वे गैस की लैम्पों के नीचे खड़े अख़बार के प्रथम समाचारों को पढ़ रहे थे। फ्रांज भी अपने मकान के सामने खड़ा था। उसके इर्द-गिर्द काफ़ी लोगों का समूह था। मैंने उस झुण्ड में खड़े रोथेकर, टीवर्ट, सच्वीबस, एडी को पहचान लिया। मैं दौड़ने लगा।

"फ्रांज ! फ्रांज !"

वह मुझे अलग हटा ले गया। अर्नस्ट टीवर्ट भी उसके साथ आ गया।

"कितने मोटे अक्षरों में अख़बारों की ये सुर्खियाँ छपी हैं।" आग के सम्बन्ध में मेरे बिना कुछ कहे ही उसने कहा। "वे लोग कम्युनिस्ट चारे को ही आड़ बना कर ढेर सारी सार्वजनिक सम्पत्ति के रूप में उनसे उसकी कीमत वसूल रहे हैं।"

वह हमेशा की तरह मेरे सामने खड़ा था। हमेशा की ही तरह वह शान्त भाव से बोल रहा था, जब कि मैं काफ़ी उत्तेजित हो उठा था। वह अपनी पतलून की जेबों में हाथ डाले मेरी ओर बड़ी स्वच्छ दृष्टि से देख रहा था।

"अब हम लोग किस तरह...लेकिन हमें कुछ करना ही चाहिये...।"

"अगले चन्द दिनों में ही हमें सब कुछ विस्तार से मालूम हो जायगा," फ्रांज मेरी बात के बीच ही में बोल पड़ा—"तब हम लोग अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करेंगे। छोटे पर्चे निकालेंगे हम जिनमे सारे तथ्यों को संक्षिप्त रूप में देंगे।"

वह ठीक कह रहा था। मुझे अब अपनी उत्तेजना पर शर्म आने लगी। हर चीज देख कर भी आँखें मूँदे उसके पीछे दौड़ने से कोई लाभ नहीं होगा।

अर्नेस्ट टीचर्ट ने बड़े विचारपूर्ण भाव से खड़े-खड़े थूका। फिर उसने कहा—"उनका काम करने का ढंग एकदम नया है, लेकिन विचार तो पुराना ही है। जरा स्पार्टेकस उन्नीस की बात सोचो। उन्होंने उस समय लीचटेनबर्ग में पचास जासूसों को गोली मारने की खबर कैसी तैयार की थी!"

मैं फिर उत्तेजित हो उठा।

"लेकिन आज वे तथ्यों को भी अपने मन से गढ़ रहे हैं! और प्रचार के हर साधन पर आज उनका नियंत्रण है—रेडियो, सिनेमा, अखबार, सभी कुछ! हम लोग उनके झूठे प्रचार का मुकाबला आखिर कैसे कर सकते हैं?"

"यह काम हमारे लिए हमेशा बहुत कठिन रहा है," फ्रांज ने बहुत संक्षेप में यह बात कह दी। हम लोग अब अन्य लोगों के पास आ गये। हेलरिच तो जैसे मेरे दिमाग से एकदम उतर ही गया था।

"हेनरिच तो भय से पीला पड़ गया है। हम लोगों का अब वह और साथ नहीं देगा।"

फ्रांज की भौंहें यह सुन कर तन गईं।

"ऐसी हरकत करने वाला वह अकेला ही आदमी नहीं होगा," उसने इस तरह जवाब दिया जैसे हेलरिच से इस तरह की हरकत के सिवाय और किसी चीज की उसे आशा ही न रही हो।

हम कुछ देर तक और लोगों के साथ ही खड़े रहे।

"मैं ऊपर जा रहा हूँ," फ्रांज बोला।

मैं उसके और टीचर्ट के साथ मकान के पीछे के हिस्से तक गया।

"अगर कोई गड़बड़ी हो, तो खिड़की खटखटाना," फ्रांज ने टीचर्ट से कहा। वे दोनों एक ही मंजिल पर रहते थे। फ्रांज बगल वाले हिस्से में रहता था, टीचर्ट मुख्य इमारत में ही। उनकी खिड़कियों का रुख कोने की तरफ़ था, जहाँ दीवारें एक-दूसरे से मिलती थीं।

मैं बालस्ट्रैसी के अन्दर से धीरे-धीरे टहलता हुआ बढ़ा। बिजली घर की लम्बी विशालकाय खिड़कियों के पीछे तेज रोशनियाँ जल रही थीं। मशीनें घनघना रही थीं। इमारत के निर्माण-स्थल के लकड़ी के बाड़ पर हमारे नवीनतम पोस्टर चिपके हुये थे। उनमें एडी की विशिष्ट चीज भी थी! अलग किये हुये कोने पर काली लकीर! लालटेन के प्रकाश में, लम्बी-लम्बी इमारतों के बीच वह एकाकी और दुमंजिला मकान छोटा और कहीं अधिक झुका प्रतीत हो रहा था। चालटिनबर्ग के प्रारम्भिक दिनों से ही वे वहाँ मौजूद थे। वे कितनी ही पीढ़ियों से वहाँ वैसे ही के वैसे खड़े थे। छतों की खपड़ैलें समय की चोट से भद्दी पड़ गई थीं। निचली मंजिल की खिड़कियों के सामने लकड़ी के भारी शटर लटक रहे थे। बालस्ट्रैसी। नगर की दीवार वहीं पर हुआ करती थी। कभी इसके पीछे घास का मैदान जरूर रहा होगा जिसके बीच हवा में लहराते हुये पेड़ विद्यमान रहे होंगे। अब उस सड़क पर एक छोटी-सी हरी टहनी भी नहीं थी। फिर भी मैं प्रसन्न था। वह हमारी सड़क थी, मेरी सड़क! मैं वहाँ का निवासी था।

मेरी आँखें जल रही थीं। मैं थका हुआ और शक्तिहीन हो गया था।

अगले दिन घर में किसी के उठने के पहले ही टीचर्ट ने मेरे दरवाजे पर घन्टी बजाई, जिससे मकान मालकिन नाराज हो गई और उसको

शान्त करने में मुझे दिक्कत हुई। उसे काम करने के लिए तुरन्त ही जाना था। फ्रॉंज रात में ही भाग गया था। अब टीचर्ट ने मुझे उसके घर जाने से मना किया।

मैंने सावधानी से पूछताछ की। पुलीस और एस० ए० के आदमियों ने रात में वालर्स्ट्रैसी पर छापा मारा था। मुझे हिल्डी को सचेत कर देना चाहिये।

अचार बेचने वाले ने मुझे बतलाया कि मामला कैसे शुरू हुआ था। वह उस समय अपने कुकुरमुत्ते वाले खेमे के अन्दर बैठा हुआ था। हल्की रोशनी और धीमी आवाज करते चल रहे इन्जनों वाली दो खुली लारियाँ उस सड़क पर आईं। पुलीस और एस० ए० के वर्दीधारी आदमी कतारों में बेन्चों पर बैठे थे। मोटरें सड़क के मोड़ पर रुक गईं। वर्दीधारी लोग उछल कर नीचे उतरे। सितारेदार कालर वाली वर्दी पहने एस० ए० के एक आदमी ने धीमी आवाज में हिदायतें दीं।

"तीसरी मंजिल पर दाहिनी ओर—जेंडर।"

एक छोटी-सी टोली तुरन्त चल पड़ी।

"मकान नम्बर अट्ठासी—फ़िशर। पचासी—कैंटोरेक।"

"बहुत अच्छा, सर!"

बाकी बातें मुझे जेंडर और टीचर्ट से मालूम हुईं। फ्राव जेंडर इतनी हल्की नींद सोती है कि वह घर में हुई हल्की-से-हल्की आवाज भी सुन लेती है। भारी पैर सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर आये। वह अगले कमरे के दरवाजे पर दौड़ कर पहुँची।

"फ्रॉंज!"

वह उछल कर खड़ा हो गया। केथी भी जग गई। वह अपने बिस्तरे पर सीधी बैठ गई।

"कोई सीढ़ियों पर ऊपर आ रहा है।"

फ्रॉंज ने पतलून और जूते पहन लिये, फिर जैकेट। अब वह स्वयं



उनकी आवाजें सुन सकता था। वे जरूर इस समय तक उसके दरवाजे के करीब पहुँच गये होंगे। केथी ने अपना पर्स अपने भाई के हाथ में पकड़ा दिया। फ्रांज ने खिड़की खोली और सेहन में झाँका। वहाँ अभी कोई नहीं था। वह बाहर खिड़की के पत्थर पर चढ़ गया और उसने टीचर्ट की खिड़की के शीशे पर दस्तक दी। पीछे अब वे उसके फ्लैट का दरवाजा भड़भड़ा रहे थे।

"दरवाजा खोलो! पुलीस आई है! दरवाजा खोलो!"

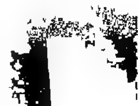
केथी ने अपनी आवाज को उनींदी बना कर कहा—"कृपया एक मिनट रुकें। हम कुछ पहन लें।"

दूसरी तरफ टीचर्ट केवल नाइट-शर्ट पहने हुये खिड़की के पीछे दिखाई दिया। उसने जोर से खिड़की खोल दी और चुपचाप अपना हाथ बाहर बढ़ा दिया। फ्रांज एक सेकेन्ड सेहन में लटका रहा और फिर वह उछल कर टीचर्ट की बगल में पहुँच गया। टीचर्ट ने दरवाजा बन्द कर दिया। फ्रांज ने दूसरी तरफ केथी को भी यही करते देखा।

जेंडर के दरवाजे पर वे अपने जूतों से ठोकर मार रहे थे। इस भड़भड़ाहट से सारा का सारा घर जाग गया। घर के सारे लोग सुन रहे थे।

केथी ने दरवाजा खोला। उसकी मा उसके पीछे खड़ी थीं। उन्होंने अपने कोट पहन लिये थे। वे दोनों टार्चों की चौंधिया देने वाली चमक से पीछे उछल गई। पिस्तौल की नलियाँ चमक उठीं। पहले व्यक्ति ने अपने पैर से ढकेल कर दरवाजा खोल दिया। दरवाजा केथी की बाँह में लगा। वे रसोईघर में गये। एस० ए० के चार आदमी और दो पुलीस वाले थे। चौड़े कन्धे वाले दैत्याकार एस० ए० के एक आदमी ने अपनी पिस्तौल की नली वृद्धा की छाती पर टिका दी।

"तुम्हीं फ्राव जेंडर हो?"



केथी ने देखा कि किस तरह उसके कोट को पकड़े हुये उसकी मा के हाथों का कांपना एकाएक बन्द हो गया।

"हाँ ! तुम क्या चाहते हो ?" उसने दृढ़ता से पूछा।

चौड़े कन्धे वाले व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने टार्च के प्रकाश को रसोईघर में चारों ओर घुमाया, और कमरे का दरवाजा ढकेल कर खोल दिया। बाकी लोग धक्का-मुक्की करते हुये उसके पीछे बढ़े।

कमरा खाली देख कर वह एस० ए० वाला क्रोध से भड़क उठा। वह झटके के साथ मुड़ा और दरवाजे में खड़ी महिलाओं पर रोशनी टिका दी।

"तुम्हारा बेटा फ्रांज कहाँ है ?" वह चीखा।

"मुझे नहीं मालूम," मा ने कहा।

"तुम्हें नहीं मालूम ?'

अब केथी की बारी थी।

"और तुम ? तुम भी नहीं जानतीं, एँ ?"

"नहीं !"

सभी आदमियों ने अपनी टार्चें केथी की ओर घुमा दीं। उसने अपना कोट और जकड़ लिया और कालर को सामने की ओर ऊपर उठा लिया।

"रोशनी जलाओ !" मा को चीख कर आदेश मिला।

वह रसोईघर में गई और एस० ए० का एक आदमी उनके साथ था। जब वह कोने में परदे के पीछे टटोल रही थीं, उस व्यक्ति ने सन्देह के स्वर में उनसे प्रश्न किया—"तुम क्या कर रही हो ?"

"गैस की टोंटी खोल रही हूँ।"

"अच्छा !"

"कमरों की तलाशी लो !"

एस० ए० का वह भारी-भरकम व्यक्ति प्रकट रूप से उस दल का नेता था, या फिर इस तरह व्यवहार कर रहा था। जो हो, दोनों स्कूपों ने तुरन्त उसकी आज्ञा का पालन करना आरम्भ कर दिया। उन आदमियों ने बिस्तरे के चादर वगैरह को फ़र्श पर फेंक दिया और तोशकों को ऊपर उठा कर धमाके के साथ गिराया। दो एस० ए० वाले रसोईघर में घुस गये। दोनों महिलाओं ने बर्तनों का खड़खड़ाना सुना। वे रसोईघर की आलमारी सरका रहे थे। एक एस० ए० वाला किताब की आलमारी के पास खड़ा था और हर किताब को सावधानी से जाँच रहा था। कुछ किताबें उसने फ़र्श पर फेंक दीं और कुछ पास पड़ी मेज पर डाल दीं। केथी ने देखा कि गोर्की और लेनिन की लिखी पुस्तकें भी उनमें थीं। चौड़े कंधे वाले व्यक्ति ने कपड़े की आलमारी को झटके के साथ खोल डाला। वह हर सूट की जेबें टटोल रहा था, यहाँ तक कि कपड़ों के गोटों को भी। वह जाँची हुई वस्तुओं को केथी की पलँग पर फेंकता जा रहा था। फिर उसने तस्वीरें उतारीं और दीवारों को ठकठकाया। मेज के किनारे पर रखे लेनिन के चित्र को उसने पटक कर तोड़ दिया। केथी ने देखा कि पुलीस वाले मजबूर हो कर तलाशी ले रहे थे। वे बस पलंगों के नीचे झाँक रहे थे और सोफे के गद्दों पर अपने हाथ फेर रहे थे। भारी-भरकम व्यक्ति मेज पर चढ़ गया स्टोव के ऊपर देखने के लिए।

"तुम लोग बस मेरी मेज बरबाद कर रहे हो। वहाँ तुम्हें धूल के सिवा कुछ न मिलेगा।" मा ने शान्तिपूर्वक कहा।

एस० ए० वाला कूद कर नीचे आ गया।

"तुम बस अपने काम से काम रखो, समझीं ? हम यहाँ खास कर तुम्हारे लायक बेटे के कारण आये है। लेकिन तुम जानती नहीं कि वह कहाँ है !"

वह एकाएक सीधे मा के पास गया। "आज वह यहाँ आया था या नहीं ?"

वृद्धा क्षण भर मौन रही और उसने केथी की ओर देखा।

"नहीं !" उसने दृढ़ता से कहा।

एस० ए० वाले की दृष्टि उसके अन्दर जैसे घुसती चली गई। और दूसरा एस० ए० वाला मुड़ा।

"वह यहाँ नहीं आया – सचमुच नहीं आया," केथी ने मौन भंग करते हुये कहा।

भारी-भरकम सरदार उसकी ओर मुड़ा।

"तो फिर हम यहाँ उसका इन्तजार करेंगे !"

"क्या हमें रोशनी की जरूरत है ?" अन्य व्यक्तियों में से एक ने पूछा।

"नहीं, रोशनी करके हम उसे सावधान न होने देंगे। टार्चों से बाद में काम चल जायगा !"

महिलाओं की ओर वह बनावटी भाव से मुड़ा।

"महिलाओं ! अगर आप चाहें तो इस तरह अपनी टूटी हुई नींद पूरी कर लें—हाँ, यहाँ नहीं, दूसरे कमरे में।"

टीचर्ट ने फ्रांज को कोट और हैट दे दिया था।

"सोमवार को, चुनावों के बाद तीन बजे। जोन को वह जगह मालूम है।" फ्रांज केवल इतना कहने के लिए रुका था। फिर वह मुख्य इमारत की सीढ़ियाँ तेजी से उतरा, सेहन की दीवार पर चढ़ा और बिजली घर के पास से भागता हुआ निकल गया।

संभवतः वे मेरा पीछा कर रहे थे ! उन्हें नामों की एक सूची मिल गई है। कल का दौरा अवश्य ही बहुत पहले बनाई गई योजना के अनुसार था। वे फ्रांज के यहाँ क्यों गये ? वर्ना यह कैसे संभव हुआ कि



भवन सुरक्षा दल के दोनों नेता फिशर और कैटोरेक गिरफ़्तार कर लिये गये। चान्सलर के नामांकन वाली शाम को रिचर्ड ह्यूटिंग और फ़ौंज के साथ हौलियों का चक्कर लगाना मुझे याद आ रहा है। उस समय मैंने षड्यन्त्र के भ` वातावरण को अन्दर-ही-अन्दर कोसा था। इन चन्द हफ़्तों ने हम सब को किस तरह बदल दिया है। रिचर्ड ह्यूटिंग! क्या वह सुरक्षित है? आज दिन भर मैं उससे मिलने की कोशिश करता रहा। लेकिन असफल ही रहा।

मैं एक सूने बस-स्टॉप पर आ कर तब तक प्रतीक्षा करता रहा, जब तक कि ट्राम ने गति नहीं पकड़ ली। फिर मैं उस पर कूद कर चढ़ गया। ट्राम ठसाठस भरी थी। अधिकांश चेहरे अख़बारों के पीछे गड़े हुये थे। वहाँ उस ट्राम में कौतूहल की भावना व्याप्त थी। प्रत्येक व्यक्ति रीखस्टैग के अग्निकांड के बारे में सोच रहा था। मैंने अपने बगल में बैठे व्यक्ति के कंधे के ऊपर से उसके अख़बार पर दृष्टि डाली।

रीख के राष्ट्रपति का आदेश

ताजे संस्करणों में से एक था वह। एक बस-स्टॉप पर मैंने अख़-बार बेचने वाले एक लड़के को इशारे से बुलाया।

"...देशद्रोह, आगजनी और सरकार के विरुद्ध षड्यंत्र करने के लिये मृत्यु-दण्ड, व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर नियन्त्रण, डाक की गोपनीयता का खात्मा, मकानों की रात या दिन किसी भी समय तलाशी लेने का अधिकार..."

हिल्डी बस-स्टॉप पर खड़ी थी। मैंने टेलीफोन पर मिलने का समय नियत कर लिया था। उसने मेरी ओर चिन्तायुक्त भाव से देखा।

"तुमने बड़े विचित्र ढंग से बात की थी। क्या कुछ हो गया है ?.... फ्रांज को ?"

मैंने उसकी बाँह में अपनी बाँह डाल दी।

"हाँ, फ्रांज ही को। उसे रात में भाग जाना पड़ा।"

हिल्डी ने मेरी बाँह जकड़ कर पकड़ ली। वह रुक गई।

"आओ ! शान्त रहो, वर्ना हमारी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित होगा।"

"हाँ-हाँ," रुँधे गले से उसने कहा—"आखिर क्यों ?"

मेरी बाँह पर उसका बोझा भारी हो गया।

"उन्होंने कल रात हमारी गली पर छापा मारा। हर जगह यही हुआ। वह टीचर्ट की खिड़की से भाग गया।"

अभी भी वह हैरान-सी मुझे देखती रही। मैंने उसका हाथ दबाया।

"तुम जानते हो कि वह इस समय कहाँ है ?"

"मैं उससे अगले सोमवार को मिलूँगा।"

"मैं नहीं मिल सकती—अभी आज ही ?"

"समझ की बात करो, हिल्डी। मैं तुम्हें बाद में बतलाऊँगा कि उससे तुम कैसे मिल सकती हो। हमें सतर्क रहना चाहिये। हममें से बाकी बचे हुये लोगों पर भी शायद निगरानी रखी जा रही है। इसीलिये मैं तुमसे यहाँ मिला।"

हिल्डी कुछ देर तक सामने देखती रही।

"हाँ ..हाँ..."

बेचारी ! मैंने उसकी ओर देखा। इससे पहले कभी भी उसकी बाँह में बाँह डाल कर मैं चला नहीं था। वह कैथी से जरा लम्बी थी।

"ऐसा ही मेरे और कैथी के बीच भी थी। हमें उसे बचाव के रूप में अलग रखना पड़ा है। जो हो, फ्रांज खोया नहीं है।"

हिल्डी क्षण भर मौन रही।

"हाँ, तुम ठीक कहते हो, जैन। क्षण भर के लिये मैं बहुत परेशान हो गई थी।" उसकी यह बात क्षमा-याचना जैसी ध्वनित हुई।

"ठीक है, ठीक है, मैं तुम्हें खबर देता रहूँगा। हम फिर यहीं बस-स्टॉप पर मिलेंगे।"

हिल्डी ने हामी के भाव से सिर हिला दिया।

"हमारे मुहल्ले में जब कभी मुझ से या कैथी से तुम्हारी भेंट हो, तो तुम हमें पहचानना मत। तुम ऐसा दिखलाना कि जैसे हम अपरिचित हों!"

"ठीक है, मैं समझ गई," उसने शांत भाव से कहा।

हम चुपचाप चन्द कदम चलते रहे।

"तो यही बात थी, जिससे मेरा भाई सारी रात घर पर नहीं था!" वह फूट पड़ी। "वह सिर्फ सुबह आया था। वह भी मदद दे रहा होगा?"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। यह उसके लिये दोहरी परेशानी की बात है। बेचारी!

"आओ चलो। ट्राम तक पहुँचा दूँ। हम अलग-अलग चलेंगे।"

बस-स्टॉप पर हिल्डी ने पर्स निकालने के लिये अपने हैन्डबैग को टटोला। उसने मुझे पाँच मार्क दिये।

"ये फ्रांज के लिये हैं। उसे इनकी जरूरत पड़ेगी। और मेरे पास नहीं है।"

इस समय तक उसने अपने को सँभाल लिया था।

मैं जैसे ही घर पहुँचा, रोयेकर आ गया।

"हमें कोशिश कर के तुरन्त फ्रांज से सम्पर्क करना चाहिये।"

एक भारी बोझ मेरे सीने को दबाता प्रतीत हुआ।

"क्यों, क्या बात है ?"

"मैं अभी बेरोजगारी के दफ्तर से आया हूँ, जहाँ मैं अपना पैसा लेने गया था। वे उसे गिरफ्तार कर सकते हैं।"

रोथेकर मेरी जैकेट को कस कर जकड़े हुये था। उसके हाथ काँप रहे थे। वह उत्तेजना से हाँफ रहा था। उसका चश्मा धुंधला हो गया था। मैं समझ नहीं सका, कि उसके शब्दों से फ्रांज का क्या संबंध था। मैंने एक कुर्सी उसकी ओर खिसका दी।

"बैठ जाओ, एरिक। मुझे सब-कुछ विस्तार से बतलाओ। मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पा रहा हूँ।"

उसकी उत्तेजना का असर मेरे ऊपर भी हो गया था। कुछ अप्रत्याशित बात जरूर हुई होगी। रोथेकर कुर्सी पर अस्त-व्यस्त बैठ गया, एक ऐसे व्यक्ति की तरह जो किसी आघात से सुस्त पड़ गया हो। उसने अपना चश्मा उतार कर रूमाल से साफ किया। उसकी कमजोर आँखें स्नायुविक उत्तेजना से झपक रही थीं।

"हाँ, क्या गड़बड़ी हो गई ?" मैंने पूछा।

रोथेकर ने चश्मा लगा कर एक गहरी साँस ली।

"आज मुझे वसीका मिलने वाला था। हम एक लम्बी कतार में खड़े थे, और थोड़ा-थोड़ा कर के आगे बढ़ रहे थे। सामने वाले सिर एकाएक आगे झुक गये। खजांची की मेज पर कुछ गड़बड़ी हो गई। 'मिस्टर न्यूमन ?' मैंने खजान्ची को तेजी से पूछते हुये सुना।..."

"तुम्हारा मतलब उस न्यूमन से है, जो स्टैनिस का रहने वाला है ?" मैंने उस बात का अनुमान लगाया, जो आगे आने वाली थी।

रोथेकर ने हामी के भाव से सिर हिला दिया। "हाँ, न्यूमन ही। मैं उसे तुरन्त पहचान गया। 'एक मिनट रुकें,' खजान्ची ने उससे कहा। और हमने दो आदमियों को एकसाथ उछल कर आगे आते देखा। वे एक ओर बैठे हुये थे। उनमें से एक उछल कर लकड़ी की रेलिंग पर चढ़

गया, और उसने न्यूमन की बाँह पकड़ ली।" रोथेकर ने अपनी आवाज धीमी कर दी। "वह ऐसे अचम्भे में पड़ गया था, कि उसे अपनी हिफाजत करने का मौका ही नहीं मिला।" उसने स्नायुविक तनाव से अपना चश्मा एक उँगली से साफ किया। "फिर वे उसे अपने बीच में ले कर बाहर चले गये। उन दोनों का एक-एक हाथ उनकी जेबों में था।"

रोथेकर मौन था। मैं बराबर उत्तेजित होता गया। उस दिन शनिवार था। सोमवार से पहले मैं फ्रांज से भेंट नहीं कर सकता था। हमें एक दूसरे मुहल्ले की एक गली में मिलना था। यह स्थान हमने बहुत पहले ही से तय कर रखा था, ताकि यदि कोई अनहोनी घटना हमें अलग कर दे, तो भी हम मिल सकें। मैं गौर से विचार करता रहा, लेकिन कोई रास्ता नहीं दिखा। रोथेकर के आगे के वर्णन को मैं केवल आधा ही सुन रहा था। वह बेकार व्यक्ति ज़ोरदार तर्क कर रहा था। वे उसकी खोज कर रहे थे। वह यहाँ क्यों आया, जब उसे मालूम था कि उसकी तलाश की जा रही थी? और वह कैसे रह सकता था?

"क्या तुम्हें मालूम है कि वसीके के लिये फ्रांज़ कब जाता है?"

रोथेकर एक सेकेंड सोचता रहा।

"वह अपने कार्ड पर मुहर बृहस्पतिवार को लगवाता है, और वसीका बुधवार को लेता है," उसने उत्तर दिया।

"तो वह बुधवार से पहले वहाँ नहीं जायगा? तुम्हें ठीक-ठीक मालूम है न?"

उसने दृढ़तापूर्वक हामी के भाव से सिर हिलाया। "बिल्कुल ठीक मालूम है।"

"मैं उससे सोमवार से पहले नहीं मिल सकता, एरिक। इससे काम चल जायगा, है न?"

"हाँ, ठीक है, जॉन!"

हम मौन हो गये। मैं मामले पर विचार करता रहा। मेरी मकान-

मालकिन की वैकुअम झाड़ू बाहर गलियारे में जोर-जोर से भरभराती हुई चालू हो गई।

"अगर तुम भी साथ आओ, एरिक, तो अच्छा रहेगा। यह अपने नये मोहल्ले में एक कमरा किराये पर लेना चाहता है, ताकि हमें एक ऐसा अड्डा मिल जाय, जिस पर सन्देह न हो सके। तब तुम्हें मालूम हो जायगा कि यह स्थान कहाँ है।...अगर..."

रोथेकर ने स्वीकारात्मक भाव से सिर हिलाते हुये कहा—"ठीक है।"

"तो भूलना नहीं—सोमवार को तीन बजे। फ्रांज़ टॉयुएनट्जिए-स्ट्रास में के० डी० डब्ल्यू की दूकान की खिड़की में देखता हुआ खड़ा रहेगा। कुछ दूरी रख कर हमारे पीछे-पीछे आना। मैं भी उससे न बोलूंगा। मैं भी बस उसके पीछे-पीछे चलूंगा। ठीक है न?"

"हाँ, मैं वहाँ मौजूद रहूँगा।"

अगले दिन एडी एक सायंकालीन अखबार लिये हुये मेरे पास आया।

कम्युनिस्ट नेता अर्नस्ट थालमन गिरफ्तार !

मैं इस छपे समाचार को घूरता रहा, घूरता रहा, लेकिन एक शब्द भी बोल न सका। थालमन—गिरफ्तार !

"हे ईश्वर, जैन ! यह बात सही नहीं हो सकती ! तुम कुछ बोलते क्यों नहीं ?"

मेरे कंधे को झकझोरता हुआ एडी बोलता रहा, बोलता रहा।

तो मैंने उसे इत्मीनान दिला दिया। यह अवश्य ही झूठी खबर होगी। यह नाज़ियों की एक चाल है, मैंने कहा, हमें हर तरह से परेशान करने की कोशिश। अभी कल ही मैंने एडी को इत्मीनान दिलाया था,

और आज हम जानते थे कि अखबार की वह खबर सही थी। पार्टी का नेता थालमन गिरफ्तार कर लिया गया था। चार्लटिनबर्ग में, हमारे मुहल्ले में। आज रोथेकर ने इस तथ्य की पुष्टि कर दी। उसने यह नहीं बतलाया कि आगे विस्तार की बातें उसे कैसे और कहाँ से प्राप्त हुईं। उसने केवल इतना ही बतलाया कि वह उस कमरे को बहुत पहले ही से जानता था, जहाँ थालमन गिरफ्तार हुआ था।

निराश और परेशान कामरेड मेरे पास आते रहे। वे एक ही बात पूछते। ऐसा हुआ कैसे? टेडी के लिये क्या कोई सुरक्षित स्थान नहीं मिला था? लेकिन मैं उतना ही जानता था जितना वे।

धीरे-धीरे चलता हुआ मैं फ्रांज़ से आगे बढ़ गया, और उस दूकान की अगली खिड़की पर रुक गया। मैंने उसे अपना सिर घुमाते देखा। उसने मुझे देख लिया था। वह भीड़ के अन्दर से रास्ता बनाता हुआ बढ़ा, और उसने मुझे आँख मारी। मैंने उसे कुछ गज आगे बढ़ जाने दिया, फिर धीरे-धीरे उसके पीछे चलने लगा। नुक्कड़ पर मैं इस तरह झुका, जैसे अपने जूते का फीता कस रहा होऊँ, और मैंने अपने पीछे एक सर-सरी नज़र डाल ली। सब ठीक था। रोथेकर हमारे पीछे-पीछे आ रहा था। फ्रांज़ जल्दी ही एक छोटी-सी गली में मुड़ गया। मैंने अपने और फ्रांज़ के बीच की दूरी को बढ़ जाने दिया। वहाँ केवल चन्द व्यक्ति ही थे। फ्रांज़! उसे तो मैं हजारों लोगों में से ढूंढ़ सकता था, तब भी जब कि मेरी ओर उसकी पीठ हो, जैसा कि उस समय था। उसके विचित्र घुमावदार चौड़े कंधों, उसकी बाँहों की झटकदार हरकतों और उसके घने सुन्दर बालों से मैं उसे हमेशा ही पहचान लेता था। वह किसी रीछ की तरह भारी-भरकम ढंग से चलता था, जैसे वह प्रत्येक कदम की जाँच कर रहा हो। नाविकों को उसी तरह चलना चाहिये, जिन्हें अपने पैरों

के तले तैरते हुये डेकों से ही संतोष करना पड़ता है। बकवास ! फ्रांज कभी भी समुद्र पर नहीं गया था। मैं उसके विगत जीवन के बारे में सब-कुछ जानता था। उसे बहुत भटकना पड़ा था, विशेषकर युद्ध के अन्तिम वर्षों में, जब वह विभिन्न कस्बों और प्रान्तों में कार्य करता रहा था—हमेशा बिना नौकरी के कुछ महीने काम चलाने के लिये पूंजी प्राप्त करने के हेतु। युद्ध के बाद प्रारम्भ के महीनों में वह हैमबर्ग में जम गया था। फिर वह नव-संगठित वॉल्क्सह्वर्न में शामिल हो गया, और 'शांति एवं व्यवस्था' बनाये रखने के काम में मदद करता रहा। उस समय की बातें उसने अक्सर मुझे बताई थीं। उस समय वह राजनीति के बारे में जानता ही क्या था ? उस समय अच्छा भोजन और अच्छी तनख्वाह मिलती थी। उस समय वह अठारह साल का था। मैं यह भी जानता हूँ, कि किस तरह वह राजनीति में उतरा। यह १९२३ की बात थी। औजार बनाने की एक फैक्टरी में वह मिस्त्री था। तभी मुद्रा स्फीति आ गई। श्रमिक यह भी नहीं जानते थे, कि वे अपने साप्ताहिक वेतन से एक पौंड चर्बी भी खरीद सकेंगे या नहीं। एक के बाद दूसरी हड़तालें हो रही थीं। फ्रांज पहली बार गिरफ्तार हुआ। उस समय वह एक ट्रेड यूनियन का सदस्य बन चुका था, लेकिन अभी राजनीति के प्रति जागरूक और सक्रिय श्रमिक की अवस्था से बहुत दूर था। उसे चार महीने कैद की सजा हुई। उन चार महीनों ने संसार के प्रति फ्रांज के सम्पूर्ण दृष्टिकोण को ही परिवर्तित कर दिया। इसका श्रेय उसकी कोठरी में बन्द दूसरे कैदी कामरेड अर्नस्ट को था, जो पुराना स्पार्टकियन संघर्षकर्ता था। फ्रांज ने बाद में बहुत अध्ययन किया, और वह मार्क्सवादी अध्ययन केन्द्रों की बैठकों में शामिल होता था। धीरे-धीरे वह वर्ग-जागरूक श्रमिक और संघर्षकर्ता हो गया।

मैं चल दिया। फ्रांज एक मकान के बाहर रुक गया। उसने मकान का नम्बर देखने का अभिनय किया और फिर अन्दर चला गया। मैं

उससे पहले ही चबूतरे पर मिला। हमने हाथ मिलाये। उसकी भूरी आँखें चमक उठीं।

"हल्लो, बूढ़े !" उसने कहा।

"रोथेकर भी आ रहा है। उसे यह स्थान जरूर मालूम रहना चाहिये। बाद में यह जरूर काम का साबित होगा।" मैंने तेजी से कहा।

"अच्छा !" उसके स्वर में कदाचित आश्चर्य था। "दूसरी मंजिल पर दाहिनी ओर, मॉल्के। तुम दोनों वहीं आ सकते हो।"

फ्रांज ने दरवाजा खोला। हम सब से ऊपर की सीढ़ी से गुजरे। बाईं ओर के एक बन्द दरवाजे के पीछे कोई बच्चा रो रहा था। एक और दरवाजा आधा खुला था। वह रसोईघर था। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। फिर हम एक छोटे-से कमरे में पहुँचे। वहाँ एक कोच, एक छोटी-सी मेज और दो बगीचे वाली कुर्सियाँ पड़ी थीं। खिड़की से मकान का एक सूना कोना दिख रहा था। हम बिना कुछ बोले बैठ गये। मैं बुरी तरह उदास था। हमें केवल बुरी खबरें ही मिली थीं।

"तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं लग रही है, एरिक। क्या तुम बीमार हो ?" फ्रांज ने प्रश्न किया।

रोथेकर मुस्कराया। चश्मे के पीछे उसकी आँखों के नीचे काली छायायें दिख रही थीं। उसका चेहरा पहले से कहीं दुबला प्रतीत हो रहा था।

"पिछले कई दिनों से हम काफ़ी सो नहीं सके। इसके अलावा सारी बुरी खबरें ही मिली हैं।" उसने उत्तर दिया।

फ्रांज ने मेरी ओर देखा।

"क्या उन लोगों ने घर पर किसी को गिरफ्तार किया है—कैथी को ?"

"नहीं, लेकिन—"

"तुम बुधवार को वसीके के लिये जाओगे, है न ?" रोथेकर ने उसकी बात के बीच ही में कहा।

"हाँ। लेकिन क्यों ?" फ्रांज ने प्रश्न किया।

"शनिवार को बेरोजगारी के दफ्तर में उन्होंने एक स्टानीमन को गिरफ्तार कर लिया," रोथेकर ने बोझिल स्वर में जवाब दिया।

मौन। फ्रांज विचारमग्न भाव से मेजपोश के कोने को उमेठता रहा।

"तो फिर वसीके के बिना ही काम चलाना पड़ेगा," फ्रांज ने फिर कहा—"मैं यह खबर दूसरों तक भी पहुँचा दूँगा। जो हो, इस क्षेत्र में वे केवल मुझे ही काम में ला रहे हैं।"

बाहर बर्तन खनखनाये। एक सनसनाती केटिल में पानी उबल रहा था।

"अब तुम सब लोगों को मिल कर काम करना चाहिये," फ्रांज ने पुनः कहा—"टीचर्ट और स्वीबस की मदद लेते रहो। दोनों ही विश्वास योग्य है।" और फिर जरा रुक कर—"और तुम्हें टोलियों के काम करते रहने का इन्तजाम भी करना चाहिये। हमें और भी नुकसान उठाना पड़ेगा। मैं हीन्ज प्रेउस और एडी की बात सोच रहा हूँ।"

मौन रह कर ही रोथेकर ने स्वीकारात्मक भाव से सिर हिलाया।

फ्रांज का एकमात्र विचार यह था, कि पार्टी का काम जारी रहना चाहिए। स्वयं अपनी कठिनाइयों के बारे में उसने एक शब्द भी नहीं कहा।

"स्ट्रूबेल से सम्पर्क रखो। तुम जानते हो, कि टीचर्ट के अलावा फैक्टरियों से हमारा संबंध एकमात्र उसी के द्वारा है।"

स्ट्रूबेल! मैंने बाहर मकान के कोने पर दृष्टि डाली।

"स्ट्रूबेल झोंपड़ी वाली बस्ती में तो अब है नहीं," रोथेकर ने धीरे-धीरे कहा, जैसे एक-एक शब्द को तौल रहा हो।

"स्ट्रूबेल तो नहीं है...क्या वह गिरफ्तार कर लिया गया है ?"

रोथेकर ने जोर से अपनी बाँहें मेज पर टेक दीं। "संभवतः उसके साथ गिरफ्तारी से भी बुरी घटना घटी हो। वह भी फरार है। हमने उसे कामरेडों के साथ ठहरा दिया है, तथा उसकी बीबी और बेटे को दूसरों के साथ।"

'ऐसा कैसे हुआ ? पुलिस के द्वारा ?"

"नहीं एस० ए० के आदमियों द्वारा। स्पष्टतः वे उससे अच्छी तरह निपट लेना चाहते थे। तुम तो जानते ही हो, कि पिछले कुछ हफ्तों मे उन्होंने निपटारे में एस० ए० के बीस आदमी लगा दिये थे। कम्युनिस्ट के रूप में प्रसिद्ध कामरेडों की एक उँगली का इशारा भी गुप्तचरों द्वारा देखा जा रहा था।"

"हाँ। और क्या हुआ ?..."

"वे गोलीकांड वाली रात को आये थे, और समय लगभग वही था जब दूसरे तुम्हारे पास पहुँचे थे। स्ट्रूबेल चौंक कर जग गया। गोलियों की आवाज बाहर गूंज रही थी। उसने लोगों की एक काली भीड आबादी के रास्ते पर देखा। वे उसके बाड़ पर ठोकरें मार रहे थे। उसने अपनी बीवी को जगाया, और बेटे को बिस्तर से ऊपर उठा लिया। केवल रात के कपड़े पहने हुये ही वे अपने पड़ोसी के तार वाले बाड के उस पार कूद गये, और उसकी मिट्टी की कोठरी में छिप गये।"

फ्रांज ने अपना सिर दोनों हाथों के बीच टिका लिया और मेज की ओर देखने लगा।

"वे वहाँ ठंडक में काँपते हुये बैठे रहे। स्ट्रूबेल अपनी गोद में बच्चे को लिये हुये था। वह उसे चुपचाप सहला रहा था। दो गज दूर एस० ए० के आदमी झोपड़ी और शेडों के अन्दर टार्चों की रोशनी में उसकी खोज कर रहे थे। उसे न पाने के कारण क्रोधित हो कर एस० ए० के वे आदमी उन सभी चीजों को तोड़-फोड़ रहे थे जो उनके हाथ लग रही थी। झोपड़ी की दीवारों पर गोलियों के दो दर्जन छेद हैं।"

दरवाजे पर दस्तक हुई। एक लम्बी, गोरी महिला कॉफी की एक ट्रे ले कर अन्दर आई। उसने हमारा अभिवादन किया।

"कॉफी पी लीजिये," उसने मैत्री के स्वर में कहा।

फ्रांज ने ट्रे ले ली। "शुक्रिया, एडिथ।"

जैसे ही महिला बाहर चली गई, मैंने धीरे से कहा—"इतना ही नहीं.....रिचर्ड ह्यूटिंग गिरफ्तार हो गया है।"

फ्रांज ने, जो अपनी कॉफी में चीनी मिला रहा था, चम्मच को गिरा दिया। उसने अपने होंठ भींच लिये, और वह हमसे परे देखने लगा। कमरे का मौन कष्टदायक हो रहा था।

फिर रोथेकर ने कहा—"उन्होंने 'ऐन्ग्रिफ' में प्रकाशित किया है—'वालटिलवर्ग का आतंक गिरफ्तार'।"

फ्रांज मौन था।

"वे उसे मैकोवस्की वाले मामले में भी फँसा देंगे। १७ फरवरी को एस० ए० से हुई मुठभेड़ के लिए वे उसे जिम्मेदार ठहरा ही रहे हैं। अगले दिन रिवाल्वर की गोली से एस० ए० का एक आदमी मारा गया। हमारे आदमी तो निहत्थे थे ही। हमारे और एस० ए० के आदमियों के बीच मुठभेड़ शुरू हुई थी। एस० ए० के सैनिक आ गये, और गोली चलाने लगे। जैसा कि आम तौर पर होता है, वे हथियारों से लैस थे।"

मेरे विचार पॉल स्कल्ज़ पर केन्द्रित हो गये। वह बीस वर्ष का था। कितने आभारपूर्ण भाव से वह मुझे देखा करता था, जब मैं उसकी कठिनाइयाँ बतलाया करता था। तेंतीस नम्बर की टुकड़ी ने चन्द हफ्ते पहले उसको छुरा भोंक दिया था।

फ्रांज खड़ा हो गया, और बाहर मकान के कोने की ओर देखने लगा।

मेरा दोस्त आटो मुएनबर्ग! मैं वह सुबह कभी न भूलूँगा, जब हम आई० ए० एच० की आधीरात के बाद वाली सभा से रवाना हुये थे।

उस वक्त लगभग दो बजे थे। "तेईस नम्बर की टुकड़ी से मुझे और भी ज्यादा धमकी से भरे खत मिले हैं," उसने मुझे बतलाया था—"जब मेरे पास बन्दूक ही नहीं है, तो भला मैं अपनी रक्षा किस तरह कर सकता हूँ ?" मैं उसे उसके घर तक पहुँचा देना चाहता था, लेकिन उसने मेरी बात नहीं मानी। "तुम बिल्कुल विपरीत दिशा में रहते हो, जॉन," उसने कहा—"ये दो कामरेड मेरी तरफ ही जा रहे हैं।"

आधे-घंटे के बाद ऑटो ग्रुएनबर्ग का शरीर गोलियों से छिद गया। तैंतीस नम्बर की तूफ़ानी टुकड़ी के सरदार ने, जिसे उसके बालों के कारण घृणा से कैरट हान कहा जाता था, ऑटो के निवास के आस-पास की सड़कों के सभी नुक्कड़ों पर अपने आदमी तैनात कर रखे थे। उन्होंने तेज प्रकाश वाले चौराहे के बीच तक उसे चले जाने दिया, और फिर उस पर सभी ओर से गोलियाँ चलवा दीं। गोली के सात घावों के बावजूद भी ऑटो किसी तरह अपने दरवाजे तक पहुँच गया और फिर गिर कर मर गया। वह हमारे सर्वोत्तम और सर्वाधिक वीर कामरेडों में से एक था। वह चार्लाटेनबर्ग लाल युवक मोर्चे का प्रधान था। बर्लिन के साठ हजार मजदूर उसकी अन्त्येष्टि क्रिया में शामिल हुये।

फ्रांज मुड़ गया।

"तुमने रीखस्टाग गोलीकांड वाला पर्चा कहाँ छापा था ?"

"हमेशा की तरह 'रेडी मेड' पर।"

फ्रांज इधर से उधर टहलने लगा।

"अब तुम सब भयंकर खतरे में हो। यहाँ साइक्लोस्टाइल पर छपाई करने के लिए हमारे पास सुरक्षित स्थान थोड़े ही से हैं। तुम कभी-कभी उनका इस्तेमाल कर सकते हो।"

"यह बहुत अच्छा रहेगा," रोथेकर ने कहा।

"तो फिर मैं जॉन से बन्दोबस्त कर लूँगा। समझ गये, एरिक ? तुम में से केवल एक आदमी को ही आना चाहिये। अब यही नियम

रहेगा। सब से अधिक सुरक्षित कामरेड को भी कोई ऐसी बात न जानने दी जानी चाहिये, जो उसके विशेष कार्य के लिए बहुत आवश्यक न हो।"

रोथेकर ने स्वीकारात्मक भाव से सिर हिलाया।

"एक बात और," फ्रांज ने कहा—"तुम सब को जरूरत पड़ने पर कुछ रातें बिताने के लिए कोई स्थान ढूंढ़ लेना चाहिये—ऐसी जगह, जहाँ यदि तुम्हें अज्ञातवास में जाने की जरूरत पड़े तो छिपे रह सको।" उसने मेरी ओर देख कर सिर हिलाया। "तुम्हारे लिए मैं उसका इन्तजाम यहाँ कर सकता हूँ, तुम्हारे काम के कारण। उस मुहल्ले मे एक-दो रात पहले ही से रह जाना चाहिये, ताकि तुम्हें देख कर किसी को संदेह न हो।"

रोथेकर चला गया। मैंने फ्रांज को हिल्डी का भेजा हुआ पाँच मार्क दे दिया। इससे वह खुश हुआ। उसने मिलने के लिए एक ऐसी जगह का जिक्र किया, जो मुझे हिल्डी को बतलाना था।

मैं एक घुमावदार रास्ते से घर गया। एक अखबार की शाखा के कार्यालय के बाहर लोगों की भीड़ लगी थी। मैं भी उनमें शामिल हो गया। रात्रि संस्करण वहाँ उसी समय लगाया गया था, जिसमें रीखस्टाग के चुनावों के अन्तिम परिणाम छपे हुये थे। जो लोग पढ़ चुके थे, वे एक ओर हट कर चले गये। कोई भी कुछ नहीं बोला। पाठकों के चेहरे भावहीन थे। नई सरकार ने उनके मुँह बन्द कर दिये थे, और उनके चेहरों पर नकली मुखौटे चढ़ा दिये थे। पहले के चुनावों में यहाँ पर उनमें कैसा उत्साह दिखाई पड़ता था!

मैं धीरे-धीरे बढ़ा। नाजियों ने जनमत का अभूतपूर्व दमन आरम्भ कर दिया था। अब हफ्तों से प्रचार-कार्य के लिए वे राज्य के सभी साधनों का उपयोग कर रहे थे। फिर भी लेबर पार्टियों ने एक करोड़ दस लाख वोट पाये थे। पचास लाख लोगों ने तो उन्हें 'हत्या करने

वाले देशद्रोही' भी घोषित कर दिया था। उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी को वोट दिया था। इस तरह उन सब ने असली देशद्रोहियों पर अपने निर्णय दे दिये थे।

यहाँ-वहाँ कोई सड़क मेरा ध्यान आकर्षित नहीं कर रही थी। काले, सफ़ेद, लाल और स्वस्तिक झंडे एक-दूसरे के पास-पास लटके रहते थे। अब सड़कों पर कुछ ही झंडे दिखाई देते थे। लेकिन जितने भी रेस्तराँ थे, उन सब पर बिना अपवाद के झंडे लगे हुये थे। अन्य अनेक व्यापारिक इमारतों पर भी। 'वफ़ादारी' प्रगट करने की दौड़ आरम्भ हो गई थी।

बर्नर नामक शराबखाना, जहाँ हम मिला करते थे, पुलिस के द्वारा बन्द कर दिया गया था। लेकिन उस दिन एस० ए० के आदमी आये, और उन्होंने भवन-निर्माण-स्थल के लकड़ी के बाड़ और बिजलीघर के निकट की दीवारों पर अंकित हमारे नारों पर काला रंग पोत दिया। अलग वाले कोने पर लाल रंग में लिखा एडी का नारा भी पोत दिया गया था। उन लोगों ने हमारे पोस्टरों के बचे हुये टुकड़ों को खुरचने की भी ज़हमत उठाई थी।

अगले दिन मैकोवस्की वाले मामले के संबंध में नई गिरफ्तारियाँ हुईं। उदासी-भरी शिथिलता हम सब पर छा गई। वे अब और किसे पकड़ेंगे? आगे किस की बारी आयेगी? हमारे बीच परस्पर अविश्वास और संदेह एकाएक उठ खड़ा हुआ, जिससे हमारी परेशानी और बढ़ गई। अब मैं केवल उन कामरेडों से ही बात करता था, जिन्हें मैं वर्षों से जानता था, और तब भी केवल सांकेतिक ढंग से। रोथेकर भी सोचता था कि ये गिरफ्तारियाँ अचानक ही नहीं हुईं। पहले जो लोग गिरफ्तार हुये थे, उन लोगों ने हमारे साथ विश्वासघात किया होगा, या फिर गली में गुप्तचर मौजूद रहे होंगे। अव्यक्तिगत रूप से सोच-विचार करना हमारे लिये कठिन था। करीब-करीब रोजाना नई गिरफ्तारियाँ होती थीं, और गिरफ्तार हुये लोगों से बहुत अधिक प्रश्न किये

बन्द थीं। बन्द खिड़कियों के सामने भारी पर्दे लटक रहे थे। यहीं पहली मंजिल पर सोशल डेमाक्रेट यूथ आर्गेनाइजेशन्स के कार्यालय थे। दीवार पर लाल लिखावट हमेशा दीख पड़ती थी। लेकिन अब वहाँ उसका कोई चिह्न नहीं था। एक बड़ी-सा कार रुकी। कड़ी जाली से सुरक्षित एक झंडा रेडिएटर के निकेल वाले ढक्कन पर लगा हुआ था। एक अत्यधिक सुसज्जित वर्दी पहने व्यक्ति कार के बाहर कूद कर निकला। एस० ए० के सन्तरियों ने अपनी एड़ियाँ एकसाथ मिला लीं, और सावधान की मुद्रा में खड़े हो गये।

मैं दूकान से हट गया। बाहर खड़ा मैं घबराहट से सिगरेट के कश खींच रहा था। अगर वे मुझे रोकें, तो? फिजूल बात। केवल सन्तरी ही दिख रहे थे। जन-केन्द्र एक कोने पर बना था—छोटी-सी एक सिरे वाली गली के दूर के नुक्कड़ पर। क्षेत्रीय स्वास्थ्य बीमा समिति के कमरे निचली मंजिल पर थे, वर्ना पूरी इमारत में केवल सोशल डेमाक्रेट के कामरेड ही रहते होते। सँकरी गली के सामने इमारत की बाईं ओर वाले कोने पर लिखे नारे एस० ए० के आदमियों के द्वारा पोत कर मिटा दिये गये थे।

मैं धीरे-धीरे टहलता रहा। वालटिनवर्ग जन-केन्द्र अब एस० ए० का बैरक हो गया था। "मार्क्सिस्टों के इस सुअर बाड़े का सबसे पहले सफाया होगा," नाजियों ने हमेशा कहा था। उन्होंने उसका नया नाम 'माइकोवस्की भवन' रखा था। लोगों का कहना था, कि सींखचों वाली कोठरियाँ कैदियों से भरी थीं। जन-केन्द्र ने अपने समय में क्या-क्या परिवर्तन देखे थे! युद्ध के बहुत पहले सोशल डेमाक्रेटों की सभायें वहाँ होती थीं। सन् १९१९ में वापस आने वाली सैनिक टुकड़ियाँ वहीं ठहराई जाती थीं। क्रांति-काल में रिपब्लिकन पीपुल्स डिफेन्स फोर्स के हथियार सेहन में ढेर-के-ढेर पड़े रहते थे—स्पार्टकस के सामने।

और अब जन-केन्द्र 'मडर स्टाम' नामक तेइस नम्बर की टुकड़ी का बैरेक हो गया था।

जन-केन्द्र—माइकोवस्की बैरेक !

आज हम सब के जीवन खतरे में थे।

आज तो रोथेकर करीब-करीब गिरफ्तार ही हो गया था।

"शायद तुम यह सारी बात लिखना चाहते हो जॉन," वह बोला। वह जानता था, कि मैं सभी घटनाओं पर नॉट तैयार किया करता था।

रोथेकर साइकिल से जंगफ़र्नहाइड स्टेशन गया। उसे उस नये आदमी से भेंट करनी थी, जो स्ट्रूबेल के स्थान पर अब हमारे और सीमेन्सस्टैड्ट स्थित झोपड़ियों की बस्ती के बीच माध्यम का काम कर रहा था। हमने उससे भेंट करने के लिए सीमेन्स वर्क्स की छुट्टी का समय चुना। उस समय लोगों की भारी भीड़ स्टेशन के इर्द-गिर्द रहती है।

सामने से ट्रामें गुजर रही थीं। वे सब-की-सब ठसाठस भरी हुई थीं। उसने सोचा, कि इन्हीं में से किसी में टीचर्ट भी होगा। टीचर्ट सीमेन्स वर्क्स में टर्नर का काम करता था। स्टेशन से कुछ पहले रोथेकर ने अपने वेस्टकोट की जेब टटोली। सब-कुछ सही-सलामत था। बेतरतीबी से कटा हुआ अखबार का टुकड़ा भी जेब में मौजूद था। जिस आदमी से उसे भेंट करनी थी, उसके पास ऐसा ही दूसरा अखबार का टुकड़ा था। उन्हें दोनों टुकड़े सामने रख कर एक दूसरे से मिलाने थे। रोथेकर फिर से उन संकेतों को याद करने लगा, जिनसे उसे कामरेड को पहचानना था। एक गोल प्याला जैसे ताजगी बिखेरता चेहरा, जिस पर छोटी-सी काली डाढ़ी, और बायें हाथ में 'डेलट्श्च अल्गेमाइन त्सीटुन्ग'।

वह उससे पूछेगा,—'आप बता सकते हैं, कि टेगेल जाने का सब से छोटा रास्ता कौन-सा है ?'

'माफ़ कीजियेगा, मैं स्वयं बर्लिन के लिए अपरिचित हूँ,' उसे यही जवाब देना था।

रोथेकर ने अपनी साइकिल स्टेशन की दीवार से टिका दी, और इस तरह खड़ा हो गया कि जो भी ट्राम आये उसी के सामने रुके। स्टेशन की घड़ी में घंटा पूरा होने में दो मिनट बाक़ी थे। कामरेड अभी तक नहीं आया था। ट्रामों से लोगों की भीड़ निर्बाध गति से आती जा रही थी, जो स्टेशन के अन्दर इकट्ठी होती जा रही थी। अब घड़ी की बड़ी सुई पूरे घंटे के निशान पर पहुँच गई थी। कामरेड कहाँ रह गया ? यह तो असंभव बात है, कि वह उसकी आँख से चूक गया हो।

पाँच मिनट बीत गये। अभी भी उसके आने का कोई संकेत न था। रोथेकर इधर-से-उधर चहलकदमी करने लगा। 'पाँच मिनट और इंतजार करूँगा, और फिर चला जाऊँगा।' उसने मन-ही-मन निश्चय कर लिया। उसने बड़ी सावधानी से चारों ओर नज़र दौड़ाई। दूसरी ओर मोटरों के अड्डे पर दो कारें खड़ी थीं। शोफ़र आपस में बातें कर रहे थे। पहियेदार गाड़ी पर एक अखबार की दूकान कोने में दिख रही थी। दूकान का मालिक अपनी दूकान में बने छोटे से छेद से बाहर झाँक रहा था। रोथेकर अब बेचैन हो उठा, क्योंकि अकेला वही इतनी देर से वहाँ खड़ा हुआ था। कतार में खड़ी आख़िरी टैक्सी के पीछे उसे एका एक एक मोटर साइकिल दिखाई दी, जिसके बगल में खड़े एस० ए० के दो आदमी बातचीत कर रहे थे। क्या वे केवल बन रहे थे ? मूर्खता की बात है ! तुम स्वयं अपनी आँखों से सब-कुछ देख रहे हो। यह तुम्हारी सब से पहली भूल होगी, यदि तुम अपनी अन्तरात्मा में अपराध की भावना रखोगे और यह कल्पना करोगे कि

तुम्हारी हरकतों पर नज़रें रखी जा रही हैं। एक पुरानी कहावत है कि अगर कोई असाधारण तरीके से व्यवहार करना शुरू कर दे, तो निश्चय ही उसकी ओर पुलिस का ध्यान आकर्षित हो जायगा।

घंटा पूरा हो गया, और दस मिनट और बीत गये। रोथेकर ने अपनी साइकिल को गन्दी नाली में ढकेल कर बाहर किया और उस पर सवार हो कर चल दिया। वह मन-ही-मन नाराज़ था। कामरेड ने भेंट का समय मुकर्रर करके भी समय से आने का अपना वादा नहीं पूरा किया था। जैसे कि आज की परिस्थितियों में भी कोई ऐसी लापरवाही करने की हिमाकत कर सकता हो! इस परिस्थिति में तो दो ही रास्ते थे—मौत या गिरफ्तारी। इनके अलावा किसी तीसरे रास्ते या बहाने की तो कोई गुंजाइश ही न थी। अगर किसी बहुत गम्भीर घटना के कारण उसके समय से उपस्थित होने में रुकावट नहीं पड़ी होगी, तो वह उसे बड़ी गहरी फटकार सुनायेगा। वह बाईं ओर रेलवे के बाँध के किनारे से मुड़ कर एक सुनसान गली में घुस गया। आगे वाले चौमुहाने पर उसे अपने पीछे एक इंजन चलने जैसी आवाज़ सुनाई दी। एस० ए० के दोनों आदमी मोटर-साइकिल पर भड़भड़ाते हुए बगल से निकल गये। मोटर-साइकिल-चालक ने एकाएक गाड़ी धीमी कर दी। मोटर-साइकिल का टायर चीं-चीं की आवाज़ करता गली के डामर पर फिसल गया। गाड़ी मुड़ी, और फिर गली में दायीं तरफ कोण-सा बनाती हुई रुक गई। तो वे उसके संबंध में धोखा नहीं खा सके! पिछली सीट पर बैठा व्यक्ति उछल कर ज़मीन पर उतर पड़ा।

"रुको!" वह चिल्लाया।

दूसरे व्यक्ति ने मोटर-साइकिल को स्टैंड पर खड़ी कर दिया। वह लम्बा था और उसके कंधे चौड़े थे। गाड़ी पर पीछे की सीट पर सवार व्यक्ति नाटा और बहुत कम उम्र का था। रोथेकर ने शान्त भाव से दोनों की ओर देखा। उनकी वर्दी के चमकते कालरों पर चमकते पीतल

के अक्षरों में '३३' का अंक जड़ा हुआ था। गधे! 'हमारी' तूफ़ानी टुकड़ी! आशा करनी चाहिए कि वे मुझे पहचान नहीं सके हैं।

"इसकी तलाशी लो!" लम्बे व्यक्ति ने आदेश दिया।

"हाथ ऊपर करो!" कम उम्र वाला व्यक्ति गुर्राया।

रोथेकर ने अपनी साइकिल डामर पर लेटा दी, और उसकी आज्ञा का पालन किया। सड़क खाली थी, सिवाय एक पुरुष के जिसकी बाँह पकड़े हुए एक स्त्री कुछ ही दूर आगे खड़ी थी। उन लोगों ने घबराहट से इधर-उधर देखा। रोथेकर ने सोचा, 'मैं यहाँ पूरी तरह इनके रहम पर निर्भर हूँ।'

छोटी उम्र वाले एस० ए० के सिपाही ने ऊपर से ही उसकी जेबें टटोलनी शुरू कीं। जब उसके हाथ पतलून के पीछे वाली जेब पर पहुँचे, तो वह एक झटके के साथ पीछे हट गया।

"उस जेब में क्या है?"

"चमड़े की एक थैली और चाभियाँ।"

"उसे तुम स्वयं बाहर निकालो।"

यही हैं हीरो लोग! शायद वे सोच रहे होंगे, कि हो सकता है कि चमड़े की थैली में रिवाल्वर हो और उसका घोड़ा भी तैयार रक्खा गया हो।

उस व्यक्ति ने चमड़े की थैली को बाहर खींचा और उसकी ज़िप को खोलने लगा।

"अब आप रास्ते पर आये!"

"जबान मत खोलो!" एस० ए० का सिपाही चिल्ला पड़ा।

"तुम्हारे पास तुम्हारी शिनाख्त के कागजात हैं?"

"हाँ। मेरे सैनिक कागजात मेरे पास हैं।"

दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"तुम मोर्चे पर थे?"

"हाँ।"

इस बात से तुम्हें धक्का पहुँचा न, उसने सोचा।

"अपने कागजात हमें दो।"

रोथेकर ने एक दूसरी चमड़े की थैली बाहर निकाली और आवश्यक कागजात चुन कर दिये। एस० ए० के दोनों आदमी सड़क के लैम्प से बिखरती रोशनी की ओर पीठ कर के खड़े हो गये और कागजों को पढ़ने लगे। रोथेकर ने देखा, लम्बा वाला व्यक्ति कम उम्र वाले को टहोका मार रहा था।

"तुम घायल हो गये थे?"

"हाँ, तीन बार। एक बार गंभीर रूप से।"

लम्बे वाले ने कागज वापस कर दिये। क्षण भर मौन रहा।

"तो तुम स्टेशन पर किस का इंतजार कर रहे थे?"

"अपने एक पुराने साथी का। सीमेन्स से आना था उसे। वह मेरे लिए कोई रोजगार खोज कर उस पर मुझे लगवाने की कोशिश करने वाला था।"

उन दोनों ने फिर एक-दूसरे की ओर देखा। लम्बे वाले ने हामी के भाव से सिर हिलाया।

"हमारा उद्देश्य तुम्हें नुकसान पहुँचाना नहीं है। आजकल माहौल ही कुछ ऐसा हो गया है, कि बेकसूर लोगों को भी इस तरह की असुविधाओं के लिए तैयार रहना चाहिए।" और उसने अपने कंधे हिलाये। "जो भी हो, हम अपने कर्त्तव्य का पालन-मात्र कर रहे थे!"

"हिटलर जिन्दाबाद!"

"हिटलर जिन्दाबाद!"

दूसरे दिन की बात है। स्ट्रुबेल मेरे घर पर आया हुआ था। वह हमेशा से ज्यादा तेजी से अपने चेहरे पर से बाल हटा कर बार-बार पीछे कर रहा था।

"रोथेकर ने तुम्हें इस संबंध में सारी बातें बताई हैं क्या ?"

"हाँ।"

स्ट्रूबेल काफ़ी देर तक खामोशी से हाथों पर सर टिकाये बैठा रहा। उसके बालों की लटें सामने गिर गईं। उसके बालों की लटें हमेशा भौं तक लटकती रहती थीं। वह कभी कंघे का इस्तेमाल करता ही नहीं था क्या ? मैं उसके बोलने का इंतज़ार करता रहा। उसकी ओर नज़रें गड़ाये हुये ही मैंने समझ लिया, कि वह कुछ कहना चाहता था और अन्दर-ही-अन्दर स्वयं अपने-आप से संघर्ष कर रहा था।

"शीघ्र ही शाम हो जायगी। मैं बस्ती की ओर जा रहा हूँ। हमें उनसे बराबर सम्पर्क बनाये रखना है।" उसके होंठो से बड़ी कठिनाई से शब्द बाहर आ रहे थे। "एडिथ और लड़के को भी कपड़ों की ज़रूरत है। टाइपराइटर और साइक्लोस्टाइल मशीन भी अभी वहीं पड़ी है। मेरे साथ चल रहे हो क्या ?"

एस० ए० ने झोंपड़ियों की बस्ती में खतरे की सूचना देन वाली टुकड़ी तैनात कर रखी थी। अभी एक ही पखवारे पहले उसने एस० ए० के लोगों की गोलियों से किसी तरह अपनी जान बचाई थी। अब वह चाहता था कि...कैसा पागलपन है !

"हमें दूसरे कामरेड का नाम दे दो। हम उससे सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करेंगे। कल तक तुम्हें कपड़े मिल सकते हैं। बाद में हम लोग मशीनें भी ले आयेंगे—हम लायेंगे, तुम नहीं स्ट्रूबेल।"

स्ट्रूबेल ने सिर हिला दिया। वह बार-बार अपनी उँगलियों को अपने बालों में झटकने लगा। वह काफ़ी देर तक बातें करता रहा। कुछ समय तक तो वह इसी बात पर खेद प्रकट करता रहा, कि वह अपने 'मोर्चे से हट आया'। बस्ती में रहने वाले उसके बारे में क्या सोचेंगे, कि वर्षों तक...? क्या उसके मामले में कोई विशिष्टता है ? कोई और कामरेड होता, तो अपने मोर्चे पर डटा रहता। कुछ भी हो,

उसे वहाँ के काम की देख-रेख लगातार जारी रखनी चाहिए। हाँ, निश्चय ही जारी रखनी चाहिए। जहाँ तक मशीनों का संबंध है, उसने बस्ती के एक निवासी से उन्हें छिपा देने को कह रखा है। एक नाटा, लँगड़ा पंगु। उसे वहाँ अत्यधिक निरीह और निर्दोष मूर्ख समझा जाता था। पहले कभी स्ट्रूबेल का उससे पाला नहीं पड़ा था। वह उसके पास जाना चाहता था। वह जंगल के एक छोर के निकट रहता था। वह स्ट्रूबेल के अलावा किसी को वह चीजें नहीं देगा। उसे किसी और पर कोई विश्वास नहीं था।

मैंने उसे एक बार फिर वहाँ जाने से रोकने की कोशिश की। वह फ़रार रह कर गुप्त रूप से काम करने के प्रारम्भिक नियमों के ही विरुद्ध काम कर रहा था। मैंने उसकी अनुशासन की कमी की शिकायत तक करने की धमकी दी।

लेकिन वह उठ कर खड़ा हो गया।

"मैं तो चला," उसने मेरी बात चंद शब्द बोल कर बीच ही में काट दी।

मेरा मन आगा-पीछा करने लगा। क्या मैं उसे अकेला ही जाने दे सकता हूँ ? मैंने जो कुछ कहा, वह मुझ पर भी लागू होता है। मैं पार्टी का पदाधिकारी हूँ, और मुझे जल्दबाजी में कोई काम कर गुजरने की इजाजत नहीं है। लेकिन वह सोचेगा, कि मैं डरपोक हूँ। मैंने हुक पर से हैट उतार ली।

...हम कीचड़ से भरे एक मैदानी रास्ते से जा रहे थे। हर कदम हमारे पैर कीचड़ में धँस-धँस जाते थे। हम एक-दूसरे से दस गज की दूरी पर चल रहे थे। स्ट्रूबेल बीच-बीच में रुक कर कुछ सुनने की कोशिश करने लगता था। हम जंगल में पहुँच गये। पेड़ों के झुंड और झाड़ियों के बीच उस पर बराबर नजर रखने में भी मुझे कठिनाई हो रही थी। स्ट्रूबेल एकाएक जमीन पर धराशायी हो गया। मैं ब्लैकबेरी

की झाड़ियों के पीछे छिप गया। एस० ए० के दो आदमी साइकिलों पर जंगल के किनारे-किनारे जा रहे थे। बंदूकें उनके कंधों पर टेढ़ी टँगी थीं। वे आपस में बातें कर रहे थे।

"...और फिर तो भाई, वह लड़की..."

इस समय तक वे हमसे दूर निकल गये थे। केवल उनकी हँसी की आवाज़ ही अभी तक हमारे कानों में पहुँच रही थी।

इसके बाद हम एक सँकरी पगडंडी पर पहुँच गये, जिसके दोनों तरफ़ जर्जर चहारदीवारी थी। नीची, बक्सों जैसी झोंपड़ियाँ चहार-दीवारी के पीछे बनी हुई थीं। स्ट्रूबेल ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई और फिर कई लम्बे डग भरे। एक दरवाज़े के कब्ज़े की चीं-चीं की आवाज़ हुई।

पेट्रोल के लैम्प की पीली रोशनी का एक स्तम्भ-सा मेज़ तक फैल गया। बाकी कमरे में अर्द्ध-अंधकार बना रहा। कमरे में गोबर और तेज़ाव जैसी किसी चीज़ की बदबू उठ रही थी। 'अर्द्ध-मूर्ख'-सा लँगड़ा व्यक्ति मेरे सामने बैठा हुआ था। उसका सर उसके कंधों के बीच धँसा हुआ-सा था। उसके कान बड़े-बड़े पंखों की तरह ऊपर उठे हुये थे। उसके हाथ मेज़ पर फैले हुये थे। वे असाधारण लम्बे हाथ थे। उसके हाथों के पिछले हिस्सों में बहुत सारे बाल उगे हुये थे।

उसने कहा—"मैं दो दिन से इंतज़ार कर रहा हूँ।"

उसकी बहुत पतली, तीखी आवाज़ थी, बिल्कुल बच्चों जैसी।

"कल हम लोग बस्ती के किसी आदमी से भेंट करना चाहते थे, लेकिन वह आया ही नहीं।" स्ट्रूबेल बोला।

"कौन ?"

"डंके।"

"वह तो तीन दिन पहले गिरफ्तार हो गया।

"सन्नाटा छा गया।

"क्या एस० ए०..."

"अभी भी स्कवेन्के के यहाँ हैं। बीस आदमी। सुअर उन लोगों के साथ-साथ झोंपड़ी-झोंपड़ी घूमता फिरा। वे एत्रर को अपने साथ ले गये। वह दो दिन बाद वापस आ गया। मार-मार के उन लोगों ने उसका कचूमर निकाल लिया था। कमरेडों का कहना है कि वे उसे यहाँ चारे के रूप में छोड़े हुये हैं। वे देखना चाहते हैं कि उससे किन-किन लोगों का संबंध है।"

"और कोई बात ?"

"कोई और खास बात तो मैंने नहीं देखी। वे पूरी बस्ती में आपका पता लगा रहे थे।"

बाहर किसी की पग-ध्वनि सुनाई दी। छोटी खिड़की आधी खुली हुई थी। हम सुनने लगे। हम इसके सिवाय और कुछ नहीं देख सकते थे कि वे तीन आदमी थे। वे आगे चले गये। वह लँगड़ा व्यक्ति एक कोने में कुछ खोजने लगा था। वह लौट कर फिर मेज के निकट आ गया।

"आप लोगों के लिए ही इसे इकट्ठा कर रखा था।"

और बीस मार्क का एक नोट स्ट्रूबेल के सामने उसने रख दिया। उसने हिचकते हुये नोट ले लिया और कुछ कहना चाहा। ..तभी किसी मोटर साइकिल की हेडलाइट की रोशनी एकाएक पूरे कमरे में भर उठी, और फिर गायब हो गई। बाहर एक मोटर साइकिल फट-फट करती हुई निकल गई।

"बस्ती में कोई नहीं है," लँगड़े ने कहा।

एस० ए० !

"इस बीच तुम हमसे सम्पर्क बनाये रख सकोगे ?"

"हाँ-हाँ।"

मैंने उसे एक स्थान बता दिया और समय भी तय कर दिया।

"आओ, अब चलो !"

झोंपड़ियों के बीच रास्ता टटोलते हुये हम चलते रहे और फिर एक साये में खड़े हो गये। मुर्गियाँ लम्बे खम्भों पर बैठी पंख फड़फड़ा रही थीं। हमारी टार्चों की रोशनी ने एक बकरी को चौंका दिया। उसने धीरे से मेमियाते हुये हमारी ओर देखा। उसके कसे हुये थन इधर-से-उधर हिल रहे थे। लँगड़े व्यक्ति ने एक टूटे-फूटे केस को खोला। वह पशुओं के गीले चारे से आधा भरा हुआ था। उसने अपना हाथ उसके काफ़ी अंदर डाला और दो बड़े-बड़े पैकेट बाहर निकाले। टाइप-राइटर और साइक्लोस्टाइल मशीन थी उसमें। हमने दोनों चीजें कंधे से लटकाने वाले अपने थैलों में भर लिया और उनके ऊपर कपड़े ठूँस दिये।

हम झरबेरी की झाड़ियों के बगल से लौटे, फिर छोटे से शौचालय की तरफ़ गये, और अंत में तार के घेरे की तरफ़ गये। उसके पीछे ही जंगल था। लँगड़े ने हमारे बाहर निकलने के लिए तार को ऊपर उठाया।

दो सप्ताह बाद स्टूबेल अपनी पत्नी सहित कोनिग्सवस्टरहौसेन कस्बे में रहने चला गया। वह एक किसान के यहाँ कुछ काम पा गया था। हमारे अपने कस्बे में वह कोई कमाई नहीं कर सकता था।

रीकस्टैग अग्निकांड के बाद कई हफ्ते तक केन्द्रीय पार्टी कार्यालय से हमारा कोई सम्पर्क नहीं कायम हो सका। ऐसा लगता था जैसे पूरा संगठन ही टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो गया हो। और इसके ऊपर से हमारे कस्बे में विशेष रूप से आतंक और गिरफ्तारियों की लहर भयंकर वेग से चल रही थी। हम कोई अखबार तक नहीं निकाल सकते थे। रीकस्टैग अग्निकांड पर केवल पर्चे बाँट रहे थे हम। चूँकि ऊपर से कोई सूचना और आदेश नहीं प्राप्त हो रहे थे, इसलिए हम अपने सब से अधिक विश्वासपात्र साथियों की एकता कायम रखने पर ही अपना ध्यान

सीमित कर रहे थे। हम स्टूबेल की झोंपड़ियों की बस्ती और टीचर्ट के माध्यम से दो कारखानों के साथ भी अपना संबंध कायम रखने की कोशिश कर रहे थे।

लेकिन एक सप्ताह पूर्व हमारे कस्बे में एक पार्टी समिति का गठन किया गया। पहली बार हमें अखबार और जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी का मुख-पत्र 'रोटे फ़ाइने' प्राप्त हो सका। हमारी कमेटी ने हमारे पास-पड़ोस में व्याप्त विशेष खतरे के कारण फाँज के इस सुझाव को मान लिया कि हम अपने अखबार का अगला अंक उसके कस्बे में छापें। हमारी नयी पार्टी समिति ने आज हमसे यह भी पूछा कि क्या कोई ऐसा विश्वसनीय कामरेड है जो मोटर साइकिल पर कुछ सामान दूसरे प्रांतों तक ले जा सके। अर्नस्ट सब्बीवस अपनी कम्पनी के आवश्यक आदेशों की पूर्ति का सामान तीन पहिये वाली गाड़ी के बजाय मोटर साइकिल पर पहुँचाने ले जाता था। लेकिन उसका काम ऐसा था कि उससे अपना काम करवाने का प्रश्न ही नहीं उठता था। एडी कैसा रहेगा ? रोथेकर ने सुझाया कि यद्यपि उसके पास गाड़ी चलाने का लाइसेंस नहीं है लेकिन वह मोटर साइकिल बड़ी निपुणता से चला सकता है। वह एक बार उसके साथ मोटर साइकिल पर गया था। वह एडी की मोटर साइकिल नहीं थी; लेकिन वह सख्श जानता था कि कब कौन-सा बटन दबाना चाहिए। एडी बस एडी ही है।

मैं दोपहर में एडी से मिलने गया। वह रोथेकर के सुझावों का पालन कर रहा था; उसने रविवारीय वस्त्र पहन रक्खे थे—एक नीला सूट और एक मुलायम हैट। शीशे की आँख भी अपनी जगह पर थी। उसने बड़ी जोर से हाथ मिलाया।

"उस एरिक के बच्चे ने तो बड़ा तूफ़ान मचाया। मुझे तो स्थिति संभालने के लिए अपने रविवारीय वस्त्र पहनने पड़ गये।"

मुझे हँसना पड़ा। "लेकिन तुम तो करीब-करीब सम्मानित व्यक्ति दिख रहे हो !"

"मुझे भी ऐसा ही अहसास हो रहा है, जान," उसने कहा।

दोनों तरफ़ खड़े पेड़ों की छाया से ढंकी सड़क पर हम टहलते हुये चल रहे थे।

"किस तरह की गाड़ी चलानी होगी ?"

और एडी अपना सिर तब तक टेढ़ा ही करता गया जब तक मैं उसकी दाहिनी आँख से दिखने नहीं लगा। वह काफी उत्साहित दिख रहा था; मोटर साइकिल की सैर की बात से उसका प्रसन्न होना निश्चित ही था।

"यह तो उन लोगों ने बताया नहीं। वह स्थान पचास मील दूर है; तुमको ज्यादा-से-ज्यादा तीन घंटे में वापस आ जाना चाहिए।"

उसने सिर हिलाते हुये अपना मुँह टेढ़ा कर दिया।

"पाँच सौ सी.सी.एम. की यात्रा करनी पड़ेगी, जनाब !" और वह हँस पड़ा। "तीन घटा !...और अगर रास्ते मे टायर बर्स्ट हो गया तब ?"

पाँच सौ सी. सी. एम. ! मैं उसकी बात समझ नहीं सका।

"तुम निपुण मोटर साइकिल चालक तो हो या नहीं ? यह मौज-मस्ती वाली यात्रा नहीं होगी। तुम्हारे साथ खतरनाक माल भी होगा, बुढ्ढे आदमी।"

"जान, तुम एकदम झक्की हो। तुम तो मुझे इतने अरसे से जानते हो।" और उसने भर्त्सना के भाव से सिर हिलाया। "क्या मैं कभी बहुत सँभाल-सँभाल कर मोटर साइकिल चलाता हूँ ? अरे, भाई, मैंने सेना में पूरे एक साल तक मोटर साइकिल चालक का काम किया है।"

निस्सन्देह बात सही थी। यही नहीं, वह मैकेनिक भी था। लेकिन कभी वह कोई काम पकड़ता भी है, तो बहुत थोड़े समय के लिए ही। अपनी

आँखों के कारण वह बहुत पेचीदे काम उतने अच्छे स्तर पर नहीं कर पाता था।

हम धीरे-धीरे टहलते हुये वापस लौट पड़े।

"मैं तुमसे कहना चाहता था कि करगेल मेरे यहाँ है।"

"अच्छा, और...?"

करगेल क्रांतिकारी श्रमिकों के विशाल सैनिक संगठन 'आर. एफ. बी.' का आदमी था, जो हमसे बराबर सम्पर्क रखता था।

"वह फ्रांज़ से भेंट करना चाहता है। लेकिन उसे मालूम नहीं है कि फ्रांज़ है कहाँ ?"

"किसी को यह बात मालूम होनी भी नहीं चाहिए; तुम्हें भी नहीं। करगेल से मेरी भेंट करवाओ, मैं पता करूँगा कि कहाँ भेंट होगी।"

"ठीक है," एडी ने कहा। फिर कुछ रुक कर उसने कहा—"उसने मुझसे यह भी पूछा है कि क्या हम लोग डैमर्ट के संबंध में भी कुछ जानते हैं।"

"उसके संबंध में कुछ निश्चित नहीं मालूम। मेरा ख्याल है कि वह माइकोवस्की भवन में है।"

डैमर्ट दो हफ्ते पहले गिरफ्तार हो गया था—हमारा विश्वास था कि माइकोवस्की वाली घटना के संबंध में ही वह गिरफ्तार हुआ था।

कुछ देर तक हम बिना कुछ बोले चलते रहे। एकाएक एडी खिल-खिलाने लगा। मैं उसकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगा।

"अरे करगेल...उसने मुझे एक किस्सा सुनाया था...हाँ हाँ, बड़ा मज़ेदार किस्सा। बैंड के साथ पाइप बजाने वाला रूडी—तुम तो उसको जानते होगे, जानते हो न ?"

मैंने हामी के भाव से सिर हिलाया। वह भी क्रांतिकारी श्रमिकों के सैनिक संगठन 'आर. एफ. बी' का आदमी था। बैंड के साथ वह पाइप बजाया करता था।

"उसे भी अन्य कामरेडों के साथ स्टाक्होम युवक संगठन में तो नहीं भेज दिया गया था, ताकि उसका कोई पता न लगा सके ?"

"हाँ, हाँ, उसी संबंध में तो सारा किस्सा ही है। एक सप्ताह पहले वह संगठन के एक आदमी के साथ उनके भर्ती केन्द्र से घर जा रहा था। उन दोनों ने नीली कमीजें पहन रखी थीं और उनकी बाहों पर स्वस्तिक चिन्ह वाले फीते बँधे हुये थे। वह लोहे की टोप वाला उसका साथी रास्ते भर रूडी से बक-बक करता रहा कि कोई जीता-जागता कम्युनिस्ट उनकी पकड़ में आ जाय तो कैसा मज़ा आये। वह कह रहा था कि वह तो उस कम्युनिस्ट को मार-मार कर उल्लू बना दे, वह-वह घूँसे मारे, ऐसे बूट मारे कि उसका भूसा निकल जाय। इस तरह की बकवास वह करता गया, करता गया। रूडी उसकी बातें सुन-सुन कर गुस्से से पागल हुआ जा रहा था। एकाएक उसने उस लौह टोपधारी से कामरेड की भेंट करवा ही दी और उसकी ऐसी धुनाई की, ऐसी धुनाई की कि बस कुछ न पूछो। उसने बड़ी सफ़ाई से उसका काम तमाम कर दिया।"

और एडी ज़ोर-ज़ोर से कहकहे लगाने लगा।

"और तुम समझते हो कि उसने यह बड़ी चालाकी का काम किया ?"

एडी अच्छा कामरेड है, लेकिन एडी बस एडी ही है। और ऐसा ही अवसर आने पर वह स्वयं भी रूडी-जैसी ही हरकत करेगा। और मैंने ऐसे ही आदमी के साथ मोटर साइकिल की यात्रा की योजना बनाई है ! ऐसी हालत में क्या मैं इस काम की जिम्मेदारी ले सकता हूँ ?

"निस्सन्देह वह हरकत पागलपन से भरी हुई थी," उसने जवाब में कहा— "और जैसी सम्भावना ही थी, वह गिरफ्तार भी कर लिया गया।"

फिर उसने बड़े अतिनाटकीय ढंग से अपनी छाती ठोंक कर कहा— "लेकिन मैं उस जवान की भावनाओं को समझता हूँ। मैं स्वयं ऐसा ही करता। मैं कम्युनिस्ट हूँ, कम्युनिस्ट।"

कुछ थम कर वह बड़ी विचारशीलता से अपना सिर हिलाने लगा।

"मैं तो उस साले झंडे को सलामी तक नहीं दे सकता," उसने फिर कहना शुरू कर दिया—"मैं तो जब कभी उस स्वस्तिक झंडे के साथ उनके जुलूस आते देखता हूँ तो आस-पास के किसी घर में घुस जाता हूँ ।"

मैं उसकी ओर देखने लगा । उसकी काँच की आँखें भी जैसे उसके मन की घृणा को प्रकट कर रही थीं ।

कुछ हफ्तों से यह आदेश लागू हो गया था कि सैनिक जुलूसों के साथ चलने वाले स्वस्तिक झंडों को प्रजा के सभी मित्रों को सलामी देनी चाहिये वरना उन पर मार्क्सिस्ट होने का इलजाम लगाया जायगा और दंड मिलेगा ।

"एक दिन मैं समय से किसी घर में नहीं घुस सका" एडी ने कहा—"तो मैं जुलूस की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो गया !"

"तुम पागल हो ! क्यों ज़बर्दस्ती परेशानी को दावत दे रहे हो ?"

"अरे हटो ! तुम समझते हो मैं अपने को गिरफ्तार करवा दूँगा, क्यों ? मैं तो बस घूम कर खड़ा हो गया, इसके सिवा और कुछ थोड़े ही किया मैंने ।"

लेकिन अब हँसने की मेरी पारी थी ।

"क्या मामला है ? क्या मामला है ?" एडी पूछने लगा ।

"तो क्या तुम समझते हो कि वे यह समझ सके होंगे कि तुम्हारी इस हरकत का मतलब क्या है ?"

"मैं समझता हूँ; लेकिन मेरे लिए उतना ही काफ़ी था ।" एडी कुछ नाराज़ हो कर बोला ।

पिछले कुछ हफ्तों में माइकोवस्की हाउस के संबंध में बहुत-सी अफवाहें फैल गई थीं । ऐसा कहा जा रहा था कि गिरफ्तार किये गये कामरेडों को बड़ी बर्बरता से सताया जा रहा है । लेकिन हमें विस्तारपूर्वक

कुछ सुनने को नहीं मिला। हमें इतना भी मालूम नहीं हो सका कि गिरफ्तार किये गये कामरेडों में से कौन-कौन वहाँ रखे गये थे।

लेकिन कल 'एक्स' से मेरी बातचीत हुई थी। उसने अर्नेस्ट सच्वीबस से इस बात की बड़ी प्रार्थना की थी कि वह उसे मुझसे मिला दे। मैं पहले कुछ समय तक इस हिचकिचाहट में पड़ा रहा कि उससे मिलूँ या नहीं, लेकिन अंत में मैं उससे मिलने चला ही गया। सच्वीबस ने मुझे आश्वासन दिया था कि उसका यही विश्वास है कि 'एक्स' विश्वसनीय आदमी है। 'एक्स' हमारे एक विशाल जन संगठन का सदस्य था। रीखस्टैग चुनावों के बाद हमें वह एस. ए. की वर्दी में इधर-उधर दौड़-धूप करता दिखाई दिया था। तब हम उससे बचने की कोशिश करने लगे थे और अन्य कामरेडों को भी हमने उसके खिलाफ चेतावनी दे दी थी।

उसने कल मुझसे कहा था कि उसके मालिक ने उसे एस० ए० वालों को प्रवेश देने के लिए विवश किया था। उसके प्रधान ने स्पष्ट कहा था कि अब भविष्य में वह केवल एस० ए० के आदमियों को ही नौकरी में रखेगा। एक्स एक नानबाई था। उसने कई वर्ष उस विशिष्ट बेकरी में नौकरी की थी और अब उसे महसूस हो रहा था कि वह अपने परिवार का उससे गुजर-बसर नहीं कर सकता था। उसकी बीवी अकसर बीमार रहती थी और उसके दो बच्चे भी थे।

"मैं स्टार्म तेंतीस में नहीं हूँ, मैं तो बस वेस्ट स्टैंडर्ड में हूँ," उसने बताया था। (वह अपनी भूरी कमीज पर दूसरा ही 'स्टार्म तमगा' लगाता था, और अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए उसने अपना एस० ए० वाला प्रमाण-पत्र भी दिखलाया।) "मैं एस० ए० के रिजर्वों में हूँ। मेरी उम्र पैंतीस से ऊपर है। मैं आमतौर पर माइकोवस्की बैरेकों में नहीं जाता, लेकिन उस शाम को मुझे वहाँ मौजूद रहने का आदेश मिला था। मुझे वहाँ खजांची का काम सम्भालना था।" एक्स रुका। मैंने उस पर जोर नहीं डाला, चूँकि यह साफ़ था कि वह कठिनाई से

बोल पाता था। "हम मेजों पर बैठे थे। बहुतेरे लोग ताश खेल रहे थे, और कुछ अखबार पढ़ रहे थे। एकाएक दरवाजा भड़ से खुल गया।

" 'स्टार्म के सरदार आ रहे हैं,' कोई चिल्लाया।

" और फिर प्रत्येक व्यक्ति उछल कर खड़ा हो गया। तैंतीस नम्बर वाली टुकडी के कुछ लोग उसके साथ थे, और उनके बीच दो असैनिक व्यक्ति भी थे। एस० ए० का एक आदमी चिल्लाया, 'बायें हाथ वाला कार्ल है, आर० एफ० बी० का बांसुरी वादक।' मैंने देखा कि गिरफ्तार व्यक्तियों में से एक का मुँह फड़कने लगा।" एवस खामोश हो गया। वह स्वयं स्नायुविक दुर्बलता से काँप रहा था।

वह फिर कहने लगा—"सारी भीड़ कमरे के बीच में बढ़ आई। स्टार्म ट्रूपर्स का सरदार एक मेज़ पर बैठ गया और घुटनों तक के अपने बूटों को एक कुर्सी पर टिका दिया। 'अब हम जरा कुछ मजेदार बातें करेंगे,' उसने उस व्यक्ति से कहा जिसे कार्ल बताया गया था। वह काले बालों वाला व्यक्ति था। फिर उसने दूसरे व्यक्ति की ओर इंगित किया।

" 'उसे कोने में खड़ा कर दो। हमने उसे बिल्कुल अभी-अभी सामने वाले दरवाजे के बाहर पकड़ा है। वह इस कार्रवाई को देख सकता है। और इसे कुछ जोड़े सूखे पैन्टों से ज्यादा की जरूरत न पड़ेगी। साथ ही यह सूंघ-सांघ की आदत भी छोड़ देगा।'

"सभी एस० ए० वाले हँस पड़े। दूसरा व्यक्ति, जो नाटा और मोटा था, बुरी तरह काँप रहा था। उसके हाथ में एक कड़ी बाउलर हैट थी, जिसे वह बराबर घुमा रहा था। ऐसा लगता था जैसे शीघ्र ही उसके आँसू बहने लगेंगे।"

" 'हर स्टार्म सरदार...हर...मैं केवल घर जाना चाहता था... मैं...।' वह गिड़गिड़ाया।

" 'चुप रहो!' स्टर्म सरदार चीखा।

"एस० ए० के एक आदमी ने उस मोटे व्यक्ति को एक ओर खींचा। फिर वे पुनः काले बालों वाले व्यक्ति से निपटने लगे। स्टार्म सरदार ने चीख कर कहा : 'तुम कायर हत्यारों में से एक हो जिन्होंने हमारे हैनी की हत्या की है—तुम लाल गुट वालों के क्लब के हो! सम्भल जाओ; अपना नाम बताओ।' उसने शांतिपूर्वक उत्तर दिया—'करगेल।' आगे उसने कहा—"यह सच है कि कभी मैं आर० एफ० बी० में था; लेकिन माइकोवस्की वाले मामले से मेरा कोई संबंध नहीं था। उस समय तो मैं बर्लिन में था भी नहीं।' "

(वह नाम सुन कर मैं चौंक गया, लेकिन किसी तरह मैंने अपने भाव को प्रकट होने से रोका। एक्स को यह मालूम नहीं होना चाहिये कि मैं करगेल को जानता था। हम जान गये थे कि करगेल गिरफ्तार हो गया था। हमारी बातचीत के बाद एडी उससे मिल नहीं पाया था। दूसरे किरायेदारों ने उसे बताया था कि एस० ए० वाले उसे आधी रात के बाद पकड़ कर ले गये थे। लेकिन हम नहीं जानते थे कि वह कहाँ था। उसकी गिरफ्तारी का कारण अभी भी हमारे लिए पहेली बना हुआ था।)

" 'माइकोवस्की' का नाम सुन कर सभी एस० ए० वाले करगेल के और पास खिसक आये। स्टार्म सरदार सीधे उसके पास गया।

" 'जैन्डर कहाँ है ? फ्रांज जैन्डर !" वह एकाएक चीखा।

(तो उन्होंने उसे फ्रांज के कारण गिरफ्तार किया था। मैंने अपनी उत्तेजना छिपा ली।)

'करगेल ने उसकी ओर देखा लेकिन चुप ही रहा। स्टार्म सरदार ने उसे धमकाया—'जवाब दे रहे हो, या हमें तुम्हारी मरम्मत करनी पड़ेगी ?' करगेल का उत्तर बस इतना ही था, 'मैं किसी फ्रांज जैन्डर को नहीं जानता।' लेकिन अब वह बिल्कुल दूसरे ही ढंग से बोला। उसकी आवाज में एक प्रकार की शिथिलता आ गई थी। मैंने देखा कि

वह चन्द सेकेन्डों में ही एक फैसले पर पहुँच गया था। स्टार्म सरदार का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उसने अपनी बाँह उठाई और घूँसे से करगेल के चेहरे पर मारा। उसकी नाक से खून की बड़ी-बड़ी बूँदें निकल पड़ीं और खून उसकी कमीज पर बहने लगा।

"स्टार्म सरदार अब अपना आपा खो चुका था, लेकिन उसने सम्भल कर कहा : 'तुम किसी जैन्डर को नहीं जानते ? तुम झूठ बोल रहे हो, कुत्ते !"

" 'नहीं।' करगेल ने एक बार फिर कहा।

" 'उसमें हिम्मत है,' मेरे पीछे से कोई फुसफुसाया।

" 'कोठरी से डैमर्ट को ले आओ !' स्टार्म सरदार ने आदेश दिया।"

(अब मैंने एक्स को टोका—"क्या आपको पक्का विश्वास है, कि आपने ठीक-ठीक डैमर्ट ही सुना था ?")

"हाँ। डैमर्ट !"

(तो डैमर्ट ने उसकी भर्त्सना की थी ! और इस घटना के दो दिन पहले भी करगेल ने एडी से पूछा था कि क्या वह जानता था कि डैमर्ट कहाँ था।)

"दो एस० ए० वाले दौड़ते हुये चले गये। स्टार्म सरदार उत्तेजना-पूर्वक इधर-से-उधर चहलकदमी कर रहा था। कुछ देर में एस० ए० वाले डैमर्ट के साथ वापस आये। वे उसे लगभग घसीटते हुये लाये थे। वह बड़ा भद्दा दिख रहा था। उसका पूरा चेहरा सूजा हुआ था और जमे खून से भरा हुआ था। उसके कपड़े गन्दे और फटे थे। स्टार्म सरदार चीखा: 'इन्हें आमने-सामने करो !' वे डैमर्ट को घसीट कर कमरे के बीच में ले आये। स्टार्म सरदार उन दोनों के बीच में खड़ा था। उसने डैमर्ट की ठुड्डी पर एक वार किया। 'हिइ ! जरा जागो ! करगेल यही है न ? जैन्डर का साथी ?' उसने पूछा।

"डैमर्ट ने प्रयत्न कर के अपना सिर उठाया। उसकी दृष्टि कहती प्रतीत हो रही थी : 'मुझे माफ करो—मैं अब और खड़ा नहीं रह सकता।" डैमर्ट ने थकान के भाव से सहमतिसूचक ढंग से सिर हिलाया। स्टार्म सरदार हँस पड़ा। 'लगता है इलाज कारगर हो रहा है, क्यों ?' वह करगेल की ओर मुड़ा। 'क्या तुम अभी भी जवाब देने से इन्कार करते हो, सुअर के बच्चे? बतलाओ, जैन्डर कहाँ छिपा है ?' "

(एक्स ने मुझसे पूछा कि क्या मैं जैन्डर को जानता था। बेशक मैंने नहीं ही कहा।)

" 'हाँ मैं जैन्डर को जानता हूँ। लेकिन यह नहीं जानता कि वह कहाँ है,' करगेल ने अवज्ञापूर्वक कहा। वह अच्छी तरह जानता था कि एक बार जैन्डर को न जानने का बहाना करने पर वे उसका आगे फिर कभी विश्वास नहीं करेंगे। स्टार्म सरदार ने करगेल के चेहरे के सामने क्रोध से बुरी तरफ अपनी बाँहें घुमाईं। दूसरे एस० ए० वाले भी उत्तेजित हो उठे। 'इसकी दुर्गति बना दो'—'इस पर कोड़े बरसाओ,' कुछ चीखे। 'दैत्य ! इसमें साहस कितना है !' मेरे पीछे से एक व्यक्ति ने कहा। वह बहुत लम्बा और घनी भौंहों वाला था। वे उसे लैम्प पोस्ट कहते थे। लेकिन करगेल सीधे सामने देखता रहा। अभी भी उसके खून बह रहा था।

"स्टार्म सरदार ने कहा: 'यह तो ठीक है कि तुम उसे जानते हो, लेकिन अभी भी तुम यह नहीं जानते कि वह कहाँ है ?' उसने धीरे-धीरे अपनी रिवाल्वर के खोल का बटन खोला और पिस्तौल बाहर निकाल ली। उसने सेफ्टी कैच पीछे खींचा और रिवाल्वर करगेल पर तान दी। वह चीखा : 'केवल दो मिनट का समय है तुम्हारे पास। इस बीच तुम अपनी याददाश्त ठीक कर लो !'

"करगेल अभी भी चुपचाप खड़ा था बिना कोई आवाज किये हुये।"

(मुझे अपने दाँतों पर दाँत जमा लेने पड़े थे ताकि एक्स को यह पता न चले कि मैं इन कामरेडों को जानता था। करगेल—वह तो सचमुच नहीं जानता था कि फ्रांज कहाँ था।)

" 'इसे दीवार के सहारे खड़ा कर दो!' स्टार्म सरदार गरजा।

"वे करगेल को खींच ले गये। वह वहाँ भी शांतिपूर्वक चुपचाप खड़ा रहा और दीवार की ओर देखता रहा। स्टार्म सरदार ने दो बार गोलियाँ चलाईं। प्लास्टर टूट गया। अन्य एस० ए० वालों के साथ मैं पीछे हट गया था। उसने डरा कर काम निकालने के लिए फासले से गोलियाँ चलाई थीं। वे करगेल को पुनः खींच कर बीच में ले आये। स्टार्म सरदार अत्यधिक क्रोध से चीखा—'तुमने अपना विचार अभी बदला या नहीं? अगर तुम ऐसा न करोगे तो पछताओगे! जैन्डर कहाँ छिपा है?' करगेल ने सीधे उसके चेहरे की ओर देखा, बस इतना ही। स्टार्म सरदार ने मेरे पीछे वाले व्यक्ति को बुलाया—'चमड़े वाला कोड़ा ले आओ, लैम्पपोस्ट।'

" 'इस खेल के लिए तुम लोग तैयार हो न?' फिर उसने प्रश्न किया। दूसरे इस बात पर हँस पड़े।

"लेकिन लैम्पपोस्ट नाम का एस० ए० सिपाही नहीं हँसा। उसने कहा, 'अच्छा यह होगा कि इन्हें एक दूसरे से खेलने दें।' सरदार इस बात पर राजी हो गया।

"मेरा विश्वास है कि लैम्पपोस्ट उन्हें मारना नहीं चाहता था," एक्स ने कहा—"बस, वह नहीं चाहता था। उस जैसे उनमें चन्द ही लोग थे, जो कैदियों को चक्की पीसने के काम में लगाना पसन्द नहीं करते थे।

"दो एस० ए० वाले चमड़े के मजबूत कोड़े लिये हुये आगे आये। डैमर्ट एक बेन्च पर लिटा दिया गया, और उसकी कमीज ऊपर सिर तक

खिसका दी गई। उसकी पीठ छिले हुये चमड़े का पिंड हो गई थी। स्टार्म सरदार ने करगेल को उनमें से एक कोड़ा थमाते हुये कहा : 'तो तुम नहीं बोलेगे ? ठीक है, अब तुम अपने "कामरेड" को तब तक पीटो जब तक कि अपना विचार न बदल लो !' फिर उसने कसी हुई मुट्ठी से उसे धमकाया।"

एक्स खड़ा रहा और कसी हुई मुट्ठी का प्रदर्शन करता रहा।

" 'अगर तुम इसे नहीं मारते तो तुम्हारे पिटने की बारी आ जायगी। इस कोड़े से पिटाई शुरू करो !' वह आगे कहता रहा। "फिर करगेल को वे बेन्च के पास ले गये। वह वहाँ बिना हिले-डुले खड़ा रहा।

"कमरे में अचानक खामोशी छा गई।

"स्टार्म सरदार उसके पास गया—'इसको क्या हुआ ?'

"और मैं," एक्स ने कहा— "मैं इस बीच बराबर इतना भयभीत हो रहा था कि दूसरे भी जरूर सुन लेते कि कितनी जोर-जोर से मेरा दिल धड़क रहा था। लेकिन करगेल ने कोई हरकत नहीं की। अन्य लोग पूरी खामोशी से देखते रहे। घरघराती आवाज में डैमर्ट ने ही खामोशी तोड़ी। 'मुझे मारो...तुम्हें मुझे मारना चाहिये...' करगेल ने अपना सिर अपने सीने पर झुका लिया। फिर अचानक वह उछल पड़ा और वह कोड़ा उसने स्टार्म सरदार के पैरों पर फेंक दिया। तब उन्होंने उसे कस कर पकड़ लिया और उसे बेन्च पर पटक दिया। स्टार्म सरदार उस पर वार करने लगा। करगेल चीखा। मैंने अपने होंठ भींच लिये ताकि मैं चुप रहूँ।

"फिर उसके होंठों से एक भर्राती हुई आवाज निकली और वह निश्चल हो गया—वह मूर्छित हो गया था..."

एक शब्द भी कहे बिना हम क्षण भर चुपचाप बैठे रहे। फिर एक्स ने मुझसे विनती की कि मैं उन बातों को काम में न लाऊं जो

उसने मुझे बताई थीं । वह डर रहा था कि अभी उसके साथ और भी बुरा व्यवहार हो सकता था । उसने हमारे साथ बराबर सम्पर्क में रहने से इन्कार कर दिया । वह केवल एस० ए० के रिजर्वों में था, इस कारण उसे ज्यादा बातें जानने का मौका नहीं मिलता था । लेकिन मैंने उससे इत्र की दूकान में अनियमित वक्तों पर सच्चीवस को सूचना देते रहने के लिए राजी कर लिया ।

मैं जानता था कि जो कुछ मैंने लिखा था यदि उसे नाजी पा जायेंगे तो मेरी क्या दशा होगी । पूरे पिछले हफ्ते मैंने एक शब्द भी नहीं लिखा । मैं तो वह सब जला डालने वाला ही था । बाधायें मैं बहुत बड़ी प्रतीत होती थी । मैंने लेखन कार्य के लिए एक दूसरा कमरा प्राप्त करने का प्रयत्न किया । लेकिन वह कमरा कामरेडों के बीच ही हो सकता था । और गैरकानूनी कार्यों में उनके गले उतने ही फँसे हुये थे जितना मेरा । उनके घरों पर रात को अचानक पुलिस का धावा हो सकता था । और फिर उन्हें मेरे कारण निश्चय ही समझौता करना होगा ।

जिस स्थान पर मैंने पाण्डुलिपि छिपा रखी थी वह भी सुरक्षित नहीं था । लेकिन उस हफ्ते मैं भयानक रूप से बेचैन रहा, जब मैंने लिखा नहीं था । मेरे मस्तिष्क पर एक भारी बोझ लदा हुआ प्रतीत होता था, जो लेखन जारी रखने के लिए मुझे विवश करता रहता था । मुझे वह सब जरूर लिख डालना चाहिये । हमें वह पाण्डुलिपि देश के बाहर ले जाने में सफलता हासिल करनी ही चाहिये । हमें मानवता की आत्मा को जागृत करने के लिए प्रयत्न करना ही चाहिये ।

पिछले दिन मैं फ्रांज से उसके नये क्षेत्र में मिला और मैंने उसे तुरन्त एवस की सूचना के बारे में बतला दिया । उसने चुपचाप मेरी बात सुनी ।

फिर वह मुझे उन कामरेडों के पास लिवा ले गया जिनके साथ मुझे रात बितानी थी। हम सुबह मिलना चाहते थे अखबार छापने के लिए।

कोथी को उसके दफ्तर में फोन करने का विचार मेरे मस्तिष्क में पिछले दिन आया। क्या मुझे उस क्षेत्र में उससे मिलने की हिम्मत करनी चाहिये ? मैं अनुभव कर रहा था कि इतने लम्बे विछोह के बाद मुझे उससे मिलना ही चाहिये। वह बराबर मुझे सूचनायें भेज रही थी। उसे अपना पीछा किये जाने का कोई भी सुराग नहीं मिला था। लेकिन क्या मुझे उससे आने के लिए कहना चाहिये ? ऐसे कमरे में आन के लिए जो राजनीतिक कार्य का अड्डा था ? मैं बहुत देर तक पसोपेश में पड़ा रहा। मैंने ऐसा करने के लिए औचित्यपूर्ण कारणों की एक पूरी कड़ी ही गढ़ डाली—एक बार ऐसा करने में किसी प्रकार की गड़बड़ी होने की संभावना नहीं थी। उसने कहा था कि उसे कोई भी ऐसा सुराग नहीं मिला है जिससे प्रतीत हो कि उस पर निगरानी रखी जा रही थी। लेकिन मुझे अपनी राजनीतिक शंकाओं को कम नहीं होने देना चाहिये। आखिरकार उस दिन मैंने उसे फोन कर ही दिया।

मैं सड़कों पर चहलकदमी कर रहा था। गर्मी थी और धूप मकानों की कतार में लगी खिड़कियों से टकरा कर प्रतिबिम्बित हो रही थी। दिन लम्बे हो रहे थे। टायुएन्ट्जिएनस्ट्रास में हमेशा की तरह पैदल चलने वालों की भीड़ थी। स्त्रियाँ वसन्त के नये कपड़े पहने हुये थीं। रेस्तराँ भरे हुये थे और अतिथियों में एस० एस० के अनेक अफसर भरे हुये थे। खिड़कियों के पीछे पोस्टर लगे थे :

जर्मन कम्पनी !

जर्मन वस्तुयें : केवल जर्मनों की बनी वस्तुयें !

भारी चंदहले और सुनहले फ्रेमों में मढ़ी हिटलर की तस्वीरें, जिनमें से कुछ पर हरी मालायें भी लटकी हुई थीं, पोस्टरों के ऊपर

लगी हुई थीं। अनेक दूकानदार अचानक व्याप्त इस 'गंदी प्रतिद्वंद्विता' से अपनी रक्षा करने के लिए ऐसे पोस्टर लगाये हुये थे। उनके पोस्टर बड़े थे :

...की पुरानी राष्ट्रीय-समाजवादी कम्पनी

एक खिड़की पर लगी हिलटर की तस्वीर विचारमग्न मुद्रा में थी—उसकी बाँहें आगे की ओर कसी हुई थीं और उसके चारों ओर मूल्यवान फूल सजे हुये थे। उसके पीछे शीशे का एक बड़ा-सा प्याला था, जिसमें उष्णकटिबन्धी और सुनहरी मछलियाँ तैर रही थीं और जो लाल बत्तियों से जगमगा रहा था। उस दूकान ने अपने पोस्टर पर यह भी घोषित किया था कि उसके फूल और मछली भी सदैव देशभक्ति के साथ जर्मन ही रही हैं।

केथी कॉफे में मौजूद थी। उसका चेहरा खिल उठा। वह प्रसन्नता से लाल हो उठी।

"तुम्हारे लिए सीट खाली रखने में बड़ी मुसीबत हुई," उसने इतना केवल कुछ कहने मात्र के उद्देश्य से कहा। मैं औपचारिक अभिवादन के सिवा वहाँ और कुछ नहीं पा सकता था। हम एक अरसे से मिले नहीं थे, और अब मैं एक शब्द भी नहीं बोल सकता था। मैंने बस उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। काउन्टर पर बजी घंटी की तीखी टनटनाहट सुनाई दी। सफ़ेद टोपियाँ लगाये परिचेपिकायें इस छोर से उस छोर तक दौड़ रही थीं। मैं सन्तुष्ट हुआ। काश हमारा मिलन इतना छोटा न होता! अखबार वाला एक लड़का मेजों के बीच से गुजरा।

'अखबार (पेपर)।'

सरकारी नौकरों के लिए नया कानून!

मुझे तुरन्त पढ़ना शुरू कर देना पड़ा। यहाँ तक कि केथी का हाथ भी छोड़ देना पड़ा।



"नई सरकार थोड़ा-थोड़ा कर के नौकरियाँ बाँट रही है," मैंने टिप्पणी की।

हम वहाँ से चल दिये। केथी मेरी बाँह पर टँगी हुई-सी थी। वह बसन्त की हल्की पोशाक पहने थी, और उसकी गर्दन के चारों ओर एक रंगीन तिकोनिया मफलर बँधा हुआ था। मुझे खुशी अनुभव हो रही थी।

"जरा यह तो देखो, जान, कि तुम कहाँ जा रहे हो। हम लोग सभी लोगों की नजरों के सामने पड़ रहे हैं।"

"आज तो इससे बचा नहीं जा सकता—मैं आगे कभी तुमको बिल्कुल पहचानूँगा नहीं।"

"अच्छा, हम जा कहाँ रहे हैं?"

"इन्तजार करो और देखो।"

हम क्षण भर चुपचाप चलते रहे। मैं एक छोटी गली में मुड़ गया।

"जान?"

मैं चौंक पड़ा। मेरी आशंकायें लौट पड़ीं। बकवास! हमारा पीछा नहीं किया जा रहा था। मैं सतर्कतापूर्वक देख रहा था, विशेषकर अन्तिम चन्द क्षणों में।

सीढ़ियाँ चौड़ी और बुरी तरह टूटी थीं। प्लास्टर बड़े-बड़े टुकड़ों में टूट कर गिरा हुआ था। वहाँ भुने प्याज की तरह महक व्याप्त थी। प्रत्येक मंजिल पर हॉल के अन्दर अर्द्धवृत्ताकार रूप में चार दरवाजे एक ही पंक्ति मे थे। मैंने घंटी बजाई। ठिगने कद की एक काली महिला कामरेड लैम्प्रेख्त ने दरवाजा खोला।

"हम आ गये।"

"अन्दर आ जाइये," उसने पूरा दरवाजा खोलते हुये मैत्रीपूर्ण स्वर में कहा।

पुरानी बर्लिन के मकानों में पहुँचने के लिए हमेशा लम्बे गलियारे को पार करना पड़ता था। शयन कक्ष के खुले दरवाजे पर उसकी नन्हीं बच्ची खड़ी थी। लैम्प से फूट कर निकल रहा प्रकाश उसके साफ रंग के बालों पर जोर से चमक रहा था!

"कार्ल चाचा—कार्ल चाचा।"

"यहाँ मेरा यही नाम है," मैंने केथी से फुसफुसा कर कहा।

लैम्प्रेख्त परिवार वाले रात का खाना खा रहे थे। नीली चारखाने वाली कमीज पहने और उसकी बाँहें मोड़े हुये पति महोदय मेज पर बैठे हुये थे। वे लम्बे, सुगठित थे और बिल्कुल युवा दिखते थे। हमने हाथ मिलाये।

"ये हैं केथी।"

"कर्ट—अर्ना," उन्होंने उत्तर दिया। अर्ना के हाथ मुलायम किन्तु कमजोर थे।

"आज मैं धुलाई कर रही थी," उसने कहा।

"और मैं कोयला ढो रही थी," कर्ट हँसी— "इस कारण मेरे लिए भी सफाई करने को बहुत है।"

हम बैठ गये।

"आप हमारे साथ एक प्याला कॉफी नहीं पियेंगे?"

" नहीं, धन्यवाद, सचमुच मन नहीं है।"

नन्हीं बच्ची अपनी माँ के बगल में खड़ी थी लेकिन वह केथी की ओर देख रही थी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" केथी ने पूछा।

वह शरमाती हुई उसके पास गई। केथी ने उसे अपनी गोद में उठा लिया।

एक दिन हम भी स्वयं अपना मकान ले लेना चाहते थे। इसी तरह एक आनन्ददायक कमरा, जहाँ हम खाना खाते।

"क्या खबर है, कर्ट ?"

"सेहन में ? ...कुछ नहीं। रूडी ठीक तुम्हारे अन्दर आने के पहले आया था। वह एक झोला और सूट ले आया था। तुम्हें समय का पाबन्द रहना चाहिये। तीन बजे।"

"और कुछ नहीं?"

"नहीं।"

"फिर सब ठीक रहेगा। तुम्हारे साथी चुस्त हैं!"

कर्ट कुछ न होते हुये भी रेलवे यार्ड की ही बातें कर रहा था। वह अपने अधिकांश साथियों को अखबार पहुँचाता था। उसके बाद ड्राइवर लोग उन्हें स्प्री पर तैरते बजरों तक पहुँचा देते थे। हम लोग बड़ी देर तक बातचीत करते रहे। मैं कर्ट से कभी इस चीज के बारे में कभी उस चीज के बारे में पूछ रहा था, लेकिन मैं शायद ही उसका कोई उत्तर सुन रहा था।

"मैं तुम्हें अपना अड्डा दिखाऊँगा," मैंने अंत में केथी से कहा। वह गलियारे के बगल में ही और पीछे की तरफ है। मैंने दरवाजे को खोला और तेल का लैम्प जला दिया। दराजों के ऊपर एक कपड़ा धोने का बर्तन रखा था और एक छोटी-सी मेज और कुर्सी भी कमरे में पड़ी थी। दाहिनी तरफ दरवाजे के निकट एक कैम्प में बिछाने वाला बिस्तर बिछा था। सचित्र अखबारों से काट कर कुछ बदरंग तस्वीरें बिस्तर के ऊपर पिन से लगाई गई थीं। मैं उस बिस्तर पर दोनों हाथ सिर के नीचे तिरछे-तिरछे रख कर लेट गया। केथी तेजी से खिड़की के पास गई और बाहर देखने लगी।

"छोटी जगह है, है न?"

केथी ने सिर हिलाया और फिर मेरे निकट बैठ गई। मैंने उसके इर्द-गिर्द अपनी बाँहें लपेट लीं। उसने कुर्सी की तरफ इशारा किया जिस पर एक नीला लबादा कंधे से लटकाने वाले झोले सहित पड़ा हुआ था।

"तुम्हें इसकी जरूरत किस काम के लिए पड़ा करती है ?"

मैंने अपने दोनों हाथों में उसकी गर्दन पकड़ ली, और उसे अपनी तरफ खींच लिया। उसके बाल हम दोनों के चेहरे पर लहरा उठे, हमारी साँसें एक-दूसरे से टकराने लगी।

मैंने कितनी ही कोशिश की, लेकिन इस विचार से छुटकारा नहीं पा सका कि केथी को यहाँ इस कमरे में नहीं होना चाहिए।

सड़कों पर एक आदमी भी नहीं दिख रहा था। सुबह बहुत तड़के लोहे के ऊँचे-ऊँचे बिजली के खम्भों से लटकते लैम्प आग के चमकते गोलों जैसे लग रहे थे। मेरे वदन में सिहरन दौड़ गई और मैं लम्बे-लम्बे डग भरने लगा। सड़कों की नुक्कड़ों पर टैक्सियों की लम्बी कतारें खड़ी हुई थीं। टैक्सी ड्राइवरों ने अपने कोटों की कालरें उठा रखी थीं; उनमें से अधिकांश तो पीछे की तरफ उटंग कर सो गये थे। वे देर वाली सवारियों से मिलने वाले अधिक भाड़े का इंतजार कर रहे थे। बर्लिन के इस पश्चिमी कोने में बहुत से नृत्य-गृह और शराब-खाने थे। उनके विद्युत से दमकते रंग-बिरंगे साइनबोर्ड अभी भी चमक रहे थे। उनके प्रवेश-द्वार भरी-भरकम ढंग के बने हुये थे, कुछ तो छोटे किंतु मोटे गोल बिन्दु वाले शीशे के टुकड़ों से बने हुये थे। बाहर पोस्टर लटक रहे थे—'आज रात फलाँ-फलाँ का बैंड बजेगा।'

फ्रांज पहले ही से रूडी और ब्रूनो के साथ नुक्कड़ पर इंतजार कर रहा था। उन लोगों ने अपने नीले लबादे पहन रखे थे। रूडी ने अपने कँधे पर औजार रखने वाला चमड़े का बड़ा-सा थैला रख छोड़ा था। और लोग कँधे से लटकाने वाले झोले लिये हुये थे। हम लोगों ने एक दूसरे से हाथ मिलाये।

"नमस्कार कार्ल।"

"जल्दी चलो," ब्रूनो ने कहा—"हम एक क्षण भी बर्बाद नहीं कर सकते।"

दो सिपाही नुक्कड़ पर खड़े हुये थे। उन लोगों ने हमें जाते हुये देखा।

"अगर कहीं वे जान जायें कि हम लोग किसलिए यहाँ आये हैं, तो ईश्वर ही मालिक !" रूडी ने फुसफुसा कर कहा।

ब्रूनो हँस पड़ा। उसकी बन्दरों जैसी नाक और भी फैल गई। फ्रांज ने एक बार मुझे बताया था कि वह घूंसेबाजी बहुत किया करता था और घूंसेबाजी ने ही उसकी नाक का यह नक्शा बना दिया था।

रूडी मेरे निकट आ गया।

"हम लोग न० २ बुलोस्ट्रैसी स्थित शीडलर एंड कम्पनी के कारखाने के मेकेनिक हैं। हमें मच-सज्जा के लिए लोहार का काम सौंपा गया है। समझ गये न ?"

"बिल्कुल।"

"हमें इस बार कितने पर्चे तैयार करने हैं ?"

"छह सौ।"

"नौकरानी कुछ देर बाद आयेगी। उस समय तक हम अपना काम पूरा कर चुकेंगे न ?"

"निश्चित रूप से; बड़ी आसानी से।"

हमारे बीच चुप्पी छा गई। रूडी के औजारों वाले थैले में औजारों की खनखनाहट सुनाई पड़ रही थी।

"देखो, यह चकला है," ब्रूनो ने कहा।

चकले के प्रवेश द्वार के ऊपर लिखा था 'दि स्पेनिश रोज़' जिसके अक्षर नीले रंग की रोशनी बिखेर रहे थे। प्रवेश द्वार के बाईं तरफ़ एक छोटा लोहे का फाटक था, जिस पर एक तरफ़ पीतल का एक बटन लगा हुआ था। यह 'रात में बजाने की' घंटी थी।

"अब आप लोग एकदम चुप रहिये," रूडी ने कहा। दरवाज़ा स्वचालित यंत्र की हल्की-सी ध्वनि के साथ खुल गया। हम एक सँकरे हॉल के अन्दर गये। छत से एक मद्धिम रोशनी बिखेरता लैम्प लटक रहा था और आगे एक छोटी खिड़की थी—खुली हुई। मेज़ पर एक लैम्प रखा हुआ था, जिस पर हरे काँच का शेड लगा हुआ था। एक मोटा आदमी पूरी बाँह की कमीज़ पहने वाश-बेसिन के सामने खड़ा था। उसने एक काली पतलून पहन रखी थी, जिसके दोनों तरफ़ ऊपर से नीचे तक सुनहला फ़ीता लगा हुआ था। उसके ही जोड़ की जैकेट कुर्सी पर टँगी हुई थी। वह एक तौलिया लिये हुये था और उसके चेहरे पर लाल धब्बे थे। उसकी नाक का रंग कुछ-कुछ नीला हो रहा था।

"हिटलर ज़िन्दाबाद!" गंभीर स्वर में उसने जवाब दिया। "आप लोग वापस भी आ गये? मैं अपने चेहरे की सफ़ाई ख़त्म ही कर रहा हूँ।"

उसने तौलिये से अपने चंदले सिर को पोंछा। उसकी मंडली वाले इधर-उधर चक्कर लगा रहे थे।

"एक और आदमी लगा कर हम आज अपना काम जल्दी समाप्त करना चाहते हैं।" रूडी ने कहा।

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। आप लोग रास्ता तो जानते ही हैं।" मोटा आदमी धीरे से बोला।

हम रसोईघर के अन्दर से होते हुये भीतर गये। बिजली के चमकदार स्टोवों में सफ़ेद खपरैलें प्रतिबिम्बित हो रही थीं। रेफ़्रीजिरेटर और कपबोर्ड दीवार के अन्दर ही बने हुये थे। हम एक तुषार से धुँधले पड़े शीशे के दरवाज़े को पार कर के एक लम्बे कमरे में पहुँचे जिसमें धुयें की गंध उठ रही थी। चारों तरफ़ दीवारों के किनारे-किनारे छोटे-छोटे शयन कक्ष बने हुये थे। वे लाल मख़मल के भारी



पर्दों से ढँके हुये थे। उनमें से एक पर्दा पूरा खिंचा नहीं था। उसके पीछे दो आरामकुर्सियाँ और एक नीची गोल मेज रखी हुई थीं। एक चमकदार राखदान पर एक अधजली सिगार रखी थी जिस पर एक चौड़ी पट्टी लिपटी हुई थी। मेजपोश शराब में बुरी तरह तर था। शराबखाना और आगे था। शराबखाने की घुमावदार मेज के किनारे-किनारे ऊँचे-ऊँचे, स्टूल रखे हुये थे। निकेल की टोंटियाँ चमक रही थीं। शराब की बोतलों की लम्बी कतारें आईने में प्रतिबिम्बित हो रही थीं। कुछ बोतलें अभी भी खजूर के पत्ते से बनी डोलचियों में ही रखी थीं।

"हम लोग...!" ब्रूनो ने रुक कर कहा।

"बढ़ते चलो, कैबरे रूम तक," रूडी ने अनुनयपूर्ण स्वर में कहा—"हम एक मिनट भी बर्बाद नहीं कर सकते।"

कमरे के बीचोबीच खूब पॉलिश किया हुआ चिकना चमकदार नृत्य का फ़र्श था। दाहिनी तरफ एक मंच बना हुआ था, जिस पर एक विशाल पियानो रखा था और कुर्सियों की दो कतारें लगी हुई थीं, जिनके सामने संगीत की स्वरलिपियाँ रखने के स्टैंड लगे हुये थे। दीवारों के किनारे-किनारे चंदहली वार्निश से चमकती मेजें और गोलाकार कुर्सियाँ रखी थीं। सारी साज-सज्जा से मेल खाने वाले स्फटिक के शेड वाले लैम्प दीवारों पर लगे हुये थे। नेवी-ब्लू रंग के पर्दों से वे खूब मेल खा रहे थे।

ब्रूनो ने कुछ मेज़ों को घसीट कर एक साथ लगा दिया और पास की कुर्सी पर एक कपड़ा रख दिया।

"आइये अब मशीन लगाई जाय। अगर कोई इस बीच आ जाय तो मशीन पर कपड़ा डाल देना।"

"सुनहरे फ़ीते लगी पतलून वाला मोटा आदमी यहाँ आने वाला आखिरी जीव होगा।" रूडी ने कहा।

ब्रूनो ने दाँतों के बीच से सीटी बजाई।

"आखिरी चीज़। मेरी माँ भी यही कहा करती थी—और मैं यही सब करने के लिए पैदा हुआ था।"

रूडी ने निकट ही बने छोटे-से मंच की ओर इशारा किया।

"अब आप लोग जितना भी कोलाहल करना चाहें करें, हम लोग काफ़ी ठोंक-पीट मचाते रहेंगे।"

वह ब्रूनो के साथ मंच पर चला गया। फ्रांज़ और मैंने साइक्लो-स्टाइल मशीन निकाली और अपने झोलों से मोमवाले कागज़ निकाले। हमने वे कागज़ दफ्तियों के बीच रख रखे थे और उनमें कोई शिकन नहीं पड़ी थी। सभी साथियों में बड़ी हिम्मत और लगन थी। अगर हम लोग पकड़ लिये जायें तो हमें कितने ही वर्षों की कैद-बामशक्कत की सजा मिल सकती थी।

फ्राँज ने जालीदार सीट पर स्याही के ट्यूब से स्याही फैला दी। फिर हमने मोमवाले कागजों को ड्राइंग वाली पिनों से ऐपरेटस पर लगा दिया।

"तुम इन्हें बगल से रक्खो, कार्ल। मैं रोलर घुमाऊँगा। देखो, इस तरह।" फ्राँज ने कहा। "यही जल्दी काम निपटाने का सब से अच्छा रास्ता है।"

उसने कागज़ की एक शीट ठीक स्थान पर रखी; रबर का रोलर घूम गया।

"यही क्रिया बिना किसी रुकावट के लगातार चलती रहनी चाहिये। कागज़ ठीक स्थान पर लगाया जाय, कागज़ हटाया जाय, कागज़ लगाया जाय, कागज़ हटाया जाय।"

हमने पहली शीट देखी।

"बहुत गन्दा है, यह तो एकदम लिप-पुत गया है।" मैंने कहा।

"अगली शीट…" उसके शब्द सामने मंच पर उन दोनों की ठोंक-पीट से उठ रही आवाज में खो गये। मैंने प्रसन्नता से सिर हिलाया।

एक दर्जन कागज छपने के बाद मेरा हाथ पूरी गति से चलने लगा मैं कागज लगाता—फाँज रबर रोलर को तर करता—फिर उसे घुमाता—जालीदार ढकने को उठाता—कागज हटाता—फिर कागज लगाया जाता छपे हुये कागज निकट की मेज पर इकट्ठे किये जा रहे थे।

वे लोग मंच पर किसी लोहे की चीज पर हथौड़ा चला रहे थे। हॉल में ठोंक-पीट की आवाज ध्वनित-प्रतिध्वनित हो रही थी।

दाहना हाथ कागज हटाता है—बायाँ हाथ नया कागज ठीक स्थान पर लगाता है—उसे सीधा करता है—ढँकना गिराता है—फाँज का दाहना हाथ कागज हटाता है। मेरे हाथ काम करते हुये जैसे स्वचालित मशीन की तरह अपने आप पीछे जाते हैं फिर आगे जाते हैं। हाल ही में बर्लिन के स्थानीय पत्रों ने क्या लिखा था? "गेस्टैपो की एक गुप्त सूचना से पता चलता है कि 'हमें चौकसी और गिरफ्तारियों के संबंध मे शीघ्रता से और विधिपूर्वक काम करना चाहिये। हम छिपे हुये विरोधी दल के निरंतर बदलते हुये तौर-तरीकों का मुकाबला करने में अब तक असफल हुये हैं।...' " अभी दो घंटे पहले यहाँ भयंकर शोरगुल वाला बैंड बजा था। एस० ए० और एस० एस० के उच्च पदाधिकारी उस समय शायद दूसरे कमरे में पर्दों से ढँके छोटे-छोटे कक्षों में बैठे थे। और अब हम लोग यहाँ यह काम कर रहे थे। इसी क्षण संभवत: दर्जनों साइक्लोस्टाइल करने वाले पूरे शहर में पूरी गति से काम कर रहे होंगे। गोरिंग ने गिरफ्तारियाँ करने और 'भागने की कोशिश करते समय गोली मार देने' का हुक्म जारी कर दिया था। लेकिन हमारे पैम्फलेट और अखबार इस सब के बावजूद जनता के बीच रह-रह कर प्रकट हो रहे थे।

दहिना हाथ—बायाँ हाथ—

ब्रूनो मंच पर से कूद आया। वह अपना हथौड़ा घुमाता हुआ हमारे पास आ खड़ा हुआ। रबर का रोलर आगे-पीछे इधर-से-उधर

घूम रहा था और उसके साथ ही मेरा हाथ भी चल रहा था। बूनो के चेहरे पर पसीने की बूँदें उभर आई थीं। उसकी घूंसेबाजों वाली नाक और चौड़ी हो गई थी।

"काम बढ़िया चल रहा है न ? मेरे ख्याल से यह तीसरा दौर होगा।" छपे हुये कागजों की गड्डी देख कर उसने प्रसन्नता से सिर हिलाया, और फिर लौट कर रूडी के पास जा पहुँचा। हम चुप-चाप काम में लगे हुये थे। सादे कागजों की गड्डी धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। हथौड़ों की आवाज़ लगातार गूँज रही थी। रह-रह कर वे दोनों एक-दूसरे से चिल्ला-चिल्ला कर कुछ कहते थे। लेकिन मैं उनकी बातें शोर-गुल में समझ नहीं सकता था। शायद यह भी लोगों को धोखे में रखने की तरकीब का ही एक अंश था। वे दोनों बहुत अच्छे काम करने वाले थे! आखिरी कागज़ छापने के बाद मैंने अपनी घड़ी देखी। सात बज कर कुछ मिनट हुये थे। मेरी आँखें दर्द करने लगी थीं, मेरे हाथ ऐंठ कर सख्त पड़ गये थे। हाथ को ज़रा सा भी हिलाने से कंधों में तेज दर्द उठ रहा था।

"लो भाई, काम खत्म," फ्रांज ने कहा। उसने अपनी भौंहें पोंछीं, जिससे उसके चेहरे पर स्याही के दाग लग गये। उसने अँगड़ाई ले कर अपनी पीठ सीधी की।

"अच्छा होगा कि तुम अब इसे काट डालो, कार्ल।"

"हाँ, हाँ।"

हमने अपना सामान बाँध डाला। तभी बाहर ज़ोर-ज़ोर से दरवाजा पीटे जाने की आवाज आने लगी। एक झटके के साथ हमारे सर उधर ही घूम गये। हथौड़ों की ठोंक-पीट अभी भी जारी थी। उन लोगों ने कुछ नहीं सुना था। फ्रांज ने मेरी ओर पत्थर के बुत की तरह देखा। वह इस तरह झुक गया जैसे कूदने को तैयार हो। मैंने मेज़ों पर कपड़ा डाल दिया। हम दाहिने तरफ़ दरवाजे की ओर

इस तरह देखने लगे जैसे हमारे जिस्म जम गये हों। वे दोनों सामने मंच पर अभी भी ठोक-पीट मचाये हुये थे। दरवाजा जोर से खुल गया। एक स्त्री फ़र्श रगड़ने वाला ब्रश और बाल्टी लिये हुये दरवाजे पर खड़ी थी।

"नमस्कार," उसने हम सब लोगों का अभिवादन किया।

फ्रांज ने संतोष की गहरी साँस ली। उसने अपनी पीठ इस तरह ढीली कर ली जैसे अभी-अभी उसकी पीठ पर से कोई बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।

'नमस्कार," उसने शाँति की साँस ले कर कहा। मैं केवल सिर हिला सका। भय ने मेरी स्नायुवों को अभी तक उत्तेजित कर रखा था।

नौकरानी बाहर चली गई। मैं अपना थैला बाँधने लगा।

"ओ भाई, सुनो ! जरा सुनो तो !" फ्रांज ने पुकार लगाई।

ठोक-पीट बंद हो गई। वे दोनों जूते खट-पट करते हुये दौड़ते हुये मंच से नीचे चले आये।

"हम लोग जा रहे है।"

"नमस्कार ! आपकी यात्रा सफल हो !" रूडी ने कहा। उसके बाल कुछ-कुछ गीले हो गये थे, और उसके धब्बे पड़े चेहरे पर पसीने की बूंदें उभर आई थीं।

हममें से कोई भी साथी सोशल डिमाक्रेट पार्टी के साथियों से उचित सम्पर्क नहीं स्थापित कर पा रहा था। हमारे गुटे के दो साथी टीचर्ट और सब्बीबस का विचार था कि उनसे हम तभी एकजुट हो सकेंगे जब वे यह स्वीकार कर लेंगे कि बडे गुनाह के मुकाबले में सदैव छोटे गुनाह को स्वीकार कर लेने की नीति के प्रति हमारा जो विरोध रहा है वह एकदम ठीक है। मेरा मत था कि स्थिति इतनी ज्यादा गंभीर

तरह का कोई सम्पर्क स्थापित करने से इनकार कर देते थे जिसे वे कुछ समय पहले से जानते न हों। वह उनके हाथ अखबार बेचा करता था, इसमें संदेह नहीं, लेकिन इसके आगे वह उनसे सम्पर्क अभी तक नहीं बढ़ा पाया था। इसके बाद हमने साप्ताहिक भेंट आयोजित करनी शुरू की—हमेशा उसी दिन भेंट हुआ करती थी, लेकिन हर सप्ताह भेंट का समय बदल दिया जाता था। फिर एलेक्स ने मुझसे एक दिन कहा—"मैं एक दिन बेरोजगारी के दफ़्तर में लम्बी लाइन में खड़ा हुआ था। एक नाटा, चंदला आदमी मेरे पीछे खड़ा था। मैं बराबर महसूस कर रहा था कि वह लगातार मेरी ही ओर देखे जा रहा है। मैं सोच रहा था, कि वह आदमी मुझे जानता है क्या। तभी एकाएक वह फुसफुसा कर बोला—'कहिये हर मेयर साहब, भाषणों और सभाओं के सिवाय अब कुछ हाथ नहीं रह गया न?' यह कह कर वह मुस्कराया। लेकिन मैं उसके साथ मुस्करा नहीं सका।

" 'भाषण ?' मैंने आश्चर्य भरे स्वर में कहा—'आपको शायद किसी और का धोखा हुआ है। मैं तो तालासाज़ हूँ।'

" वह आदमी यह सुन कर फिर मुस्करा दिया, और बड़े धूर्ततापूर्ण ढंग से आँख मारी। मैंने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि अब इस बात को यों ही छोड़ कर भागना उचित नहीं, क्योंकि इससे उसे और भी संदेह हो जायगा। बड़ी नाजुक स्थिति उत्पन्न हो गई। उसने फिर कहना शुरू किया—'क्या आप सचमुच मुझे नहीं पहचान रहे हैं ?'

" 'नहीं,' मैंने जवाब दिया—'मैंने आपको पहले तो कभी नहीं देखा।'

'ज़रा याद करने की कोशिश कीजिये; अभी ज्यादा दिनों की बात नहीं है।'

"मैं कुछ भी सोच सकने की स्थिति में नहीं रह गया था। मेरे दिमाग में तो केवल एक बात नाच रही थी कि हो-न-हो वह आदमी

मेरे बारे में बहुत कुछ जानता है। लेकिन यह बात भी थी, कि इस सब के बावजूद उसका चेहरा कुछ जाना-पहचाना-सा लगता था। उसने शायद मेरे मनोभाव को ताड़ लिया, क्योंकि बड़ी धीमी आवाज़ में उसने कहा—'आपको मुझसे डरने की कोई बात नहीं है।' मैंने यही ज्यादा अच्छा समझा कि चुप्पी साध रखी जाय और उसे ही बोलने दिया जाय। वह आगे की ओर झुक गया और मेरे कान मे बोला—'मैं पुलिस में काम करता था—आई० ए० विभाग में। आप वहाँ अपनी बैरेकों की रिपोर्ट मुझे देने आया करते थे!' तब जरूर मैंने उसे पहचान लिया। लेकिन फिर भी मैं चुप ही रहा। निश्चय ही वह 'नाज़ी रक्षकों के लिए' अपना पद खाली कर के हट गया होगा। फिर वह मेरे पास मुँह ला कर इस तरह बोला कि उसके शब्द ज़बान से पूरी तरह बाहर भी नहीं आ सके-- 'आपका रेकार्ड वहाँ अब नहीं है। ठीक चुनाव के पहले हमने बहुत से लोगों के रेकार्ड गायब करवा दिये थे।' "

सच्वीबस निश्चित नुक्कड़ पर एक महिला के साथ पहले ही से इंतज़ार कर रहा था। वाह, इस महिला ने तो खूब सजा-सँवार रक्खा है अपने को! काफ़ी सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व है उसका। मैं हमेशा शाम के समय सच्वीबस को अपने सब से अच्छे कपड़े पहने देखता हूं। उस समय उसे देख कर कोई कह नहीं सकता कि वह डाक पहुँचाने वाला हरकारा है। वह उस समय अच्छे मध्यम तबके का नौजवान मालूम पड़ता है। वह बढ़िया सूट और साफ़-सुथरी कमीज पहनता है। उसके लहरदार बाल कंघा किये हुये रहते हैं और वह हमेशा दाढ़ी चिकनी किये होता है।

"नमस्कार।"

सच्वीबस की महिला साथी अस्पष्ट स्वर में बोली। हो सकता है दाँत बड़े होने के कारण ऐसा हुआ हो। वह यहूदी लड़की थी, और

तीस साल से अधिक की न थी। अगर सच्वीवस ने यह सब मुझे बताया होता तो मैं कभी विश्वास न करता। बड़ी तीक्ष्णबुद्धि और हँसमुख लड़की थी। सच्वीवस के पास कभी स्वयं अपने लिए कुछ कहने को एक शब्द भी नहीं होता था।

"आप लोग आगे चलिए," सच्वीवस ने कहा—"मैं टीचर्ट का इंतजार करूँगा।"

"और हिल्डी ?"

"मैंने उससे दूसरे नुक्कड़ पर भेंट करने को कहा है। आप लोग जाइये। मैं उसे ले आऊँगा, हुँह ?"

अपनी हर बात के अंत में हमेशा यह हुँह जोड़ देने की उसकी आदत थी। विचित्र आदत थी। वह फ़ैशनेबुल वेस्ट एन्ड मुहल्ले की सड़क थी। दमकते हुये विद्युतयुक्त विज्ञापन जगमग-जगमग कर रहे थे। हम छोटे-छोटे कदम रखते आगे बढ़ रहे थे। हमें सड़क पर आने जाने वालों की भीड़ को काटते हुये आगे बढ़ना पड़ रहा था।

"मेरा नाम रुथ है," एकाएक वह लड़की बोल उठी।

मेरा अनुमान सही निकला। वह यहूदी लड़की थी। और वह बड़ी बहादुर लड़की थी। उसने हमे अपना कमरा इस्तेमाल करने की इजाजत दी थी। अगर कोई गड़बड़ी हो जाय, तो शायद उसके साथ तो दुगना बुरा व्यवहार किया जाय।

हमारी सब से बड़ी कठिनाई हमेशा ही यही रही है कि हमारे पास ऐसे मकान और कमरे काफ़ी संख्या में नहीं थे, जिन पर किसी को कोई संदेह न हो सके। जिन कमरों में हम अपना साइक्लो-स्टाइल पर्चे छापने का काम किया करते थे वे सभी 'लाल' बस्ती में थे, जिस पर बड़ी कड़ी नजर रखी जा रही थी। इसीलिए जब हम लोग पोस्टर छापने की समस्या पर विचार-विमर्श कर रहे थे, तो सच्वीवस ने इस स्थान की चर्चा की थी। उसने पहले कभी इस लड़की के बारे में कुछ

नहीं बताया था और इसीलिए मैंने उससे बड़े विस्तृत सवाल-जवाब किये थे। वह उसे बहुत लम्बे अरसे से जानता था—उस समय से जब वह इत्र का काम किया करता था—और धीरे-धीरे उसने उसे राजनीतिक दृष्टि से 'प्रशिक्षित' कर दिया था। वह बहुत अच्छी लड़की थी, और उसके यहाँ सब-कुछ बहुत सुरक्षित था, वरना वह उसके यहाँ आ कर काम करने की हमें कभी सलाह ही न देता। वेस्ट एंड में एक बोर्डिंग हाउस में उसका एक कमरा था। लेकिन उसके यहाँ जुटने के लिए अपने साथ हमें किसी-न-किसी स्त्री को भी लाना जरूरी था। एक अकेली लड़की के कमरे में इतने सारे मर्दों के अकेले इकट्ठे होने से सन्देह पैदा होने का बहुत खतरा था।

अगर मैं यह न जानता होता कि सच्चीबस एकदम विश्वसनीय व्यक्ति है, तो शायद गड़बड़ी होती। रुथ ऐसी दिखती थी जैसे वह इत्रों के बारे में तो सब-कुछ जानती हो लेकिन राजनीति के बारे में उसे कुछ मालूम ही न हो।

प्रवेश-द्वार पर विद्युतयुक्त साइनबोर्ड पर लिखा 'पेंशन रिटर' चमचमा रहा था।

"हम लोग पीछे वाली सीढ़ी से ऊपर चलेंगे," रुथ ने कहा।

अँधेरा सेहन था और फिर एक सँकरी घुमावदार सीढ़ी थी।

"और जब अन्य लोग आयेंगे तब क्या होगा?"

"उन पर कोई ध्यान नहीं देगा। लोग यहाँ सारे दिन अन्दर आते रहते हैं, बाहर जाते रहते हैं। और अर्नस्ट के पास तो एक चाभी भी है।"

लम्बे गलियारे में बहुत से दरवाजे खुलते थे। कोई दिखाई नहीं पड़ रहा था। कमरे में सभी कुछ लाल था। वहाँ एक पलंग, दो कुर्सियाँ, एक बड़ी-सी कपड़े रखने की आलमारी और शृंगार-प्रसाधनों का एक पूरा सेट था। रुथ ने पर्दे खींच दिये।

"बैठिये ।"

मुझे कोई ऐसी बात सूझ ही नहीं रही थी, जिसे बोल कर मैं अपने और उसके बीच छाई खमोशी को तोड़ पाता। कितनी मैत्री प्रदर्शित कर रही थी वह ! लेकिन फिर भी वह उस समय उस कमरे में तनिक भी खप नहीं पा रही थी। उसके शानदार चमचमाते कपड़े, उसके बाजूबंद, उस कमरे के माहौल से मेल नहीं खा रहे थे। उसके नाखूनों पर लाल नेलपालिश चढ़ी हुई थी; उसकी भौंहें दो पतली रेखाओं-जैसी दिख रही थीं। उसके काले खूब महीन कटे बाल खूब बढ़िया ढग से कढी हुई लहरों की तरह दिख रहे थे।

अर्नस्ट सच्चीबस पॉल टीचर्ट और हिल्डी के साथ कमरे में आया।

"हमारी बातचीत का स्वर ऐसा होना चाहिए जैसा हम खुशियाँ मना रहे हों," रुथ ने कहा—"लोग समझेंगे मैं कोई पार्टी दे रही हूँ।" उसने घंटी बजाई। हम लोग कॉफी का आर्डर देंगे।"

जब नौकरानी कमरे में घुसी तो हम लोग ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे और एक-दूसरे से मजाक करने लगे। जब कॉफ़ी अन्दर आई उस समय रुथ ग्रामोफ़ोन रेकार्ड बजा कर चस्वीबस के साथ नाच रही थी। वह कम-से-कम अभिनय तो बहुत अच्छा कर ही लेती थी। टीचर्ट ने अपनी जेब से एक पैकेट निकाला।

"चिपकने वाले पर्चे हैं। पाँच सौ। बड़ी आसानी से और सुविधा-पूर्वक चिपकाने योग्य पर्चा है। इस बार पर्चे पर गोंद लगा हुआ है; बस गोंद को गीला करने भर की ज़रूरत है।"

हम लोगों ने पर्चे का निरीक्षण किया। सतोषजनक थे। सच्चीबस ने खिलौने जैसी छपाई की मशीन खोल कर निकाली।

"फ्रांज कैसा है ?"

हम जानते थे कि हिल्डी अकसर उससे मिलती थी।

"उसने अपनी शुभकामनायें भेजी हैं। मैं उससे कल ही मिली थी।

उसे इस बात की खुशी है कि अखबार के संबंध में किसी को हिचक या संदेह नहीं है।"

"किसके पास सब से ज्यादा जोरदार गीत की पंक्तियाँ है ?"

"मेरे पास तो नहीं हैं," हिल्डी ने कहा।

हमें टीचर्ट की पंक्तियाँ सब से ज्यादा पसंद आई।

नकली मक्खन के दाम चढ़े
असली के तो फिर क्या कहने !
जनता मजबूर हुई, उठाया
उसने अब हथियार !

"लोगों को आश्चर्य होता था कि चुटकुले और कवितायें कहाँ से हमें मिल जाती हैं। कारखाने में मजदूर लोग बराबर यही कहा करते हैं।" टीचर्ट ने कहा।

मैंने टीचर्ट की ओर देखा। वह अपने नारे की सफलता से बहुत खुश था, और अनजाने ही वह अपने सुन्दर बिखरे बालों पर हाथ फेरने लगा। उसके दाँत कितने खराब थे! वह जब मुँह खोलता था तो कितना भयंकर मालूम होता था—दाँतों के बीच में काफी-काफी खाली जगह और बिलकुल ही सामने दो एकदम काले दाँतों का जोड़ा। एक बार मैंने उन्हें निकलवाने की बात कही तो उसने कहा—"अरे भई, बड़ा खर्चीला मामला है यह।"

रुथ ने ग्रामोफ़ोन में चाभी भरनी शुरू कर दी। हिल्डी ने चिमटी से खिलौने जैसे मुद्रण संयंत्र से रबर के आवश्यक अक्षर निकाले और उन्हें साँचे की धातु से बनी नली में बिठा दिया।

"आज मैं अपने साथ एक भी पर्चा नहीं ले जाऊँगा, कुछ समय तक इंतज़ार करना होगा इसके लिए। वरना वे लोग आज हमारे कारखाने की एक-एक कोठरी और एक-एक कोने को खोज डालेंगे।" टीचर्ट ने बताया।

वह पहली बार हमारे कुछ पर्चे अपने कारखाने ले गया था। सीमेन्स कारखाने की मशीनों तक पर और पाखाने और पेशाबघरों में भी कम्यु-निस्ट नारे चिपका दिये गये थे। इसके बाद ही आठ मजदूरों को गिरफ्तार कर लिया गया था। उनका नाम एक पुरानी सूची में दर्ज था, जिसे नाज़ी लोग किसी तरह पा गये थे। लेकिन गिरफ्तार लोगों में हमारे कारखाने की इकाई का कोई कामरेड न था।

"'''वह एक बार फिर मुस्करा दी।'''" एक पुरुष-स्वर गूंज उठा। रुथ ने ग्रामोफ़ोन पर नया रेकार्ड लगा दिया था।

"वे अपनी जबान खोलने में डरते हैं," टीचर्ट ने अपनी बात जारी रखी —"लेकिन जो लोग एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते है उनके पास बातचीत का बहुत मसाला होता है। साथी लोग कहते हैं 'वे वर्षों से हमारा इसलिये नौकरी से सफ़ाया किया करते थे कि हम पहली मई को मजदूर दिवस मनाते हैं; अब वे हमें तब नौकरी से निकाल बाहर करते हैं जब हम पहली मई को नाज़ियों की तरह 'विजय-पर्व' के रूप में नहीं मनाते।' "

ग्रामोफोन ने शोरगुल से भरपूर संगीत से कमरे को भर दिया था। हमने अपनी कुर्सियाँ पास-पास खिसका ली थीं।

"वे अच्छी तरह जानते हैं कि पहली मई के संबंध में मजदूरों के मन में क्या भावनायें हैं।"

हिल्डी साँचे की नली में आवश्यक अक्षर भर चुकी थी। हमने देखने के लिए परीक्षण के तौर पर एक शीट छापी।

"खूब साफ़ नहीं छपा।"

"अक्षर बहुत पास-पास हो गये हैं।"

"हाँ, अब तो पहले से बहुत अच्छा छप रहा है।"

सच्वीबस ने छपाई शुरू कर दी। मैं उसे कागज देता जाता था। लड़कियाँ हमारे सामने बैठी थीं। एकाएक वे बनावटी ढंग से जोर से हँस पड़ीं।

"यह हँसी अगले कमरे के पड़ोसियों के लिए थी," रुथ ने कहा—"ताकि वे समझें कि हम मौज-मस्ती में मशगूल हैं।"

"और पहली मई के जुलूस की पूछते हो, हुँह ?" टीचर्ट ने छपे पोस्टरों की गड्डी बनाते हुये सवाल किया।

फिर स्वयं ही उसने धीरे से जवाब दिया—"इसमें संदेह नहीं की मार्च पास्ट में हमें जाना पड़ा। नाजी अफ़सरों ने हाजिरी का रजिस्टर मंगा रखा था और उन्होंने यह देखने के लिए हाज़िरी ली कि हम सब लोग वहाँ मौजूद हैं या नहीं। लेकिन बहुत से साथी रास्ते में ही जुलूस से भाग निकले। कुछ 'झंडे खरीदने' के बहाने फूट गये। अन्य लोगों को माफी देनी पड़ी, और बहुत से अन्य मजदूर टेम्पेलहॉफ़ हवाई अड्डे पर मची गड़बड़ी में गयाब हो गये। बचे लोगों में से काफ़ी लोगों ने वहाँ पर शिकायत करना और भुनभुनाना शुरू कर दिया, क्योंकि हमें घंटों धूप में जलते-भुनते और धूल फाँकते खड़े रहना पड़ा था। और ग्रैंड स्टैंड पर बढ़िया ठाठ-बाटदार जगह पर : 'वे अपनी २० मार्क वाली सीटों पर बड़े आराम से बने-ठने बैठे थे—परेडें देखने, शानदार वर्दियाँ देखने और चम-चमाती हैटें देखने का अच्छा मौका था—अगर वह सब देखने में आपको कोई दिलचस्पी हो।' ऐसा साथी मजदूरों ने कहा था। एक मजदूर ने तो अगले दिन अपनी निराशा का मजेदार किस्सा मुझे सुनाया। उसने बताया—'मैंने तो समझा था की हिटलर बेकारी पर विजय प्राप्त करने की अपनी योजनायें घोषित करने वाला है।' 'तो तुमने उसका भाषण सुना ?' मैंने पूछा। उस मजदूर ने कहा—'हाँ। उसने कहा आपका कर्त्तव्य है कि आप अधिक-से-अधिक सामान खरीदें। बस खरीदिये, खरीदिये, और खरीदते जाइये। इंतज़ार मत कीजिये। आप जितना अधिक माल खरीदेंगे उतना ही अधिक पैसा भी फैलेगा, जिससे आप सब लोगों का लाभ होगा।' "

हम सब लोग हँस पड़े।

सच्चीबस ने सांचे को नीचे रख दिया और अपने हाथ रगड़ने लगा। उसके हाथ लाल पड़ गये थे और सूज आये थे।

कुछ देर तक हमने एकदम खामोशी से काम किया। लड़कियों ने तैयार चिपचिपे लेबुलों को कागज़ में लपेटा। तीस-तीस के छोटे पैकेट तैयार किये गये। ग्रामोफ़ोन से फिर एक पुरुष-स्वर निकल-निकल कर गूंजने लगा। '''तुम एकमात्र सूरज की किरण, बन चमकीं मेरे जीवन में...।' टीचर्ट ने अपनी बात जारी रक्खी—"लेकिन अगला दिन और भी अधिक उत्तेजनाओं से भरा हुआ था। सभी मजदूर संगठनों को अनिवार्य रूप से नाज़ी संगठनों के अनुरूप बनाने की कार्रवाई से अन्य सभी लोगों की समझ में भी आ गया कि मज़दूरों के आखिरी अधिकारों को भी अब छीना जा रहा है। मैं दावे से कह सकता हूं कि सोशल डिमाक्रेट के साथी तो एकदम सन्नाटे में आ गये।

" 'मज़दूर संगठन के नेताओं ने मई दिवस के प्रदर्शन को समर्थन प्रदान करने का हमसे अनुरोध किया। अब आप देख सकते हैं कि उनकी भीरुता का क्या नतीजा हुआ—मज़दूर संगठनों की सभी इमारतों पर दुश्मन का कब्जा हो गया है!' मजदूर लोग आपस में इसी तरह की बातें किया करते हैं।"

"हमें मजदूरों की इस मनोदशा से अधिक-से-अधिक लाभ उठाना चाहिए और उन्हें अपनी विचारधारा के ज्यादा-से-ज्यादा नजदीक लाना चाहिए!"

"हां, ठीक कहते हो। लेकिन शायद तुम अनुमान भी नहीं लगा सकते कि यह काम कितना कठिन है। मज़दूर यूनियनों पर जो चोट की गई है उससे अधिकांश लोग चक्कर में पड़ गये हैं। और हम लोगों को बहुत अधिक सावधान रहने की ज़रूरत है। आज की हालात में काम पर लगा हुआ हमारा एक-एक साथी बेकारी में पड़े दो-दो साथियों के बराबर है। हम यह नहीं कर सकते कि..."

टीचर्ट ने अपनी बात बीच में ही रोक दी। बाहर गलियारे से कुछ आवाजें आ रही थीं। पग-ध्वनियाँ भी सुनाई दीं। मैंने साँचे को रख दिया और दरवाजे की ओर देखने लगा।

"सब ठीक है," सब्वीवस ने कहा—"लोग यहाँ बराबर आते-जाते रहते हैं। यह बिल्कुल वेश्यालय जैसा है, हुँह ?"

"इसीलिए तो मैं यहाँ रहती हूँ। कोई भी यहाँ दूसरों पर ध्यान नहीं देता।" रुथ ने अपनी स्थित समझाई। उसके स्वर में कुछ क्षमा-याचना जैसी ध्वनि थी।

हमने इस विषय को यहीं छोड़ दिया और फिर से अपने काम में लग गये। हम अपने खतरे के प्रति अब पहले से अधिक सचेत हो गये थे।

इन दिनों मनोरंजन और विनोद के लिए चाह मेरे मन में कितनी बढ़ गई थी—मैं जिन्दगी से अधिक-से-अधिक आनन्द प्राप्त कर लेना चाहता था। मेरे दिमाग से यह बात कभी भी दूर नहीं होती थी कि एक-न-एक दिन मेरी भी बारी आने वाली है। हो सकता है कल ही सब-कुछ समाप्त हो जाय—जैसा सीवर्ट, न्यूमैन, रिटर और अन्य अनेक लोगों के साथ पहले ही हो चुका। मैं उन सब को कितनी अच्छी तरह जानता था। माइकोवस्की केस में उन सब को फँसा लिया गया था। कर्नेल। रिचर्ड हूटिंग! वह हम सब के नाम जानता है। उन सभी लोगों के नाम, जो इस कमरे में चिपचिपे लेबुल छापते बैठे हैं। उन लोगों ने हूटिंग को कितना प्रताड़ित किया होगा, कितनी यातनायें दी होंगी! अगर वह उन यातनाओं के बावजूद अटल न बना रहा होता तो हम इन छपे कागजों की गड्डियाँ बनाते आज यहाँ न बैठे होते।

"""ये छबीली प्रेमिका नाविक की"""" भयंकर शोरगुल भरे संगीत में बँधा यह गीत एकाएक मेरी स्नायुवों पर छा गया। टीचर्ट ने साँचा मुझसे ले लिया।

"माइकोवस्की वाले मामले के संबंध में मजदूर साथियों का क्या विचार है ?"

टीचर्ट ने नजरें उठा कर नहीं देखा, क्योंकि उसने छपाई शुरू कर दी थी।

"इस संबंध में कोई मत कायम करना कठिन है, और आप संबंधित परिवारों से सम्पर्क स्थापित नहीं कर सकते। लेकिन उस दिन उन परिवारों के लिए धन एकत्रित करते समय कुछ किरायेदारों से बातचीत की थी। उनका विचार था कि यातनाओं से अवश्य ही कोई आदमी टूट गया होगा और उसने सब-कुछ कबूल दिया होगा, या फिर किसी ने अपनी जान बचाने के लिए सारा भेद कह डाला होगा। जो हो, हम निश्चित रूप से कुछ कह नहीं सकते।"

"तो आपके विचार से सभी नई गिरफ्तारियों के पीछे ऐसा ही कोई कारण होगा, हूँह ?"

"हो सकता है।"

"परसों उन लोगों ने कुछ घरों में साइकिलें और मोटर साइकिलें जब्त कर लीं।"

"लेकिन इसका तो उस मामले से कोई संबंध है नहीं। इसका उद्देश्य तो कम्युनिस्टों के द्रुतगामी दस्ते को तोड़ना होगा। आप पॉल रिट्ज़ाप्ट को जानते हैं ?"

"हाँ, हाँ। मगर उसे क्या हुआ ?"

"वह फिच्ट मोटर साइकिल क्लब का सदस्य था। उन लोगों ने क्लब की सारी मोटर साइकिलें जब्त कर लीं। वह एलेक्जेंडरप्लाट्ज पुलिस स्टेशन गया। वहाँ सैकड़ों शिकायतें दर्ज थीं। 'वहाँ सभी गलियारों के दोनों छोरों पर दो-दो पुलिस वाले खड़े रहते हैं,' पुलिस स्टेशन

से लौट कर उसने बताया, 'और वहाँ जो भी जाता है उसकी तलाशी ली जाती है।' डर के मारे सालों की हवा खिसकी हुई है !"

"लेकिन वहाँ कुछ गड़बड़ी करना तो पागलपन होगा, और यह पागलपन कोई क्यों करेगा !" हिल्डी बोली।

मैं देख रहा था कि वह पूरी शाम भर रुथ के कान में एक-दो बार फुसफुसा कर कुछ कहने के सिवाय एक शब्द भी नहीं बोली थी। उन दोनों ने बड़ी जल्दी दोस्ती गाँठ ली थी। सादा, छोटी बाँह का जम्फर पहने हिल्डी रुथ से कैसा बढ़िया कंट्रास्ट पैदा कर रही थी। कितनी ज्यादा तरोताजा और कितनी स्वाभाविक ! लेकिन रुथ ! ऊपरी रूप रंग कैसा धोखे में डाल देते हैं !

तभी सच्वीबस बोला—"निस्सन्देह यह पागलपन होगा। कभी-कभी ऐसे लोगों से भेंट हो जाती है, जो हिटलर की हत्या करने की बात करते हैं। लगता है वे यह बात नहीं समझते कि हिटलर मारा जायगा तो कोई अन्य नाजी अफ़सर उसके स्थान पर बैठ जायगा, हुँह ? और फिर वे जेलों में बंद हजारों लोगों से कैसा-कैसा बदला लेंगे !"

टीचर्ट ने साँचे के नीचे अंतिम कागज़ लगाया।

"अब यह सारा माल रखा कहाँ जायगा ?"

उसने मेरी ओर देखा।

"इसे मैं एक ऐसे घर में ले जाऊँगा, जिससे मैं खूब परिचित हूँ। वहाँ से कल सुबह हम इसे वापस लायेंगे। इसे जल्द-से-जल्द जगह-जगह चिपका देना है।"

"क्या एडी ने सचमुच ही हमारे पर्चे नाजी अफ़सरों के घरों पर भी चिपका दिये थे, हुँह ?"

"निस्सन्देह।"

हम एक-एक कर के वहाँ से बाहर आये। लेकिन सच्वीबस वहीं



रह गया। तो क्या उसमें और रुथ में सचमुच प्रगाढ़ संबंध स्थापित हो चुका है ? यह बात मेरी समझ में आने वाली नहीं थी।

पोस्टर कामरेडों को बाँट दिये गये, सिर्फ हीन्ज प्रेउस और उसके दल को अभी पोस्टर नहीं मिले थे। मैं अन्य लोगों के साथ पहले ही से निश्चित स्थान को गया। वहाँ वह मौजूद था। वह एक अख़बार की दूकान पर खड़ा, कुछ पढ़ रहा था। मैं उसे काफ़ी दूर से ही पहचान सकता था। उसकी सुपरिचित काले-सफेद चारखाने कपड़े की पतलून दूर से दिख रही थी। उसकी नीली, छोटी बाँह वाली टेनिस के खिला-ड़ियों वाली कमीज़ भी जानी-पहचानी थी। उसके लम्बे सुन्दर बाल भी दिख रहे थे। हीन्ज प्रेउस को टहलने का पुराना शौक था। सप्ताहान्त में वह कभी घर पर नहीं मिलता था। वह हमेशा पैदल सैर पर निकल जाता था।

वह कितना साँवला और स्वस्थ दिख रहा था। हम उसका मजाक उड़ाया करते थे और उसे 'लम्बे बालों वाला बोहीमियन' कहा करते थे।

मैं क्षण भर के लिए उसके निकट खड़ा हुआ और फिर पड़ोस के मकान मे चला गया। प्रेउस कुछ मिनट बाद वहाँ आया। हम पहली मंज़िल पर मिले।

"हमें कितने पोस्टर मिलने हैं ?"

मैंने अपनी चार पर्तों वाली पतलून का कफ़ ढीला किया।

"सत्तर। यह लो।"

"यह तो बहुत ज़्यादा हैं। आज मैं और एमिल, दो ही आदमी तो हैं।"

मैंने अपनी पतलून सीधी कर ली। इस समय इन बातों पर बहस करने से कोई फ़ायदा न था। हमें तेजी से काम करना था।

"तुम निकट ही बगल की गलियों में चलो।"

तभी हमारे सिर के ऊपर एक दरवाजा जोर से बोला। हम सुनने लगे। लेकिन कोई भी सीढ़ियों से नीचे नहीं उतरा।

"सावधान रहना।"

"चिन्ता न करो, मैं सावधान रहूँगा।"

मैं वहाँ से चल दिया, प्रेउस रुका रह गया।

" ताजी मछली...जर्मन मछली...आप क्या लेंगे सरकार...?"

फेरीवाली लड़की ने अपना दाहना हाथ अपने नितम्ब पर रख लिया और दूसरे हाथ से मछली काटने वाली छुरी हवा में घुमाने लगी। उसके वस्त्रों के ऊपरी हिस्से पर मैल की तहें जमी थीं और खून के धब्बे पड़े थे। स्त्रियाँ खरीद-फ़रोख्त के लिए झोले और डोलचियाँ लिये दूकानों के बीच धक्का देती रास्ता बनाती आगे बढ़ रही थीं।

फेरीवालों की आवाज, किसी कसाई की माँस काटने की छुरी की घप्प-छप्प की आवाज और कहीं किसी घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़ वातावरण में गूँज रही थी। साप्ताहिक बाजार वाल्सस्ट्रैसी से विलहेल्म-प्लाटज तक चारलोटेनबर्ग टाउन हॉल के सामने तक फैली हुई थी। एकाएक महिलाओं की उस भीड़ में एक गली बन गई। दूकानों पर सामान का परीक्षण करती स्त्रियों की भी निगाहें एकाएक गली के बीचोबीच टिक गईं, जहाँ एक आदमी चला जा रहा था, एक छड़ी से रास्ता टटोलता हुआ। उसने जैकेट की बाँह पर एक पीला फ़ीता बाँध रखा था जिस पर तीन काले निशान छपे हुये थे। वह जवान लग रहा था और हृष्ट-पुष्ट था। उसकी बाईं आँख की जगह एक भयंकर लाल गढ़ा दिखता था। दाहिनी आँख ठीक सामने जमी हुई थी।

वह आदमी भीड़-भाड़ और शोरगुल के बीच से धीमे और डगमगाते कदम रखता आगे बढ़ गया, फिर मकानों की कतारों के किनारे-

किनारे रास्ता टटोलता हुआ विलहेल्मप्लाट्ज़ की तरफ़ बढ़ने लगा। उसकी छड़ी निश्चित मध्यान्तर के बाद एक लय से मकानों की दीवारों पर ठप-ठप करती चलती थी। और रास्ते के रोड़ों से बचता हुआ वह चल रहा था। फिर एडी ने चारलोटेनबर्ग टाउन हाल के विशाल पथरीले चबूतरे पर अपनी छड़ी ठपठपाई।

"वहीं पहुँच कर मैं पागल हो उठा," उसने मुझे बाद में बताया। "उलस्टीन अखबार बेचने वाला, जो उस नुक्कड़ पर बैठा करता है, लगातार चिल्ला रहा था—'सरकार द्वारा वाणिज्य व्यवसाय में हस्तक्षेप न करने की गारंटी। आर्थिक संकट पैदा करने की सभी कोशिशें कुचल दी जायँगी!' जरा देखो तो, वो लोग हमें हड़ताल करने से भी रोकना चाहते हैं। ताकि मालिक लोग शांतिपूर्वक मुनाफ़े लूट सकें!"

नाज़ी पार्टी का बिल्ला पहने एक मोटा आदमी एडी की तरफ़ आया।

"क्या मैं आपकी कोई सेवा कर सकता हूँ?"

"नहीं, नहीं, इसकी जरूरत नहीं। मैं अपने आपको सँभाल सकता हूँ।" एडी ने जवाब में कह दिया।

मोटे आदमी ने नाज़ी ढंग से सलामी देने के लिए हाथ उठाया और अपने रास्ते बढ़ गया।

"वह यह नहीं जान सका कि मैं तनिक भी देख सकता हूँ," और एडी मुस्करा उठा। निचली मंजिल पर उस गलियारे में लोग तेज़ी से इधर-उधर आ-जा रहे थे, जिसकी शाखायें हर तरफ़ फूटी हुई थीं। हर गलियारे के दोनों तरफ़ बहुत से दरवाजे थे। कुछ गलियारों में दरवाजों के बगल में बेंच पड़ी थीं जिन पर भेंट करने वाले बैठे इंतज़ार कर रहे थे। वे ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। हर कोई अपने शब्दों पर ज़ोर देने के लिए अपनी बाँहें घुमा रहा था। हर कोई दूसरों को अपना मामला सुना रहा था। एडी का विचार था कि उसे ऊपर की तरफ़ जाना

चाहिये। वह घुमावदार सीढ़ियों पर चढ़ गया। ऊपर नीचे की अपेक्षा शांति व्याप्त थी। जो लोग स्वचालित लिफ्ट से बीच-बीच में निकल रहे थे उन्हें छोड़ कर वहाँ कोई नहीं था। अफ़सर अपनी बाँहों के नीचे दस्तावेज़ों के ढेर दाबे तेज़ी से इधर-उधर आते-जाते दिख रहे थे। उनमें से कुछ एस० ए० की वर्दी पहने हुये थे।

एडी गलियारे में रास्ता टटोलता हुआ चल रहा था। तीसरे दरवाज़े के सामने वह रुक गया। उस दरवाज़े पर लगे नेम प्लेट पर लिखा था रेजीरंगसरेट लेहमैन। एडी ने जेब में हाथ डाला, एक पैम्फलेट निकाल कर उसकी गोंद को तर किया और उसे जल्दी से नाम के ऊपर चिपका दिया।

नकली मक्खन के भाव चढ़े
असली के तो फिर क्या कहने
जनता मजबूर हुई, उसने
अब उठा लिये हथियार !

दस मिनट से भी कम समय में उसने उस मंजिल के सभी दरवाज़ों और दीवारों पर वे गीत-पंक्ति वाले पैम्फलेट चिपका दिये। फिर वह लिफ्ट में घुस कर अगली मंजिल पर पहुँचा। यहाँ भी सारा काम बड़ी आसानी से निकल गया। लेकिन इसके बाद वाली मंजिल पर काम थोड़ा कठिन हो गया। छोटे अफ़सर बड़ी जल्दी-जल्दी इधर-उधर आ-जा रहे थे, अतः उसे उस घड़ी के इंतजार में काफ़ी देर वहाँ खड़े रहना पड़ा जब पूरा रास्ता खाली हो जाय। इंतजार कर रहे प्रार्थियों के एक समूह के बगल से गुज़र कर वह एक मोड़ पर घूम ही रहा था कि उसने पीछे से कुछ उत्तेजित आवाज़ें आती सुनीं।

"अरे इधर देखो ! और इधर भी...जरूर ये पैम्फलेट अभी क्षण भर पहले ही चिपकाये गये होंगे..."

"बाउरेट-लेहमैन ने अभी-अभी फ़ोन किया है। ऊपर की सभी मंजिलों पर पैम्फलेट चिपका दिये गये हैं!"

"फ़ौरन दरबान को फ़ोन कर दो...वह पुलिस को सूचना दे दे... अगर हम फुर्ती से काम लें तो शायद उनमें से कुछ को अभी पकड़ सकें!"

"तूफ़ानी टुकड़ी वाले सभी रास्तों पर नज़र रक्खेंगे। किसी को बाहर नहीं जाने दिया जायगा!"

दरवाज़े भड़ाभड़ बंद हो गये। लोग बराबर गलियारे में दौड़ रहे थे। इंतज़ार करने वाले लोग एकाएक उत्तेजित हो कर अपनी बेंचों पर से उछल कर खड़े हो गये।

"क्या गड़बड़ी हो गई? क्या मामला है?" पुराने फ़ैशन का सूट पहने एक आदमी ने पूछा। वह अपनी सफ़ेद नुकीली दाढ़ी को घबराहट में खींचने लगा। उसके पास ही खड़ी एक मोटी औरत ने, जिसने रेशमी ब्लाउज़ पहन रखी थी, काँपते हुये जवाब दिया :

"वो लोग राजद्रोहपूर्ण पोस्टर चिपका रहे थे...अभी कुछ ही क्षण पहले! दीवारों पर!"

एडी ने देखा उनमें से कुछ लोग फुसफुसा कर आपस में बातें कर रहे थे और ऐसी नजरों से एक-दूसरे की तरफ़ देख रहे थे जैसे उन्हें सब-कुछ मालूम हो।

जो औरत पहले बोली थी वही फिर बोली—"लो अब सँभालो! वे दरवाज़े भी बंद कर रहे हैं...हम सब लोगों पर अब संदेह किया जायगा... ओह लुटेरे, हत्यारे!"

दाड़ी वाले बूढ़े ने फिर प्रश्न-पर-प्रश्न करने शुरू कर दिये। "क्या गड़बड़ी हो गई?...क्या लुटेरे पोस्टर चिपका रहे थे?"

"नहीं, बाबा, कम्युनिस्ट थे! तुम कुछ समझते ही नहीं हो क्या? हम लोगों को भी उनकी बदौलत काफ़ी परेशानी उठानी पड़ेगी!" वह औरत गुस्से से उसके ऊपर चिल्ला पड़ी।

बूढ़े का चेहरा लटक गया। उसकी छोटी-सी नुकीली दाढ़ी भय से काँप रही थी।

एडी ने सोचा, इसी समय यहाँ से निकल जाना चाहिये। वह दीवार के सहारे रास्ता टटोलता हुआ सीढ़ियों की ओर चलने लगा। लिफ़्ट के बगल में ही एक अफ़सर खड़ा हुआ था।

"आप लोग अभी नहीं जा सकते!" वह उन लोगों से कह रहा था जिन्हें उसने रोक रक्खा था और जो उसके सामने खड़े बहस कर रहे थे।

"मेरा घर जाना बहुत जरूरी है...मेरे पति खाना खाने के लिए घर आते होंगे!"

दूसरा व्यक्ति कह रहा था—"मुझे कोर्ट में हाजिर होने के लिए सम्मन मिला था...मैं कोर्ट में अपनी गैरहाजिरी के लिए आपको ही जिम्मेदार ठहराऊँगा!"

एडी उन सब के बीच से छड़ी ठप-ठप कर के रास्ता टटोलता आगे बढ़ता जा रहा था। वे उसके लिए स्वयं ही रास्ता बनाते जाते थे। और तो और लिफ्ट के दरवाजे पर खड़े अफ़सर ने भी उसे रास्ता दे दिया।

एडी धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतर गया। किसी ने उसे रोका-टोका नहीं। बिना किसी बाधा के बराबर वह आगे बढ़ता गया और खुली सड़क पर पहुँच गया। निश्चित समयान्तर से होती उसकी छड़ी की ठप-ठप दूर होती गई, दूर होती गई और फिर धीरे-धीरे खो गई।

मैं रोथेकर के यहाँ गया था। अभी शाम हुई ही थी। मैं उसे एडी के नवीनतम कौतुक को सुनाना चाहता था।

"अन्दर आ जाओ," रोथेकर ने मुझे बुलाया।

उसका बाँया हाथ एक बच्चे के जूते में था। वह एक नीली कमीज पहने हुये था। चार-वर्षीया इम्मी ने उसकी पतलून को पकड़ रखा था;

उसके सुन्दर बालों की लटें उसके पिता के पैरों के इधर-उधर से जैसे शर्माती हुई-सी झाँक रही थीं। तो वह जूते की मरम्मत कर रहा था। उसकी पत्नी रसोईघर में स्टोव की सफ़ाई कर रही थी। उसने मेरा अभिवादन करने के लिए अपनी कुहनियों को झटका दिया। वह थकी हुई-सी लग रही थी। इन्गी बिलकुल उसकी प्रतिरूप थी। लेकिन उसकी माँ इतनी ज्यादा दुबली दिखती थी कि उसे देख कर दुख होता था। उसके स्तन तो जैसे सिकुड़-से गये थे। उसके अत्यधिक सुन्दर बालों ने उसके चेहरे के पीलेपन और फीकेपन को और बढ़ा दिया था, फिर भी वे जैसे उसके रूप को दैवी सौंदर्य प्रदान कर रहे थे। रोथेकर ने मेरी ओर देखा नहीं, अपने औज़ारों के थैले में वह कुछ ढूँढ़ने लगा। क्या वे दोनों झगड़ा कर रहे थे? मैं जानता था कि आर्थिक कष्ट अक्सर उनके बीच झगड़े का कारण बन जाता था। मैं उन्हें एडी की चालाकी के बारे में बताने आया था, लेकिन वहाँ पहुँच कर मुझे यह महसूस होने लगा कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरी समझ में तनिक भी नहीं आ रहा था कि मैं कहूँ तो क्या कहूँ।

"मेरी तो जिंदगी ही बर्बाद हो गई। हमेशा कठिनाइयाँ, चिंता, परेशानियाँ!" रोथेकर की पत्नी अक्सर ही मुझसे यह शिकायत करती थी। रोथेकर करीब-करीब उससे दुगनी उम्र का था। जब उसका विवाह हुआ उस समय वह बीस वर्ष की भी नहीं हुई थी। शादी के कुछ ही दिन बाद उनके बच्चा भी हो गया। जब से रोथेकर की नौकरी छूटी, उन दोनों के बीच दरार पड़ती जा रही थी। वह स्त्री अभी भी जवान थी, वह ज़िन्दगी को 'जीना' चाहती थी। वह अपनी और अपने पति की आयु के अंतर के प्रति भी अब बहुत सचेत हो गई थी।

"तुम एमिल स्कमिड्ट से नहीं मिले क्या?" रोथेकर ने पूछा।

"नहीं।"

"अभी क्षण भर पहले वह यहीं था। उसने कहा है कि वह तुम्हारे पास जायगा।"

रोथेकर ने मेरी ओर गौर से देखा। उसने बच्चे का जूता जमीन पर रख दिया। उसकी यह सारी क्रिया जैसे मशीन की तरह हुई थी, जैसे इस सारी क्रिया के प्रति वह अज्ञात हो। निकेल के चश्मे के पीछे झलकती उसकी आँखों में एक अजीव खालीपन का-सा भाव था। ...मुझे यह देख कर जैसे आघात लगा।

"क्या कोई गड़बड़ी हो गई है?"

रोथेकर ने धीरे-धीरे जैसे एक-एक शब्द को चुनते और तौलते हुये कहा—"प्रेउस पोस्टर चिपकाने के बाद एमिल से निर्धारित स्थान पर नहीं मिला।"

थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया। श्रीमती रोथेकर ने पालिश करना बंद कर दिया, और मेरी ओर आँखें फाड़ कर देखने लगीं! बच्चा रबर के सोल से खेल रहा था, जो जूते में लगाने के लिए तैयार रखे थे।

"जब प्रेउस नहीं मिला, तो एमिल उसके घर गया। घर पर भी कोई न था।"

मुझे ऐसा महसूस होने लगा जैसे मेरा पेट धँसता चला जा रहा है।

"उसकी माँ अब घर आयेगी।...वह खान में काम करती है।"

रोथेकर अपने हाथ में थमें हथौड़े को गौर से देखने लगा। लग रहा था जैसे वह स्वयं अपने आप से बातें कर रहा हो।

"तो क्या तुम्हारा मतलब है कि किसी को उसके पास जाना चाहिए? पूछ-ताछ करने के लिए?"

"हाँ। किसी तरह का कोई बहाना ले कर। बस सीधे जा कर उससे मिलना है। अभी वे उसके घर नहीं पहुँचे होंगे।"

मैंने 'किसी के' उसके घर जाने की बात कही थी। जब मेरे मुँह से यह बात निकली थी, तो श्रीमती रोथेकर ने मेरी ओर बड़ी विचित्र

निगाहों से देखा था। मुझे ही जाना चाहिए। उससे मैं यह आशा नहीं कर सकता। शायद उसका ही मत ठीक था। लेकिन अगर वे लोग पहले ही उसकी माँ के घर पहुँच गये होंगे तो ?

"तो हम लोग निश्चयात्मक रूप से सारी बात जान जायँगे। अन्य लोगों को हम तब सावधान कर सकेंगे।" रोथेकर ने कहा। वह मोचियों वाला हथौड़ा अपने हाथ में घुमाने लगा।

"तुमने उसका साथ कब छोड़ा था ?"

"आज दोपहर में।"

"तुम्हारे निवास पर तो कोई आँच नहीं आई न ?"

"नहीं।"

तो अपनी पत्नी के सामने वह किसी काम की जिम्मेदारी नहीं लेगा। उसका यह रवैया सही भी है। आखिर उनके एक बच्चा भी तो है।

मैं उसकी तरह किसी बंधन में नहीं बँधा था।

"तुमने यह तय कर रखा है न कि तुम दोनों अपनी पहली भेंट का कौन-सा स्थान बताओगे ?"

"निस्सन्देह।"

हम जानते हैं कि गेस्टैपो वाले साधारणतः गिरफ्तार लोगों से अलग-अलग ही जिरह करते थे। उनका पहला प्रश्न साधारणतः यही होता था—"तुम लोग पहली बार कहाँ मिले थे ?" यह बात बड़ी महत्वपूर्ण थी कि जवाब एक-दूसरे से मिलने जरूर चाहिए। इसलिए हम लोगों ने यह बात पहले से ही आपस में तय कर रखी थी। हीन्ज प्रेउस जानता था कि उसे इस प्रश्न के जवाब में यही कहना था कि उससे मेरी पहली भेंट ग्रुनेवाल्ड में पैदल सैर करते समय हुई थी।

"मैं अब जा रहा हूँ। हमें यह पता लगा लेना चाहिए कि आखिर मामला क्या है।"

ऐसा लग रहा था कि प्रेउस की माँ श्रीमती प्रेउस बेहोश हो कर गिरना ही चाहती हैं। उसके हड्डहे पीले चेहरे पर डगडगाती आँखों में चिंता और परेशानी के सिवाय और कुछ न था।

"मैं हर प्रेउस से मिलना चाहता था—उनके तितलियों के संग्रह के संबंध में।" मैंने वहाँ आने के लिए बहाने के रूप में प्रेउस के इस शौक का लाभ उठाया।

सँकरे गलियारे में श्रीमती प्रेउस मेरे आगे-आगे घिसटती हुई-सी चलने लगीं। कमरे में पहुँच कर उन्होंने एक भयंकर रूप से नक्काशी की हुई कुर्सी मेरी तरफ़ ठेल दी। अगर कोई उनके पास आ चुका होता तो वे और भी परेशान दिखाई देतीं। तो अभी तक सब-कुछ ठीक था। मैं प्रेउस से भेंट करने के लिए पहले भी कई बार उसके घर आ चुका था। लेकिन उसकी माँ मुझे नहीं जानती थीं। जब-जब मैं आया तो वे काम में लगी होती थीं। मैं जानता था कि मैं उस समय घर के सब से अच्छे कमरे में बैठा हुआ था। एक रंगीन छपा हुआ कागज़ सुनहरे, भारी-भरकम फ्रेम में मढ़ा हुआ बगल की आलमारी के ऊपर टँगा हुआ था। 'पर्वत शिखर से प्रसारित उपदेश'! दाहिनी तरफ कोने में एक बड़ी सी लकड़ी की प्लेट रखी थी, जिस पर लिखा था—"उत्साही गरीब भाग्यवान होते हैं, क्योंकि उनकी मुट्ठी में स्वर्ग का साम्राज्य होता है।" ये शब्द प्लेट के किनारे-किनारे अंकित थे। मैं आराम से बैठ गया। प्रेउस ने अक्सर मुझे बताया था कि जीवन के संबंध में उसके तथा उसकी माँ के विचारों में तथा दृष्टिकोण में लगातार कितना अंतर बना हुआ था।

उसने एक बार मुझसे कहा था—"मेरी माँ एक पादड़ी परिवार की हैं, बूढ़ी हो चुकी हैं, और अब उन्हें बदला नहीं जा सकता।"

मैं यह भी जानता था कि वह कैसी मानसिक यातना भुगत रहा था, क्योंकि नौजवान होते हुये भी वह बेकार था, जब कि उसकी बूढ़ी माँ को उन दोनों के जीवन-यापन के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। बड़ी कठिनाइयाँ झेल कर और स्वयं अपने आपको लगातार अभावग्रस्त रख कर उन्होंने किसी तरह उसे औजार बनाने का काम सिखलवाया था। उसके पिता युद्ध में मारे गये थे।

श्रीमती ग्रेउस ने मेरे विचारों के तारतम्य को तोड़ दिया। वो मेरे सामने अपना हाथ मरोड़ती खड़ी थीं।

"आप हीन्ज से मिलना चाहते हैं ?...वह कहाँ होगा ?...मैं अभी-अभी काम पर से वापस आई हूँ। अभी तक कुछ भी नहीं किया गया है, बाज़ार से कुछ भी लाया नहीं गया है !"

मैं अपनी कुर्सी में ही बेचैनी से कसमसाने लगा। तो आखिर वे एक ऐसा आदमी पा ही गईं जिससे वे अपने मन का गुबार निकाल सकती हैं, अपने मन का बोझ हल्का कर सकती हैं। लेकिन मैं उनसे कैसे कुछ कह सकता हूँ ? मैं अत्यधिक निराशा का अनुभव कर रहा था।

"कहीं उसे कुछ हो तो नहीं गया ?" मैंने कहा।

"क्या हो सकता है उसे ? वह कोई बच्चा तो है नहीं।"

वे अपने हाथों की हरकतों से अपनी भावनायें प्रकट करती रहीं और फिर एकाएक हाथों को अपनी गोद में गिर जाने दिया।

"आप उसे कैसे जानते हैं ? क्या आप भी उन्हीं लोगों में से एक हैं...?"

"नहीं, नहीं," मैंने उनकी बात बीच ही में काट दी।

मुझे उनके मन में तनिक भी संदेह नहीं उत्पन्न होने देना चाहिये। कौन जाने यह बुढ़िया उत्तेजना के उफ़ान में किस हद तक पहुँच जाय ? अगर ये जान गईं कि...

उन्होंने फिर अपना रोना शुरू कर दिया—"मैंने इस लड़के को क्या

नहीं समझाया ? मैंने हर रोज उससे याचना की, 'बेटा तुम ईश्वर के खिलाफ़ काम कर रहे हो, पाप कर रहे हो। यह सब हरकतें छोड़ दो, इसका नतीजा तुम्हारे लिए निश्चित रूप से बहुत बुरा होगा।'' और वे ज़ोर-ज़ोर से हिलती हुई हाथों में मुँह छिपाये सिसकियाँ भरने लगीं। मुझे उनके लिए बहुत दुख हो रहा था। उन दोनों माँ-बेटे ने कभी एक-दूसरे को नहीं समझा। वे दोनों बिल्कुल अलग-अलग दुनिया में रहते थे। वे कभी अपने बेटे के वास्तविक स्वरूप को समझने की कोशिश नहीं कर सकीं। लेकिन वे एक माँ हैं, उसकी माँ हैं। श्रीमती प्रेउस ने अपने चेहरे पर से अपने हाथ हटा लिये।

''उसकी ही भलाई के लिए...मैंने अक्सर उसे मुक्ति सेना में अपने साथ ले जाना चाहा.. क्योंकि वह इतना सुन्दर गाता है...''

वे मेरी ओर आँखें फाड़ कर देखने लगीं, जैसे मेरे अन्दर छिपे अपराधी को उन्होंने पहचान लिया हो।

''ओह ! हे ईश्वर ! हे ईश्वर ! उसने कभी अपनी बूढ़ी माँ के लिए कुछ नहीं सोचा। वह अपनी 'राजनीति' में ही पागल हुआ जा रहा है।''

''आप पुलिस के पास क्यों नहीं जातीं श्रीमती प्रेउस ?''

''पुलिस के पास ?''

और वे और अधिक बेकाबू हो कर रोने लगीं।

''मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी कि अपने बुढापे में मुझे यह सब झेलना पड़ेगा।...अपने पूरे जीवन में मैंने कभी पुलीस वालों से कोई मतलब नहीं रखा, और अब...ओह कितने शर्म की बात है...!''

''आपको पूछताछ तो करनी ही होगी। अगर इससे कुछ लाभ हो सकता हो, तो आप यह विज्ञापन भी निकलवा सकती हैं कि वह लापता हो गया है !'' मैंने बड़े ज़ोरदार शब्दों में कहा। मुझे उन्हें उनके आलस्य से बाहर निकालना ही चाहिये। श्रीमती प्रेउस सामने की दीवार की तरफ जड़ भाव से देखने लगी। अकस्मात भेंटकर्त्ता के रूप में उन्हें प्रेउस

का पता लगाने के लिए राजी करने की मुझे और हिम्मत नहीं हो रही थी। हो सकता है ऐसा करने से वे समझ जायें कि मैं उसके संबंध में जाँच-पड़ताल करने आया था। अतः मैंने कहा—"अच्छा श्रीमती प्रेउस, नमस्कार।"

उन्होंने उदासीनतापूर्वक सिर हिला दिया और अपना हाथ मेरी तरफ़ बढ़ा दिया। उनके हाथ की नसें सख्त थीं और जैसे उनमें गाँठें पड़ गई थीं।

आलस्ट्रैसी के अन्दर से हो कर घर लौटते समय मैं बड़े सोच-विचार में पड़ा रहा, कि हम लोग श्रीमती प्रेउस के लिए क्या कर सकते हैं? क्या हम लोग उनके लिए चंदा इकट्ठा करें? लेकिन वह तो काम में लगी हुई हैं। हीन्ज भी उनके लिए कुछ नहीं कर सकता। हमें और जाँच-पड़ताल करने में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। अच्छा तो यह होगा कि अन्य किरायेदारों से कोशिश की जाय।

सब कुछ समाप्त हो चुकने के बाद हीन्ज प्रेउस ही मुझे सारे मामले के संबंध में कुछ बतला सका। एक शांत गली में एमिल के साथ घुसने के बाद उसने पोस्टरों की शब्दावली पर ध्यान दिया तो उसे लगा कि वे पोस्टर उस बस्ती के लिए कितने उपयुक्त थे। मामूली असैनिक कर्मचारी और क्लर्क वहाँ रहते थे। पहले उन्होंने नाज़ियों को वोट दिये थे, लेकिन अब उनमें हिटलर के शासन के खिलाफ़ असन्तोष व्याप्त होता जा रहा था, क्योंकि मँहगाई तेजी से बढ़ती जा रही थी और उनके वेतन से कटौती की मात्रा दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी।

"हमेशा सब से ऊपर वाली मंजिलों से काम शुरू करना चाहिए, और निचली मंजिलों को भी नहीं भूलना चाहिए," उसने एमिल से अलग होते समय कहा था। प्रेउस ने खिड़कियों, लेटर बाक्सों और निचली मंजिल पर मजदूरों के शांत क्वार्टरों पर पोस्टर चिपका दिये। यह सारा

काम बड़ी सुगमतापूर्वक हो गया और इस बीच कोई घटना नहीं घटी। सीढ़ियों पर शायद ही उसे कोई आते-जाते मिला हो। पोस्टरों की उसकी गड्डी छोटी ही होती जा रही थी। उसने सोचा, बस दस मिनट का काम और रह गया है। वह एक इमारत की ऊपरी दो मंजिलों में काम समाप्त कर चुका था। तभी ऊपर से किसी के बहुत तेजी से उतरने की आवाज उसे सुनाई दी। उसने तर किये हुये पोस्टर अपनी जेब मे ठूँस लिये और धीरे-धीरे सीढ़ियों से उतरने लगा। एक लम्बा, कान्तिहीन, काले बालों वाला आदमी उसके बगल से निकल गया। उसने उस पर ऐसी तीव्र प्रश्नसूचक दृष्टि डाली कि प्रेउस चौकन्ना हो गया। उसने सोचा, अच्छा होगा कि अब इस मकान से फौरन निकल भागा जाय। लेकिन जब वह बाहर गली में पहुँचा तो उसका संशय गायब हो गया। वह आदमी कहीं दिख नहीं रहा था। उसने अपने आप से कहा, तुमसे जरूर भूल हुई होगी। क्या केवल इस छोटी-सी बात के कारण तुम अपना काम छोड़ दोगे! बचे-खुचे चंद पोस्टर भी चिपका दिये जाने चाहिए। वह फ्लैटों के अगले ब्लाक में चला गया। लेकिन अगली इमारत की सीढ़ियाँ चढ़ते समय उसे चिंता ने फिर आ घेरा। इतने थोड़े से पोस्टरों के लिए उसका किसी भी तरह के खतरे में पड़ना उचित नहीं। और कोई बात हो न हो, उसे इस बगल की इमारत में आने के बजाय अगली गली में जाना चाहिए था। उसके हाथ-पैर ढीले पड़ने लगे और वह फिर नीचे भागा। घर से निकलते समय उसने बड़ी सावधानी से चारों तरफ देखा। कुछ बच्चे एक झुंड बनाये पटरी पर खेल रहे थे। गली में एक सब्जी से लदी पहिया-गाड़ी जा रही थी। सब्जीवाला अपने मुँह के पास हाथ ले जा कर पुकार लगा रहा था—

"टमाटर...ताजे टमाटर...बढ़िया टमाटर..."

एक दूध वाले की गाड़ी गली के दूसरी तरफ खड़ी थी। गाड़ी-चालक नीली टोपी और पेशबंद पहने दूध उँडेल रहा था। प्रेउस के शरीर में

जैसे बिजली के एक धक्के की लहर दौड़ गई। अब क्या होगा...! दूध खरीदती स्त्रियों के झुंड के पीछे वह आदमी खड़ा हुआ था। वह केवल उसके बालों को और उसके चेहरे के ऊपर के आधे हिस्से को ही देख पा रहा था। वह उसी के लौटने का इंतजार कर रहा था, उस पर बराबर अपनी नजर रखना चाहता था। उसे घबरा कर भागना नहीं चाहिए, प्रेउस ने सोचा। वह अंदाज लगाने लगा कि वहाँ से अगले नुक्कड़ तक की दूरी कितनी होगी। तीस गज। उसने बिलकुल स्वाभाविक और साधारण चाल से उस नुक्कड़ तक चलने के लिए अपने आपको मजबूर किया।

क्या उसका पीछा किया जा रहा है? लेकिन अगर वह मुड़ कर देखेगा तो उस पर उस आदमी का संदेह और भी बढ़ जायेगा, उसने अपने आपको चेतावनी दी। बाईं तरफ एक दूकान की खिड़की में उसने गली के दूसरे हिस्से का प्रतिबिम्ब देखने की कोशिश की। लेकिन यह बिल्कुल असम्भव था। नुक्कड़ तक पहुँचने में प्रेउस को ऐसा लगा जैसे पूरा एक युग बीत गया हो। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके पैर पटरियों के पत्थर पर जम गये हों। उसने सोचा, यह तो एक भयंकर दुःस्वप्न जैसी घटना है। आपका पीछा किया जा रहा हो और आप... आप एक कदम आगे न बढ़ा पा रहे हों!

किसी तरह वह नुक्कड़ पर पहुँचा और तेजी से पीछे घूम कर देखा। लेकिन उसने जो कुछ देखा उससे उसका सारा बदन भय से काँप उठा। वह काला आदमी उससे बीस कदम की दूरी पर था। निश्चय ही वह उसका लगातार पीछा कर रहा था। अब वह दौड़ कर गली के दूसरी तरफ़ गया और उन दो एस. ए. के आदमियों को हाथ हिला-हिला कर पुकारने लगा जो दूसरी तरफ़ के एक मकान से बाहर निकल रहे थे। गली में चलते-फिरते लोग आश्चर्य से घूम कर उसकी ओर देखने लगे। प्रेउस को क्षण भर के लिए तो जैसे लकवा मार गया, फिर बगल वाला

अगली गली में वह लम्बे-लम्बे डग भरने लगा। अब क्या होगा ? उसका इस तरह लम्बे-लम्बे डग भरना ज्यादा कारगर नहीं साबित हुआ। उसके सामने फैली गली दाहिनी तरफ़ एक छोटी गली में मुड़ गई थी। शायद वह गली...लेकिन उन लोगों की नजर से ओझल होने के लिए अब उसके पास समय नहीं था। वे कुछ ही क्षण में नुक्कड़ पर पहुँच जायँगे और देख लेंगे कि वह किधर भाग रहा है। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

तभी उसे सामने एक डेरी दिखाई दी। डेरी की दूकान का दरवाज़ा पूरा खुला हुआ था। खिड़की से उसने देखा, महिलाओं का एक झुंड दूकान के अन्दर खड़ा था। ग्रेउस पलक झपकाते भर में एक छलांग मार कर दूकान के अन्दर पहुँच गया। उसके घुसने के बाद एक और स्त्री दूकान में घुसी। एक दूध बेचने वाली लकड़ी की पटरी से ठोंक कर मक्खन की टिकियाँ बना रही थी और साथ-ही-साथ ग्राहकों की बातों के जवाब में अपना सिर भी हिलाती जा रही थी। उसके सामने खड़ी स्त्री बिना कुछ खरीदे हुये ही बोलती हुई चली गई—"...खासतौर से यहाँ, दाहिनी तरफ़...मौसम बदलने के ठीक पहले...आपने क्या बताया ?... एक्स-रे...?"

ग्रेउस उन स्त्रियों के पीछे दूध के दो पीपों और काउन्टर के शीशे जड़े उस मध्यभाग के बीच खड़ा हो गया, जिस पर विभिन्न प्रकार की पनीर सजी हुई थी। उसके मस्तिष्क में विचार बड़ी तीव्र गति से चल रहे थे। यहाँ से वह पूरी गली पर नजर रख सकता था। जब वे दौड़ते हुये इधर से निकल जायेंगे, तो वह कुछ क्षण इंतज़ार करेगा, फिर बाहर निकलेगा और उसी दिशा में दौड़ता हुआ लौट जायगा जिधर से वह गली में आया था।

वह स्त्रियों के पीछे दुबक गया। एस. ए. वाले काले आदमी के साथ गली से गुजर रहे थे। वह काला आदमी उन दोनों से बड़े उत्तेजित

स्वर में बातें कर रहा था। वह अपने हाथों से बातें करते समय हवा में एक गोलाकार वृत्त बना रहा था।

"वह अभी बहुत दूर नहीं गया होगा ! हमें चाहिए कि..."

वे नजरों से ओझल हो गये। अब क्या करना चाहिए ? यहीं रुका रहा जाय; सब से अहम बात यह है कि कुछ समय और गुजर जाने दिया जाय। उन तीनों को भी थोड़ा और आगे बढ़ जाने दिया जाय। अगर वह अभी निकल पड़ा तब तो सीधे दौड़ कर उनकी बाँहों में ही पहुँच जायगा। तभी उससे प्रश्न हो गया।

"आपकी क्या सेवा की जाय श्रीमान जी ?"

ग्रेउस ने चारों तरफ़ नजर दौड़ाई। दूकान में अब पहले जैसी भीड़ न थी। जिस स्त्री के शरीर में बगल के हिस्से में दर्द हो रहा था उसे सामान दिया जा चुका था, लेकिन खरीदारी कर चुकने के बाद भी वह अभी वहाँ खड़ी थी। ऐसा लग रहा था कि वह ऐसे अवसर की ताक में थी कि अपना किस्सा छेड़ सके। दूकान की दूसरी असिस्टेंट एक अन्य महिला की सेवा में संलग्न थी। और ग्रेउस के पास वह स्त्री खड़ी थी जो उसके बाद दूकान में आई थी।

"ओह...हाँ...आप पहले इन देवी जी को सामान दीजिये...मैं इंत-जार कर सकता हूँ...।" ग्रेउस ने हकलाते हुये कहा।

"एक चौथाई एडामर पनीर दे दीजिये—पतली-पतली फाँकें काटि-येगा," उसने अपने निकट खड़ी महिला को कहते सुना।

तीनों अब तक कितनी दूर गये होंगे ? क्या अब खतरा मोल लेना ठीक रहेगा ? उसने दूकान की खिड़की की तरफ़ एक कदम बढ़ाया, फिर बड़ी सावधानी से बाहर झाँका। गजब हो गया ! वे तो दूसरी तरफ़ इधर-से-उधर चहलकदमी कर रहे हैं। उसी के बाहर निकलने का वे इंतजार कर रहे हैं। काश वे किसी मकान के अन्दर घुस जाते ! तभी उसके पीछे से दूकानदारनी लड़की ने दुहराया :

"अब बताइये, हुजूर, आपको क्या चाहिए ?"

"...मैं...अरे मुझे...मुझे...एक चौथाई एडामर पनीर दे दीजिये, पतली-पतली फाँकों में काट कर।"

प्रेउस चाकू से कट-कट कर गिरती फाँकों को गौर से देख रहा था। उसके बगल में खड़ी स्त्री अपनी डोलची में बड़े भद्दे ढंग से कुछ टटोल रही थी। दूकान में चाँव-चाँव फिर शुरू हो गई थी।

एकाएक दूकान के दरवाजे से एक पुरुष-स्वर सुनाई दिया।

"मिस, आपने देखा है कोई...?"

लेकिन उसका वाक्य बीच ही में एकाएक टूट गया। और फिर एक तीखी चीख-पुकार गूंज उठी।

"जल्दी!...जल्दी!...वह यहाँ है !...वह यहाँ है !...

प्रेउस ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। काले बालों वाला आदमी दरवाजे पर ही खड़ा था। भय से उसका हृदय काँप उठा। उसने सोचा, सब समाप्त हो गया। अब निकल कर इस आदमी से बच कर भागने की कोशिश करना बेकार था। अन्य दोनो तो उसको जल्दी ही पकड़ ही लेंगे। लो, वे दोनों आ भी तो गये। प्रेउस इस तरह खड़ा हो गया जैसे पत्थर की मूर्ति हो। दूकानदारनी का मुंह खुला का खुला रह गया। वह आश्चर्य से आँखें फाड़े खड़ी थी, उसके दहने हाथ मे छुरी थी और बायें में पनीर। एस० ए० के एक सिपाही ने उसकी बाँह दबोच ली। वह एक विशालकाय चौड़े कंधे वाला आदमी था। उसकी आँखें उसकी झाड़ियों-जैसी घनी भौंहों के नीचे चमक उठीं। एस० ए० का दूसरा सिपाही गोरा और नाटा था। वह रिवाल्वर वाली जेब में हाथ डाले प्रेउस के सामने खड़ा था। काले बालों वाले व्यक्ति ने बफड़ते हुये कहा—"आखिर पकड़ गये बच्चू ! मैने तो इसे इसके लम्बे बालों के कारण पहचान लिया ! यही वह आदमी है जो पोस्टर

चिपका रहा था। मैंने अपने दरवाज़े की सूराख से इसे पोस्टर चिपकाते देखा था !"

"इसे साथ ले आओ।" नाटे वाले एस० ए० के सिपाही ने हुक्म दिया।

विशालकाय एस० ए० के सिपाही ने प्रेउस का एक हाथ उसकी पीठ की तरफ़ कर के मरोड़ दिया। उसके सारे शरीर में पीड़ा की लहर दौड़ गई।

दूकान में मौजूद महिलायें धकियाती हुई दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गईं। गली में चलते-फिरते लोग रुक गये और सर घुमा कर देखने लगे। बच्चों का एक झुंड लोगों की भीड़ के बगल में दौड़ता हुआ आ गया।

गत रात में बिलकुल सो नहीं सका। ऐसा लगता रहा जैसे मैं युगों से न सोया होऊं। मेरे मन में यह विचार उठने लगा कि मैं क्या लिखूं क्या न लिखूं, इस संबंध में मुझे बहुत सावधान रहना चाहिए। अगर किसी तरह यह पांडुलिपि गेस्टेपो के हाथ लग भी जाय, तो इससे किसी भी हालत में उन्हें हमारे गुप्त रहस्यों की जानकारी नहीं होनी चाहिए। मैंने जो कुछ भी अभी तक लिखा था उसे आज मैंने उस स्थान से बाहर निकाला जहां उसे मैंने छिपा रखा था, और उसे बड़े ध्यान-पूर्वक पढ़ने लगा। बहुत से हिस्से मुझे काट देने पड़े। कहीं-कहीं तो पूरे पेज-के-पेज मुझे नष्ट कर देने पड़े।

समय, या यों कहें कि समय के अभाव का भी प्रश्न था।

मुझे अपने लिखने के समय में भी कटौती करनी पड़ी क्योंकि मुझे राजनीतिक कार्य भी करने थे। अगर मैं ऐसा नहीं करूंगा तो कामरेड लोग शीघ्र यह महसूस करने लगेंगे कि मेरा काम में जी नहीं लग रहा है। फ्रांज़ और रोथेकर को छोड़ कर और कोई साथी यह नहीं जानता था कि मैं एक पुस्तक लिख रहा था।

लेकिन अब मुझे यह काम जारी ही रखना चाहिए। अन्यथा सभी कठिनाइयाँ और सभी खतरनाक परिस्थितियाँ बेकार साबित होंगी।

आज वालस्ट्रैसी में माइकोवस्की की यादगार के रूप में तैयार किये गये शिला-लेख का उद्घाटन होने वाला था। मैं रोथेकर के साथ सड़क पर चला जा रहा था। मैं जब से उसे बुलाने गया था तभी से हम दोनों एक-दूसरे से एक शब्द भी नहीं बोले थे। चश्में के पीछे रोथेकर की आँखें कुछ सिकुड़ी हुई-सी थीं, उसकी भौहों के बीच एक गहरी शिकन दिख रही थी। उसकी नजरें एक खिड़की से दूसरी खिड़की की तरफ़ दौड़ रही थीं।

"करो या मरो, और कोई रास्ता नहीं है।" उसने एकाएक कहा।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया—केवल सिर हिला दिया।

वालस्ट्रैसी में स्वस्तिक झंडे चारों तरफ़ फहरा रहे थे।

हमारी गली के अपने झंडे थे, लेकिन वे लाल झंडे थे। वहाँ कभी ऐसे झंडे नहीं दिखे जो लाल न हों।

नगर परिषद के फ्लैटों में रहने वालों को कल आदेश मिला था कि वे उन झंडों को अपने घरों पर टाँग दें, जो उन्हें हाल ही में दिये गये थे। फिर एस० ए० के लोग उन किरायेदारों के पास आये जिनके फ्लैट सड़क और गली के सामने थे और उनके हाथ झंडे बेचे।

बहुतों ने कहा—"हमारी झंडे खरीदने की समाई नहीं है, भाई।"

"तो आप पैसे दिये बगैर ही झंडा रख लीजिये, पैसे के लिए हम फिर कभी आ जायेंगे!" एस० ए० वाले जवाब देते थे।

वे जिस स्वर में 'तो आप पैसे दिये बगैर ही झंडा रख लीजिये' कहते थे, उससे किरायेदार समझ लेते थे कि उन्हें या तो झंडे स्वीकार करने होंगे या फिर...उन पर उसी क्षण से बराबर कड़ी नज़र रखी जाने लगेगी। बहुतों ने झंडे खरीदे भी थे। हाँ उस तरफ़—मेयर्स ने,

रैंडलिस ने झंडे स्वेच्छा से टाँग रखे थे। पहले उन्हें हमसे सहानुभूति थी, या यों कहें कि उनके हमसे अच्छे संबंध थे। महीनों से चल रहे आतंक और गिरफ़्तारियों के दौर से वे भयभीत हो गये थे। वे डरने लगे थे कि कहीं उन्हें सैनिक शिविर की कैद में न डाल दिया जाय। लेकिन आश्चर्य कि मैटेक ने भी ऐसा ही किया! ज़रूर वह अपनी नौकरी बचाने की चिन्ता में पड़ गया होगा। और...और...वे...उनमें से कोई भी पुलिस की नज़रों में नहीं चढ़ना चाहता! वे किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित न होने देने के कारण अपने पड़ोसियों को संकोच और लज्जायुक्त स्वर में बताते थे। कुछ मामलों में तो वे कारण उचित ही होते थे किंतु कुछ में वे नये राजनीतिक दृष्टिकोण से मेल खाने के लिए गढ़े हुये मालूम होते थे।

हम सड़क की मोड़ पर पहुँच गये। बिजलीघर दूसरी तरफ़ था। मशीनों की आवाज़ गूँज रही थी। बिजलीघर की इमारत के ऊपरी हिस्से में एडी ने जो नारे लिखे थे, उस पर एस०ए० के लोगों ने पुताई कर दी थी। लेकिन पुताई का रंग धूप में उड़ गया था और मैं उसके नीचे लिखे शब्दों को बिना किसी कठिनाई के पढ़ सकता था। लेकिन मुझे तो वह नारा पूरी तरह याद ही था।

"वह होगा!" रोथेकर ने धीरे से कहा, और निकट ही स्थित शराबखाने की ओर इशारा किया।

दरवाज़े के विशाल शीशे पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था 'अफ़ीकैंडर'। दरवाजे पर एक स्वस्तिक झंडा ढीला-ढाला टंगा था। सड़क के दूसरी तरफ़ वह स्थान था, जहाँ हम लोग मिला करते थे, अपनी बैठकें किया करते थे। दूकानों की खाली खिड़कियाँ आँखों-जैसी थीं—सड़क के चेहरे पर डगडगाती आँखें। हम जानते थे कि इस चेहरे के भावों को कैसे पढ़ा जा सकता है...। हम अपने प्रति दिख रही व्यक्त उदासीनता से धोखा नहीं खा सकते थे।

वालस्ट्रैसी में स्वास्तिक झंडे !

अपने घरों के सामने खड़े लोगों से हम नज़रों-ही-नज़रों में बातें करते जा रहे थे और सिर हिला कर उनका अभिवादन भी करते जा रहे थे। यद्यपि हमने एक-दूसरे से नमस्कार किया, बातें भी कीं, लेकिन झंडों के संबंध में किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। हम सभी लोग मित्र हैं, लेकिन कोई भी नहीं जानता कि उससे मिलने वाला दूसरा व्यक्ति 'सक्रिय' है या नहीं—जैसा कि पार्टी में कहा जाता था।

और आगे खिड़कियों से झाँकते अन्य बहुत से चेहरे भी दिखाई दिये। निकट भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के अभास मात्र ने जैसे वातावरण को तनावपूर्ण और गंभीर बना दिया था। रोथेकर ने चुपचाप मेरी ओर देखा।

वालस्ट्रैसी और क्रमस्ट्रैसी के चौराहे पर वह रुक गया। उसने सिर हिलाया और अजीब ढंग से अपना मुँह टेढ़ा किया।

नुक्कड़ पर बड़े-बड़े टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखा हुआ था—

माइकोवस्कीस्ट्रैसी

सुबह बहुत तड़के से ही सीढ़ियाँ लिये-दिये आदमी आ गये थे। उन्होंने पुराने और धंधले पड़े सड़क के नाम के प्लेट पर से वालस्ट्रैसी शब्द को मिटा दिया था, और यह नया नाम 'माइकोवस्कीस्ट्रैसी' उसकी जगह अंकित कर दिया था। ऐसा लग रहा था जैसे इस नये नाम के अक्षर मुझे मुँह चिढ़ा रहे हों, और कह रहे हों : "रोक लो, भाई, रोक लो, अगर तुममें शक्ति हो ! वाह, तुम किसी भी चीज़ में रत्ती भर भी परिवर्तन नहीं कर सकते !"

सड़क के उस पार एक चौड़े प्रवेश-द्वार के पास एस० ए० के दो संतरी खड़े थे। उसके बायें तरफ़ एक साइकिल की दूकान पर निकेल से बने साइकिल के पुर्जे धूप में चमक रहे थे; दूसरी तरफ एक दवा-फ़रोश की दूकान थी। एस० ए० के दोनों संतरी अपने शरीर को

कड़ा किये हुये अटेंशन की मुद्रा में खड़े थे। उनकी चपटी टोपी का पट्टा उनकी ठोढ़ी के नीचे बँधा हुआ था। उनके पीछे दीवार का एक काफ़ी बड़ा हिस्सा काले कपड़े से ढंका हुआ था। चमकदार धनुषाकार बँधी हुई मालायें सड़क की पटरी पर रक्खी हुई थीं। संतरियों के अगल बगल चमकदार पत्तियों वाले करोटन के पेड़ लगे हुये थे। कारें तेज़ी से आ-जा रही थीं। सवारियों का आवागमन अभी भी सामान्य था। लेकिन मैंने देखा कि हमारी ही तरह सभी पैदल चलने वाले सड़क के दूसरे किनारे से आ-जा रहे थे। वे तेजी से कदम बढ़ाते हुये वहाँ से निकल जाते थे। कोई सलामी भी नहीं दे रहा था।

तीस जनवरी की रात की याद मेरे मस्तिष्क में ताज़ी हो गई। हम लोग दूसरी तरफ़ एक दरवाजे पर खड़े थे। एक शोर मचाती, चिंघाड़ती, उत्तेजित भीड़ पीछे की तरफ़ से वहाँ आ पहुँची। तब माइकोवस्की ने जोर से गरज कर गोलियाँ चलाने का हुक्म दिया। अँधेरे में बंदूकों की नलियाँ लाल-लाल चिनगारियों के रूप में गोलियाँ उगलने लगीं। दर्जनों गोलियाँ देखते-ही-देखते दग गईं। इतना सब होने के बाद ही वह पुलिस का सिपाही दौड़ कर भीड़ के सामने पहुँच गया था। माइको-वस्को उसके बगल में था। उस सिपाही ने किस तरह एकाएक भीड़ के सामने अपने दोनों हाथ फैला दिये थे और फिर किस तरह वह एकाएक ज़मीन पर ढेर हो गया था। फिर माइकोवस्की ने किस तरह गरज कर दूसरा हुक्म दिया था, जिसे हम शोरगुल में सुन नहीं सके थे, और फिर किस तरह उसके घुटनों ने जबाब दे दिया था और वह भी ज़मीन पर ढेर हो गया था। यहीं इसी जगह वे दोनों डामर की सड़क पर ढेर हो गये थे। एस० ए० के लोग इसके बाद भाग गये थे। इस सब के बाद ही हमारे कामरेड साथी 'स्टानी' शराबखाने से निकल कर घटना-स्थल पर पहुँचे थे। कामरेडों ने उन दोनों को गोली नहीं

भारी थी। अगर उन्होंने गोली चलाई होती तो क्या वे पुलिस की गाड़ी के पास स्वयं जाते ?

अगर वे हत्यारे होते तो पुलिस की कार में लाशों को उठा कर रखने में सिपाहियों की सहायता न करते। अगर ऐसा होता तो पुलिस आने के पहले ही वे भाग गये होते। लेकिन वे वहीं मौजूद रहे, क्योंकि वे जानते थे कि वे निर्दोष थे। बेचारों को अपने बचाव के लिए एक वकील भी करने को नहीं मिला। और फिर ह्यूटींग का मुकदमा चला। आखिरी बार जब मैंने उसे देखा था उस समय उसकी जो दशा थी उसकी तस्वीर मैं हूबहू बयान कर सकता था। वह सोफ़े पर बैठा हुआ था, उसके भारी हाथ उसकी पेटी पर टिके हुये थे। उसने विलमैन भवन पर आक्रमण का किस्सा मुझे किस तरह सुनाया था। कैसे कठोर, गुर्राहट भरे स्वर में उसने सारा किस्सा सुनाया था।

"वह बहुत बहादुर है—वह हम सब के नाम जानता है, लेकिन बताया नहीं।" रोथेकर ने बड़े शांत भाव से कहा।

हम लोग अगले मोड़ पर पहुँच गये थे और हम वहीं रुक गये। नुक्कड़ वाले मकान में फीके रंग की खिड़कियों की एक लम्बी कतार थी। उस मकान का प्रवेश-द्वार नुक्कड़ से घूम कर कुछ गजों की दूरी पर बगल की एक गली की तरफ़ से था। उसका लकड़ी का दरवाजा बराबर भड़-भड़ बोल रहा था। दुबले-पतले दिखते स्त्री-पुरुष फटे-पुराने कपड़े पहने मकान में आ-जा रहे थे।

श्रमिक स्कूल !

बहुत दिन हुये यहाँ 'रोजगार की सुख-सुविधाओं' पर एक भाषण हुआ था। अब इस इमारत में चारलोटेनबर्ग कल्याण केन्द्र स्थित था। जब दरवाजा खुला तो हमने देखा एक लम्बी कतार इंतजार करती खड़ी थी, जो मैले-कुचैले सेहन के आर-पार फैली हुई थी और निचली मंजिल

के कमरों के अन्दर तक चली गई थी। कतार कल्याण-केन्द्र के खजांची की डेस्क तक जा कर समाप्त हुई थी।

"हम लोग यहाँ इंतजार कर सकते हैं। यहाँ लोगों का ध्यान नहीं आकर्षित होगा।" रोथेकर ने कहा। स्मारक-शिला वहाँ से पचास गज से भी कम दूरी पर थी। रोथेकर बड़ी अधीरता से अपना चश्मा हिलाने-डुलाने लगा।

"मेरे ऊपर काफ़ी किराया बकाया है। वे मुझे जो पैसे थोड़ा-थोड़ा कर के देते हैं, वह सारा खाने में ही खर्च हो जाता है।" और उसने विचारों में खोये हुये ही सिगरेट से राख को गिराया। फिर बोला—"और मैं कर ही क्या सकता हूँ?"

मुझे कोई ऐसी बात नहीं सूझ रही थी जिसे कहने से कोई सहायता हो पाती। बीवी और बच्चा और वह स्वयं भी। वह कितने दयनीय रूप में दुबला-पतला है। उसके कपड़े ऐसे लगते हैं जैसे खम्भे पर टँगे हों। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और जैसे उस में जीवन का कोई लक्षण न था। वह नहीं जानता था कि कहाँ किस बात के लिए चिन्ता करनी चाहिए—लेकिन वह हमेशा दूसरों के लिए अपना सब-कुछ लुटा देने को तैयार रहता था। उसने अनेक वर्षों से ऐसा ही जीवन बिताया है।

"अगर वे मेरी असलियत का पता लगा लें और मुझे कम पैसा दें तो?..."

लेकिन अब अनेक लोग इधर-से-उधर आ-जा रहे थे। स्मारक-शिला के बगल में लोगों के झुंड खड़े थे।

"चलो, और पास चलें!"

सभी लोग बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहने हुये थे। वे ऐसे दिख रहे थे जैसे अपनी खूब देख-भाल करते हों, और जैसे वे ऐसा करने में समर्थ भी हों। उनमें बहुत-सी स्त्रियाँ भी थीं।

पंक्ति साफ़-साफ़ सुनाई पड़ने लगी जो प्रत्येक पद के बाद दुहराई जाती थी।

"...हम सैनिक हैं तैंतिसवीं टुकड़ी के..."

लोगों की बाँहें हवा में लहरा उठीं। सामने वाले मकानों की खिड़कियों में केवल सिर दिखलाई पड़ रहे थे, बाँहें नहीं। लेकिन फिर भी इक्के-दुक्के इधर-उधर हाथ भी दिख ही जाते थे। जो हो, वे अन्य खिड़कियों से प्रकट हो रहे मौन विरोध की ही प्रखरता को और बढ़ा रहे थे। हमारे पीछे सेहन में स्थित कुछ मरम्मत का काम करने वाली दूकानों से निकल कर कुछ कर्मचारी अपना लकड़ी की एँड़ी वाला जूता पहने आपस में बकबक करते हुये आ गये। उनमें से दो ने अपने तेल से सने हाथ ऊपर उठा दिये। तीसरा उनके निकट ही अपने हाथों को जेब में डाले खड़ा था। बाहर से परेड करने की नियमित ध्वनि निरंतर आ रही थी। हम भीड़ के सिर के ऊपर भूरी टोपियों को केवल उठते-गिरते ही देख सकते थे। एक तेज़ कर्कश कमांड से गीत एकाएक रुक गया।

"सैनिक टुकड़ी—रुक जाओ! दाहिने घू ऽ म!"

सन्नाटा छा गया।

तहखाने में स्थित चिड़ियों की दूकान का मालिक एक कुर्सी लिये हुये बाहर आ गया, और उसी पर खड़ा हो गया। वह सभी लोगों के सिरों के ऊपर उठ गया। फिर किसी ने बोलना शुरू किया।

"उस खूनी बलिदान की याद कीजिये...यह हमारे गौरव और स्वातंत्र्य की भूमि है...उनकी कम्युनिस्टों द्वारा हत्या कर दी गई थी..., उनकी हत्या जो हमारे नेता हिटलर के प्रति वफ़ादार थे..."

ऐसा लगा जैसे भाषण देने वाला युगों तक बोलता रह गया हो। फिर दूसरा आदमी भाषण देने उठा।

फिर सन्नाटा छा गया।

और फिर उन लोगों ने तेज स्वर में गाना शुरू किया :

"···हमारे कामरेड जो मारे गये···गोलियों से···"

जरा इन्हें निकल ही जाने दो। हमारे कामरेड ! कामरेड जो तुम लोगों द्वारा आधी रात गये गोलियों से मारे गये, जो तुम्हारी जेल की कोठरियों में यातनायें झेल रहे हैं। स्लेटी रंग के वस्त्रधारी मनुष्यों की एक लम्बी कतार। लेकिन जिन्दादिल और जीवित लोग हर जगह होते हैं, जिन्हें तुम देख नहीं सकते। उनकी हर मिनट तुम पर नजर होती है।

मैंने रोथेकर की बाँह पकड़ ली, मैं भूल गया कि हमारे चारों ओर काफी भीड़-भाड़ थी। हमने आँखें फाड़ कर एक-दूसरे की ओर देखा। रोथेकर के चेहरे की नसें तन गईं, उनमें खिचाव पैदा हो गया। सब कुछ अविश्वसनीय लग रहा था, एकदम असम्भव, और फिर भी जैसे ही भीड़ द्वारा लगाये गये 'हिटलर ज़िंदाबाद' के नारे की अन्तिम अनुगूंज शांत होने लगी, एक स्त्री ने बड़े कररूत स्वर में चीख कर नारा लगाया : "फ़ासिस्टवाद मुर्दाबाद ! लाल मोर्चा ज़िंदाबाद !"

और फिर एक आवाज़ और गूंज उठी। यह आवाज़ शायद सडक के उस पार से आई थी।

"मुर्दाबाद ! मुर्दाबाद ! लाल मोर्चा, ज़िंदाबाद !"

हम लोग उसी क्षण गैरेज के प्रवेश-द्वार से तेजी से बाहर निकल आये। हम यह भूल गये कि इस खतरनाक स्थिति में हमें पहचाना जा सकता है। हम गुस्से से विकृत चेहरों से घिरे हुये थे, उनके घूंसे धमकी के भाव से तने हुये थे। लोगों के छोटे-छोटे समूह बहस-मुबाहिसा कर रहे थे, लोग एक-दूसरे पर जोर-जोर से बरस नहीं रहे थे।

हमने देखा एस० ए० के सिपाही झुंड-के-झुंड दौड़ते हुये आये और फिर दो दलों में बँट गये, जो सड़क के दोनों तरफ़ बने मकानों में आंधी-तूफान की तरह घुस पड़े। उनके साथ एक स्त्री भी थी

जिसकी बाँह कस कर पकड़ रखी गई थी। एक क्षण के भी एक छोटे से भाग के लिए मुझे उसकी नीली अँगिया, पीले चेहरे और बिखरे काले बालों की एक झलक मात्र मिल सकी। लोगों की भी धक्का-धुक्की करती आगे बढ़ने लगी। उत्तेजित भीड़ के धक्के खा कर कभी हम आगे को जाते कभी पीछे ढकेल आते। मेरी स्नायुविक उत्तेजना चरम सीमा पर पहुँच गई थी। हम-जैसे अन्य लोग तो जैसे खिडकियों से गिरे-से पड़ रहे थे। वे भी उतने ही उत्तेजित थे जितने हम। हम उनके हाव-भाव और उत्तेजित चेहरे से इस बात को पहचान सकते थे। उनकी गली ने अपने मनोभावों को स्वर दिया था, अपनी आवाज बुलन्द की थी। फौरन आदेश जारी हुये। कुछ क्षण बाद ही एस० ए० ने मार्च करना शुरू कर दिया। कठोर, विकृत चेहरे क्रोध और साथ ही पुरुषत्वहीनता से कांप रहे थे। ऐसे क्षण और ऐसे अवसर पर इस तरह की उत्तेजित नारेबाजी उन लोगों के लिए बहुत बड़ा आघात थी।

जब भीड़ छँट गई, तो हम सड़क पार कर के मकान नं० ५२ पर गये।

ताँबे की एक प्लेट उस मकान की दीवार पर लटक रही थी। उसके इर्द-गिर्द ताज़ी हरी पत्तियाँ लिपटी हुई थीं, ऊपर एक स्वस्तिक चिन्ह बना था। नीचे लिखा था :

यही वह स्थान है जहाँ ३० जनवरी, १९३३ को एस० ए० तूफानी टुकड़ी नं० ३३ के तूफानी नेता हैंस एबरहर्ड माइकोवस्की ने अपने जीवन का बलिदान किया था। माइकोवस्की ने जर्मनी के लिए अपना जीवन दान दिया !'

कुछ और आगे जा कर रोथेकर ने धीरे से कहा—"उस प्लेट पर लिखा है 'जीवन का बलिदान किया'; यह नहीं लिखा है कि 'कम्युनिस्टों द्वारा कत्ल किया गया था' ..."

उसने मेरी ओर देखा।

"वे अपनी स्मारक-शिलाओं पर साधारणतः ऐसा ही लिखते है। ऐसी ही एक प्लेट नहर के निकट जड़ी हुई है। वे स्वयं भी यह यकीन नहीं कर पा रहे हैं—कि हमारे जवानों ने उसे गोली मार दी थी।"

जब हीन्ज प्रेउस दूसरे दिन भी घर नहीं लौटा, तो उसकी माँ ने मेरी सलाह के अनुसार काम करने का निश्चय किया। वह पुलिस स्टेशन गई। वहाँ दरवाजे पर ही एक बड़ा-सा साइनबोर्ड टँगा था : जर्मन अभिवादन है—हिटलर जिंदाबाद !'

श्रीमती प्रेउस ने धक्का दे कर दरवाजा खोला। तेज रोशनी से युक्त गलियारे में वह हिचकिचाती हुई रुक गईं। हर तरफ़ दरवाजे ही दरवाजे थे। वह गलियारे में चलने लगी, हर दरवाजे पर लिखे नाम और नम्बर को पढ़ती हुई। हीन्ज के संबंध में वह कहाँ पूछें ? वे निश्चय ही उसके संबध में सब-कुछ जानते होंगे। वह समझती थीं, कि पुलिस को हर बात की जानकारी रहती है।

एक कमरे में तीन अफ़सर मेज पर पेन लिये झुके बैठे थे। बीच में बैठे मोटे और मृदुल-स्वभाव के व्यक्ति ने उन्हें देख कर उसे अंदर बुलाया—"अन्दर चली आइये, माताजी। क्या चाहती है आप ?"

श्रीमती प्रेउस धीरे-धीरे काठ की उस रेलिंग की ओर बढ़ीं, जिसने कमरे को दो हिस्सों में विभाजित कर दिया था।

"नमस्कार," उन्होंने डरते-डरते कहा।

"आपका मतलब है, 'हिटलर जिंदाबाद' !" मोटे आदमी ने जोर से कहा—"बोलो, बोलो, क्या चाहती हो ?"

"हिटलर जिंदाबाद !" श्रीमती प्रेउस ने भय से कांपते हुए कहा—"मैं कुछ पूछ-ताछ करना चाहती थी। मैं अपने बेटे को ढूँढ़ रही हूँ।"

लग रहा था जैसे श्रीमती ग्रेउस दुबक कर और भी छोटी-सी बन गई हों। नीली वर्दी वाले लोग ही अफ़सर थे। बाइबिल में कहा गया है कि उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए।

मोटा सिपाही हँस पड़ा।

"तुम्हारा बेटा ? वह तो काफी बड़ा-सा लड़का होगा। क्या उम्र है उसकी ?"

"बाईस वर्ष," श्रीमती ग्रेउस ने धीरे से कहा।

"ठीक। और...?"

"वह घर नहीं वापस आया है—परसों से।" श्रीमती ग्रेउस ने बड़े चिन्तित स्वर में कहा।

"इस उम्र में अक्सर ऐसा हो जाता है।" और वह हँस पड़ा। "वह जरूर अपनी प्रेमिका के घर पर होगा।"

"नहीं, नहीं, उसे जरूर कुछ हो गया है।"

उस बूढ़ी महिला के हर शब्द में झलकती चिन्ता से शायद अफ़सर का मन पसीज गया।

उसने पूछा—"अच्छा, अच्छा, बोलो, तुम रहती कहाँ हो ?"

"बयासी वालस्ट्रूसी में।"

"माइकोवस्कीस्ट्रूसी !" मोटे आदमी ने जोर से बात को सुधारा।

वह खड़ा हो गया।

"मेरे साथ आओ। तुम्हारा नाम रजिस्टर में दर्ज है।"

वे बीच के एक दरवाजे से अगले कमरे में गये।

"आपका नाम ?"

"ग्रेउस—अल्वाइन ग्रेउस।"

मोटे आदमी ने डेस्क में से सूची-पत्र वाली दराज खींची। वह नामों की सूची के कार्ड उँगलियों से पलटने लगा।

"अल्वाइन प्रेउस—हीन्ज प्रेउस—जन्म ८ अप्रैल, १९११। यही है ?"

"हाँ," श्रीमती प्रेउस ने जैसे फुसफुसा कर कहा, जैसे उसने उसके अतीत की भूलों और अपराधों की सूची उसे पढ़ कर सुना दी हो।

मोटे आदमी ने उस हरे कार्ड को हवा में हिलाया।

"अच्छा, और....अब तुम क्या चाहती हो ?"

"मैंने समझा आपको उसके संबंध में मालूम होगा—मैं इतनी चिंतित हूँ—जरूर उसके साथ कोई दुर्घटना हो गई होगी।" श्रीमती प्रेउस ने बड़े चिंतित स्वर में कहा।

"लेकिन आप हमसे यह आशा तो नहीं कर सकतीं कि हम हर किसी के संबंध में जानते होंगे कि कौन कहाँ है !...क्या आप यह रिपोर्ट लिखाना चाहती हैं कि वह लापता है ?...और काम बंद करने का समय भी हो गया !" उसने बड़ी अधीरतापूर्वक उत्तर दिया।

"आप कुछ जाँच-पड़ताल नहीं करवा सकेंगे ? मैं इतनी परेशान हो गई हूँ..."

श्रीमती प्रेउस रोने लगीं। मोटा आदमी क्षण भर उन्हें ऊपर से नीचे तक देखता रहा।

"शांत रहिये, शांत रहिये," वह बोला। "आप बैठ जाइये। मैं आपकी मदद करने की कोशिश करूँगा।"

श्रीमती प्रेउस ने देखा, उसने विभिन्न सरकारी दफ्तरों और विभागों को टेलीफ़ोन किये।

वह हर बार उसके बेटे का नाम और जन्म-तिथि बताता जाता था।

"नहीं ? धन्यवाद। हिटलर जिंदाबाद !" कई बार उसने फ़ोन पर दुहराया।

एकाएक उसकी आवाज तेज हो उठी।

"प्रेउस ! हाँ, हाँ—हीन्ज प्रेउस। क्या ? जनरल पेप स्ट्रैसी में ? नहीं, नहीं, सचमुच ? धन्यवाद। हिटलर जिंदाबाद !"

जोर की आवाज़ के साथ उसने अपनी कुर्सी पीछे ठेल दी, और उठ खड़ा हुआ।

"आपका बेटा गिरफ़्तार हो गया है !" उसने तीखे स्वर में कहा

"गिरफ़्तार हो गया ? मगर...क्यों ?" श्रीमती प्रेउस हकलाती हुई-सी बोलीं।

मोटे आदमी ने परिचय-पत्र को फिर से दराज़ में रख दिया।

"यह बात तो वह स्वयं ही ज्यादा अच्छी तरह जानता होगा !" उसने बड़े रूखे स्वर में जवाब दिया।

"क्या मैं उसे देख भी नहीं सकती.. उससे बात नहीं कर सकती ? क्या आप ...?" श्रीमती प्रेउस ने फिर रोना शुरू कर दिया।

"यह हमारा काम नहीं है। और इस काम में हमारी कोई सुनेगा भी नहीं।" उसने संक्षिप्त-सा उत्तर दे दिया।

इसके बाद श्रीमती प्रेउस रोती हुई घर लौट गईं।

प्रेउस जब पहले दिन घर नहीं लौटा तभी हमने सभी कामरेडों को सावधान कर दिया था। उसे कुछ ऐसे गुप्त स्थलों की जानकारी थी, जहाँ हम अपने राजनीतिक मसाले छिपा कर रखा करते थे। उन स्थलों को फ़ौरन बदल दिया गया। हमें मालूम था कि हीन्ज प्रेउस एक ईमानदार और विश्वसनीय कामरेड था। लेकिन हमने सावधानी बरतने के लिए यह नियम बना लिया था कि हमें अपने दिमाग में यह बात हमेशा रखनी चाहिए कि जो भी कामरेड गिरफ्तार हो गया है वह हमारे भेद खोल सकता है। यद्यपि हमने सभी कामरेडों को समझा रखा था कि गेस्टपो लोगों के सामने ऐसा कोई बयान देने से यही साबित होगा कि वे भी गैरकानूनी काम में शामिल थे, लेकिन फिर भी हम यह विश्वास कर के नहीं बैठ सकते थे कि हर कोई शारीरिक यातनाओं को बर्दाश्त करके भी दृढ़ बना रहेगा और हमारे भेद नहीं खोलेगा।

इसी बीच माइकोवस्की की बैरकों से डैमर्ड को रिहा कर दिया

गया। हमने उसकी दगाबाज़ी से सभी साथियों को अवगत करवा दिया। हममें इतनी मानवीयता थी कि हम समझ सकते थे कि उसने करोल का नाम क्यों बतलाया होगा—निश्चय ही वह भयंकर यातनायें बर्दाश्त नहीं कर सका होगा। हो सकता है उसने अपनी पत्नी और बच्चों के भविष्य की बात सोच कर भी यह दगाबाज़ी की हो। लेकिन हमारे राजनीतिक नियम और निर्णय तो सख्त और स्पष्ट होने ही चाहिए। ये नियम और निर्णय तो हम सभी के लिए एक जैसे ही होने चाहिए।

मैं धीरे-धीरे सड़क पर चला जा रहा था। सूर्य पूरी प्रखरता से चमक रहा था। सभी लोग गर्मी के हल्के, रंग-बिरंगे कपड़े पहने हुए थे। मुझे रंगों का यह मिश्रण बहुत पसन्द था।

मैंने कल हिल्डी को फ़ोन किया था।

"रविवार को हैवेल पर आ रही हो?"

"हाँ, मैं भी रविवार का इंतज़ार कर रही हूँ।"

हम लोग हर बार अपने प्रश्न बदल दिया करते थे। उसकी 'हाँ' का यह मतलब था कि फ्रांज ने हमारी भेंट के लिए उसे कोई नया स्थान बताया है। तब मैं हिल्डी से शाम के वक्त उसके दफ़्तर के पास ही मिल जाता हूँ। फ्रांज ने इस बार एक मकान में मिलने का सुझाव दिया था। उनके लिए अपने कस्बे में काम करने का ज़्यादा अच्छा मौका था।

"विदेशी जर्मनों के नाज़ी संगठन के लिए!"

अनिवार्य नाज़ी नवयुवक संगठन 'हिटलर-जूगेन्ड' के एक लड़के ने चंदा एकत्र करने का डिब्बा खड़खड़ाते हुये मेरे सामने कर दिया। दूसरे लड़के के हाथ में एक छोटी-सी झोलची थी। उसके अन्दर नीले और सफ़ेद झंडे रखे हुये थे। मैंने अपना सिर हिला दिया। वे फ़ौरन आगे बढ़ गये। झुंड-के-झुंड चंदा एकत्र करने वाले दिख रहे थे। नाज़ी नव-

युवक संगठन के लड़के, नाज़ी बाल संगठन के छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ, चंदा एकत्र करने का अधिकार जताने वाले फ़ीते बाँहों पर बाँधे स्कूली बच्चे सारी सड़क पर छाये हुये थे। प्रत्येक आने-जाने वाला रोका जा रहा था। मैंने देखा बहुत से लोग तो जेब से अपना झंडा निकाल कर बच्चों को दिखा कर आगे बढ़ जाते थे। वे लोग इन झंडों को अपने वस्त्र पर लगाये क्यों नहीं हैं? शायद उन्होंने चंदा एकत्र करने वाले टिड्डी दलों से जान छुड़ाने भर के लिए दस पेनी से हाथ धो लिया था, लेकिन वे उन झंडों को पहन कर नाज़ियों के प्रचार में हिस्सा नहीं लेना चाहते थे। मैं उन लोगों के चेहरे देख रहा था जिन्हें रोका जा रहा था। चंदा देने में वे तनिक भी प्रसन्नता नहीं प्रकट कर रहे थे। कुछ तो खड़खड़ाते डिब्बों से कट कर बगल से बिना कुछ बोले ही निकल जाते थे। उनके चेहरों पर यद्यपि कोई भाव नहीं थे, लेकिन वे जैसे 'नहीं' से भी अधिक बहुत-कुछ कहते हुये प्रतीत होते थे।

कब तक यह सब यों ही चलता रहेगा? हर हफ्ते कोई नया चन्दा! जनता को चूसने के नये-नये तरीकों का प्रचार मंत्रालय के पास जैसे कोई अंत ही नहीं होता था। नाज़ी महिला संगठन, एस० ए०, नाज़ी नवयुवक संगठन, नाज़ी बाल संगठन, पार्टी, वगैरह-वगैरह। चंदे के डिब्बों की खड़खड़ाहट जैसे कभी बंद ही नहीं होती थी।

जो लोग चीजों को केवल सतही तौर पर देखते हैं वे इस निष्कर्ष पर पहुँचने को बाध्य हैं कि जर्मनी में राष्ट्रीय समाजवाद स्थापित हो गया है। हर जगह काली, भूरी वर्दियाँ ही दिखती थीं। हर दूकान की खिड़कियों में झंडे और हिलटर की तस्वीरें दिखती थीं। मार्च करते एस० ए० के सिपाही, परेड करते एस० एस० वाले, नाज़ी नवयुवक संगठन के परेड करते दल, नाज़ी बाल संगठन के भी मार्च करते जुलूस, सभी अतिशयोक्तिपूर्ण देशभक्ति के गीत गाते! मोटर-साइकिलों पर वर्दियाँ! नई कारों में भी वर्दियाँ!

मेरे सामने वाले लोग सर घुमा कर देखने लगे। एक आदमी लंग-ड़ाता हुआ सड़क पार कर रहा था। उसकी कनपटियां भूरी थीं; उसके झुर्रियोंदार चेहरे पर एक आँख कांच की लगी हुई थी। उसने एक पुरानी घुड़सवार सिपाहियों वाली वर्दी पहन रखी थी। उसके सीने से सफ़ेद डोरियाँ लटक रही थीं। कैसर विलहेम के समय की वर्दी थी, जिसे अब कीड़ों ने जगह-जगह काट डाला था।

मैं अपने ही रिश्तेदारों के संबंध में सोचने लगा, जो एस० ए० के आदमी थे। वे चार वर्ष युद्ध में लड़े थे। अब वे अपनी भूरी कमीज़ों पर बड़े गर्व से अपने तमगे पहनते थे। उनमें से एक क्लर्क है, दूसरा नाई। वे हमेशा अपने को दूसरों से अलग और बेहतर महसूस करते हैं। बैरकों की कसरत और युद्ध की खाइयों की धूल फांकने के दिन समाप्त हो चुके थे। लेकिन वर्दी फिर वापस आ गई है। हाँ, वर्दी!

एक्स, जिसने मुझे करगेल के संबंध में बताया था, एस० ए० का आदमी होने के नाते केवल डबल रोटियाँ ही बनाता रह सकता है, और कुछ नहीं। पिछले चन्द दिनों से हमारी गली में भी भूरी वर्दियाँ दिखने लगी थीं। उन भूरी वर्दीधारियों में से एक व्यक्ति एक डाइरेक्टर का शोफ़र था। उसने मुझे बताया था कि उसके मालिक की यह ज़िद थी कि उनका ड्राइवर एस० ए० का ही आदमी हो। दूसरा आदमी एक धातु व्यापारी के यहाँ नौकर था, जो केवल एस० ए० के आदमियों को ही अपने यहाँ नौकर रखता था, यद्यपि वह समझौते के अंतर्गत निर्धारित न्यूनतम वेतन ही दिया करता था। इस तरह लोगों के पास इस बात के लिए हज़ारों बहाने थे कि वे अपनी नौकरी क्यों खतरे में नहीं डालना चाहते। वे अपनी प्रेमिका को सिनेमा नहीं ले जा सकेंगे। उन्हें सिगरेट पीना बन्द करना पड़ेगा। वे अपनी माँ की दया की रोटी नहीं तोड़ना चाहते।

हमारी गली में रहने वाला एस० ए० का तीसरा आदमी बेरोज़गार

था। उसे आशा थी कि वह एस० ए० के जरिये कोई काम पा जायगा। फिर भी अतीत में वह हमारी हमेशा मदद किया करता था। वह हमारे एक प्रतिरक्षा संगठन का सदस्य था।

यहाँ, सड़कों पर अधिक चिंता न करने वाले और ज्यादा न घबराने वाले लोग सर हिला कर ही चंदा इकट्ठा करने वालों से मुक्ति पा जाते थे। लेकिन अपने घरों की चहारदीवारियों में वे पूरी तरह चंदा इकट्ठा करने वालों तथा नाजी गुटों के नेताओं की कृपा पर निर्भर थे। हर किसी को अपने घर में 'जनता के साथी' की भूमिका अदा करनी पड़ती थी। दो सप्ताह पहले एक पड़ोसी महिला ने एक उदासीन कार्यकर्त्ता को गेस्टैपो के हवाले कर दिया क्योंकि वह स्त्री उससे घृणा करती थी। वह मेरे मकान से कुछ दूर पर ही एक मकान में रह रहा था। उस औरत ने बताया था कि वह हर रोज शाम को भारी-भारी झोले भर कर लाता था। मकान की तलाशी ली गई। उस व्यक्ति को दो दिन तक हिरासत में रक्खा गया। फिर यह भेद खुला कि वह काम पर से लौटते समय वहाँ से झोले में लकड़ी भर लाता था। मालूम है, मेरे हाथ सब्जी बेचने वाली महिला ने मुझसे हाल ही में क्या कहा था ? वह केवल इतना जानती थी कि मैं नाजी नहीं हूँ, बस और कुछ नहीं। उसने कहा था, "हम लोग आखिर करें क्या ? शांतिपूर्वक रहने के लिए यह आवश्यक है कि उनके किसी-न-किसी संगठन में शामिल हुआ जाय। अतः हमने एक ऐसे संगठन की सदस्यता चुनी है, जिसमें सब से कम चन्दा देना पड़ता है।"

और हमारे पड़ोसी की बेटी ? वह शहर में एक कारखाने में काम करती थी। उन्हें कुछ फार्म दिये गये थे, जिन पर उन्हें दूसरी बार हस्ताक्षर करना पड़ रहा था। "बार-बार यह साबित हो चुका है कि 'जनता के साथी' अपने निजी जीवन में जर्मन सलामी का इस्तेमाल नहीं

करते ।...मैं अच्छी तरह समझ गई हूँ कि इस आदेश का पालन करने मे चूक होने पर मैं इस कारखाने में काम नहीं करती रह सकूंगी ।"

उन लोगों ने यह धमकी दिखा कर जनता पर 'जर्मन सलामी' लाद दी है, कि 'जनता का जो भी मित्र स्वस्तिक झंडे को सलामी नहीं देगा उसे मार्क्सिस्ट समझा जायगा ।'

ज़मीन के अंदर चलने वाली ट्रेन सुरंग के अन्दर घड़घड़ाती हुई आई और ढलुआ पहाड़ी पर चढ़ती हुई जा कर स्टेशन पर रुक गई । नालेनडॉर्फ़प्लाट्ज़ । वहाँ टेलीफ़ोन बाक्स था । वह खाली था । मैंने टेलीफ़ोन डाइरेक्टरी खोली । अल्ब्रेख्त...क्रैमर...नाथन यह रहा ! 'एन' अक्षर के पहले पेज पर पेंसिल से एक क्रास बना हुआ था । तो नया वाला फ्लैट अभी खतरे से खाली है । जैसा कि पहले से तय था, फ्रांज ने ही अब से आधे घंटे पहले यह क्रास बनाया होगा । कैसा बढ़िया विचार है । इससे हम किसी भी ऐसे फ्लैट में जाने से बच जायंगे, जो 'सुरक्षित' न रह गया हो । रोथेकर निर्धारित नुक्कड़ पर मौजूद था । मैं धीरे-धीरे टहलता हुआ उसके आगे निकल गया, एक दूकान की खिड़की मे देखने लगा, और यह भी देखा कि वह मेरे पीछे-पीछे आ रहा है ।

"डॉ० डब्लू० स्कोनबेक" दरवाज़े पर लगे नेमप्लेट पर लिखा था । मैंने घंटी दबाई । एक दुबली-पतली जवान महिला ने दरवाज़ा खोला ।

"हम लोग हर स्टूकर्ट से मिलना चाहते हैं ।"

महिला ने सिर हिलाया ।

"अन्दर आ जाइये," उसने प्रसन्न मुद्रा में कहा ।

एक चौड़ा गलियारा था, जिसमें हिरन की सींगें टंगी हुई थीं और एक स्टैंड पर तिरछा नोकदार आईना लगा हुआ था । हम दो सफ़ेद नक्काशीदार दरवाज़ों को छोड़ते हुये आगे बढ़ गये । एक पर 'प्रतीक्षालय' लिखा हुआ था । उस महिला ने एक दरवाज़ा खटखटाया जिसमें अंधे अपारदर्शी शीशे जड़े हुये थे ।

"अन्दर आ जाइये," एक पुरुष स्वर ने हमें बुलाया। लेकिन यह फ्रांज की आवाज नहीं थी।

एक लम्बा व्यक्ति हमारी तरफ़ आया, जिसके बाल सफ़ेद हो चले थे। क्या कुछ गड़बड़ी हो गई ? लेकिन संकेत तो वहाँ मौजूद था !

"हर कार्ल ?"

उस व्यक्ति ने हमारी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"हाँ, मेरा यही नाम है।"

"आप लोग क्षण भर कृपया बैठ जाइये। फ्रांज एक सेकॅंड में यहाँ हाज़िर हुआ जाता है।"

वह व्यक्ति कमरे से बाहर चला गया।

"विचित्र हाल है," रोथेकर ने फुसफुसा कर कहा और अपना सिर हिलाया।

कार्ल—यह नाम वह केवल फ्रांज़ से ही जान सका। लेकिन मैं भी घबराहट महसूस कर रहा था। हम बैठ गये और थोड़ी देर इंतज़ार करते रहे। तनिक भी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। रोथेकर की उँग-लियाँ मेज पर घबराहट से घूम रही थीं। अंत में फ्रांज़ अन्दर आया।

"फ्रांज़, हमने तो सोचा कि..."

"...कि तुम लोग किसी जाल में फँस गये हो !" फ्रांज़ हँस पड़ा। उसकी भूरी आँखें चमक उठीं। उसने अपनी बाहें हमारे कंधों पर रख दीं।

"मैं दूसरे कमरे में किसी और के साथ बातचीत में व्यस्त था। उसका तुम लोगों से भेंट करना ज़रूरी नहीं था।"

हम मेज के इर्द-गिर्द बैठ गये।

"और तुम दोनों का हाल-चाल क्या है ?"

"हम लोग एकदम ठीक हैं," रोथेकर ने जवाब दिया।

"और घर पर, जान ?"

"उन लोगों ने सादर नमस्कार कहा है। सब ठीक है। मैंने परसों केथी को भी देखा था।"

"उसे मेरा प्यार कहना। और तुम्हारी दुकान कैसी चल रही है?"

"काम-काज सामान्य रूप से चल रहा है। लेकिन..." रोथेकर कुछ कहते-कहते हिचकिचा गया।

फ्रांज ने अपने हाथ मेज पर टिका दिये। उसने हमारी ओर देखा नहीं।

"प्रेउस गिरफ्तार हो गया है—हिल्डो ने मुझे बताया है—" उसने धीमे स्वर में कहा।

सन्नाटा छा गया।

"हिल्डी ने बताया कि वह पोस्टर चिपकाते समय गिरफ्तार हो गया।"

"हाँ।"

"वह पॉप—स्ट्रैसी में—फेल्डपोलीजी बैरेकों में रखा गया है," रोथेकर ने कहा।

वह फ़र्श की ओर देखने लगा। उसकी आवाज़ कितनी थकी हुई-सी लग रही है! उसे आराम करने की बहुत ज़रूरत है।

"वे अभी भी तुम्हारी तलाश ज़रूर कर रहे होंगे," रोथेकर ने कहा।

फ्रांज ने अपने चौड़े कंधे सिकोड़े और हिलाये।

"सम्भव है। अच्छा हुआ कि तुमने हिल्डी को करगेल के संबंध में नहीं बताया। वह बेकार चिंतित होती।"

"उन लोगों ने डैमर्ट को रिहा कर दिया है।"

"सचमुच?"

"निस्सन्देह। हमने सभी साथियों को सावधान कर दिया है। उसे अन्य लोगों से कुछ मतलब नहीं मालूम होता। बहुत परेशान और निराश दिखता है। उन लोगों ने उसे बहुत भयंकर रूप से मारा-पीटा है। और उसकी नौकरी भी छूट गई है।"

फिर सन्नाटा छा गया। रोथेकर मेज़पोश की एक छोर से खेल रहा था।

"तुम लोग गिरफ़्तार लोगों के परिवारों और रिश्तेदारों की तो देख-भाल करते हो न ?"

"हम लोग दो बार उनके लिए धन एकत्र कर चुके।"

"व्यापारियों से भी धन एकत्र किया ?"

"हाँ। उन दो व्यापारियों से जिन्हें हम अच्छी तरह जानते हैं।"

"खाद्यान्न नहीं एकत्र किया ?"

"खाद्यान्न ? नहीं।"

"तुम लोगों को खाद्यान्न एकत्र करने की भी कोशिश करनी चाहिए।" फ्रांज़ अपनी उँगली से मेज़ थपथपाने लगा था। "हम लोगों ने इस कस्बे में काफ़ी खाद्यान्न एकत्र किया है।"

रोथेकर मेरे साथ ही दरवाजे की तरफ़ सिर घुमा कर देखने लगा। बाहर गलियारे में किसी की पगध्वनि सुनाई पड़ रही थी। फ्लैट का दरवाजा बार-बार खुल रहा था और बंद हो रहा था।

"कुछ नहीं है," फ्रांज ने कहा। "शल्य-चिकित्सालय खुल गया है। यही हमारा सब से बड़ा और बढ़िया बहाना है।"

वह अपना सर खुजलाने लगा।

"मैं तुमसे एक और बात पूछना चाहता था—झोंपड़ियों वाली बस्ती से सम्पर्क का अब क्या माध्यम है ? तुम लोग स्ट्रूबेल की जगह लेने लायक कोई आदमी अब तक ढूंढ़ सके या नहीं ?"

झोपड़ियों वाली बस्ती। हम चुप रहे। फ्रांज मेरी ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगा। रोथेकर ही बोल उठा—"तुम हर्बर्ट जीमेक को जानते हो न ?"

"वही, स्ट्रूबेल की बस्ती वाला—वही आदमी जिसे नाजियों ने रोन्टगेन स्ट्रैसी वाले मामले में फँसाया था ?"

"वह मर गया," रोथेकर ने दुखी स्वर में कहा। "केवल इक्कीस वर्ष का था..."

कमरे में सन्नाटा छा गया। फ्रॉंज ने अपना सर अपसे हाथों पर टेक लिया। रोथेकर ने अपना चश्मा उतार लिया और अपने आँखें पोंछने लगा। वह बहुत कृशकाय और चुक-चुका-सा लग रहा था।

"एस. ए. के सिपाहियों ने झोपड़ियों की बस्ती को मोटर-साइकिलों से घेर लिया। जोमेक अपनी झोंपड़ी से निकल कर भागा, तार के बाड़ को फाँद कर जो भी रास्ता मिला उस पर भय से पागल हो कर भागा। यह दोपहर का किस्सा था। पूरी बस्ती ने शिकार के इस भयंकर खेल को देखा—आदमी द्वारा आदमी का शिकार, उसका पीछा..."

फ्रॉंज इस तरह बैठा हुआ था जैसे एक शब्द भी सुन न रहा हो।

"उन लोगों ने उस पर गोली चला दी। गोली उसकी पीठ में लगी। फिर एक मोटर-साइकिल भड़भड़ाती हुई उसके पास गई और एक झटके के साथ रुक गयी। उन लोगों ने बगल में खड़ी एक कार में उसे ढकेल दिया। उसकी माँ पागलों की तरह बेतरह रोती हुई उनके पीछे-पीछे दौड़ी। उसने चारलोटेनबर्ग जिला कचहरी के पास खुली सड़क पर अपनी रक्षा करने की कोशिश की। उसने कार के ड्राइवर के हाथों को स्टियरिंग पर से ढकेल दिया। मोटर उलट गई। ड्राइवर की कई पसलियाँ टूट गईं; वह अभी भी अस्पताल में पड़ा हुआ है।"

रोथेकर मेज की तरफ देखने लगा। केवल उसके होंठ अभी भी हिल रहे थे।

"माइकोवस्की बैरेकों में पहुँच कर उन लोगों ने उसे मार-मार कर उसकी धज्जियाँ उड़ा दीं। वह उन आठ लड़कों में से मौत के घाट उतारा जाने वाला दूसरा लड़का था, जिन्हें एस. ए. के मामलों

के समय उन्हें रिहा करना पड़ा था।...उसकी माँ पागल हो गई है।... वह भाग-भाग कर, दौड़-दौड़ कर हर किसी को बताती फिरती है कि उसके बेटे को कत्ल कर दिया गया है..."

फ्रांज अभी भी बिना हिले-डुले बैठा हुआ था।

"रीखस्टाग का हैमबर्गी सदस्य जार्ज स्टोल्ट कुछ दिन पहले दफ़ना दिया गया !...माइकोवस्की बैरेकों से ही शिकार होने वाला वह एक और व्यक्ति था..."

बाहर घंटी की तीखी आवाज गूँज उठी। हमने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

माइकोवस्की का घृणित अड्डा—जर्मनी में आज कितने ऐसे नारकीय अड्डे होंगे ?

गोरिंग ने कुछ ही दिन पहले एक नया आदेश जारी किया था—

"एस० ए०, एस० एस० और भूतपूर्व सैनिकों के प्रतिक्रियावादी संगठन 'स्टाल्हेम' पर हमला करने वालों को मौत की सजा दी जायगी।"

"हमला करने वाले को मौत की सजा ? तो जो उनसे अपनी रक्षा करे उसे हमलावर कहा जायगा !

"ऐसा लगता है जैसे वे..."उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया, बल्कि हमारे ऊपर से नजर हटा कर कहीं दूर टिका दी।

मैंने उत्तर दिया।

"ऐसा लगता है जैसे सब-कुछ हमारे खिलाफ़ ही हो रहा हो। उन लोगों ने हमारे समाचार-पत्र वितरक को पकड़ लिया। वह दूसरी गली का एक कामरेड था, जिसे सतर्कता बरतने के विचार से इस काम में लगाया गया था , क्योंकि हम सब लोग तो बहुत अधिक जाने-पहचाने बन चुके हैं। हमारी तो समझ में नहीं आता कि वह गिरफ़्तार कैसे हो गया। उसकी गिरफ़्तारी पर पहली बार हमारे मन में यह संदेह उत्पन्न हुआ कि शायद हमारे बीच में कोई जासूस काम कर रहा है।

अब हम अन्य सभी कामरेडों की परीक्षा लेंगे और उन्हें देखें-परखेंगे। गिरफ्तारी के समय सभी उसके पास पाँच अखबार बचे रह गये थे। उन लोगों ने सभी पाँचो खरीदारों को भी गिरफ्तार कर लिया। उसने उनके नाम उन्हें बता दिये थे। उन लोगों ने उसे बुरी तरह पीटा था और पीटते ही जा रहे थे जब तक कि उसने..."

"क्या मैं उसे जानता हूँ ?"

"जार्ज कुपेल। तीन साल की कैद हुई है उसे। अपने फ़ैसले में उन लोगों ने कहा कि चूँकि कभी वह पार्टी का पदाधिकारी रहा है अतः उसके साथ किसी तरह की रू-रिआयत का कोई सवाल ही नहीं उठता।"

फ्रीज उठ खड़ा हुआ, और कमरे में इधर-से-उधर चहलकदमी करने लगा।

रोथेकर ने कहा—"हर बार सोच-विचार में पड़ जाना पड़ता है कि घर जाया जाय या नहीं। और घर पहुँच जाने पर ऐसा लगने लगता है जैसे आग जैसी जलती ईंटों पर बैठ गये हों। मुझे ऐसा ही अनुभव युद्ध-स्थल की खाइयों में होता था। वहाँ तो आश्चर्य में पड़ जाना पड़ता था, कि हम जिन्दा कैसे हैं।"

उसने अपने हाथ ऊपर उठाये और फिर बड़ी असहायता के भाव से उन्हें गिर जाने दिया।

"मेरा एक पूरा परिवार है—और पैसा बिल्कुल नहीं है—" फिर उसकी आवाज़ में कठोरता आ गई—"लेकिन हम मैदान छोड़ कर भागना नहीं चाहते ! तब तक जब तक कि परेशानियाँ हद से न गुजर जायँ।"

"वो महिलायें जिन्हें उद्घाटन समारोह के दौरान ललकारा गया था वे..."

फ्रांज़ घूम कर खड़ा हो गया, मेरी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगा।

"...उनमें से एक को चार महीने की क़ैद की सज़ा मिली है। उन लोगों ने दूसरी वाली स्त्री को नहीं गिरफ्तार किया। उसको आठ महीने का गर्भ था।"

फिर सन्नाटा छा गया।

फिर फ्रांज़ बोला—"हम लोगों ने एक नई चीज़ तैयार की है। मेरे साथ आओ, मैं तुम लोगों को दिखलाऊँगा।"

बीच के दरवाज़े से हो कर हम अगले कमरे में पहुँचे। फ़र्श पर एक मोटा गलीचा बिछा हुआ था। एक छोटी गोल धूम्रपान की मेज़ के इर्द-गिर्द आराम-कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। एक तरफ़ एक शानदार पियानो रखा हुआ था, जिसके ऊपर दीवार पर एक विशाल तैल-चित्र टँगा हुआ था। मैंने एक बार एक नुमाइश में कुछ ऐसी ही चीज़ देखी थी। फ्रांज़ ने गलियारे में झाँका। कोई नहीं दिख रहा था। हमने बाईं तरफ़ एक कोने को घुमा दिया। हमारे पीछे एक दरवाज़ा खुल गया। एक महिला स्वर ने धीमे स्वर में कुछ पूछा। एक पुरुष स्वर ने उसका उत्तर दिया। फ्रांज़ हमें एक छोटे कमरे में लिवा गया। दीवारों पर लकड़ी की टाँडें जड़ी हुई थीं। शीशे की बोतलें, टीन के बक्स और लकड़ी के पेग बिखरे हुये थे। कमरे के बायें कोने में एक छोटी मेज़ रखी हुई थी।

"यही है वह नई चीज़," फ्रांज़ ने कहा।

मेज़ पर लकड़ी का एक तख्ता रखा था। उसके एक तरफ़ टीन का एक पात्र डोरी से बँधा हुआ था, दूसरी ओर दफ्ती का एक टुकड़ा इस तरह से मोड़ा गया था जिससे एक तिकोनिया बन गई थी। कागज़ के तहाये हुये टुकड़े दफ्ती की तिकोनिया में रखे हुये थे। फ्रांज़ ने टीन के पात्र में से कोई चीज़ हाथ में भर ली। दफ्ती की तिकोनिया कुछ संकुचित हो गई।

"बालू है, एकदम साधारण बालू," मुट्ठी खोल कर उसे दिखाते हुये उसने कहा। उसने टीन के पात्र की ओर इशारा किया।

"इस पात्र के तल में एक छोटा छेद है। इस समय उसमें कागज ठूंस रखा गया है। यह पूरा यंत्र ऐसी छत पर फिट किया हुआ, जिसके सामने एक बहुत चलती हुई सड़क है।" फिर मुस्करा कर वह बोला— तुम लोग तो स्कूली बच्चों की तरह उत्तेजित हो रहे हो!"

"और क्या!" रोथेकर ने जवाब दिया।

मुझे उस यंत्र को देख कर बड़ी खुशी हो रही थी। और रोथेकर की तो जैसे उम्र ही वर्षों घट गई थी।

"बिलकुल अंत में छेद में से कागज निकाल लिया जाता है," फ्रांज ने समझाना शुरू किया—"उस छेद से बालू झर-झर कर गिरने लगती है, जिससे इस टीन के पात्र और दफ़्ती के तिकोने का संतुलन खत्म हो जाता है। तिकोना उस पात्र की अपेक्षा अधिक भारी हो जाता है और सड़क की तरफ़ झुक जाता है।"

"वाह, वाह, बहुत अच्छे!"

"हम दो बार इस यंत्र की परीक्षा भी कर चुके हैं। कुछ मिनटों में ही हमारे पैम्फलेट दफ़्ती के तिकोने में से गिर जाते हैं। हम बहुत पतले कागज पैम्फलेटों के लिए इस्तेमाल करते हैं, ताकि वे धीरे-धीरे सड़क पर गिरें और कभी-कभी हवा भी उन्हें कुछ दूर उड़ा ले जाय। यह बात जरूर है कि काम शुरू करते समय यंत्र बहुत संतुलित होना चाहिए।"

"हम लोग भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं, जब माहौल थोड़ा शांत हो जाय।"

रोथेकर ने हामी के भाव से सिर हिलाया।

"यह बड़ा सीधा-सादा यंत्र है और बहुत सुरक्षित भी। आओ, हिल्डी से पूछा जाय कि यह यंत्र किस तरह चलता है, ठीक है न ?"

"बिल्कुल।"

घर लौटते समय मैं एक समाचार-पत्र स्टाल के सामने रुक गया। हम लोग एक-एक कर के घर गये। रोथेकर पहले चला गया।

अखबार की हेडिंग थी—

पुलिस के धावों के नतीजे !

कल १२ बजे दिन में एकाएक ट्रेनों और मोटर कारों में जो तलाशियाँ ली गई उनके ठोस नतीजे निकले हैं। इन तलाशियों में विप्लवकारी राजद्रोहपूर्ण पर्चे मिले हैं...कम्युनिस्ट संदेशवाहक...

छ: अन्य लोग भी यह समाचार पढ़ रहे थे। मैंने छिपी नज़र से उन लोगों के चेहरों की ओर देखा। वे जैसे जबरन इस समाचार के प्रति उदासीनता प्रदर्शित करने की कोशिश कर रहे थे। अगर वे नाज़ी होते तो उनके चेहरे इतने भावहीन न होते। और अगर वे नाज़ी होते तो अपने संतोष की अभिव्यक्ति के लिए समाचार पढ़ कर कुछ नुकताचीनी जरूर करते होते।

कल मैं बड़ी मुसीबत में फँस गया था। मैं साइकिल से एक कामरेड के घर जा रहा था, जो पड़ोस के कस्बे में रहता है। अपने अखबार के लिए मुझे उससे एस० ए० के संबंध में कुछ समाचार और सूचनायें लेनी थीं। जब मैं पहुँचा तो वह अपनी पत्नी के साथ रात का भोजन कर रहा था। उन लोगों ने इतना इसरार किया, इतना इसरार किया कि मैं अभिभूत हो उठा और मुझे उनके साथ खाने पर बैठना पड़ा।

हम एक-दूसरे को गैरकानूनी काम करने के अपने अनुभव बताते रहे। हम बहुत देर तक आगामी रीखस्टाग गोलीकांड के मुकदमे पर भी बहुत विचार-विमर्श करते रहे। उस कामरेड ने बताया कि उन लोगों ने नियमित रूप से रेडियो सुनने की सायंकालीन गोष्ठियाँ शुरू कर दी है। उनके पाँच-पाँच, छः-छः व्यक्तियों के अनेक दल थे जो जर्मनी के सही समाचार, विशेष रूप से आगमी मुकदमें का हाल, जानने के लिए मास्को रेडियो स्टेशन सुना करते थे। जर्मनी के संबंध में विदेशों में भी बड़ी तीव्र भावनाये जागृत हो गई थीं। जाने-माने विदेशी वकीलों ने मिल-जुल कर एक कमेटी बनाई थी, जिसने इंगलैंड में एक जवाबी मुकदमा चलाने का निश्चय किया था। लिखित दस्तावेजों प्रमाणों की एक पुस्तक तैयार की जा रही थी। उस पुस्तक में छपे दस्तावेज यह सिद्ध कर देंगे कि असली अपराधी और असली उपद्रव करने वाले नाजी ही थे। उसने मुझे यह भी बताया कि दो सोशल डिमाक्रेट साथियों ने अपने निवास-स्थान और अपने रेडियो-सेटों का इस्तेमाल करने देने का प्रस्ताव रखा है। मैंने उसे बताया कि हम इस तरह की रेडियो सुनने की सायंकालीन गोष्ठियाँ आयोजित करने में असमर्थ हैं; क्योंकि हम बहुत अधिक खतरों से घिरे हुये हैं।

मुझे उससे बहुत-सी नई बातें मालूम हुई। लेकिन जब मैंने अपनी घड़ी देखी तो दस से ज्यादा बज चुके थे। मैं बड़े धर्मसंकट में पड़ गया। इतनी रात गये, और वह भी गैरकानूनी चीजें ले कर जाना होगा? लेकिन अंत में मैंने एक तरकीब निकाल ही ली। मैंने अगली पहिया की हवा बिलकुल निकाल दी और टायर भी निकाल डाला। फिर मैंने अन्दर ट्यूब के साथ गैरकानूनी चीजों को लपेट दिया, टायर चढ़ाया और फिर से हवा भर ली और चल पड़ा।

गर्मी की वह रात बड़ी शांत थी। जरा देर बाद ही मैं एक चौड़ी सपाटी सड़क पर घूम पड़ा। कांक्रीट से बनी साइकिलों वाली पटरी

पर मेरी साइकिल जैसे अपने आप लुढ़कती चली जा रही थी। फिर भी मुझे बड़ा लम्बा रास्ता तय करना था। सड़क के दोनों तरफ़ गरीब मजदूरों की झोंपड़ियों की बस्तियाँ थीं। रंगीन चीनी लालटेन कुछ झोपड़ियों के सामने जलती टँगी थीं। कहीं कोई मैंडोलिन बजा रहा था। सड़क के बीच के हिस्से मे वृक्षों की दोहरी पंक्तियाँ थी जो साइकिल-चालकों की पटरी के बहुत निकट थीं। बीच-बीच में सूनी बेंचे पड़ी थीं। सड़क के लैम्पों की रोशनी में यह धुंधला हरा कुंज एकदम नकली-सा लग रहा था। कितनी शांति थी वहाँ। और वह भी शहर के बीचोबीच। मैं केथी के साथ इधर निकलूँगा। हम लोग नहायेंगे, क्रीडा करते फिरेंगे। कितना मज़ा आयेगा। साइकिल की पहियाँ कितनी तेजी से घूम रही थीं। मेरे पैर पैडिलों को यंत्रवत चलाते जा रहे थे। कुछ प्रेमी-जोड़े बेंचों पर बैठे हुये थे। उड़ती हुई नजर से मैंने देखा, पटरी पर दाहिनी तरफ़ कुछ लोगों का एक काला-सा दिखता दल खड़ा था। इसके अलावा पूरा क्षेत्र रेगिस्तान-जैसा दिख रहा था। लेकिन एक दिन सब-कुछ बदल जायगा। भय ने मेरे विचारों के तारतम्य को तोड़ दिया। एकाएक दो बार, तीन बार, चार बार विस्फोट हुये। क्या टायर बर्स्ट हो गया? यह तो अंतिम आघात ही साबित होगा। मेरे पैर अभी भी साइकिल की पैडिलों को घुमाते जा रहे थे। मैंने सर झुका कर टायर को देखा। टायर तो बिल्कुल ठीक था। मेरे पीछे की तरफ़ से सीटी की-सी आवाज गूँज उठी। कोई उस तरफ़ से बुला रहा था। मैंने घूम कर देखा। कुछ काली आकृतियाँ मेरे पीछे-पीछे पटरी पर दौड़ रही थीं। क्या वे मेरे लिए दौड़ रहे हैं? मैं फ़ौरन बोल उठा—"रुको! रुको!" और साइकिल की ब्रेक लगा कर उछल कर साइकिल से उतर पड़ा। 'एस० ए० वाले! आखिर उन लोगों ने तुम्हें पकड़ ही लिया!' मेरे मस्तिष्क में ये विचार बिजली की-सी तेजी से कौंध गये। वे अब निकट आते जा रहे थे। मैंने गिना, पाँच, छः, सात आदमी थे। इस

आघात से जैसे मेरे मस्तिष्क को लकवा मार गया। सामने वाले दो सिपाहियों ने मेरी तरफ़ रिवाल्वरें तान दीं। मेरे हाथों ने साइकिल की हैंडिलों को और भी ज़ोर से दबोच लिया।

"क्यों बे सुअर के बच्चे, तुझे पुकार गया तो तू फ़ौरन रुका क्यों नहीं ?" एस० ए० के एक सिपाही ने जैसे चीख कर मुझसे कहा।

वह अभी भी मेरी ओर रिवाल्वर ताने हुये था। धातु का वह छोटा-सा हथियार चमक रहा था।

"...मैं समझ नहीं पाया...कि आप लोग मुझे पुकार रहे हैं..."

"अबे सुअर के बच्चे, जब कोई एस० ए० का सिपाही पुकारे, तो तुझे फ़ौरन रुक जाना चाहिए !"

"इसके जबड़े घूँसों से तोड़ दो—मारो इसके जबड़ों पर घूँसे-घूँसे !" उसके सब से नज़दीक खड़े एस० ए० के सिपाही ने चीख कर कहा। उसने अपनी रिवाल्वर की नली मेरे सीने पर धँसा दी।

"पहले इसकी तलाशी लो," पहले आदमी ने रूखे स्वर में कहा। फिर मुझसे बोला—"साइकिल फ़र्श पर गिरा दे सुअर ! और अपने हाथ ऊपर उठा !"

मैंने उसकी आज्ञा का पालन किया। उसने कहा 'साइकिल फ़र्श पर गिरा दे। यानी वे यह सोच भी नहीं सकेंगे कि...।' मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। लेकिन मैंने अपनी घबराहट पर नियंत्रण कर लिया था। उन लोगों ने मेरी पतलून टटोली, विशेष रूप से घुटनों के ऊपर के चौड़े हिस्से को देखा।

"अपनी जेबें खाली करो !"

"मैंने वैसा ही किया। सड़क पर एक भी आदमी नहीं दिख रहा था। अगर कहीं वे...? और अगर ये लोग पूछेंगे कि मैं रहता कहाँ हूँ तब ? और अगर ये लोग पूछ बैठे कि मैं इस कस्बे में क्या कर रहा था तब ? मेरे मस्तिष्क में बड़ी तीव्र गति से विचार घूम रहे थे। मुझे

चाभियों का गुच्छा, कंघा और दोनों रुमाल फिर से जेब में रखने की इजाजत मिल गई। मैं अपने कपड़ों में छिपा ही क्या सकता था ? मैंने केवल पतलून और टेनिस खिलाड़ियों वाली कमीज पहन रखी थी। मैंने सोचा इस समय अत्यधिक भयभीत होने का नाटक करना ही सब से अच्छा होगा। तब उन्हें अपनी महत्ता का विश्वास हो जायगा। इस बीच वे घूँसे से मेरा जबड़ा तोड़ना भूल गये थे। लेकिन उनकी रिवाल्वरें मेरी ओर अभी भी तनी हुई थीं। वे एक अर्द्धगोलाकार वृत्त बना कर मेरे इर्द-गिर्द मुझे घेरे खड़े हुये थे। क्या वे समझ रहे थे कि मैं भाग निकलूँगा ? बेवक़ूफ़ ! मेरे सामने बाईं तरफ़ खड़ा सिपाही उन लोगों का अफ़सर मालूम होता था। उसकी वर्दी की कालर पर एक सितारा चमक रहा था—उस टुकड़ी का सरदार था वह।

उसने रिवाल्वर की हैंडिल मेरे कंधे की हड्डी पर गड़ा दी।

"तुम इतनी देर थे कहाँ ?"

"...मैं अपने दोस्तों के साथ था...एक जन्मदिवस की पार्टी थी...।" मैंने हकलाते हुए जवाब दिया।

वह मेरी ओर क्षण भर धमकी भरी दृष्टि से देखता रहा। और अन्य सिपाही ? क्या वे उसके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे ?

"तो भाग जाओ।" उसकी टुकड़ी का सरदार जोर से बोला। "लेकिन अब तुम समझ गये न ? जब कभी कोई एस० ए० का आदमी तुम्हें पुकारे तो तुम्हें फ़ौरन रुक जाना चाहिए। समझ गये ?"

"जी हाँ," मैंने घबराये स्वर में कहा।

टुकड़ी के सरदार ने अपने साथियों की ओर देखा और मुस्करा उठा। उसकी निगाहें कह रही थीं, इसकी तो भय से जान निकली जा रही है। अन्य सिपाही भी मुस्करा दिये।

मुस्कराने दो, मैंने सोचा, मैं क्यों परवाह करूँ इसकी। मैं चुप रहा।

"जाओ ! भागो जल्दी !" वह फिर मुझ पर जोर से चिल्लाया ।

मैं अपनी साइकिल ढकेलता हुआ कुछ कदम आगे बढ़ा, और फिर साइकिल पर सवार हो गया । मैंने सोचा, बहुत तेजी से साइकिल चला कर भागना उचित नहीं है । मुझे शांत रहना चाहिए । वे निश्चय ही अभी मेरी ओर ही देख रहे होंगे ।

...और टायर में छिपी वह चीज़...।

रोथेकर ने मुझे बुलाया था । उसे मिलने वाली सरकारी सहायता लेने के लिए हम दोनों साथ-साथ बेरोजगार दफ्तर जाना चाहते थे । उसका कहना था कि यदि मैं उसके साथ-साथ चलूँगा तो कोई खतरा नहीं पैदा होगा । बेरोजगार दफ्तर में हमेशा जैसी ही भीड़ थी, और डेस्कों पर बैठे अधिकारी इतने व्यस्त थे कि उन्हें किसी व्यक्ति की ओर ध्यान देने की फुर्सत न थी । उसने पिछले कुछ हफ्तों में बताया था कि अब बेरोजगार लोग नाजी आतंक से पहले की तरह भयभीत न थे, और उन्होंने अब हिटलर की तानाशाही की भी आलोचना करनी शुरू कर दी है, हालाँकि ऐसा वे बड़ी सावधानी से ही करते थे । हम लोगों ने अपने अवैध अखबार में भी इसकी खबर छापी थी ।

हम जब बिजली घर के बगल से गुजरने लगे तो रोथेकर ने मुझे कुहनी मारी । बिजली घर और झोपड़ियों की बस्ती के बीच वाली संकरी गली में, जिससे हो कर फ्राँज भागा था, एक बिजली का खम्भा लगा था, जिस पर गली का नाम लिखा था—'जॉरिट्ज़वेग' । इस नये नाम को वहाँ लगे बहुत दिन नहीं हुये थे । नाजी उच्च पदाधिकारियों को इस बात का बहुत देर में ख्याल आया कि माइकोवस्की और जॉरिट्ज के बीच जिस भ्रातृभाव की दुहाई देते उनकी जबान नहीं

सकती थी उसे और जिस पुलिसमैन जॉरिट्ज को 'विजय रात्रि' को अपनी जान गँवानी पड़ी थी उसके प्रति उनके सम्मान को किसी व्यक्त प्रतीक का रूप दिया जाना चाहिए। अतः उन्होंने माइकोवस्की की याद में बनाई गई स्मारक-शिला के नीचे जॉरिट्ज के लिए भी ताँबे की एक प्लेट लिख कर लगा दी थी। उसका उद्घाटन तैंतीसवीं टुकड़ी और पुलिस की एक टुकड़ी की परेड के साथ किया गया।

हम बर्लिनर स्ट्रॅसी की ओर मुड़ गये। रोथेकर ने चारों तरफ़ नजर दौड़ाई।

"अरे, अरे, वह तो..."

निस्सन्देह वह एडी ही था। उसने हमें पहले ही देख लिया था और हमारी ही ओर चला आ रहा था।

"नमस्कार, दोस्तो, नमस्कार!" उसने कहा और हमसे हाथ मिलाया। क्या गजब का हाथ मिलाया था उसने!

"सभी लोग डिनर वाला कपड़ा पहने हुये है?"

एडी एक नीला सूट पहने हुये था और हल्की फेल्ट हैट लगाये हुये था। उसकी चारखानेदार कमीज की कॉलर से एक रंग-बिरंगी टाई लटक रही थी। उसने अपनी काँच वाली आँख भी पहन रखी थी।

"आप जो कुछ भी करते हैं उसे तो स्वयं देख ही सकते हैं।" और वह मुस्कराने लगा।

उसने मुझे आँख मारी।

"हम लोगों के लायक कोई 'काम' है?" रोथेकर ने पूछा।

एडी अपना सर कभी इधर कभी उधर झुका कर उसकी ओर बड़ी धूर्ततापूर्ण दृष्टि से देखने लगा।

"नहीं, आज नहीं। मैं आज तो अपनी नन्हीं गुड़िया के पास जा रहा हूँ। आज उसकी छुट्टी है..."



"तो यह मामला है !" मैं बोला और हँसने लगा। उसने एक बार उस लड़की के बारे में मुझे बताया था। वह लड़की कहीं खाना बनाने का काम करती थी। एडी ने उसका नाम 'सेंडविच मशीन' रख छोड़ा था।

"भाई हम लोगों को भी कभी-कभी तो मनोरंजन की जरूरत होती ही है," सर हिलाते हुये एडी ने कहा। उसने अपनी काँच वाली आँख को रूमाल से पोंछा। "यह तो आग है आग, भयंकर लपटों जैसी, लेकिन मैं इसके बगैर रह नहीं सकता।" और फिर बोला—"अच्छा दोस्तो, नमस्कार, मैं चलूँ। 'नन्हीं गुड़िया' को ज्यादा देर इंतजारी करवाना ठीक नहीं !"

हम अपने रास्ते पर चलते रहे। चारलोटेनबर्ग टाउन हॉल के बगल से हम आगे निकल गये। सड़क के दोनों ओर छोटी-छोटी खिड़कियों से दो विशाल स्वस्तिक झंडे टेढ़े-मेढ़े लटक रहे थे। बाईं तरफ एक काला-सफेद-लाल झंडा था। पत्थर की चौड़ी पटरियों पर लोग तेजी से आ-जा रहे थे। सड़कों की पटरियाँ रोजमर्रा के जीवन से अनुप्राणित थीं, काफी भीड़-भाड़ थी। कोई भी आदमी झंडों की ओर नहीं देख रहा था। केवल हमीं लोग ऐसे थे जो इन झंडों को देख कर क्रोध से बावले होने लगते थे और जिनके चेहरे गुस्से से लाल हो जाते थे। क्या अन्य लोग जो कुछ जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार कर लेते हैं ? क्या यह लोगों के जीवन का एक अंग बन चुका है, ऐसा अंग जो अब कभी परिवर्तित न हो सकता हो ?

टॉउन हॉल के ठीक पीछे विलहेल्मप्लाट्ज़ में बेरोजगारों के छोटे-छोटे समूह धूप में हमारे सामने ही खड़े थे। उन्हें उनके फटे-पुराने कपड़ों और चीथड़े जूतों से एक नजर में ही पहचाना जा सकता था। यह दृश्य मन में कुछ सुखद स्मृतियों को ताजा कर देता है। इसी

समय कभी हमारा समूह भी यहाँ खड़ा हुआ करता था और अन्य लोगों से बातचीत, बहस-मुबाहिसा किया करता था।

बेरोज़गारों का दफ्तर अगली सड़क पर था। सैकड़ों बेरोज़गार इस क्षेत्र में घूमते रहते थे। हिटलर की सरकार कायम होने के बाद पहले कुछ महीनों तक तो कोई यहाँ खड़े होने की भी हिम्मत नहीं करता था। वे यहाँ खड़े होते तो अधिकारियों के मन में जाने कितने शक-सुबहे पैदा हो जाते। हम एक समूह के निकट रुक गये। मैं साफ़-साफ़ देख सकता था, कि काफ़ी संख्या में लोग बातचीत में भाग ले रहे थे। अब वे अपनी जेबों में हाथ डाले एक काले बालों वाले दुबले-पतले व्यक्ति की बातें सुनते खड़े थे। वह बोलता जा रहा था, बोलता जा रहा था, और अन्य लोग भी उसकी मायावी बातों में मज़ा ले कर उसे बढ़ावा दे रहे थे।

"...और जब मैंने लाइन में डोर खींची"—उसने दाहिने हाथ पर दूरी नापते हुये कहा—"तो एक इतना बड़ा डंडा निकल पड़ा, बाइबिल जैसी सच बात है यह!" अन्य लोग ज़ोर से हँस पड़े। उनकी हँसी बहुत ज़ोर की थी। किसी का ध्यान हमारी ओर आकृष्ट नहीं हुआ, लेकिन उनकी दशा देख कर हमारे मन को पीड़ा हो रही थी।

"लगता है इन लोगों ने भय और आतंक के पहले दौर पर काबू पा लिया है, है न?" रोथेकर ने कहा। जो छोटी गली बेरोजगारों के दफ्तर के काउन्टरों तक जाती थी उसमें ठेलागाड़ी वाले एक-के-पीछे-एक लाइन लगाये खड़े थे। खोंचेवाले बाँग लगा-लगा कर बेरोज़गारों की पंक्ति का ध्यान अपने माल की ओर आकृष्ट करने की कोशिश कर रहे थे। कुछ दूकानों के सामने काफी भीड़ थी। 'रोज़मर्रा के इस्तेमाल के लिए नये आविष्कारों' का प्रदर्शन जारी था। यहाँ व्यापार छोटे-छोटे सिक्कों के माध्यम से ही होता था। खरीदारों की क्रय-शक्ति के अनुसार ही व्यापार को भी अपने को ढालना ही पड़ता है। पाँच रेज़र ब्लेड

दस पेनी में, डब्बों में भरा 'बढ़िया बछड़े का मांस' भी उसी कीमत में। नई 'पेटेन्ट' टाई की पिन पंद्रह पेनी में। बीच-बीच में चंद फल बेचने वाले भी थे, और एक दूकान ऐसी भी थी जिस पर बड़े गर्व से बड़े-बड़े अक्षरों में लिख कर टँगा हुआ था 'चन्द मिनट इन्तज़ार कीजिये, जूतों की मरम्मत करवाइये'। नकली रबड़ के सोल की कीमत एक मार्क थी। वे देखते-ही-देखते जूतों में जड़े जा सकते थे। एक छोटे खेमे के नीचे बैठे ज्योतिषी की ओर इशारा कर के रोथेकर ने कहा—"अभी भी बहुत से मूर्ख गधे इन धोखेबाज़ों का दरवाज़ा खटखटाते फिरते हैं।" ज्योतिषी को लोगों की काफी बड़ी भीड़ ने घेर रखा था, जिनमें अधिकांश स्त्रियाँ थीं। एक रंगीन कपड़ा उसके सिर पर पगड़ी के रूप में बँधा हुआ था और उसने एक ऐसा लबादा पहन रखा था जिस पर सफ़ेद पन्नी के सितारे चिपके हुये थे। वह बराबर एक जन्जीर खींच रहा था जिससे शीशे के एक गोले के अन्दर एक छोटी-सी मानव-आकृति ऊपर-नीचे नाच रही थी।

'ऐम्सटर्डाम का नाटा
चतुर और चालाक
जो भी जानता है
सब-कुछ बताता है !'

एक बड़े बोर्ड पर लिखा था—"भविष्य को देखिये, भविष्य को जानिये—केवल दस पेनी में !" कुंडलियों का एक डब्बा उसी के पास रखा हुआ था।

ये ज्योतिषी तो जैसे ज़मीन में से कुकुरमुत्ते की तरह उग आते थे। फ़ैशनेबुल कस्बे 'कर्फ़ुर्सटेन्डम' में तो विशेष रूप से ज्योतिषी काफ़ी बड़ी संख्या में थे। वे वहाँ अपने आपको 'भविष्य बताने वाला वैज्ञानिक' कहते थे, और उनकी फ़ीस भी अपेक्षाकृत ऊँची थी। नया थर्ड रीख तो

ज्योतिष की दर्जनों पत्रिकायें भी प्रकाशित करता था। हेनुसेन ने एक नई विचारधारा ही चला दी थी।

बेरोज़गार दफ़्तर एक ऐसे कारखाने की इमारत में था, जो बंद हो गया था। हमने पहला टूटा-फूटा सेहन पार किया। दाहिनी तरफ़ बने निचली मंज़िल के कमरों में तेज़ रोशनी चमक रही थी। भाप से चलने वाले एक आपरेटस के लिए निर्मित यह एक प्रयोगशाला थी। उसके निकट लोगों की लम्बी कतारें थीं। वर्षों से बेकारी झेलने वालों जैसी गहरी निराशा के भाव अभी भी उनके चेहरों पर अंकित नहीं हुये थे। उनके कपड़े भी अभी काफ़ी अच्छी हालत में थे। यह उन लोगों का विभाग था, जो अभी थोड़े ही समय से बेरोज़गार हुये थे। वे कुछ ही सप्ताह के अन्दर सहायता केन्द्र में पहुँच जायेंगे। रोथेकर को इसके बाद वाले दूसरे कक्ष में जाना था, जहाँ गैरतकनीकी मज़दूरों का विभाग था। उसने तकनीकी मज़दूरों के लिए निश्चित कार्यालयों में मारे-मारे फिरने से बचने के लिए स्वयं ही अपना नाम गैरतकनीकी मज़दूरों के रजिस्टर में दर्ज करवाया था। भुगतान-कक्ष के सामने लकड़ी का सायादार एक पुराना-धुराना टूटा-फूटा कक्ष था, जो सहायता केन्द्र से दान पाने वालों के लिए बनाया गया केन्द्रीय रसोईघर था। बेरोज़गार लोग इसे 'चम्मच दान' कहा करते थे। दरवाज़े के ऊपर एक स्वस्तिक झंडा लगा हुआ था। शीशे की खिड़की के पीछे एस० ए० की वर्दियाँ दिख रही थीं। एक घंटे से भी कम समय में ही वहाँ बेरोजगारों की भारी भीड़ जमा हो जायगी। सहायता केन्द्र 'खाद्य-पत्र' बाँटता था, जिसे दिखा कर लोग चंद सिक्कों में ही भोजन का एक पात्र भर कर खाना पाते थे। निम्न मध्यम-वर्ग के बहुत से लज्जायुक्त चेहरे वाले लोग भी यह भोजन प्राप्त करने वालों में होते थे। वे दोहरी हैंडिल वाले बर्तन में अपना खाना घर ले जाते थे। पहले कभी-कभी बेरोज़गार अपने भोजन-पात्र लिए-दिये टाउन हॉल में आल्डरमैन के पास जा कर विरोध भी प्रकट

किया करते थे। वह खाना गहरे भूरे रंग का तरल पदार्थ होता था जिसकी सतह पर आलू तथा अन्य सब्जियों के चंद टुकड़े तैरते होते थे। इस भोजन में मांस का नाम-निशान भी नहीं रहता था, और अकसर भोजन अधपका हुआ करता था। टाउन हॉल को विरोध प्रकट करने जाने वाले जुलूसों का सिलसिला खत्म हो चुका था, लेकिन सड़े-गले, रद्दी भोजन का वितरण अभी भी जारी था।

हस्ताक्षर कराने वाला कार्यालय काफी भीड़ से भरा हुआ था। वह एक गंदा भूरा-सा कमरा था। दीवारों पर बड़े-बड़े अक्षरों में कहावतें अंकित थीं: 'ईमानदारी ही सब से अच्छी नीति है,' और 'निरंतर घूमते पत्थर के चक्के में काई नहीं लगा करती'।

कमरे के मध्य में नीची बेंचों की लम्बी कतारें लगी हुई थीं। वे सभी आदमियों से भरी हुई थीं। लोग बेंचों पर बैठे एक-दूसरे से बहस-मुबाहिसा कर रहे थे। अन्य लोग फटे-पुराने कार्ड सीटों पर पटक रहे थे। सैकड़ों लोगों की मधुमक्खियों की भनभनाहट-जैसी आवाज़ हॉल मे गूंज रही थी। हवा धुयें तथा तम्बाकू और पसीने की गंध से भारी हो गई थी। सामने लकड़ी के घेरे के पीछे अधिकारीगण बैठे थे। उनमें से एक ने एस० ए० की वर्दी पहन रखी थी। वे थोड़ी-थोड़ी देर के बाद नाम पुकारते थे। दोनों ओर अपने कार्ड पर मुहर लगने का इंतज़ार करने वाले लोगों की लम्बी कतारें खड़ी हुई थीं। रोथेकर भी एक पंक्ति में शामिल हो गया।

"मैं यहाँ बगल में तुम्हारा इंतज़ार करता हूं।"

"ठीक है।" उसने स्वीकारात्मक भाव से सिर हिलाया।

वह स्थान षडयंत्रकारियों की एक विचित्र सभा-जैसा प्रतीत हो रहा था। निचली बेंचें पड़ी हुई थीं, जिन पर लोग लगभग दुबके हुये-से बैठे थे। धुये के बादल और वातावरण को नीरस भनभनाहट से भर देने वाली फुसफुसाहटपूर्ण बातचीत। यहाँ-वहाँ कुछ के कपड़े अच्छे थे, लेकिन

उनमें से अधिकांश के कपड़े पुराने थे और पैबन्दों से भरे हुये थे। युवा चेहरे, बूढ़े चेहरे, बिना दाढ़ी बने, सभी पर वही भय और मनहूसियत का भाव था। मैं चन्द कामरेडों को पहचानता था। उनमें से एक मुझसे परे देखता हुआ मुस्कराया। वह अभी हमारे सुरक्षा संगठन की नीली टोपी पहने हुये था। टोपी की चोटी के बीच में एक गहरा नीला चिन्ह था, जहाँ का नीला कपड़ा अभी बदरंगा नहीं हुआ था। फ़ासिस्ट-विरोधी बिल्ला वहाँ पर पिन से लगा हुआ था। चन्द लोगों के सिर पास-पास थे। उनके भावों और हरकतों से मुझे मालूम हो गया कि वे किस सबंध में बातें कर रहे थे। राजनीति! क्या एस० ए० अधिकारियों ने इस सभा की अनुमति दे दी थी? क्या उनके गुप्तचर यहाँ की बातें उन तक पहुँचाते थे? लेकिन अन्य लोग निश्चय ही अपनी बातें छिपा रहे थे। उन डेस्कों में से एक पर रखे एक बोर्ड पर बड़े-बड़े अक्षरों में चाक से लिखा हुआ था :

खेतिहर मजदूरों की आवश्यकता है!

उस डेस्क तक कोई नहीं गया।

मेरे कंधे पर एक हाथ आ टिका। मैं झटके से घूमा।

"तुम यहाँ, जान!"

"और तुम, कर्ट?"

कर्ट ने हाथ मिलाया और मुझे एक बेन्च के पास खींच ले गया। वहाँ तीन आदमी पहले ही से बैठे थे। उन्होंने बातें करना बन्द कर दिया। एक व्यक्ति आत्म-सजगता के भाव से अपना पाइप भर रहा था। उसने कर्ट को प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"बात जारी रखो," कर्ट ने कहा--"ये ठीक आदमी हैं।"

तीनों ने अपने सिर फिर सटा लिये।

" 'काम' कैसा चल रहा है, जान ? इन दिनों हमने तुम्हारे बारे में कोई बात नहीं सुनी ।"

"क्या सुनने की आशा थी तुम्हें ? आज अच्छा, कल बुरा । मैं सर-दार नहीं हूँ । सब-कुछ तो मैं जानता नहीं ।"

कर्ट ने अपनी टोपी पीछे ढकेल दी । वह सहानुभूतिपूर्वक हँस पड़ा । कितने अच्छे दांत थे उसके ! वह हमेशा की तरह 'भूरा' और स्वस्थ दिख रहा था ।

"हाँ, यह बात तो ठीक ही है," उसने कहा ।

स्ट्रूबेल के झोंपड़ी वाले मुहल्ले का निवासी कर्ट एक युवा कामरेड था । पुराने जमाने में हमने अकसर पोस्टर चिपकाये थे और दीवारों पर पेंटिंग की थी । लेकिन पिछली बार जब मैं उससे मिला था, तब से एक लम्बा अरसा बीत चुका था । अब उस मुहल्ले से हमारा सम्पर्क टूट गया था, जहाँ मैं स्ट्रूबेल के साथ-साथ गया था । हालांकि कर्ट को उस सब के बारे में कुछ मालूम नहीं था । अब यह नियम था—हम अपनी गली में चीजों का प्रबन्ध करने और अपनी सामग्री छापने के लिए केवल दो-दो और तीन-तीन की संख्या में ही मिलते थे । अन्य कामरेड पाँच की टोली में होते थे, और फिर हम पूर्ण परिणाम प्राप्त कर लेते थे ।

"तुमने स्ट्रूबेल के बारे में कुछ सुना है ?" कर्ट ने प्रश्न किया ।

"नहीं, कुछ नहीं ।"

"लेकिन मुझे मालूम है ।"

"तुम्हें मालूम है ?"

"हाँ, वह कोनिग्सवुस्टरहोसेन में है । उसने स्वयं ही मिट्टी की एक झोंपड़ी बना ली है । वह बस वहाँ लटका हुआ है—लेकिन उसके पीछे अब कोई 'सूत्र' नहीं बचा है ।

"तुमने उसे देखा है ?"



"हाँ, मैं अपनी साइकिल पर सवार बाहर निकला था।" कर्ट रूखे-पन से हँसा। "उन्होंने उसे 'रोटी और मजदूरी' दी थी! खेत पर भी उसकी मदद कर रहे थे। बेगार। लेकिन उसे तो यह करना ही था। और मजदूरी! हफ्ते में तेरह मार्क, साथ में बीबी और एक बच्चा। यहाँ वह वसीके के रूप में भी लगभग इतनी ही रकम पा रहा था।" वह नजदीक आ गया।

"मैं तुम्हें बतलाता हूँ कि वे उन्हें काम पर लगाये रखने के लिए घूमा करते हैं। वे गाँव के तालाब की सफाई करते हैं और कीचड़ हटाते हैं। खेतों से मिट्टियाँ ला कर सड़कें तैयार करते हैं!" उसने उसके घुटने पर हाथ मारा। "और समझा जाता है कि यह किसानों की मदद है। तुम उन्हें कोसते हुये सुन सकते हो। वे इसके कारण पागल हो उठे हैं, मैं बतलाता हूँ! क्योंकि उन्हें इसका मूल्य चुकाना पड़ता है। तालाब की तलहटी में अगर मिट्टी रहती है तब भी बतख उसमें तैरते हैं, और फिर किसानों के लिए तो सड़कें काफी अच्छी थीं।" उसने रूखे-पन से आगे कहा।

"लेकिन यह बात हमारी समझ में नहीं आती। यह सरकार द्वारा दिया गया रोजगार है!" मैंने व्यंग्यभाव से उत्तर दिया।

आशा थी कि वह और विस्तार से बातें जानता था। उन्हें हम अपने अखबार में इस्तेमाल कर सकते थे। कर्ट के पड़ोसी ने अवश्य ही अन्तिम चन्द शब्द सुन लिये होंगे। उसने अपना सिर घुमाया। उसके बाल सुर्ख लाल रंग के थे और उसका चेहरा चकत्तों से भरा था।

"क्या उन्होंने उसे यहाँ से बाहर भेज दिया था?"

"वह अपने आप ही बाहर चला गया था। उसे जाना पड़ा था। यहाँ उसे अच्छा नहीं लग रहा था।" कर्ट ने उत्तर दिया।

लाल बालों वाले ने सामने रखे बोर्ड की ओर इशारा किया। "खेत पर मजदूरों की आवश्यकता है!" उसने कहा—"बड़ा अच्छा लगता है

यह, है न ? उन्होंने हजारों को बाहर भेज दिया है। अगर वे नहीं जाते तो वे उनकी वसीके की छोटी-सी रकम भी बन्द कर देते हैं। बदमाश, धोखेबाज ! और एक दिन आदमी देखता है कि उसका नाम बर्लिन के रजिस्टर में से काट दिया गया है ; वह बर्लिनवासी नहीं रह जाता।"

"क्या ? कुशल मजदूर भी ?"

"बेशक। इस तरह कृषिशाला का मजदूर बनने में ज्यादा समय नहीं लगता। तुम वही कर देते हो जो वे तुमसे चाहते हैं, और फिर बर्लिन वापस आने के लिए उन पर रोक लगा दी जाती है।"

कर्ट ने वक्तृत्व भाव से हरकतें कीं। "नये आये पूर्वी यहूदियों को नगर के बाहर निकाल दो ! यह बात वे कहा करते थे। अब वे बर्लिन में पैदा हुये लोगों को ही बाहर कर रहे हैं !...और परिवारों का क्या होता है ?"

मैंने सतर्कतापूर्वक चारों ओर देखा। अन्य दो लोग कुछ और से बात कर रहे थे। कोई खतरा नहीं था। यदि...लेकिन कोई हमारी ओर ध्यान नहीं दे रहा था।

"उन्हें इस सब की क्या परवाह—और परिवार ?" लाल बालों वाले ने उत्तर दिया—"मैं कुछ परिवारों को जानता हूँ, जिन्हें वे अभी ले गये हैं। बच्चों को वे घर में छोड़वा देते हैं और औरतों को खेत पर। अधिकांश तो पहली ही बार जाते समय अपने परिवार अपने साथ लेते जाते हैं। और फिर नाजी आश्वस्त हो जाते हैं कि उन्हें उनसे छुटकारा मिल गया।"

"कुशल मजदूर," कर्ट ने विचारमग्न भाव से कहा—"लेकिन यह तो पागलपन है—अत्यधिक औद्योगिक देश के विशेषज्ञों को बाहर भेजना—"

"यह सब पागलपन है," लाल बालों वाले ने बीच में टोका। वह सीधे हम लोगों की ओर मुड़ गया। "मेरा बेटा आर्बीट्सडिएन्स्ट में है। कुछ दिनों पहले ही वह छुट्टी में घर आया। उन्होंने जंगली (बंजर)

भूमि की जुताई की है। वह कहता है कि वहाँ बस रेत और पत्थर ही थे। मैं तो पूछता हूँ कि भला अब वहाँ क्या पैदा होगा ?"

उसने अपना सिर आगे बढ़ाया, जैसे किसी उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हो।

"वे फावड़े से रेत और मलवा लारियों पर लादते हैं। पहाड़ ही पहाड़, समझे ? कोयले की चट्टानें और पहाड़। जहाँ फावड़ा नहीं पहुँचता वे खुदाई की एक मशीन का प्रयोग करते हैं। लेकिन वह मशीन कूड़ा-करकट सीधे लारियों में नहीं फेंकती, बिलकुल नहीं। वह तो काम को बड़ी ही जल्दी खत्म कर देती है। फिर उन्हें कंकड़ अपने फावड़ों से उठा कर लारियों पर लादना पड़ता है।

उसने अपनी उँगली से कर्ट के सीने को ठकठकाया।

"वे इन कामों में उतना समय लगाते हैं, जितना अधिक लगा सकते हैं। वे वहाँ लोगों को काम करते हुये देखने के लिए नहीं जाते। क्योंकि उसमें उनका कुछ लगता तो है नहीं। वे केवल सूप पर जीवित रहते हैं जो बस बदबूदार पानी होता है। और वे लकड़ी के घेरों में सोते हैं। यही दुर्गति हर जगह है, जहाँ कहीं भी आप नज़र डालें। बेरोजगारों की संख्या भी अभी तक तो वैसी ही दिखती है।"

"तो तुम कभी-कभी यह देखने का मौका पा जाते हो कि वे वास्तव में कैसे दिखते हैं," कर्ट ने कहा।

"और क्या बात करनी है तुम्हें ?" लाल बालों वाला मुस्कराया।

मैंने चारों ओर रोथेकर को देखा। अभी यह प्रतीत नहीं होता था कि उसने अपनी बातचीत समाप्त कर ली थी। मैं बराबर पूरी पंक्ति को ध्यान में रखे हुये था।

"सुनो, जान।"

"कहते जाओ, मैं सुन रहा हूँ।"

एस० ए० वाले ने अपना चेहरा खिड़की के पास बढ़ाया।

"मैंने पूछा कि क्या तुम एक यहूदी हो ?" उसने थरथराती आवाज में कहा। उसने लड़के का बीमा-पत्र लगभग फेंक-सा दिया। "इसका संबंध खेती के काम से है। यहूदी बाहर नहीं भेजे जाते !"

"ओह, तो यह बात थी—ठीक है। नहीं, मैं यहूदी नहीं हूँ, हालाँकि...," उस लड़के ने उत्तर दिया।

"जो तुम कहो उसमें सावधानी बरतो तो बेहतर रहे," एस० ए० वाले ने क्रोधपूर्वक कहा—" पहली मंजिल पर दो नम्बर कमरा, परिवहन कार्यालय है। तुम्हारा बीमा-पत्र यहीं रहेगा।

वह लड़का खिड़की से हट गया कुछ भुनभुनाता हुआ, जो मैं समझ नहीं सका। इन बातों के दौरान मैं क्यू में खड़े लोगों को देखता रहा। वे एक-दूसरे को टहोका मार रहे थे और फुसफुसा कर टिप्पणी कर रहे थे। कृषिशालाओं के काउंटर पर बैठे लोग खड़े हो गये थे, क्योंकि गरमागरम बातों ने उनका ध्यान आकर्षित कर लिया था। उनके चेहरों से उस लड़के के प्रति उनकी सहानुभूति स्पष्ट प्रकट हो रही थी। एस० ए० वाले भी उनकी सहानुभूति देखने में चूक नहीं सकते थे ! रोथेकर ने मेरी ओर देख कर मुस्कराते हुये सहमति के भाव से सिर हिलाया, जैसे वह कह रहा हो : "तुम्हें आश्चर्य हो रहा है, है न ?"

उसके कार्ड पर इसके बाद तुरन्त ही मुहर लग गई।

"कैसी जोरदार बहस हो गई। और सोचो, उन्होंने उसे गिरफ्तार भी नहीं किया।" मैं फुसफुसाया।

"ऐसी गिरफ्तारी करने लगे तो उन्हें रोजाना दर्जनों को गिरफ्तार करना पड़ेगा," रोथेकर ने उत्तर दिया।

हम धीरे-धीरे फाटक तक पैदल चल कर गये। मैंने उसे कर्ट से हुई अपनी बात के बारे में बता दिया। उसने सतर्कतापूर्वक मेरी बात सुनी।

"वह ठीक है," जब मैंने बात समाप्त की तो उसने कहा—"लेकिन वह झोंपड़ी वाली बस्ती से हमारे नये संबंध के बारे में कुछ भी नहीं जानता।"

"यही मैंने सोचा था। मैंने इसके अनुसार ही कार्य किया है।"

जब हम बाहर पत्थर की सीढ़ियों से नीचे उतरे तो एकाएक उसने मेरी बाँह जकड़ ली।

"जान, वहाँ कुछ गड़बड़ है!" वह हाँफ रहा था।

उसने मेरी बाँह छोड़ कर सीढ़ियों से नीचे जोर की छलाँग लगाई। क्या हो गया? खतरा। एक अचानक आघात की तरह वह मुझ पर आघात करता प्रतीत हुआ। फिर मैंने रोथेकर को सेहन के पार दौड़ कर एक महिला के पास जाते देखा, जो आती-जाती भीड़ के अन्दर से रास्ता बनाती हुई प्रवेश-द्वार की ओर बढ़ रही थी। वह अपना सिर इधर-उधर घुमा रही थी जैसे किसी को खोज रही हो। अब उसने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। मैंने उसको उत्तेजनापूर्वक कुछ बतलाते देखा। रोथेकर उसे एक ओर बगल में खींच ले गया।

मैं वहीं रुका रहा। अगर कुछ गड़बड़ी है—तो हम दोनों—लेकिन मैंने उस महिला को पहले देखा था—उस गोल चेहरे और काले बालों वाली महिला को? मैंने जोर दे कर सोचा, लेकिन मैं उस स्त्री के संबंध में कुछ याद न कर सका। वह सीधे अपने काम पर से आई थी; अभी भी वह अपना नीला ऐप्रन पहने हुये थी। वह बात कर रही थी। रोथेकर उसके सामने निश्चल खड़ा था, उसका मुँह अधखुला था। जो भी मामला हो, वह जरूर रोथेकर से संबंधित था। मैंने सतर्कतापूर्वक चारों ओर देखा। कोई उन्हें देख नहीं रहा था। बेरोजगार लोग अभी भी लहरों की तरह आ-जा रहे थे। मैं प्रतीक्षा करता रहा, प्रतीक्षा करता रहा।

वह महिला अन्त में चली गई। रोथेकर ने चारों ओर देखा और फिर वह मेरी ओर आया। कुछ भयंकर घटना जरूर घटी थी। उसका चेहरा बुरी तरह पीला पड़ गया था। चश्मे के पीछे उसकी आँखें एकटक देख रही थीं, और फिर भी वे कांतिहीन प्रतीत होती थीं। उसने चुपचाप मेरी बाँह पकड़ ली और वह मुझे सड़क पर खींच ले गया। उसके होंठ फड़के। ।मैं उससे पूछना चाहता था कि क्या गड़बड़ी थी, लेकिन शब्द बाहर नहीं निकले। मुझे अपने गले में घुटन महसूस हो रही थी। आखिर रोथेकर ने गिरी हुई आवाज में और लगभग अस्पष्ट ढंग से बात करना शुरू किया।

"हमारी पड़ोसिन—एल्स ने उसे भेजा था—मुझे यहाँ पर पकड़ने के लिए—"

वह रुक गया। मैंने उसकी बाँह दबाई।

"हमारे यहाँ एस० ए० वाले हैं—वे जरा देर के लिये हटे थे—तभी एल्स अपनी पड़ोसिन को बतला सकी। वह बच्चे के साथ पुलिस के पास जाना चाहती थी—दो एस० ए० वालों ने उसे दरवाजे पर ही पकड़ लिया—वे मेरे फ्लैट में बैठे हुये हैं—मेरा इन्तजार करते हुये।"

रोथेकर चुप हो गया और सामने की ओर देखने लगा। एस० ए० ! रोथेकर के यहाँ एस० ए० ! उसी के घर पर क्यों ? दूकानों के सामने से उसे मैं शोरगुल से दूर एक बगल की सड़क पर खींच ले गया। बच्चे की तरह वह मेरे साथ चला गया। वह इस बात पर ध्यान देता प्रतीत नहीं हुआ।

"एल्स ने उनसे पुलीस वारन्ट दिखलाने के लिए कहा, तो वे बस उस पर हँसते रहे। एस० ए० वालों का अपना ही तरीका है। तैंतीस नम्बर की टुकड़ी ! विशेष सिपाही भी नहीं !"

उसने मेरी ओर देखा।

"तुम्हारी समझ में आ रहा है—मेरी समझ में तो कोई ऐसा कारण नहीं है—?"

"सूचना पहुँचाने वाले किसी जासूस की ही एक दूसरी हरकत है।" मैंने घुटते हुये कहा।

रोथेकर ने चुपचाप हामी के भाव से सिर हिला दिया। सूचना पहुँचाने वाला जासूस। मैं इस विचार से बच नहीं सकता। अखबार पहुँचाने वाला—जिसे कोई नहीं जानता था दो हफ्ते पहले गिरफ़्तार हो गया—और अब रोथेकर। मैंने प्रत्येक कामरेड के बारे में सोचा। कौन हो सकता था—लेकिन अभी इससे कोई फायदा नहीं था। पहले रोथेकर का ख्याल करना चाहिये।

"अब तुम घर तो जा नहीं सकते, एरिक। तुम गाड़ी पर फ्रांज के नये क्षेत्र में चले जाओ। ऐसी घटनाओं के लिए जिस स्थान की उसने व्यवस्था की है, वहाँ तुम ठहर सकते हो। लैम्प्रेख्त के यहाँ।"

रोथेकर ने बड़ी देर तक उत्तर नहीं दिया।

फिर उसने कहा—" ऐसा मेरे लिए उतना आसान नहीं है, जितना फ्रांज के लिए। एल्स और बच्चे का क्या होगा, यह सोचा ? और वह फ्लैट ? सहायता केन्द्र तो अब आगे कुछ देगा नहीं !"

"एरिक,तुम जानते हो कि उनकी देख-रेख हम करेंगे। अभी हम नहीं कह सकते कि बाद में क्या होगा। पहली बात तो यह है कि तुम्हें तुरन्त चले जाना है !"

रोथेकर ने सिर को घुमा कर एक झटका दिया, और फिर मेरी आँखों में देखने लगा।

"और अगर वे एल्स को गिरफ्तार कर लेते हैं तो ? क्योंकि वे मुझे तो खोज सकेंगे नहीं ?"

मैंने अपनी बाँह उसके कंधे पर रख दी।

"मुझे ऐसा विश्वास नहीं है, एरिक।"

क्षण भर वह मौन रहा। हम एक नुक्कड़ पर मुड़े। वहाँ पर सडक खाली थी।

"सिर्फ एस० ए० वाले—पुलिस वारन्ट नहीं है!" रोथेकर ने कहा—"मुझे यह जरूर पता लगाना चाहिये कि इसके बारे में पुलिस जानती है या नहीं। सब-कुछ इसी पर निर्भर है!"

"लेकिन तुम ऐसा नहीं कर सकते..."

"क्यों नहीं? मैं अपने पुलिस थाने पर जा रहा हूँ। मेरे खिलाफ कुछ नहीं है; इसका कोई खास कारण नहीं हो सकता—किसी भी हालत में मुझे हो क्या सकता है?"

मैंने यह विचार उसके मस्तिष्क से निकालने का प्रयत्न किया। लेकिन रोथेकर जिद्दी है।

"तो फिर ठीक है। मैं नुक्कड़ पर तुमसे मिलूँगा। मैं वहीं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।"

उस रास्ते से रोथेकर थाने जा चुका था। मैं धीरे-धीरे इधर-से-उधर आ-जा रहा था। पुलिस! एस० की तुलना में पुलिस वाले हानिकर दुश्मन नहीं रह गये थे। मैं ऐसे अनेक मामले जानता था, जिनमें एस० ए० द्वारा खोजे जा रहे कामरेडों ने अन्तिम क्षण में अपने आपको पुलिस के हवाले कर दिया था। पुलिस की हिरासत कम से कम 'भागते समय गोली से मार डाले जाने' से तो अक्सर उन्हें बचाती ही थी।

पुलीस थाने पहुँच कर रोथेकर ने सुपरिन्टेन्डेन्ट से मिलने के लिए कहा। ड्यूटी पर तैनात अफसर ने प्रश्नसूचक भाव से उसे देखा।

"किस संबंध में मिलना चाहते हो?" उसने प्रश्न किया।

"मैं युद्ध पर था, और मैं उनसे विशेष रिआयत के लिए बात करना चाहता हूँ, जो मैं केवल सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब को ही बतल सकता हूँ।"

वह अफसर क्षण भर सोचता रहा। "कृपया एक मिनट रुकें," उसने कहा।

चन्द सेकेन्डों बाद वह वापस आया, अगले कमरे के दरवाजे को अधखुला छोड़ कर।

"इस रास्ते से जायें!"

सुपरिन्टेन्डेन्ट भूरे बालों वाला व्यक्ति था। वह लिखने की एक मेज के सामने बैठा था, जिसके ऊपर हिटलर का एक चित्र लटक रहा था। इससे रोथेकर को अपना आत्मविश्वास कुछ डिगता हुआ अनुभव हुआ।

सुपरिन्टेन्डेन्ट ने लिखने की मेज के पास पड़ी एक कुर्सी की ओर थकानपूर्ण भाव से इशारा किया।

"कृपया बैठ जायें," और फिर—"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

रोथेकर ने अपना नाम और पता बतलाया। फिर उसने उसे उस मामले के बारे में बतलाया। वह बराबर सुपरिन्टेन्डेन्ट का चेहरा ही देखता रहा। वह चेहरा भावनाहीन था। उसने बिना एक शब्द भी कहे उसकी बात सुनी और इस बीच सुपरिन्टेन्डेन्ट का हाथ कागज काटने के चाकू से खेलता रहा। रोथेकर ने पुनः अपने युद्ध संबंधी कार्यों का जिक्र किया, अपने घावों का वर्णन किया और उसने अपनी बात इस प्रकार समाप्त की—"मेरी तो यह सब समझ में आया नहीं। मैं आपसे यह पूछना चाहता था कि क्या मेरे खिलाफ कुछ शिकायत है, और यदि है तो क्या?"

"आप अभी तक अपने घर नहीं गये?" सुपरिन्टेन्डेन्ट ने पूछा।

"नहीं, इस सब के बारे में मुझे रास्ते में मालूम हुआ।"

उसे यह नहीं कहना चाहिये था, मुँह से शब्द निकलते ही रोथेकर ने सोचा। लेकिन और कैसे वह इसके बारे में सुन सकता था ? यह प्रश्न बड़ी ही कुशलता से किया गया था। सुपरिन्टेन्डेन्ट खड़ा हो गया, उसने कमरे के इस छोर से उस छोर तक चहलकदमी की और फिर वह रोथे-कर के सामने रुक गया।

"हमारे पास आपके खिलाफ कोई शिकायत नहीं है, हर रोथेकर," उसने कहा ?

और फिर कुछ देर रुकने के बाद वह बोला—"लेकिन हम हालात बदल नहीं सकते !"

वह पुनः कमरे के इस छोर से उस छोर तक चहलकदमी करने लगा। फिर वह पुनः रोथेकर के पास वापस आया और धीमे स्वर में उसने कहा, ताकि उसकी बात बाहर न सुनी जा सके—"मैं फिर अपनी बात दुहराता हूँ कि मैं कोई सलाह नहीं दे सकता, हर रोथेकर।"

वह पुराने किस्म के लोगों में से एक था, रोथेकर ने संतोषपूर्वक सोचा। वह जानता था कि एस० ए० के विरुद्ध पुलीस शक्तिहीन थी। लेकिन अब उसे पूरा विश्वास हो गया था कि इस मामले में पुलीस का कोई हाथ नहीं था, जिसका मतलब था कि उन्हें उसके गैरकानूनी कार्य के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उसने नम्रतापूर्वक पुलीस अधिकारी को धन्यवाद दिया। और पुलीस अधिकारी साथ में दरवाजे तक भी आया।......

जो कुछ हुआ था उसके संबंध में जब रोथेकर ने मुझे बतलाया, तो मैंने तुरन्त उससे कहा कि अब उसके लिए केवल एक ही रास्ता था यानी वह लैम्प्रेख्त के यहाँ चला जाय। अन्त में वह राजी हो गया। मैं समझ गया, कि उसकी पत्नी और बच्चे का क्या होगा यह विचार उसे मुख्य

रूप से चिंतित किये हुये था। मैंने उसके साथ वह सब-कुछ करने का वादा किया जो मैं कर सकता था।

परिस्थिति वैसी ही रही। यह सच है कि एम० ए० वाले रोथेकर के घर से चले गये थे, लेकिन प्रति दिन वे वापस आ जाते थे, और हम समझ गये कि उस फ्लैट पर बराबर निगरानी रखी जा रही थी। पड़ोसी की सहायता से हमने सरलतापूर्वक हटाई जा सकने वाली वस्तुयें मँगा लीं। एक नियत समय पर एल्सी और उसका बच्चा भी गायब हो गये। फ्लैट की बाकी चीजें मकान मालिक द्वारा किराये के भुगतान के रूप में जब्त कर ली गईं।

सिलेसियन सीमा के एक गाँव से कुछ दिनों बाद एक पूर्व नियोजित पत्र आया। एक रिश्तेदार ने इस वर्ष की अच्छी फसल का वर्णन किया था। उसने लिखा था कि अन्य लोग बिल्कुल ठीक और खुश थे, और फिर पत्र के अन्त में उसने हमें गाँव के वृद्ध पुरोहित की मृत्यु के बारे में बतलाया था। हमने उसका स्मरण किया। अब वह ईश्वर के यहाँ सुखी होगा।

रोथेकर अपने परिवार के साथ देश से बाहर चला गया।

क्षेत्रीय उप-समिति की सहमति से हमने सभी अखबारी और पर्चे वाले प्रचार रोक दिये। उनके केन्द्रीय संगठन के द्वारा ही हम रोथेकर और उसके परिवार को इतनी जल्दी भेज पाने में सफल हुये थे। समिति के कामरेडों और फ्रांज को भी यह समझ में आ गया था कि हमारी नवीनतम क्षतियाँ संयोग से ही नहीं हुई थीं। हमें अब पक्का विश्वास था कि हमें किसी के विश्वासघाती होने का जो शक उस समय हुआ था,

जब हमारा अखबार बांटने वाले गिरफ्तार हुआ था, वह सही था। और कैसे एस० ए० वाले उप-समिति के सदस्य रोथेकर के पास पहुँच गये ? रोथेकर के गायब होने के बाद अब तक दो अन्य कामरेड भी गिरफ्तार हो चुके थे। हमारे अखबार के ग्राहक केवल सहानुभूति दिखलाने वाले थे। और उनके पास कुछ भी नहीं मिला था।

सच्वीबस और टीचर्ट के साथ मैंने इस मामले पर गहराई से विचार किया। इस मामले पर बात करते समय हमने निश्चय किया कि हाल की घटनाओं के संदर्भ में दो कामरेड ईमानदार प्रतीत नहीं होते। उन्हें इस बात की जानकारी दिये बिना ही फिलहाल हमने उन्हें अलग कर दिया और सतर्कतापूर्वक उन पर निगरानी करने का हमने निश्चय किया। फिर हम सभी भरोसा करने योग्य कामरेडों के पास गये और उनसे कहा कि वे इस बीच मौखिक प्रचार करते रहें। हमने उनके और क्षेत्रीय समिति के मिलने के लिए नये स्थानों का प्रबन्ध कर दिया, और हमने ये कार्य अन्य कामरेडों को ही सौंप दिये। हमने उन सभी को कुछ न लिखने के लिये सतर्क कर दिया। टेलीफोन नम्बर, तारीखें और मिलने के स्थानों एवं समय दिमाग में ही रखने चाहिये। अधिक-से-अधिक असर करने वाले कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों का प्रयोग किया जा सकता था जो आसानी से निगले जा सकते थे। हमने विचार-विमर्श करने के लिए कामरेडों को यथेष्ट विषय बतला दिये। दामों में बढ़ोत्तरी अभी भी जारी थी। मध्यम वर्ग में असन्तोष बहुत फैलता जा रहा था। अब ऐसी शिकायत करने वालों की संख्या हजारों तक पहुँच चुकी थी, जो हिटलर को वोट दिया करते थे। जिनकी नौकरियाँ अभी भी बनी थीं, उनकी मजदूरी का एक चौथाई भाग अत्यधिक कटौती और अनवरत 'स्वेच्छा-चारी' करों के कारण कट जाता था। इससे वस्तुयें और भी मँहगी होती जा रही थीं। लेकिन अविवाहित तो और भी मुँहफट्ट हो गये थे। उनकी मजदूरी से कटौती कुँवारो पर लगे करों के कारण और भी बढ

जाती थी। खरीद-फरोख्त करते समय मैंने जो दो टिप्पणियाँ सुनी थीं, वे नई परिस्थिति में बिल्कुल उपयुक्त थीं। नाज़ी बिल्ला लगाये अच्छे वस्त्र पहने हुई एक महिला ने एक पौंड मांस-रस माँगा।

"मांस-रस ?" दूकानदार ने दुहराया, जो उससे परिचित प्रतीत हो रहा था और जो स्पष्ट रूप से आश्चर्य में पड़ गया था।

"बेशक, भला आजकल मक्खन कौन खा सकता है ?" उस महिला ने उत्तर दिया।

"लेकिन तुम्हारे पास तो एक बड़ा ही सुन्दर और नया फ्लैट है।"

"हाँ, यह तो सच है," उस महिला ने कहा और फिर बातचीत वहीं पर समाप्त कर दी। उसने जरूर यह समझ लिया था कि वह काफी कुछ बक गई थी।

और दूसरा मामला यों है। एक अधेड़ व्यक्ति ने एक फल वाली से शिकायत की कि उसे महीने में नौ मार्क तो कुँवारा होने का कर ही दे देना पड़ता था।

"इसके लिए तो बस एक यही इलाज है कि शादी कर ली जाय," उस महिला ने उत्तर दिया।

"यह तो बड़ा ही अच्छा विचार है !" उस व्यक्ति ने कहा—"क्या तुम नहीं जानतीं कि पति-पत्नी के जोड़े और एक बच्चे के लिए महीने-दारी मजदूरी एक सौ बीस मार्क है ? और अगर बीवी नौकरी भी करती हो, और यदि उनकी मिली-जुली कमाई इससे अधिक हो तो उसे दुगनी कमाई माना जाता है।"

"तुम ठीक कह रहे हो," फल वाली ने कहा —"वे तब तो इस पर भी शादी नहीं करेंगे।"

मैं चकित रह गया। व्यापारियों से कोई बात उगलवाना सब से अधिक मुश्किल होता था। उनका डरना ठीक ही होता था क्योंकि उनकी आमदनी छीन ली जायगी।

हिटलर द्वारा शक्ति हथियाने के पहले नाज़ी अखबार इन्हीं कटौतियों को 'हब्शी कर' कहा करते थे।

हाँ, कामरेडों के पास बात करने को बहुत मसाला था। माइकोवस्की का मुकदमा पास आता जा रहा था। उन लोगों ने हाल ही में हमारी गली का निरीक्षण किया था। पुलीस ने एक लम्बे-चौड़े क्षेत्र को घेर कर बन्द कर दिया था, जिससे हम मुजरिम कामरेडों को पहचानने में असमर्थ थे। उनका क्या होगा? और रिचर्ड ह्यूटिंग को क्या होगा, जो भवन निर्माण सुरक्षा गुट का नेता था? और फिर कुछ ऐसी बात हो गई थी जिसके कारण जनता को उस आगामी माइकोवस्की मुकदमे को भूलना पड़ा जिसने प्रत्येक कामरेड को गहराई तक झकझोर दिया था। रीखस्टाग अग्निकांड का मुकदमा शुरू हो गया था! पहले तो हमने केवल डिमीट्रॉफ का ही नाम सुना, इससे अधिक कुछ नहीं। फिर भी एकाएक उसका नाम एक प्रेरणा-स्रोत बन गया, एक विचार के लिए प्रतीक। डिमीट्रॉफ के साहसिक और निडर शब्द सम्पूर्ण जर्मनी में प्रतिध्वनित हो उठे थे—सम्पूर्ण विश्व में भी। यह हमें विदेशी अखबारों और विदेशी रेडियो की रिपोर्टों से मालूम हुआ। प्रत्येक शब्द हममें नवीन साहस का संचार करता था। उसकी बातें एक मुँह से दूसरे मुँह तक पहुँच जाती थीं और वह सड़कों एवं घरों में फैल जाती थीं। और वह मजदूरों के छोटे-से-छोटे फ्लैट से प्रतिध्वनित हो उठती थीं। इतना ही नहीं, कुछ अविश्वसनीय बात भी हो गई थी। हजारों तरीके से कुचला गया जनमत एकाएक एक रात में जग उठा था। मैंने पहली बार लोगों को ट्रामों में, चौराहों पर, दूकानों में और हर जगह जहाँ लोग इकट्ठा हो जाते, राजनीति पर बातें करते सुना।

"आज डिमीट्रॉफ ने क्या कहा?" यह प्रश्न हर जगह सुनाई देता था। मुकदमे की नवीनतम सूचनाओं वाले अखबार बेचने वाले के हाथों से अखबार लगभग छीन लिये जाते थे। फासिस्ट-विरोधी हम लोग जानते

थे कि महीनों बेड़ियों में बँधा एक कम्युनिस्ट अब थर्ड (तीसरी) रीख के उच्च न्यायालय के समक्ष था। वह एक ऐसा कम्युनिस्ट था जिसने अपने मानवेत्तर प्रयत्न से विदेशी भाषा का अध्ययन किया। यहाँ तक कि इस विदेशी राज्य के नियमों का भी, ताकि वह स्पष्ट तर्कों के द्वारा 'प्रमाण' दे और 'ठसाठस भरे' न्यायालय के आरोपों से संघर्ष कर सके। लेकिन इतना ही नहीं। डिमीट्रॉफ आक्रामक भी हो जाता था। वह जिरह करता था और गवाहों की सुनवाई कराने के लिए विवश कर देता था, जो नाजी अग्नि भड़काने वालों के चेहरों पर चढ़े नकाबों को फाड़ डालता था।

कैसा क्रांतिकारी था ! वह हजारों जर्मन मजदूरों में पुनः शक्ति भर देता था और अपने वर्ग की शक्ति में उनके विश्वास को पुनः स्थापित कर देता था। हिल्डी ने हमें बताया था कि डिमीट्रॉफ के शब्द कट्टर-से-कट्टर नाजियों को भी प्रभावित करने में असफल नहीं होते थे। अपने भाई और एस० ए० वालों की बात को चोरी से सुनने के बाद उसे पूरा विश्वास था कि उनमें से अनेक को रीखस्टाग अग्निकांड के वास्तविक कारणों पर संदेह होने लगा था। वह कहती थी कि उसके राजनैतिक विचारों के भयंकर दुश्मन एस० ए० वाले भी उसके प्रति अपनी स्पष्ट सहानुभूति प्रकट करते थे। वे उसके साहस की प्रशंसा करते थे। "हमारे बीच उस जैसा एक आदमी भी नहीं है—जो उस जैसे से निपट सके !" इस तरह वे उसकी चर्चा करते थे। अब हम नियमित रूप से वायरलेस पर प्रसारित किये जा रहे उस मुकदमे की कार्यवाही के ग्रामोफोन रिकार्ड सुनते थे। टिप्पणी करने वाला हर बार अपनी नीच और घृणित टिप्पणियों से डिमीट्रॉफ के कहे हुये वाक्यों के प्रभाव को नष्ट करने की कोशिश करता था। लेकिन वह उन चन्द टूटी-फूटी पंक्तियों के प्रभाव को मिटा नहीं पाता था ! अपनी अवहेलना और व्यंग्य से वह बिल्कुल विपरीत प्रभाव ही डालता था। हम हर बार जान जाते थे कि अपने सुसंगत वाक्यों में डिमीट्रॉफ ने क्या कहा होगा। आज जर्मनी के अधिकांश

लोग समझ रहे थे कि वास्तविक विद्रोही कौन थे। वे अच्छी तरह यह समझ लेते थे, और अब वे उसे छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे जो अभी भी छिपाया जा सकता था। कई दिनों तक अखबारों ने उसके भाषणों के टुकड़े प्रकाशित करने का साहस नहीं किया। वे कार्यवाही की सामान्य सूचना ही देते थे। वायरलेस पर मुकदमे के ग्रामोफोन रिकार्डों का प्रसारण अब विरले ही होता था।

वस्तुतः अन्तिम दो दिनों में एक भी प्रसारण नहीं हुआ। एक व्यक्ति के द्वारा कभी-कभी कितना कुछ किया जा सकता था!

रविवार की सुबह थी और मौसम सुहावना था। बर्लिन के उप नगरों मे से एक में मैं एक गली की नुक्कड़ पर अपनी साइकिल लिये खड़ा था। मेरे छोटे से झोले में एक दिन के लिए यथेष्ट भोजन था। लेकिन साइकिल पर गाँवों का यह दौरा कोई आनन्ददायक नहीं था। मैं ब्रूनो की प्रतीक्षा कर रहा था जो कभी चपटी नाक वाला मुक्केबाज रह चुका था। मुझे नृत्य-हाल की उस सुबह के बारे में सोचना पड़ा, जब रूडी और ब्रूनो के 'सहायक मेकैनिकों' की सहायता से मैंने और फ्रांज ने अखबार छापे थे। फ्रांज ने मुझे बतलाया था कि चकत्तेदार चेहरे और लाल बालों वाला रूडी और ब्रूनो अभिन्न मित्र थे और इस कार्य में सहयोगी होने के अलावा वे इस क्षेत्र के सर्वाधिक साहसिक कामरेड थे। प्रत्येक स्थिति में रूडी का विस्तृत निर्णय ब्रूनो की 'बर्लिन बोली' और वस्तुओं को शीघ्र पहुँचाने की आदत के पूरक का कार्य करता था।

जब मैंने इस सप्ताह के प्रारम्भ में फ्रांज से नई स्थिति पर विचार किया था, तब हमने इस यात्रा की व्यवस्था की थी। कामरेड उन लोगों के सम्पर्क में आये थे जो वहाँ एस० ए० जे० टोली में रह गये थे।

इन युवा कामरेडों में से एक चार्लोटिनबर्ग के कारखाने में काम करता था। उस दिन की यात्रा काम की शुरुआत करने के लिए उनसे केवल

परिचय करने का अवसर प्राप्त करने के लिए थी। अभी तक ब्रूनो और रूडी इन कामरेडों में से दो से बातें कर चुके थे। वे हमारे साथ काम करने के इच्छुक थे और उन्होंने पिकनिक के लिए सुझाव दिया था। परन्तु उन्होंने यह भी कहा था कि पहली यात्रा में हमें दूसरे कामरेडों को नहीं बुलाना चाहिये। वे अभी बुरी तरह परेशान हो चुके थे। रूडी को अपने काम से कहीं और जाना पड़ा। फ्रांज राजनीतिक कारणों से अभी पहली बार एस० ए० जे० कामरेडों से मिलना नहीं चाहता था, इसलिये उन्होंने मुझसे साथ चलने को कहा। फ्रांज सोचता था कि नवयुवकों के साथ मैं कहीं अधिक सफलतापूर्वक काम चालू कर लूँगा क्योंकि मैं पहले युवा टोली का सरदार रह चुका था।

"नमस्कार, कार्ल।"

मैं झटके से घूमा। ब्रूनो आ गया था। उसने बिना आवाज किये साइकिल चलाई थी और अब उसका एक पैर पटरी पर टिका हुआ था और दूसरा अभी भी पेडिल पर ही था। कार्ल—अभी भी यह नाम मुझे अपरिचित प्रतीत होता था, लेकिन वे मुझे केवल इसी नाम से जानते थे। उसकी साइकिल बड़ी प्यारी थी—दौड़ वाली हल्की साइकिल थी वह। उस पर किया हुआ पालिश और उसकी तीलियाँ धूप में चमक रही थीं।

"मैंने सोचा था कि तुम उस रास्ते से आ रहे होंगे!"

मैंने उस दिशा में अपना सिर हिलाया जिधर से उसके आने की मैंने अपेक्षा की थी। ब्रूनो ने जोश के साथ हाथ मिलाया।

"आमतौर पर तो—लेकिन आज—" वह शर्माता हुआ मुस्कराया—"मुझे पहले पटाखे ले आने थे।"

"क्या सचमुच तुम्हारे पास पटाखे हैं?"

"बेशक, जब मैंने कहा है तो ये मेरे पास हैं।" सीट के पीछे बँधे चमड़े के डिब्बे को उसने ठकठकाया।

"यह बहुत अच्छी तरह पैक किया हुआ है।"

हम साइकिल पर चढ़ लिये। तो उसके पास 'पटाखे' भी थे—छोटी और महीन अक्षरों में छपी पुस्तक—रीखस्टाग अग्निकांड और हिटलर के आतंक पर लिखी गैरकानूनी 'ब्राउन बुक'। हमने कुछ समय पहले इसके बारे में सुना था। अदालत के अध्यक्ष ने रीखस्टाग मुकदमे के दौरान लगातार इस 'बदनाम' (कुख्यात) ब्राउन बुक की आलोचना की थी। हमारे नियन्त्रित प्रेस ने प्रवासियों के 'गन्दे और झूठे प्रकाशनों' के बारे में हफ्तों आग उगली थी।

हर बार हम स्कूल के बच्चों की तरह ही खुश होते थे। हम वाक्यों के अंदरूनी अर्थ पढ़ने के आदी हो चुके थे। वह पुस्तक हिटलर के अधिनायकत्व के लिए कितना बड़ा आघात थी! वायरलेस पर कामरेडों ने मास्को के प्रसारण से और अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त की थी, और उन्होंने सुना था कि अपने निर्विवाद तथ्यों के कारण वह पुस्तक कितनी सफल हुई थी। मैंने उस पुस्तक और लन्दन में पड़ोसी क्षेत्र के कामरेडों द्वारा चलाये जा रहे विरोधी मुकदमें के बारे में सुना। यह हमारे लिए शानदार प्रोत्साहन था। हम अनुभव कर रहे थे कि हम अकेले ही लड़ाई नहीं लड़ रहे थे। विदेशों में मौजूद कामरेड विश्व जनमत को हमारे पक्ष में कर रहे थे! प्रथम चन्द महीनों के दौरान हमारे कुछ सदस्यों ने प्रवासी कामरेडों को 'काहिल कायरों' की संज्ञा दी थी। लेकिन जब उन्होंने हिटलर की जर्मनी के विरुद्ध उनके कार्यों के बारे में सुना तो उन्होंने अपनी यह गलत धारणा त्याग दी थी। पहली बार मैंने वह पुस्तक फ्रांज़ के यहाँ देखी थी। उस क्षेत्र में हर काम कितनी सरलता से होता था! यहाँ तक कि उन्हें प्राग से मजदूरों का चित्रमय अखबार भी नियमित रूप से मिलता था। और उनके पास इसके लिए उत्सुक ग्राहक भी थे। जब फ्रांज आश्चर्य से मेरी आँखों को फैली देखता था तो वह प्रसन्न होता था। काश वह केवल वैसी ही चीजें हमारी गली में ला पाता! लेकिन यह उस समय असंभव था।

मेरे पैर मशीन की तरह पेडिलों को चलाते जा रहे थे। मैंने ब्रूनो की ओर देखा। उसने सिर हिलाया और मुस्कराया। हम कदाचित् तेजी से साइकिल चला रहे थे। अभी भी हम उपनगरी की सड़क पर ही थे। तो आखिर वह उसे साथ ही ले आया था! फ्रांज़ के घर के संबंध में मेरे विचार पर मेरा विरोध किया गया था। अखबार क्या लिख रहे थे? अगर इस पुस्तक की एक प्रति भी किसी के पास मिली तो उसे पन्द्रह वर्षों की सख्त कैद होगी। और सूचना फैलाने के लिए? अपने साथ एस० ए० जे० कामरेडों के पास ले जाने के लिए? उनको पढ़ कर सुनाने के लिए? मैं फ्रांज़ से असहमत हो गया था। ब्रूनो और रूडी उन्हें वर्षों से जानते थे, फ्रांज ने सफाई दी। वे पूरी तरह भरोसा करने योग्य है। यह उनके लिए एक नया अनुभव होगा। जब वे देखेंगे कि हम क्या कर रहे हैं और हमारे पास क्या सामग्री है, तो वे तुरन्त हमारे साथ कार्य करने को तैयार हो जायँगे। ठीक है, आज हम देखेंगे कि क्या बात वैसी ही थी? फ्रांज ही सदैव उत्तरदायित्व स्वीकार करता था, और वह ऐसा समझता था तो सब-कुछ ठीक-ठाक रहना निश्चित था।

हम बायें मुड़े। एक मुख्य सड़क आ गई। अब रास्ता दिखाता हुआ ब्रूनो आगे-आगे साइकिल चला रहा था। वह साइकिल अच्छी चलाता था। मैं उसकी साइकिल के पीछे चमड़े के डिब्बे को देख रहा था। पन्द्रह वर्ष। अभी मेरी उम्र कितनी थी? बकवास! ब्रूनो ने अपनी कलाई घड़ी को देखा। उसने अपना सिर जरा-सा घुमाया, उसके पैर अभी भी पैडिलें चला रहे थे।

"हम समय पर ही पहुँच गये—हम ठीक समय पर ही उनसे मिल लेंगे," वह जोर से बोला। सड़कों के किनारे खड़े वृक्ष पीछे छूट गये। पत्तियों का रंग बदलने लगा था। पतझड़! धूप में अभी भी गर्मी थी—या यह तेज गति से चलने के कारण था? मेरे पसीना छूट रहा था। एक ट्रक हमारी ओर आई। एस० ए०! उस खुली ट्रक में भूरी वर्दी-

धारी बुरी तरह ठुँसे हुये थे। उनमें से एक चालक के कक्ष की छत पर बैठा था अपने दोनों हाथों से फड़फड़ाते स्वस्तिक झंडे को पकड़े हुये। हमने सलामी के लिए अपने हाथ ऊपर उठाये! आगे और आगे। बायें, और दायें, खेतिहर भूमि का विशाल क्षेत्र! यहाँ-वहाँ पर नये वृक्षों की शाखें सीधे सड़क के ऊपर आ गई थीं। हमने मील के पत्थरों पर लिखी संख्याओं को पढ़ा।

अभी काफी दूर चलना था। एक चर्च के मीनार प्रकट हुई। उसके बाद हम शीघ्र ही गाँव में आ गये। ब्रूनो अपनी साइकिल से कूद पड़ा।

"चर्च के पीछे, बाईं ओर, उनमें से एक को इंतजार करना था।" उसने अपने हाथ के पिछले हिस्से से अपना माथा पोंछा और छोटे काले बालों को पीछे किया।

"सिर्फ एक ?"

"हाँ, वह हमें दूसरों के पास ले जायगा। वे झील के किनारे बैठे हुये हैं।"

हम अपनी साइकिलें धीरे-धीरे सड़क पर घसीट रहे थे। एक बूढ़ा किसान अपनी झोंपड़ी के दरवाजे के सामने धूप में बैठा पाइप के कश ले रहा था। बाईं ओर सराय के पीछे वर्दी में एस० ए० वाले खड़े थे। उनके शरीर सुगठित थे। "कम्युनिस्ट तुम्हारी जमीन जब्त कर लेना चाहते हैं। अब उनके पास आखिरी अस्त्र फूट डालना रह गया है—केवल फूट डालना, फूट डालना!"

फ्राँज ने मुझे बतलाया कि किस तरह उत्तर में कामरेडों ने खेतिहर मजदूरों का काम एक बार और करना शुरू कर दिया था। वह एक कठिन काम होगा। किस तरह हमारे कामरेडों ने गाँवों में कष्ट भोगे होंगे—उस छोटे से प्रान्तीय कस्बे में वे एक दूसरे से अच्छी तरह परिचित थे!

शोख रंग के एक खम्भे पर लकड़ी की एक तख्ती पर लिखा था : "एडॉल्फ हिटलर चौक।"

वह चौक घास के मैदान का एक चौड़ा टुकड़ा था जहाँ से बीच में एक गन्दा ताल दिखता था, जिसमें बत्तख तैर रहे थे। लकड़ी का बाड़ा जिस पर पूरे में स्वास्तिक चिह्न अंकित थे, संभवत: उसे प्रभावशाली बनाने के लिए था। एक जगह पर लिखा था—"हिटलर ताल" लेकिन वहाँ तो गाँव का चर्च था।

"वहाँ है वह," जब हम चर्च के गिर्द आये तो ब्रूनो ने कहा।

सड़क के किनारे सफेद पेन्ट किये हुये एक पत्थर पर एक युवक बैठा था। वह उछला और हमारी ओर आया। वह छोटा नेकर और नीले रंग की खुले गले वाली कमीज पहने हुये थे। उसके बायें कंधे पर एक पुराना सैनिक पैकेट लटक रहा था। उसका चेहरा ताजा और बाल लम्बे भूरे थे। वह बीस वर्ष से अधिक का नहीं हो सकता था। एक पदयात्री जैसा था। हीन्ज प्रेजस की तरह। वे सभी एक जैसे दिखते थे। अब हीन्ज कहाँ था—एक यातना शिविर में?

"एह्लाय," उस युवक ने कहा और हाथ मिलाया।

"एह्लाय," ब्रूनो उत्तर में मुस्कराया।

(एह्लाय : बिना स्वार्थ के एडॉल्फ हिटलर)

"क्या आपको ज्यादा प्रतीक्षा करनी पड़ी, ऐल्फ्रेड?"

"बस अभी आया हूँ।"

"दूसरे क्या दूर हैं?"

"दस मिनट का रास्ता है।

हम जल्द ही पेड़ों के बीच एक रास्ते से मुख्य सड़क के दाईं तरफ मुड़ गये। अब हम झील के किनारे-किनारे चल रहे थे। खेमे वहाँ गड़े हुये थे और किनारों के पास ही नावें थीं। शायद वह नाव खेने वालों का पड़ाव था।

"थोड़ा और आगे। हम अपने ही क्षेत्र में हैं।" ऐल्फ्रेड ने कहा।

"मुझे यही आशा है," ब्रूनो ने उत्तर दिया।

ऐल्फ्रेड ने आश्चर्य से अपना सिर घुमाया।

"क्या तुम उसे साथ ले आये हो ?"

"वह तो जरूरी था।"

"यह बड़ा अच्छा किया," ऐल्फ्रेड ने खुश हो कर कहा। "लेकिन आपको सावधानी से बात करनी होगी, क्योंकि अन्य सभी लोग हर्बर्ट के प्रभाव में हैं।"

"यह तो हम सम्भाल लेंगे," ब्रूनो ने कहा। उसने झटके से अपना सिर मेरी ओर मोड़ दिया। "कार्ल चार्लोटेनबर्ग के हैं। तुम लोग भी चार्लोटेनबर्ग की एक दूकान में काम करते हो, है न, ऐल्फ्रेड ?"

"हाँ।"

"आप दोनों को बाद में बातें जरूर करनी होंगी।"

"ठीक।"

तो यही ऐल्फ्रेड था, जिसके साथ, फ्रांज़ ने सलाह दी थी, कि हम काम कर सकते थे। आदमी अच्छा मालूम होता था। वहाँ एक और व्यक्ति होना चाहिये था, जो हमारे साथ काम करने का इच्छुक था। "अन्य सभी लोग हर्बर्ट के प्रभाव में हैं।" वह उस टोली का सरदार होगा।

हमने अपनी साइकिलें एक साफ मैदान पर ढकेल कर पार कीं। एक खेमा नरकट के पौधों के पास लगा दिया गया था। वे उसके पास लेटे हुये थे, झील के तट के किनारे घास की एक सँकरी पट्टी पर तेज धूप का आनन्द लेते हुये। दो, तीन—छः आदमी और दो लड़कियाँ। हमने अपनी साइकिलें एक पेड़ के सहारे टिका दीं। कामरेडों ने हाथ हिलाये अपने नामों का केवल पहला अक्षर बताते हुये। हमने भी ऐसा ही किया। युवा, ताजे चेहरे। लड़कियाँ छोटे-छोटे कपड़ों में एक युवा आन्दोलन के

लिये अर्पित दिख रहीं थीं। उनमें से एक के सुन्दर बालों के मोटे गुच्छे थे।

"तुम लोगों ने अच्छी जगह का चुनाव किया है," ब्रूनो ने प्रशंसा की।

अभी भी उस पर अजनबीपन उतना ही हावी था जितना कि मुझ पर। और वह मैत्रीपूर्ण बातें जारी रखना चाहता था।

"हम हमेशा ही ऐसा करते हैं," ऐल्फ्रेड ने कहा।

तो वह हर्बर्ट था। उसने अपना नाम अर्द्ध फुसफुसाहट में कहा। वह लम्बा और दुबला-पतला था। अपने पीले चेहरे पर वह चश्मा लगाये हुये था। वह उनमें सबसे अधिक उम्र का प्रतीत होता था। उसके काले बाल सावधानीपूर्वक बीच से अलग किये हुये थे। वह एक प्लस-फोर सूट पहने हुये था। अन्य लोग नेकर पहने थे।

मैं बैठ गया। ब्रूनो ने फुसफुसा कर हर्बर्ट से कुछ कहा, फिर मेरी ओर आया और मेरे कंधे को थपथपाया।

"हमारी चीजें यहाँ ले आओ। उन्हें वहाँ नहीं छोड़ा जा सकता।"

हम जंगल के किनारे तक गये।

"हम अपनी चीजें एक ओर लगायेंगे। अगर कुछ गड़बड़ी भी होती है, तो दूसरे न पकड़े जायँगे।"

"तुमने हर्बर्ट को पुस्तक के बारे में बतला दिया?"

"हाँ। और ऐल्फ्रेड ने उसे आघात के लिए तैयार भी कर लिया है। इससे हर्बर्ट किसी चीज से उत्तेजित न होंगे। अन्य लोग कुछ आश्चर्य-चकित होंगे लेकिन हर्बर्ट को आश्चर्य भी न होगा। 'हम इसे बाद में पढ़ेंगे,' इतना ही उसने कहा था।"

अजब मजाक था। जैसे ही मैंने उसे देखा वैसे ही मुझे भी यही अनुभूति हुई थी। ऐसा दृढ़ व्यक्ति है, जिसे आसानी से तोड़ा न जा सकेगा।

हमने साइकिलें रख दीं और डिब्बे पत्तियों में छुपा कर बायें तट पर रख दिये।

"रस्सी वाला व्यक्ति दूसरा ऐसा व्यक्ति है जो हमारे साथ काम करने को राजी है—वह ऐल्फ्रेड का दोस्त है।" ब्रूनो फुसफुसाया।

मैंने झील की ओर देखा जहाँ एक नाटा और गठीला व्यक्ति रस्सी कूद रहा था, उसके पैर मुश्किल से बालू को छू रहे थे और उसके बाल हवा में उड़ रहे थे।

हम फिर दूसरों के साथ आ मिले। ब्रूनो ने उन्हें बतलाया कि वहाँ आने में उन्हें डेढ़ घंटे से कुछ कम साइकिल चलानी पड़ी। वह पहली बार वहाँ आया था। क्या वे उस स्थान के बारे में कोई बात जानते थे, गाँव के लोगों में क्या भावना थी? मैंने भी कुछ प्रश्न किये। हम दोनों ही असफलतापूर्वक वार्ता प्रारम्भ करने का प्रयत्न कर रहे थे। कामरेड प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे, लेकिन मुझे अनुभव हो रहा था कि उनमें से किसी को भी यथेष्ट दिलचस्पी नहीं थी। हम अभी भी अजनबी ही बने थे।

हमारे बीच एक बड़ी खाई थी। वे झील के दूसरे किनारे पर थे लेकिन वे कभी भी किसानों के साथ नहीं रहे थे, उनमें से एक ने उत्तर दिया। ब्रूनो की दौड़ वाली साइकिल मजेदार थी। साधारण साइकिल के लिए वह बचत कर रहा था, एक अन्य ने टिप्पणी की। मौन पुनः छा गया। हर्बर्ट पीठ के बल लेटा था, आसमान की ओर देखता हुआ। अभी तक वह एक शब्द भी नहीं बोला था। ऐल्फ्रेड के इस सुझाव का उत्साह के साथ स्वागत हुआ कि हम फुटबाल खेलें। दो टीमों के बीच हमारे विभाजन में शोरगुल हुआ। लेकिन हर्बर्ट ने कहा कि वह अपना धूप स्नान ही जारी रखना चाहता था। मैंने दो पेड़ों के बीच एक रस्सी बाँधने में ऐल्फ्रेड की सहायता की।

"तुम्हें पहले उनके साथ सम्पर्क बढ़ाना होगा। अभी वे केवल एक-दूसरे को देखने भर के ही अभ्यस्त हुए हैं।" वह फुसफुसाया।

"हम कहीं भी मिल सकते हैं और बातें कर सकते हैं। तुम कहाँ काम करते हो ?" मैंने यह प्रश्न करने का मौका हाथ से जाने नहीं दिया।

उसने एक विशाल धातु कारखाने का जिक्र किया। उसने गाँठ को कस कर बाँध दिया और मौन हो गया। यहाँ आने के सुझाव पर राजी होने के लिए क्या वह पछता रहा था ? फिर वह धीरे-धीरे बोला—"मुझे अपना काम नहीं छोड़ना है। मेरी माँ बूढ़ी है और मेरे पिता मर चुके हैं।" और फिर कहा—"मुझे कारखाने में बहुत सतर्क रहना है—तुम्हें यह सब शुरू से ही जताना चाहता रहा हूँ।"

मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया।

"यह हम जानते थे, ऐल्फ्रेड। अगर तुम केवल हमें इतना ही बतलाओ कि कारखाने में लोग इन चीजों के बारे में क्या सोचते हैं, तो वही हमारे लिए बहुत होगा। लेकिन हम इस सब पर फिर कभी बात करेंगे। काम के बाद मंगलवार को तुम खाली हो ?"

"मंगलवार को ?—हाँ, वह दिन मेरे लिए ठीक रहेगा।"

उसने उस ट्रेन और स्टेशन का नाम बतलाया जिससे वह शाम को घर जाता था। मुझे नुक्कड़ पर बेकरी के पास प्रतीक्षा करनी थी।

हम देर तक खेलते रहे। मध्याह्न हो चुका था और धूप गर्म हो गई थी। शोर करते हुये हम पानी में घुस पड़े। हमने एक कतार बना ली थी और गोता लगाने के लिए लड़कियों के पास से गुजरते थे। वे हँसी से चीख पड़ती थीं।

"मुझे छोड़ो नहीं, कार्ल !" "मुझे ऊपर उठा लो, कार्ल !" उनकी चीखों और उनके चेहरे के भावों से स्पष्ट था कि हम उन्हीं की टोली के थे, हम उनके मित्र थे। हर्बर्ट से अभी भी हमें निराशा हुई। वह किनारे पर खड़ा हमसे परे देख रहा। उसके चेहरे पर अभी भी वही गम्भीर भाव था। ब्रूनो मेरे पास खड़ा था। वह हँस पड़ा। उसकी नाक फैल गई। उसके बालों से पानी गिर रहा था।

"हम बाद में रवाना होंगे," वह फुसफुसाया।

मैंने सहमति के भाव से सिर हिलाया।

हम सभी का भोजन तैयार हो गया। दोनों लड़कियों ने स्प्रिट के स्टोवों पर कॉफी बनाई। मैंने उन्हें देखा। पिछले रविवार को मैं केथी के साथ हैवेल गया था। हम शाम को स्टेशन पर जुदा हुये थे। क्या कोई इन दिनों लड़की के साथ रह सकता था ? मैं उसके घर नहीं जा सकता था। वह मेरे घर नहीं आ सकती थी।

"हम यह सब एक साथ मिला लें। चीजें हमारे पास बहुत है, और सबका स्वाद भी अच्छा हो जायगा।" ब्रूनो ने कहा।

हमने अपनी युवा टोलियों में सदैव साथ-साथ खाया था। ब्रूनो किसी और चीज़ का अभ्यस्त नहीं था। मैंने देखा कि उन्होंने खुशी से उसके सुझाव को स्वीकार कर लिया हमारे कामरेड होने के नये प्रमाण के रूप में। हम सभी खाने की चीजें चबाने लगे, हमारे मुंह पूरे भरे थे। ब्रूनो को मैंने आँख मारी। उसने बहुत धीरे से अपना सिर हिला दिया।

"हमें अकसर मिलना चाहिये, दोस्तो," उसने कहा—"सिर्फ घूमने के समय ही नहीं, बल्कि कस्बे में भी। हम युवा लोगों को एक-दूसरे से गहरा लगाव है। हमें इन सुहावने दिनों में एक-दूसरे की जरूरत पड़ेगी !"

"हाँ, यह ठीक कह रहे हैं।"

"यह बड़ा अच्छा रहेगा।"

"खुलासे में घूमना ही काफी नहीं है," ऐल्फ्रेड ने कहा—"हमें अच्छी तरह बातें करनी हैं, पढ़ने के लिए हमें कुछ काम की चीजें प्राप्त करनी चाहिये..."

मैं उनके चेहरों को पास से देख रहा था। वे सभी राजी प्रतीत हो रहे थे। लेकिन हर्बर्ट ? उसने एक शब्द भी नहीं कहा। उसका चेहरा नकाब जैसा प्रतीत हो रहा था। चश्मे के पीछे उसकी आंखों के सिवाय

सब-कुछ उस नकाब में ढँका हुआ था। उसकी आँखें पूरी टोली का सर्वेक्षण कर रही थीं, जैसे वे ब्रूनों के शब्दों का प्रभाव देखने का प्रयत्न कर रही थीं।

"पढ़ने के लिए हम कुछ 'काम की चीजें' पा सकते हैं," ब्रूनो ने कहा—"अगर हम आज कुछ प्रबंध कर लें तो अच्छा होगा। हम शायद आपकी टोली में से किसी एक से भेंट कर सकें। अगर हम नहीं भी मिल सकेंगे, तो मैं..."

"मैं इसके विरुद्ध हूँ!" हर्बर्ट ने टोका। उसने अपना प्याला रख दिया। वे सभी उसे देखने लगे। "हम प्रचार और आन्दोलन की तुम्हारी कार्रवाइयों में फँस जायेंगे। तुम्हारे इस सुझाव का बस यही मतलब है!"

" 'फँस जाने' से तुम्हारा क्या मतलब है?" ब्रूनो ने शांतिपूर्वक प्रश्न किया—"ऐसा समय आने में समय लगेगा, लेकिन यह सब तुम्हारे ऊपर है। हमें इस बात से बेशक खुशी होगी, अगर तुम हमारे काम में हमारा साथ दो।"

"हम अपनी समाजवादी टोली कायम रखना चाहते हैं, और बेवकूफी के खतरे नहीं उठाना चाहते, जैसा कि तुम कर रहे हो!" हर्बर्ट ने उत्तर दिया।

मैंने दो व्यक्तियों को सहमति से सिर हिलाते देखा। अगर अभी हम उन्हें राजी करने में सफल नहीं होते, तो हम कभी उन पर विजय प्राप्त न कर सकेंगे।

"मैं नहीं सोचता कि हमें तुम्हारे बारे में और अपने बारे में इस तरह की बातें करनी चाहिये, कामरेडो। नाजी प्रति दिन अपने आतंक से सिद्ध कर रहे हैं कि वे हमें अपना एक मात्र दुश्मन मानते हैं। हमें साथ-साथ आना ही होगा। हम नौजवानों को तो विशेष रूप से मिलना होगा। कार्ल लीबक्नेख्त को याद करो, जिसने युद्ध का विरोध करने के लिए नौजवानों का आवाहन किया था। वे और मैं भी तुम्हें इतना बता सकता हूँ

हम कोई बात निश्चित करने के पहले प्रत्येक कदम पर सोच-विचार लेते हैं। हम किसी भी कामरेड को अनावश्यक खतरों में नहीं डालते।"

मौन।

चूंकि किसी ने कुछ नहीं कहा, इसलिए मैंने ही फिर शुरू किया।

"क्या आप सचमुच सोचते हैं कि फासिस्टवाद अपने ही आप समाप्त हो जायगा ? क्या आप एक साथ केवल यह साबित करने के लिए मिलते हैं कि अभी भी आपकी वही राय है ? मजदूर वर्ग के युवक हमेशा आगे की पंक्ति में खड़े होते हैं, कामरेडो। वही आज भी होना है। हमें एक साथ संघर्ष करना है।"

पुनः मौन। शांति ने मुझे संभावित खतरों के संबंध में सोचने को विवश कर दिया। मैंने चारों ओर देखा। दूर-दूर तक कोई भी नहीं दिख रहा था। झील शांत और स्थिर थी। सूर्य की किरणें जल की सतह पर चमक रही थीं। हर्बर्ट ने मौन भंग किया।

"बेशक आपने हमेशा 'संघर्ष' किया है। लेकिन हमारे ही नेताओं के विरुद्ध, हमेशा।"

मैंने उसके भिंचे हुये होंठ देखे। दूसरे क्यों नहीं कुछ कह रहे थे ? क्या वे सभी हर्बर्ट के ही मत के थे ?

"कामरेड हर्बर्ट, इस तरह की बातें हमें कहीं का न रखेंगी," ब्रूनो ने तर्क करते हुये कहा—"हम इस पर काफी बात कर चुके हैं कि हिटलर के पहले वर्षों यहाँ क्या होता रहा है। और किस प्रकार आपके नेताओं ने प्रथम रीखस्टाग चुनाव में एडॉल्फ को वोट दे दिया। किस प्रकार उन्होंने मजदूरों का मई दिवस के समारोहों के लिए आवाहन किया। लेकिन हम उस सब के बारे में बात नहीं करना चाहते, मैं यह बता चुका हूँ। यह तो अतीत की बात है। अब हम भविष्य के लिए इन्तजाम करना चाहते हैं।"

पुनः मौन।

"यही मेरी भी राय है," ऐल्फ्रेड ने कहा। उसने अपना सिर अन्य लोगों की ओर प्रश्नसूचक भाव से घुमाया। "दूसरे लोग क्या सोचते हैं?"

अन्त में लोगों को अपनी जबान खोलनी ही पड़ी।

"आप ठीक कह रहे हैं," विली ने उसका समर्थन किया—"हर्बर्ट की बदौलत यह टोली एक बनी रही—लेकिन अब इतना ही काफी नहीं है।"

"मैं भी यही सोचता हूँ" उन कामरेडों में से एक ने घोषित किया जो उसके पास बैठा हुआ था।

"और मैं भी।"

लम्बे बालों वाली लड़की ने कहा।

"मैं हर्बर्ट और ऐल्फ्रेड से मिल कर हर चीज की व्यवस्था कर दूंगा," ब्रूनो ने तेजी से कहा—"वे आप लोगों को बतला देंगे कि हमने क्या निश्चित किया है।" उसने हर्बर्ट की ओर देखा। "लेकिन आइये हम कुछ पढ़ना शुरू करें। विलम्ब हो रहा है।"

उसने यह ठीक किया। टोली के सरदार के रूप में उसने हर्बर्ट को सम्मान दे कर ठीक ही किया। मैंने देखा कि हर्बर्ट अपने को संभालने की कोशिश कर रहा था।

"जैसा अभी आप कर रहे थे आराम से बैठ जायें। हमें बिल्कुल गैरनुकसानदेह प्रकट होना है। कामरेड अपने साथ बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेज ले आये हैं—ब्राउन बुक।" उसने कहा।

मेरे पास वाला कामरेड कम्बल में ही झटका खा गया। दूसरी ओर लड़की का मुंह आश्चर्य से खुला ही रह गया। उनकी आँखें चमक रही थीं। उन्होंने एक-दूसरे को कुहनी मारी।

"मौलिक ब्राउन बुक?"

"वही जो...?"

"चुप रहो ! तुम जानते हो कि उसका हमारे लिए क्या मतलब हो सकता है !" हर्बर्ट ने रुखाई से कहा।

वह ठीक कह रहा था। उसके पास अनेक अच्छे तथ्य थे।

अब वे सभी मौन थे। सभी आँखें ब्रूनो का पीछा कर रही थीं, जो हमारी वस्तुओं के पास गया था। जब वह वापस आ गया तो सभी के सिर मुड़ गये। वे सभी उस छोटी पुस्तक को देखना चाहते थे।

"किसी को पीछे की ओर पटरी पर पहरेदारी के लिए खड़ा होना पड़ेगा। हमें अचानक हमले के विरुद्ध अपनी रक्षा करनी होगी।" मैंने कहा।

कोई जाना नहीं चाहता था। वे सभी ब्रूनो द्वारा पुस्तक का पाठ सुनने के लिए उत्सुक थे। मैं उठ खड़ा हुआ।

"यह हम बारी-बारी से करेंगे। जब आप देख लें कि मैं वहाँ बैठ गया तो आप शुरू कर सकते हैं।"

झील मुझसे नीचे स्थित थी, एक विशाल चमकता जल-विस्तार। हवा नहीं थी। साये में ठंडी घास बडी आनन्दप्रद लग रही थी। वे वहाँ नीचे केवल सप्ताहान्त मनाने वाले जैसे ही दिख रहे थे। ब्रूनो अपने पेट के बल लेटा था, उसकी कुहनियाँ दृढ़तापूर्वक जमीन पर टिकी थीं और उसका सिर हाथों पर टिका था। मैं कुछ सुनने के लिए अपने कान पर जोर डाल रहा था। वहाँ कुछ भी नहीं सुना जा सकता था। वह जरूर बहुत ही धीरे-धीरे पढ़ रहा होगा। वे कैसे खुश थे! फ्रांज ने ठीक कहा था; हम उन्हें अपने काम में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने में सफल होंगे। यह कौन बुला रहा था? मैं किसी को देख नहीं पा रहा था। वह आवाज सामने के खेमे से आ रही थी। नृत्य और संगीत वातावरण में तैर रहा था। उनके पास तुड़ने-मुड़ने वाला ग्रामोफोन भी था।... तीसरा पहरेदार रास्ते पर जा चुका था। ब्रूनो धीरे-धीरे पढ़ रहा था। युवा कामरेडों के चेहरे बहुत गम्भीर थे। वे एक-दूसरे

की ओर देख नहीं रहे थे। कुछ बिलकुल अस्त-व्यस्त लेटे थे, आँखें बन्द किये हुये। एकाएक एक बड़ा सा पत्थर हमारे सामने पत्तियों में गिरा। ब्रूनो रुक गया। मेरा सिर झटके से घूम गया। एक युवा कामरेड ढाल पर छलाँगें लगाता हुआ आ रहा था।

यह क्या हुआ? खतरा? और वह दौड़ रहा था? इसी से हमें बराबर संदेह हो रहा था।

"बैठो! बैठो!" हर्बर्ट ने आदेश दिया। वह शान्त था। वह किताब ब्रूनो की खेल-कूद वाली जैकेट में गायब हो चुकी थी। वह कामरेड अब हमारे पास आ गया था।

"पीछे की ओर वहाँ...दो एस० ए० वाले...।" वह हांफ रहा था।

हम चन्द सेकेन्ड निष्क्रय-से बैठे रहे। ब्रूनो पहला व्यक्ति था जो अपने को सभाल कर उठा।

"हर्बर्ट! फुटबाल खेलना शुरू कर दो। लेकिन तुम सब शांत रहो! हम अपने सामानों के पास जा रहे हैं।"

हर्बर्ट ने स्वीकारात्मक भाव से सिर हिलाया।

हम प्रतीक्षा करते रहे, प्रतीक्षा करते रहे। ब्रूनो ने अपनी साइकिल मोड़ कर ऊपर की ओर कर दी थी और पहियों में भिड़ गया था। अन्य लोग वहाँ पर एक गोलाई में खड़े थे और फुटबाल एक-दूसरे के पास फेंक रहे थे।

"तुम लोक नहीं सकते? और तेज और तेज!" यह हर्बर्ट की आवाज थी। उसका अपने ऊपर अच्छा नियन्त्रण था। अगर एस० ए० वाले हमारे पास आये, तो ये युवक क्या प्रतिक्रिया करेंगे? ये बहुत कम उम्र के थे। पहले कभी भी ऐसी तनावपूर्ण स्थिति में न पड़े होंगे। मुझे नहीं पढना चाहिये था—जो मैंने पढ़ा था: "प्रसिद्ध कम्युनिस्ट पड़ाव पर छापा मारा गया।" यह पुलीस के मन में पदयात्रियों के प्रति कहीं अधिक संदेह पैदा कर देगा—ब्राउन बुक—पन्द्रह वर्ष की सख्त कैद।

"यह कड़ी बालू की तरह छिन्न-भिन्न हो गई!"

ब्रूनो ! कितनी शांति से उसने यह कहा ! क्या उसने जान लिया था कि मैं—क्या वह अपनी इस सामान्य टिप्पणी से मुझे होश में लाना चाहता था ? मैं बुरी तरह शर्मिन्दा था। वे वहाँ थे ! दो पुलीस वाले, दो एस० ए० वाले। तो यह दौड़ थी ! वे धीरे-धीरे ढाल से नीचे आये और फिर उस टोली की ओर गये। एस० ए० वालों में से एक खेमे के पास रुक गया और उसके अन्दर देखने लगा। मैंने ब्रूनो को देखा। वह मशीन की तरह अपनी पैडिलें दाईं ओर घुमा रहा था और उसने अन्य लोगों को भी देखा। उसके होंठ पतली रेखा की भाँति हो गये थे। मेरे सिर में रक्त बुरी तरह उफान मार रहा था। हम प्रत्येक शब्द सुन सकते थे।

"यह खेमा किसका है ?" पुलीस वालों में से एक ने पूछा।

हम केवल उसकी चौड़ी पीठ और लोहे की हरी टोपी के नीचे उसकी छोटी गठीली गर्दन ही देख सकते थे।

"मेरा है," हर्बर्ट ने उत्तर दिया।

"तुम्हारे पास खेमे का लाइसेन्स है ?"

"हाँ, एक सेकेन्ड रुकें।"

वह खेमे की ओर दौड़ कर गया और रेंग कर अन्दर घुसा। लड़के और लड़कियाँ निश्चल खड़ी थीं चार वर्दीधारियों से घिरी हुई। उनकी बाहें उनकी बगलों में निर्जीव-सी लटकी हुई थीं। उनमें से एक ने फुटबाल अपने सीने से चिपका लिया। उन्हें अपना खेल खेलते रहना चाहिये ! जारी रखो ! मैं देख रहा था कि एक एस० ए० वाले ने चारों ओर खोजपूर्ण नजर डाली, फिर पुलीस वाले को टहोका मार कर फुस-फुसाते हुये कहा। पुलीस वाले ने तेजी से अपना सिर घुमाया और हमारी ओर देखा। अगर वे हमारे पास आये—लेकिन वे दूसरों की तलाशी नहीं ले रहे थे। हर्बर्ट पुनः वापस आ गया और पुलीसवाले को उसने लाइसेन्स दे दिया।

"क्या आपने नियम नहीं पढ़े हैं ? क्या आप नहीं जानते कि खेमे

केवल उन्हीं स्थानों पर गाड़े जा सकते हैं जो इसके लिए सुरक्षित हैं ?" उस व्यक्ति ने तेजी से कहा।

"मैंने सोचा कि यह सब जनता का जंगल है," हर्बर्ट ने उत्तर दिया।

"जनता का जंगल से तुम्हारा क्या मतलब है ? अपना सामान बाँधो और तुरन्त चलते बनो !"

"अच्छी बात है।"

पुलीस वाले ने लाइसेन्स वापस कर दिया और फिर हमारी ओर घूमा।

"क्या तुम लोग इसी टोली के हो ?" उसने पूछा।

ब्रूनो सीधा खड़ा हो गया, लेकिन हर्बर्ट उसके सामने था।

"हाँ, हम सब साथ ही हैं।"

उसका पूछना ठीक ही था—हमें वह दुविधा में नहीं छोड़ना चाहता था।

ब्रूनो का मुँह आधा खुला रह गया। मेरे हाथ काँप रहे थे। मुझे कुछ करना चाहिये। साइकिल का पिछला पहिया अभी भी घूम रहा था। मैंने उसे रोक दिया।

"अब आप जान गये न ? अगर हमें फिर आपका खेमा गलत स्थान पर गड़ा मिला, तो मुझे आपके विरुद्ध सम्मन जारी करने पड़ेंगे !"

उसके शब्द मेरे पास बहुत दूर से आते प्रतीत हो रहे थे। और फिर :

"हिटलर जिन्दाबाद !"

"हिटलर जिन्दाबाद !"

मेरा दायाँ हाथ हवा में झटके के साथ ऊपर उठ गया, जैसे किसी ने उसे डोरी से ऊपर खींच दिया हो।

चारो वर्दीधारी वृक्षों के पीछे गायब हो गये। मुझे बुरी तरह गर्मी लग रही थी। मेरा मुँह सूख गया था। ब्रूनो मुझे देर तक देखता रहा। उसने एक गहरी साँस खींची। हमने जरा देर प्रतीक्षा की और फिर

अन्य लोगों के पास गये। दोनों लड़कियाँ पास-पास सट कर खड़ी थीं, जैसे एक-दूसरे को सहारा दे रही हो। वह युवक अभी भी गेंद को अपने सीने पर दबाये हुये था। वह ऐल्फ्रेड था। वह बहुत पीला पड़ गया था। एक शब्द भी नहीं कहा गया। ब्रूनो ने हर्बर्ट की ओर अपना हाथ बढ़ाया।

"धन्यवाद, हर्बर्ट। लेकिन ऐसा करना गलत हुआ। हमें अपरिचित ही बने रहना चाहिये था।"

हर्बर्ट ने उत्तर नहीं दिया। लेकिन चश्मे के पीछे उसकी आँखें चमक उठीं और उसके चेहरे पर प्रसन्नता की एक चमक कौंध उठी।

रुखड़े चेहरे वाला ब्रूनो कठोर दिख रहा था और उसकी नाक टूटी हुई थी। और हर्बर्ट एक सच्चे किताबी कीड़े की तरह दुबला और पीला दिख रहा था।

"अब हमें चलना चाहिये," ब्रूनो ने कहा—"हम इसी हफ्ते में एक दूसरे से मिलेंगे। मैं जानता हूँ कि आप लोगों को कहाँ पा सकूँगा।"

"हाँ," केवल इतना ही हर्बर्ट ने कहा।

हम सब ने हाथ मिलाये।

हम जंगली रास्ते पर धीरे-धीरे साइकिलें खींचते रहे। ब्रूनो हमारे सामने खेमे वाले स्थान के पीछे रुक गया।

"हमें अब विदा होना चाहिये, कार्ल। यही अच्छा होगा।" उसने कहा—"आप तो रास्ता अब जानते ही हैं, है न ?"

"हाँ-हाँ।"

मैंने दृढ़तापूर्वक हाथ मिलाया।

"फ्रांज और रूडी से मेरा नमस्कार कहियेगा।"

"जरूर-जरूर।"

मैं खड़ा-खड़ा उसे पेड़ों के बीच गायब होते देखता रहा।



जिन दो लोगों पर हमें यह संदेह हो गया था कि वे हमारे

साथ विश्वासघात कर रहे हैं, उन्हें हमने दो हफ्ते से कड़ी निगरानी में रख रखा था। उनमें से एक व्यक्ति राबर्ट एक नौजवान तालासाज़ था। फ़ासिस्टों के सत्ता हथियाने के कुछ दिनों पहले ही वह नवयुवक संगठन से आ कर पार्टी में शामिल हुआ था। वह हमेशा हमसे यही अनुरोध किया करता था कि उसे खतरनाक कामों में शामिल किया जाय। हमने सोचा कि इसका कारण उसकी नौजवान भावनायें ही होंगी। लेकिन जब हमारा समाचार-पत्र-वितरक और पाँच ऐसे ग्राहक गिरफ्तार कर लिये गये जिन्हें अभी अखबार की प्रति भी नहीं मिली थी, तब हमें संदेह होने लगा कि जरूर हमारे ही बीच का कोई आदमी विश्वासघात कर रहा है, और तब हमारा ध्यान राबर्ट के विलक्षण आचरण की ओर एकाएक ही आकृष्ट हो गया। यद्यपि हमने सभी कामरेडों को चेतावनी दी थी कि अब वे विशेष रूप से सतर्कता बरतें, लेकिन फिर भी वह हमेशा जैसे साहस का प्रदर्शन करता रहा। एक रात वह सड़क पर एक चौड़ी खाई के बगल से गुजरा, जिसमें मजदूर अभी भी काम में जुटे हुये थे, और बिजली की-सी तेजी से पैम्फलेटों का एक पैकेट खाई के अन्दर फेंक दिया। लेकिन रोथेकर को गिरफ्तार करने की एस० ए० की नाकाम कोशिश के बाद से गैरकानूनी काम करने की राबर्ट की उत्सुकता ने हमारे मन में संदेह पैदा कर दिया। और फिर, वह जिन लोगों से मिलता-जुलता था, उनके कारण भी संदेह होना लाज़मी था। वह बहुत से एस० ए० के आदमियों से बहुत ज्यादा बातचीत किया करता था। हमारे कामरेडों ने इस बात की पुष्टि की थी कि उसका यह क्रम अभी भी जारी था। यह बात सच थी कि राबर्ट के इन सम्पर्कों के संबंध में हमें हमेशा जानकारी रहती थी। राबर्ट एस० ए० वालों के साथ अपनी बातचीत की रिपोर्ट दिया करता था, और कभी-कभी तो इस बात की बड़ी अंतरंग सूचनायें भी हमे दिया करता था कि एस० ए० वाले क्या सोच रहे हैं। वह एस०

ए० के बहुत से आदमियों को जानता था। वह उन्हें अपने प्रशिक्षण काल और कंटिनुएशन स्कूल के दिनों से ही जानता था। वे लोग भी यह जानते थे कि कभी वह कम्युनिस्ट रहा है। लेकिन पुरानी मित्रता इस सब के बावजूद कायम थी। इसके अतिरिक्त राबर्ट ने उनसे कह रखा था कि राजनीतिक घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि कम्यून के लिए उसका कार्य करना कितना तथ्यहीन और निरर्थक था। राबर्ट ने हमें बताया कि उन लोगों को उसकी यह बात बड़ी विश्वसनीय प्रतीत हुई थी। उन लोगों ने कहा, कि हिटलर ने भी क्या यह बात नहीं कही थी कि वह प्रत्येक गुमराह 'जनता के मित्र' की ओर समझौते और मैत्री का हाथ बढ़ाने को तैयार है। यह तो आदर्शवादिता थी कि वह साम्यवाद की ओर आकृष्ट हो गया था, और उस जैसे लोगों से ही लाभप्रद 'जनता की मैत्री' विकसित हो सकती थी।

लेकिन अब हम राबर्ट की एस० ए० संबंधी बातों को दूसरी ही दृष्टि से देखते थे। यह सच है कि उसके खिलाफ़ हमारे पास कोई ठोस बात नहीं थी, लेकिन फिर भी हमने उसे अपने विश्वसनीय लोग की सूची से काट दिया। पिछले दो हफ़्तों में मैं राबर्ट से दो बार मिला था। पता नहीं क्यों मेरा मन इस भावना से छुटकारा नही पा रहा था कि हम लोग उसके संबंध में निर्णय करने में कहीं भूल कर रहे हैं। वह मेरे कार्यों के संबंध में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं जानता था; उसे बस इतना मालूम था कि मैं एक विश्वासपात्र कामरेड हूँ, या था। मैंने उससे अपनी भेंट के दौरान पहली ही बार उससे कह दिया था कि इन चीजों में मेरी अब तनिक भी रुचि नहीं रह गई है, और मैं जीवन मे काफ़ी राजनीति कर के भर पाया। (उसके पहले शब्द यह थे कि उसे अब अखबार क्यों नहीं मिल रहा है और हम लोग किसी दूसरे 'काम' के लिए उसका इस्तेमाल कब करने जा रहे हैं?)

मैंने उससे कहा कि मैंने इन कामों में अपने जीवन के जो वर्ष लगा

दिये थे उसके लिए मुझे दुख था। मैंने जो तकलीफ़ें उठाई और जो प्रयत्न किये उनका मुझे स्वयं अपने निजी लाभ के लिए इस्तेमाल करना चाहिए था। मैंने कहा कि यदि मैंने ऐसा किया होता तो आज मैं ज्यादा अच्छी स्थिति में होता। और किसी भी हालत में, दृढ़तापूर्वक जमी हुई वर्तमान सरकार का विरोध करना तो बिल्कुल ही बेकार और पागल-पन की बात थी। राबर्ट के चेहरे पर चिंता की रेखायें उभर आईं, खुली सड़क पर उसने मेरे कंधे पकड़ कर मुझे झकझोर दिया। उसने क्रोधपूर्वक कहा कि क्या मुझे इस बात का एहसास है कि मैं क्या बक रहा हूँ? अपने अंदर दृढ़ता बनाये रखने के लिए मुझे अपने अन्दर-ही-अन्दर अपने आप को बहुत सम्भालना पड़ा। मैंने जवाब में कहा कि मैं जानता हूँ कि मैं क्या कह रहा हूँ, लेकिन उन तथ्यों ने, जो अब इति-हास बन चुके थे, हमारे सभी अव्यावहारिक सिद्धान्तों को गलत सिद्ध कर दिया है। राबर्ट बहुत परेशान दिख रहा था और वह बराबर मुझे समझाने की कोशिश करता रहा। लेकिन मैं अपने विचारों और मतों पर दृढ़तापूर्वक जमा रहा। उसकी हर बात मेरे मन-मस्तिष्क के अन्दर चाकू की तरह चीरती हुई चली जा रही थी, लेकिन मैंने जबरन अपने को ऐसा बनाये रखा जैसे मुझे इन बातों में अब कोई दिलचस्पी न हो। इस मामले में मैंने बहुत-कुछ बाजी पर लगा दिया था।

और फिर मैं कल राबर्ट से पुनः मिला। और एक बार फिर मुझे यही लगा कि हमने उसे समझने में भूल की है। राबर्ट का यौवन की दीप्ति से दमकता चेहरा पिछले दो हफ़्तों में ही कांतिहीन हो गया था और उस पर चिंता की रेखायें उभर आई थीं। "आखिर आपको और अन्य कामरेडों को हो क्या गया है?" उसने मिलते ही सवाल किया। वह हमारे व्यवहार और हमारी बातचीत को समझ नहीं पा रहा था। अन्य कामरेड भी वैसी ही फ़िज़ूल की बकवास करते थे जैसी मैं करता था, कोई अब काम ही नहीं करना चाहता था। उसने मेरी बाहें पकड

कर, यह बातें कहते-कहते मेरी ओर ऐसी भयकर निराशा से देखा कि मैं बुरी तरह उलझन में पड़ गया। क्या यह भी जासूसी करने का अत्यधिक चतुराई से भरा प्रयास है ?—यह प्रश्न मेरे मस्तिष्क को मथने लगा। लेकिन वह इस तरह का नाटक नहीं कर सकता। पिछले कुछ महीनों में गैरकानूनी क्रिया-कलाप के दौरान मैंने लोगों के असली रूप पहचानने की असाधारण शक्ति और सूक्ष्म चेतना अपने अन्दर पैदा कर ली थी। मेरी इस चेतना ने कभी मुझे धोखा नहीं दिया। वह आदमी ईमानदार था।

लेकिन मैंने अपनी भावनाओं को काबू में कर लिया और अपना वही रवैया ज्यों का त्यों कायम रखा। "भाई सब-कुछ समाप्त हो चुका है, अब कुछ नहीं हो सकता। सब-कुछ कर के तो देख लिया गया।" मैंने उसे फिर वैसे ही स्वर में समझाया। उसने बड़ी कठिनाई से दो-तीन बार राल निगली। फिर वह बोलने लगा। मैं सब से अच्छे कामरेडों मे से एक था, और हममें से सब से अच्छे लोगों को निराश कर देने के लिए वह सब काफ़ी था, जो हो रहा था, उसने मरे हुये-से स्वर मे कहा। और फिर वह एक बार पुनः उत्तेजित स्वर में बोलने लगा कि मैं मजदूर आन्दोलन में बारह साल जूझा था; मैंने एकाएक इस तरह अपनी सारी बुद्धि कैसे भ्रष्ट कर ली ? उसके इस तरह बोलने के बाद मैं उसका साथ छोड़ कर तेजी से चला गया। सारी बातें बेवकूफी से भरी हुई थीं। लेकिन राबर्ट खुली सड़क पर इतने उत्तेजनापूर्ण ढग से व्यवहार कर रहा था कि उससे मेरे लिए खतरा पैदा हो सकता था। हाँ मेरे लिए यह खतरनाक था, कि मैं उसके साथ उपेक्षा और उदासीनता का नाटक कर रहा था ! कल तो मैं इस सीमा तक पहुँच गया कि उसे सब-कुछ सही-सही बता दूँ। लेकिन तभी मेरे मन में यह ख्याल आया कि एक विश्वासघाती भी तो वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा राबर्ट कर रहा था। इसके अलावा उसे असलियत बताना हमारे लिए अनुशासन

के अपने सभी नियमों को भंग करना होगा। मुझे अपनी भावनाओं को प्रश्रय नहीं देना चाहिए। और इस विचार ने मुझे फिर सुस्थिर कर दिया।

तीन दिन बाद की बात है।

साथी कामरेड अभी भी राबर्ट पर निगरानी रख रहे थे। वह अपने काम पर अकेला जाता था और अकेला ही वापस आता था। शाम के समय वह शायद ही कभी घर से निकलता था। इस सारे मामले को अब इस पार या उस पार स्पष्ट ही हो जाना चाहिए, ऐसा हम सभी सोचते थे।

एक अन्य कामरेड पर भी हमें संदेह था। वह था फ्रांज। वह ईंट पाथने वाला था। काफ़ी लम्बे समय से वह बेरोजगार था, और उस पर एक पूरा परिवार भी निर्भर था। वह पार्टी में वर्षों से था इसलिए वह ज्यादा अच्छी तरह समझ सकता था कि कौन-कौन से कामरेड महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त थे। जब से हमें गैरकानूनी ढंग से काम करने को मजबूर होना पड़ा था तब से उसे केवल अखबार ही वितरण के लिए दिये जाते थे। लेकिन पिछले दो महीने से हम लोगों ने उससे यह काम लेना भी बन्द कर दिया। फ्रांज जरा भी भरोसा करने लायक नहीं रह गया था। अकसर तो वह अखबार लेने आता ही नहीं था और जब आता भी था तो बहुत देर से, जिससे उसके सम्पर्क में आने वाले अन्य कामरेडों के लिए बड़ी खतरनाक स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। हमारे मन में संदेह पैदा होते ही इन कामरेडों को फ़ौरन सभी तरह के कार्यों से मुक्ति दे दी गई। आज तक तो कोई गड़बड़ी नहीं हुई। लेकिन हम जानते हैं कि यह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है और न इसके आधार पर भविष्य के संबंध में कुछ कहा ही जा सकता है। क्योंकि यदि फ्रांज सचमुच जासूस है, तो गेस्टैपो सैनिक उन लोगों को कभी गिरफ्तार नहीं करेंगे जिनके माध्यम से उसका हमसे संबंध था। उनकी गिरफ़्तारी से

तो हमारे सामने क्रांज की कलई ही खुल जाती। गिरफ्तार किये गये कामरेड लगभग हमेशा ही गेस्टॅपो द्वारा चलाये जाने वाले मुकदमों में अपनी बात पर अड़े रहते थे और पार्टी का भेद नहीं उगलते थे। इसलिए उन्हें इक्के-दुक्के कामरेडों को सीधे-सीधे गिरफ्तार कर लेने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उन लोगों ने अपनी आदत-सी बना ली थी कि जिन लोगों पर उन्हें संदेह होता था उन पर हफ्तों और किन्हीं-किन्हीं मामलों में तो महीनों कड़ी नजर रखते थे। इस तरह वे किसी भी व्यक्ति के सम्पर्क जानने की आशा रखते थे ताकि इन सम्पर्कों को जान लेने पर वे पूरे संगठन को एक ही चोट में समाप्त कर सकें। इसीलिए हम लोग ऐसे ही तरीकों तक अपने को सीमित रखते थे, जिनके अंतर्गत हमारे सब से अच्छे कामरेड भी केवल उन्हीं लोगों से परिचय प्राप्त कर सकते थे, जिनके साथ उन्हें कम करना होता था। किसी भी कामरेड को इससे अधिक कुछ भी नहीं मालूम होना चाहिए। मुझे स्वयं अपने आपको लगातार ऐसी बातें जानने से रोकना पड़ता था, जिन्हें जानना मेरे लिए बिलकुल आवश्यक ही नहीं होता था। हमें मालूम है कि प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक यंत्रणायें सहन कर के भी दृढ़ नहीं बना रह सकता। इसलिए हम यह कोशिश करते थे कि कोई भी व्यक्ति कभी अपने आप में पूर्ण बायन न दे सके। क्रांज ने हमारी वैधता के जमाने में हमारे जो क्रिया-कलाप देखे थे उन्हीं से हमारे संबंध में अटकलें मात्र लगा सकता था।

वह बेरोजगार था। लेकिन उसका गंजा सिर और सूखी पत्तियों जैसे कान (जाड़े की एक रात में उसके कानों को पाला मार गया था) हर रोज़ दिन में और रात में भी किसी भी समय शराबखाने में देखे जा सकते थे। यह एक पहेली थी। शराब और स्प्रिट के जाम और ताश से जुआ खेलने के लिए आखिर उसे पैसे कहाँ से मिलते थे? इसमें सदेह नहीं कि सहायता केन्द्र से मिलने वाले चन्द सिक्कों में से अधिक पैसे उसकी बीवी के हाथ कभी नहीं लग पाते थे। घर के काम-काज के

तिथि के अलावा भी मैं रोज शाम के वक्त उससे ठीक उसी समय मिल सकता था, जब वह स्टेशन से लौटता होता था।

उसने अपने कारखाने के उत्पादन और मजदूरों की भावनाओं के सम्बध में विस्तृत रूप से कुछ महत्वपूर्ण बातें भी बताईं। मैं उसकी सूचनाओं को अपनी कस्बा कमेटी के पास भेज दूँगा और उनसे पूछूँगा कि उस विशिष्ट कारखाने में क्या हमारे कोई ऐसे कामरेड हैं, जिनके साथ मिल कर अल्फ्रेड काम कर सके। मुझे अपनी गलियों के अखबार में उसकी सूचनाओं को छापने में बड़ी खुशी होती, लेकिन अपनी गली मे हम अखबार छाप ही नहीं सकते थे, और न हम वहाँ कोई और चीज ही वितरित कर सकते थे।

आज एक भयंकर घटना घटित हो गई। राबर्ट की माँ रोती हुई सडक पर भागती हुई गई। वह हर किसी को बता रही थी कि उसका बेटा गिरफ्तार कर लिया गया है और वह एलेक्जेंडरप्लाट्ज़ पुलिस स्टेशन मे रक्खा गया है। वह कल सुबह हमेशा की तरह अपने काम पर गया था और फिर लौटा ही नहीं था। वह चिंता से मरती हुई शाम को काफी देर से कारखाने भागी गई। रात के चौकीदार को याद नहीं पड़ रहा था कि उसने राबर्ट को कारखाने से बाहर जाते देखा था। सारी खबर तो उसे पुलिस वालों ने दी। राबर्ट कल शाम को गिरफ्तार किया गया था। उसे दीवारों पर कम्युनिस्ट नारे लिखते हुये पकड़ा गया था।

हम लोग अत्यधिक विचलित हो उठे हैं, हमारा मन करुणा से भर गया है। हमने एक वफ़ादार कार्यकर्त्ता पर झूठमूठ ही संदेह कर लिया था। राबर्ट और अधिक समय तक उस निष्क्रियता को बर्दाश्त नहीं कर सका। वह बिलकुल अकेला अपने अभियान पर निकल पड़ा था। किसी को अपने साथ खतरे पर नजर रखने के लिए भी वह नहीं ले गया। उसे पिछले

कुछ हफ्तों में कैसी मानसिक यंत्रणा सहन करनी पड़ी होगी, कि उसे ऐसा निश्चय करना पड़ा ! वह अवश्य ही यह जानता रहा होगा कि एकदम अकेले अभियान पर निकल पड़ने पर उसके बच कर निकल आने की कोई आशा नहीं की जा सकती।

मैं अपने आप को धिक्कारता रहा। जिस समय मेरी सहज-बुद्धि ने मुझे चेतावनी दी थी कि वह ईमानदार आदमी मालूम होता है, उसी समय मुझे राबर्ट से सच्चाई कह देनी चाहिए थी। इसमें संदेह नहीं कि उसका पत्ता अपने बीच से काट देने का निश्चय केवल मात्र मेरा ही निश्चय नहीं था। लेकिन हम सभी लोग मनुष्य हैं, और सभी लोग गलतियाँ कर सकते हैं। उलझनों और जटिलताओं से भरा हुआ यह समय ही इन भूलों के लिए ज़िम्मेदार है। हम लोग घबराहट में एक आश्रय से दूसरे आश्रय को भागते रहते हैं, फिर भी हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि अगले क्षण हम सुरक्षित होंगे या नहीं। मैं स्वयं अपने आप से यह बातें बार-बार दुहराता रहा। लेकिन मेरी आत्मा मुझे चैन से रहने नहीं देती। राबर्ट गिरफ्तार कर लिया गया है—यह एक ऐसा सत्य है, जिसे अब बदला नहीं जा सकता। अब इस सत्य को तो झुठलाया ही नहीं जा सकता।

लेकिन हमारे ऊपर चाहे कोई भी मुसीबत क्यों न आये, हम समाजवादी जर्मनी की स्थापना के लिए संघर्ष कर रहे हैं, और करते रहेंगे। भूरीवर्दीधारियों ने उद्घोषणा कर रखी है कि जर्मनी के प्रति प्रेम-भाव पर उन्हीं की बपौती है। वे कहते हैं कि वे जर्मन जनता के लिए लड़ रहे हैं—और वे सब से श्रेष्ठ जर्मनवासियों को ही नेस्तनाबूद करते जा रहे हैं !

हम लोग—जर्मनी के हम श्रमिक, अपने मन से जर्मनी के प्रति प्रेम-भाव को कैसे निकाल सकते हैं ?

हम लोग ही वे मेहनतकश हैं, जिन्होंने जर्मन की रेलवे और शहरों

का निर्माण किया, जिन्होंने उसके खेतों को जोता-बोया, लेकिन जो स्वयं गरीब बने हुये हैं, जिन्हें उसके सौंदर्य में कोई हिस्सा नहीं प्राप्त है। राबर्ट ! गिरफ्तारी से तो उसके मन को दुगना आघात लगा होगा।

तुम जेल की अँधेरी कोठरी में बैठे सोच रहे होगे कि हम सब लोग कायर बन गये हैं। कि तुम्हारा स्थान लेने वाला भी अब कोई नहीं बचा है। कि तुम्हारा त्याग व्यर्थ हो गया।

तुम्हारा दुबला-पतला, कांतिहीन, निराशा की गहरी रेखाओं से भरा चेहरा हमेशा मेरी आँखों के सामने मौजूद रहेगा। तुम्हारे शब्द मेरे कानों में हमेशा गूँजते रहेंगे—"तुम्हें एहसास है कि तुम क्या बक रहे हो, जान ? क्यों भाई, तुम तो सब से अच्छे कामरेडों में से एक हो। और हममें से सब से अच्छे कामरेडों को निराश कर देने के लिए काफ़ी है कि..."

नहीं, नहीं। हम लोग निराश नहीं हैं। अभी भी निराश नहीं है, राबर्ट !

एलेक्स हमसे नमस्कार कर के चला गया।

एलेक्स वही कामरेड है जो हमारे एक नाट्य दल के साथ निर्देशक का काम किया करता था। जिला उप-समिति ने कुछ सप्ताह पूर्व उसे मेरे पास भेजा था। वह हमारे कस्बे की भूलपूर्व सोशल डिमाक्रेट पार्टी की शाखा के कुछ पुराने सदस्यों से सम्पर्क स्थापित करने में सफल हो गया था। वह हमारे दोनों दलों में एकता स्थापित करवाना चाहता था। तब से मैं बराबर एलेक्स से नियमित रूप से मिलता रहा हूँ। लेकिन हमेशा कोई-न-कोई अड़चन पड़ जाती थी। हर बार ही उसने मुझे बताया था कि अपरिचितों से भेंट करने के संबंध में सोशल डिमाक्रेट साथी कितने अधिक संशयालु थे। उन्हें इस बात के लिए राज़ी करना

बहुत कठिन था कि वे हमारे दलों से सम्पर्क स्थापित करें। मुझे धैर्य रखना चाहिए और कुछ समय और इंतजार करना चाहिए।

और अब दो दिन पहले एलेक्स ने मेरे पास एक संदेश भेजा था यह बताने के लिए कि वह मामले को कितनी दूरी तक पहुँचा सका है और भेंट का स्थान कौन-सा रहेगा।

सोशल डिमाक्रेट कामरेड मेरे बगल-बगल चल रहा था। हम टिएरगार्डन की ओर टहलते हुये जा रहे थे। संकरे सीधे पथ को दोनों तरफ़ से अपने आगोश में बाँधे खड़े ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की पत्तियाँ झड़ कर मार्ग में बिखर चुकी थीं। सूखी पत्तियाँ हमारे पैरों के नीचे दब कर चर्र-चर्र की आवाज़ कर रही थीं। मैं समझ रहा था कि उसका संकोची स्वभाव ही हमारे बीच एक दीवार बन कर खड़ा हो गया था। मुझे ही बातचीत शुरू करनी चाहिए।

"सब से पहले तो हमें यह निश्चित कर लेना चाहिए कि हमारी सब से पहली भेंट कहाँ हुई।"

"ऐं! ऐसा क्यों?"

"मान लो अगर कुछ गड़बड़ी ही हो जाय, तो यह जान लो, कि उनका सबसे पहला प्रश्न आम तौर से यही होता है। और उस हालत में हम दोनों के जवाब बिलकुल एक होने चाहिए।"

कामरेड मेरी ओर देखने लगा।

"मैं यह बात नहीं जानता था," उसने धीमे स्वर में कहा।

हमने कुछ सम्भावनाओं पर विचार किया, लेकिन उन सब को अस्वीकार ही किया गया। हमारी पहली भेंट का बयान विश्वसनीय प्रतीत होना चाहिए। फिर मैंने एक सुझाव दिया जो हम दोनों को उपयुक्त लगा।

मैंने उसे बताया कि मेरा नाम कार्ल है। (इतना ही काफ़ी था कि हमारे अपने लोग मुझे जान के नाम से जानते थे।) उसका नाम

एवाल्ड था। हम दोनों में यह भी तय हुआ कि अगर हम कभी गिरफ्तार कर लिये गये तो एक दूसरे को 'साई' से सम्बोधित करेंगे, जो सम्बोधन का शालीन रूप था। मैंने उसे बताया कि जाने-पहचाने 'डू' का सम्बोधन करने वालों के संबंध में नाजी फ़ौरन यही सोचते हैं कि वे कम्युनिस्ट हैं।

शुरू-शुरू में ही सम्भावित खतरों के संबंध में इतनी सारी बातें करना क्या जरूरत से बहुत अधिक था? लेकिन वह बिलकुल शांत बना रहा, इसलिए मैंने इस संबंध में और अधिक कुछ भी नहीं सोचा। चौकसी और सावधानी बरतने के लिए यह बातें बहुत जरूरी थीं।

बात करते समय मैं एवाल्ड की ओर कनखियों से देखता जा रहा था। कहीं मैं बहुत पहले से ही तो इसे नहीं जानता? इसका यह लाल चेहरा, आँखों के नीचे माँस का फूला हुआ हिस्सा और बाँयें गाल पर खरोंच का दाग। लेकिन कनपटियों पर इसके अधपके चितकबरे बाल? एवाल्ड मेरे अगल-बगल चुपचाप चल रहा था। मैं अभी भी याद करने की कोशिश कर रहा था कि पहले मैंने उसे कहाँ देखा है। और फिर मुझे याद आ ही गया।

"कामरेड एवाल्ड, तुम हमारी मीटिंगों में तो नहीं आया करते थे?—टकिरचेस जेल्ट में। तुम कहीं वहाँ तो नहीं रहते, अरे वहाँ.. ?"

"रोजिनेनलस्ट्रैसी में, पीपुल्स हाउस में," वह बीच ही में बोल उठा। —"मैं भी बराबर यही याद करने की कोशिश कर रहा था कि पहले हम लोगों की भट कहाँ हुई थी। निस्सन्देह हम लोग वहीं मिले थे। अकसर हम लोगों में बड़ी लम्बी बहसें हुआ करती थीं कार्ल।"

एवाल्ड मुस्कराने लगा, और मुझे भी इससे बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हुआ। मैंने देखा, उसके चेहरे पर से संकोच और अविश्वास के भाव मिट गये। वह मेरी ओर मैत्री-भाव से देखने लगा। पहले हम पीपुल्स हाउस में मिलते थे—अब माइकोवस्की की बैरेकों में!

"लेकिन तुम बहुत बदल गये हो—तुम्हारी तो शकल भी बदल गई...।"

एवाल्ड ने हैट उतार कर अपने बालों को एक झटका दिया।

"मेरे बाल पक गये," वह बोला। वह सामने की तरफ़ विचारमग्न भाव से देखने लगा।

"रोज़िनेनस्ट्रैसी में..."

कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया।

फिर एवाल्ड ने गंभीर स्वर में कहना शुरू किया :

"हमारी खिड़कियाँ सेहन की ओर खुलती हैं। वे खिड़कियों पर कड़ी नजर रखते हैं। लेकिन हम पर्दे के अन्दर से ही नीचे एस० ए० की कोठरियों के अन्दर का हाल देख सकते थे। लगभग प्रत्येक रात को कामरेडों की चीखें सुनाई पड़ती थीं। मेरी पत्नी को तो कानों में रूई की ठेंठी लगाये बगैर नींद ही नहीं आती थी।"

हम एक पगडंडी पर मुड़ कर चलने लगे। चारलोटेनबर्ग से मोटर-कारों के हार्न की आवाज़ आ रही थी। बाईं तरफ़ तालाब में चंद बत्तक धीमी चाल से तैर रहे थे।

"एस० ए० के विशेष कांस्टेबुलों की टुकड़ी भंग किये जाने के बाद से स्थिति और भी खराब हो गई है। जब कार बगल में आ जाती है तो उन्हें कामरेडों को घसीट कर बाहर निकालना पड़ता है।"

एवाल्ड का मुँह मेरे चेहरे के बहुत पास आ गया था। उसने अपनी उंगलियाँ मेरी बाँह पर इस तरह धँसा दीं कि प्रत्येक उँगली का दबाव मुझे अलग-अलग महसूस होने लगा। उसकी आवाज़ करख्त हो गई और उसमें जबरन दबाये गये गुस्से की आग भभक उठी।

वह बोला—"लेकिन इन एस० ए० वालों के चेहरे मेरे स्मृति-पटल पर अंकित हो गये हैं। जब कभी मौका आयेगा तो..."

हमारे कामरेडों में से हर एक ने एक-न-एक क्रूर वहशी सिपाही को तड़ रखा था, लेकिन एवाल्ड ने...?

वह कहता जा रहा था—"हम लोग शांतिपूर्ण तरीकों से सत्ता ग्रहण करना चाहते थे; उन लोगों ने उन सपनों को मिट्टी में मिला दिया।"

(दिसम्बर, १६३२ में मेरी उससे बड़ी लम्बी बहस हुई थी। उस समय वह क्रमिक जनतंत्र के पक्ष में था।)

"पहले पहल इसी संबध में विचार करने में मैंने अपना सारा समय लगा दिया," वह कहने लगा—"और अन्य कामरेडों के संबंध में भी बहुत-कुछ यही बात थी। लेकिन हमारे हाथ घोर निराशा लगी, और धीरे-धीरे हम हर चीज़ की तरफ़ से पूरी तरह उदासीन हो गये। हमारी शाखा में केवल सात कामरेड वफ़ादार बने रह गये। हमें केन्द्रीय पार्टी कार्यालय से कभी कोई सहायता नहीं मिली। पूरा संगठन टूट गया, तितर-बितर हो गया। केवल हम सात लोग एक साथ बने रह गये। फिर हममें से एक कामरेड एलेक्स को अपने साथ लाया। उसने हमें तुम्हारे बारे में बताया। उसने हमसे कहा कि हमें तुम्हारे दलों से सम्पर्क जरूर स्थापित करना चाहिए। लेकिन हम बहुत लम्बे अर्से तक हिचकते रहे।"

"मुझे मालूम है, उसने मुझे बताया था।"

"हाँ, कार्ल। हम बराबर स्वयं अपने आप से प्रश्न करते रहे कि क्या हमें इतने गये-गुजरे लोगों की खातिर अपनी जान जोखिम में डालनी चाहिए? जनता की वह सारी भीड़ जो हमारी सभाओं में दौड़ी आती थी, हमेशा ऊँची-ऊँची बातें करती रहती थी, बस बातें करती थी और कुछ नहीं, अब कहाँ गई? अब वह लोग स्वास्तिक झंडों को सलामी देते है, उन्हें अपने घरों पर टाँगते हैं, और नाजी प्रदर्शनों के पीछे भागते है। मानवता में हमारे विश्वास को खत्म करने के लिए इतना ही काफ़ी

है। उन लोगों ने हमारी चेतावनी के बावजूद हिटलर को वोट दिये। हम तो सोचते हैं, उन्हें अब अपने किये का फल भोगने दिया जाय।"

एवाल्ड ने गहरी साँस ली। मैं चुप ही रहा। उसने मेरी ओर देखा।

"तुम्हारे साथियों में से भी बहुतों ने तुम्हारा साथ छोड़ कर एस० ए० से गठबंधन कर लिया है। एक को तो मैं ही बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। जब मैं उसके गंजे सिर को माइकोवस्की बैरेकों के अन्दर घुसते देखता हूँ, तो...।"

गंजा सिर? गंजा सिर? कहीं वह...? मैंने एवाल्ड की बाँह जोर से पकड़ ली।

"तुमने अभी गंजे सिर का नाम लिया। वह आदमी कैसा दिखता है?"

"क्यों? उसके संबंध में तुम क्यों परेशान हो?"

"वह किस तरह का है? उसकी शक्ल-सूरत जरा विस्तार से बयान करो; बताओ, बताओ, कैसा दिखता है वह!"

"वह झुक कर चलता है। उसका गंजा सिर कुछ उठा हुआ नोकीला-सा है। और उसके मुड़े-तुड़े कान बड़े हास्यास्पद लगते हैं।"

अब कोई शक नहीं रहा—वह कौंज़ ही है! मैं अत्यधिक उत्तेजना महसूस करने लगा।

"उसके बारे में और क्या जानते हो?"

"मैंने उसे अनेकों बार एस० ए० के लोगों के साथ सेहन पार कर के माइकोवस्की बैरेकों में जाते देखा है," एवाल्ड ने कहा—"तुम अभी तक यह बात नहीं जानते थे क्या?"

"नहीं। वह गद्दार है—उसने हमारे कामरेडों को गिरफ्तार करवाया है।"

मेरे कानों में ये शब्द लगातार प्रतिध्वनित होते रहे। तो उसे वहाँ से शराब पीने के लिए पैसे मिला करते हैं! कौंज़! गंदा सुअर!

इस रहस्योद्घाटन का ऐसा असर हुआ कि हम, दोनों ही अस्त-व्यस्त-से हो गये । हम दोनों ही एकदम चुप हो गये थे ।

"हमें अपने सभी कामरेडों को सावधान करना होगा," मैंने ही अंत में खामोशी तोड़ी । "अब तुमने महसूस किया एवाल्ड कि आज की हमारी यह भेंट कितनी महत्वपूर्ण थी ?"

"हाँ ।" उसने इससे अधिक कुछ नहीं कहा ।

क्या एवाल्ड अपने मन में उठ रहे संदेहों से अब फिर से चिंतित हो उठा है ? इसलिए कि हमारे खिलाफ जासूसी की जा रही है ? मैं जानता हूँ कि सोशल डिमाक्रेट कामरेड इस संबंध में क्या और किस तरह सोचते-विचारते हैं कि हमारे कुछ लोग विश्वास करने योग्य नहीं हैं ।

एवाल्ड ने ही खमोशी तोड़ी ।

"और हमारे अपने दलों के संबध में क्या कहते हो ?"

तो वह पीछे नहीं हट रहा है । मुझे इससे खुशी हुई । उसने यह बात इस तरह कही जैसे यह बात भी साधारण तौर पर बातचीत के सिलसिले में कह दी गई हो ।

"काम शुरू करने के लिए तो हम आपको अपने अखबार देंगे ।"

कुछ सेकेंड के लिए खामोशी हो गई ।

"और इसके बाद आप लोगों में से कोई एक व्यक्ति हमारी कमेटी की सभाओं में भाग ले सकेगा । मेरे ख्याल से तो उसके लिए तुम्हीं सब से अधिक उपयुक्त सिद्ध होगे ।"

"ठीक है । मैं और लोगों को भी यह बातें बतला दूँगा ।"

हमने अगली भेंट का समय और स्थान तय किया । हमारी अगली भेंट दूसरे कस्बे में होनी थी । मैंने एवाल्ड से कहा कि वह नियत समय पर और हर हफ्ते उसी दिन वहाँ पहुँच जाय अगर मेरे पहले पहुँचने में

कोई अड़चन पड़ जाय। उसने बड़ी दृढ़ता के भाव से हाथ मिलाया। हम दोनों परस्पर विरोधी दिशाओं में चल पड़े।

१७ अक्तूबर, १९३२

आज माइकोवस्की मुकदमा शुरू हो गया। कल शाम को अर्नस्ट सच्वीबस ने बिना एक शब्द भी कहे हुये मुझे गोयबेल का अखबार 'ऐंग्रिफ़' दिखाया। मुकदमें के संबंध में प्रकाशित लेख में उसने कुछ पंक्तियों पर निशान लगा रखा था। वो पंक्तियाँ यों थीं—

यह मुकदमा खत्म होने के बाद तराजू के पलड़े फिर बराबर हो जायेंगे। खून का बदला केवल खून से ही लिया जा सकता है।

हम आधे घंटे तक सड़कों पर चक्कर लगाते रहे, चहलकदमी करते रहे, लेकिन हमने मुकदमें का जिक्र तक नहीं किया। हम फ्रांज के संबंध में एक परिपत्र जारी करने की ही बात तय कर के रह गये। हम सभी लोगों के सिर पर जैसे एक बहुत बड़ा बोझ लाद दिया गया था। अपराधी कामरेडों का क्या होगा? 'खून का बदला केवल खून से ही लिया जा सकता है।' माइकोवस्की की मौत के लिए वे तनिक भी जिम्मेदार नहीं हैं। वे बिल्कुल निर्दोष हैं। मैं यह स्वयं अच्छी तरह जानता हूँ। उस रात मैं भी तो अपनी गली में मौजूद था।

२२ अक्तूबर, १९३२

हमारे दल का एक सदस्य अदालत में मौजूद रहना चाहता था। लेकिन जनता को बहुत सीमित संख्या में ही अदालत में प्रवेश करने की इजाजत दी जाती थी, और ऐसे लोगों के नाम और पते भी ले लिये जाते थे। इसका मतलब यह था कि हमारा कोई भी कामरेड मुकदमें की सुनवाई में

हाजिर नहीं हो सकता था। कैदियों के पक्ष में गवाही देने वाले चन्द गवाहों को अदालत में ही गिरफ्तार कर लिया गया था। 'उन पर कैदियों का राजदार होने का संदेह' किया गया था। अपराधी की अदालत में निगरानी एस० ए० के सिपाहियों द्वारा होती थी। हर अपराधी के बगल में एक एस०ए० का आदमी बैठता था। अखबारों ने सार्वजनिक अभियोक्ता की घोषणा प्रकाशित की थी :

'मैं इन नौजवान उपद्रवियों को किसी भी कीमत पर जाँचकर्त्ता मजिस्ट्रेट और गुप्तचरों के रजिस्टरों को कल्पना की तरंग के रूप में प्रस्तुत नहीं करने दूंगा। अपराधी-कटघरे में खड़े लोग छिपे हुए बोलशेविस्ट हैं। लेकिन तृतीय रीख की सबल बाँहों ने उन्हें हरा दिया है। वे दिन लद गये जब खुले आम बोलशेविस्टवाद का अनुसरण किया जा सकता था। मैं इस अपराध के खिलाफ़ सफ़ाई पक्ष को कोई विरोध प्रकट करने की अनुमति नहीं दूंगा!'

फिर एक भयंकर धमकी। यह स्पष्ट है कि अब गिरफ्तार कामरेड प्रारम्भिक जांच-पड़ताल के दौरान यातनाओं और यंत्रणाओं के दुष्कर महीनों में जबरन दिलवाये गये अपने बयानों से मुकर रहे थे। वे कैसे न्यायाधीशों के सामने बहादुरी से खड़े होते होंगे! कितने साहस और कितनी बहादुरी से वे अदालत में बोलते होंगे!

हमने एक परिपत्र जारी किया था। इसमें कार्यकर्त्ताओं और मजदूरों को क्रांज की जासूसी और विश्वासघात तथा दगाबाजी की सूचना दी गई थी। परिपत्र में उसकी सूरत-शक्ल, आकार-प्रकार, चाल-ढाल का भी बिलकुल यथार्थ विवरण शामिल किया गया था। हमने यह पैम्फलेट बेरोजगार कार्यालय में ऐसे विश्वसनीय मजदूरों को दे दिये, जो पैम्फलेटों

को अन्य मजदूरों तक पहुँचा दें। ये पैम्फलेट हमारी गली के मकानों में पहुँच गये। जहाँ पैम्फलेट किसी के हाथ में देना खतरनाक मालूम हुआ, वहाँ हमने उसे लेटरबक्स पर चिपका दिया। बर्लिन केन्द्रीय कमेटी ने भी जासूसों और दुश्मन को सूचनायें पहुँचाने वालों की सूची में हमारे पैम्फलेट के मूल पाठ को शामिल कर लिया था। श्रमजीवी वर्ग की सभी बस्तियों को क्रांज के खिलाफ़ सावधान कर दिया गया था।

हमारी गली में पैम्फलेट और अखबारी प्रचार को अभी भी रोक रखा गया था। कामरेडों को सख्त आदेश दिये गये थे कि वे अपने आपको और अपने घरों को भी एकदम 'साफ' बनाये रहें। हमें आशंका थी कि क्रांज के भेद का भंडाफोड़ होने के बाद अचानक हमारे मकानों पर धावे बोले जायँगे, शायद गिरफ्तारियाँ भी की जायँगी।

मैं एवाल्ड से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मिला और उससे अपनी वर्तमान कठिनाइयाँ पूरे विस्तार के साथ बता डालीं। पहले मैं हिचकिचाया, क्योंकि मैं उसे चिंतित नहीं करना चाहता था। लेकिन मेरी बातचीत से वह भी घबराया हुआ नहीं प्रतीत हुआ। पिछले एक वर्ष ने हम सभी लोगों को कठोर बना दिया था। मैंने उसे गलत समझा था।

हमारे अनुरोध पर पड़ोस के कस्बे ने एस० पी० डी० के कामरेडों के लिए भेजे गये अखबारों तथा अन्य वस्तुओं को ग्रहण कर लिया था।

अभी तक हमारी गली में क्रांज का राज फ़ाश होने के फलस्वरूप एस० ए० की कोई कार्रवाई नहीं हुई थी। यह या तो एक चतुराई से भरी हुई खामोशी थी, ताकि हमारी सावधानी और चौकसी ढीली पड़ जाय, या यह चुप्पी इसलिए थी कि एस० ए० वाले अपनी पार्टी की नवीनतम कार्रवाइयों में बहुत अधिक व्यस्त थे। जर्मनी में प्रचार की नई लहरों की बाढ़ आ गई थी।



१२ नवम्बर को जनमत-संग्रह

जर्मनी ने लीग ऑफ़ नेशन्स छोड़ दिया है। इस कार्रवाई का अनुमोदन करने और गृह तथा वैदेशिक नीतियों के संबंध में हिटलर को खुली छूट देने के लिए 'जनमत-संग्रह' होने जा रहा था। मैं सड़कों के चक्कर लगा रहा हूँ। विशाल झंडे सड़कों के आर-पार लहरा रहे हैं। उन लोगों ने चौराहों और चौकों में लकड़ी के मस्तूल खड़े कर रखे थे। इन स्तम्भों के बीच फैले झंडे हवा में लहरा रहे थे।

हम घटिया अधिकारों वाले राष्ट्र नहीं बने रहना चाहते! राष्ट्र की प्रतिष्ठा और आजादी के लिए—

१२ नवम्बर को वोट दीजिये!

घायल भूतपूर्व सैनिक भी वोट दें!

मकानों की दीवारों पर छः-छः फुट लम्बे इश्तहार चिपके हुये हैं, विज्ञापन-पटों पर भी यही इश्तहार चिपके हैं।

जर्मनी पर लॉयड जार्ज का मत!

इसके नीचे इस ब्रिटिश राजनीतिज्ञ के भाषणों में से बहुत से ऐसे उद्धरण दिये गये हैं, जिनमें जर्मनी की स्थिति ऐसे राष्ट्र के रूप में वर्णित की गई है, जिसकी 'प्रतिष्ठा लुट चुकी है, अस्त्रशस्त्र लुट चुके हैं'। अंत में बहुत विशालकाय अक्षरों में लिखा है—

> **ऐसा प्रत्येक जर्मनवासी नरक में सड़ने वाला जीव है जो उन अधिकारों और सुविधाओं की माँग नहीं करता जिन्हें देने के लिए अंग्रेज तैयार है। वोट दो!**

मैंने इश्तहार के एक ही पैराग्राफ़ को कई बार पढ़ा। उसमें ही उस इश्तहार की सब से महत्वपूर्ण बात निहित थी। बीस साल से कुछ कम

वर्ष बीत चुके हैं : लेकिन हवाई बम वर्षा, तोपों की गोलाबारी, धाँय-धाँय एक ही रात में फिर शुरू हो सकती है।

उधर एक इश्तहार और लगा है—

विश्वशांति के लिए हिटलर का साथ दो !

तोपें, बमवर्षक वायुयान, टैंक—सब शांति के लिए ! मैं उन लोगों को पहले की तरह ही बकवास करते सुन सकता था : 'हम युद्ध नहीं चाहते। यह युद्ध जबरन हमारे सिर पर थोप दिया गया है। हम तो अपनी पितृ-भूमि की रक्षा मात्र कर रहे हैं।'

एक अन्य इश्तहार सामने है—

घायल भूतपूर्व सैनिकों के लिए

युद्ध में घायल सैनिकों से आशा की जाती है कि वे विनाश के नये औजारों की माँग करें ! युद्ध में अपंग हुये सिपाही अपनी अत्यधिक न्यून पेंशन के सहारे बैठे रह कर यदि भूखों नहीं मरना चाहते तो उन्हें सड़कों पर लंगड़ाते, भीख माँगते अभी भी देखा जा सकता है। —यही उनके प्रति पितृ-भूमि का आभार-प्रदर्शन था ! एक बार मैंने असाध्य रोगों से पीड़ित सिपाहियों के सैनिक अस्पताल की कुछ तस्वीरें देखी थीं। किसी का आधा चेहरा ही उड़ गया है, किसी का हाथ कटा है, किसी के पैर नदारद हैं—जीवित लाशें ! वे अभी भी उनकी बंद संस्थाओं में पड़े हुये हैं—इस बात का इंतजार करते कि मौत आये और उन्हें इस नरक से मुक्त कर दे। उन्हें जिन्दा दफ़ना दिया गया है ! आज के स्त्री-पुरुष यदि उन्हें देख लें तो उन्हें बहुत सारी बातें सोचनी पड़ जायें।

मैंने सड़क पर तेजी से आते-जाते लोगों पर सहज भाव से नजर दौड़ाई। उदासीनता, जीवित रहने के लिए संघर्ष—बस उनके चेहरे पर इसके अलावा और कोई भाव न थे। और वे दोनों ? उस पुरुष ने फुस-

फुसा कर कुछ कहा, उस स्त्री ने नजरें उसकी ओर उठा कर शरारत से मुस्करा दिया। यह पुरुष भी साल-दो-साल में कहीं दफ़ना दिया जायगा, और इस स्त्री को सरकारी पत्र खोलना पड़ेगा—'गौरवपूर्ण युद्ध-भूमि में···'

मैं निरुद्देश्य लौट पड़ा, जैसे मेरे पैर स्वचालित यंत्र की तरह काम कर रहे हों। ऐसे लोगों की संख्या हमेशा चन्द हजार तक ही सीमित रह जायगी, जिन्हें यह एहसास हो सके कि देश-दुनिया में क्या हो रहा है ? मेरी आँखों के सामने आज भी प्रदर्शनकारियों की लम्बी कतारें स्पष्ट खड़ी हो जाती है, जैसे यह युद्ध के बाद के प्रथम कुछ वर्षों की बात न हो कर पिछले चन्द महीनों की बात हो। उस समय वे गाते थे—

हम नहीं उठायेंगे अब अपने हाथों में हथियार,
लड़ने दो सत्तारूढ़ों को अपना युद्ध अकेले !

गीत, केवल गीत। उन लोगों ने यह तो समझना ही नहीं चाहा कि सब से पहले उन्हें सत्तारूढ़ों से छुटकारा पाना चाहिए—उन लोगों से जो युद्ध छेड़ते हैं। इसके विपरीत वे उस समय मूक दर्शक बन कर सब-कुछ देखते रहते हैं, जब अर्द्ध-क्रांति को क्रांति के रूप में बदलने की कोशिश करने वालों को कत्ल किया जाता है।

कार्ल लीबक्नेष्ट ! रोजा लक्सेमबर्ग।
ऐसे ही हजारों लोग !
स्पार्टेकस !

अतः उस समय फ़ासिस्ट गिरोह की ही समृद्धि हुई, और आज वे ही 'भूरी' जर्मनी के शासक हैं। उन्हें हमेशा अपने मन में इस बात का एहसास था कि वे चाहते क्या हैं, उनका उद्देश्य क्या है।

जनमत-संग्रह से दो दिन पहले की बात है। अखबारों में छापा गया कि आज हिटलर 'अपने' मजदूर वर्ग को संदेश देंगे—सीमेन स्चुकर्ट

कारखाने में। बर्लिन में वही सब से बड़ा कारखाना था। हिटलर जानता था कि अब असली संतुलन किसके हाथ में है। मुझे याद है कि रीख के चान्सलर के नामांकन के बाद की पहली सुबह ही फ्रांज ने कहा था—"किसी पार्टी नेता को आज यहाँ, सीमेन कारखाने में, मजदूरों के सामने कुछ बोलना चाहिए था।"

मैं दोपहर में सीमेन्सस्टाड्ट गया। हमारी गली से वहाँ का पौन घंटे का ही रास्ता है। मैं जंगफ़र्नहाइड स्टेशन के बगल से गुजरा। रीख के चान्सलर के नामांकन के बाद वाली पहली सुबह हम लोग यहीं मिले थे। हमने ट्रेनों के अन्दर उस मसले पर बहस-मुबाहिसा शुरू करने की कोशिश की थी; पैम्फ्लेट बाँटे थे। यही वह जगह है जहाँ रोथेकर गिरफ्तार होते-होते बचा था। रोथेकर। हमें दो बार उसके संदेश मिल चुके हैं। वह प्राग में अपने परिवार के साथ है। अच्छी तरह जिंदगी कट रही है उसकी। उन्हें प्रवासियों की कमेटियों का समर्थन प्राप्त है। उसकी पत्नी सड़कों पर अखबार बेचती है। वह काफ़ी बिक्री कर लेती है, क्योंकि वह बड़ी खूबसूरत है।

एक कामरेड ने हमें यह सब बताया था, जिसने स्वयं उन दोनों को देखा था। पिछले कुछ दिनों से उन दोनों में पट नहीं रही थी। लगातार आर्थिक चिंताओं का ताँता—और फिर उसकी पत्नी जीवन का कुछ आनन्द लूटना चाहती थी। और इसके अलावा यह बात भी थी, कि रोथेकर की उम्र उसकी पत्नी की दुगनी थी। प्रवासी जीवन एक स्त्री के लिए और भी कठिन होता है। और फिर उनके एक बच्ची भी है, चार-वर्षीय इन्गी।...

एक लम्बी चौड़ी सड़क, नोनेन्डैम, मेरी आँखों के सामने फैली हुई है। यहाँ भी झंडे सड़क के आर-पार फैले हुये हैं। दोनों ओर झोंपड़ियों वाली बस्तियाँ हैं। कुछ झोंपड़ियों के ऊपर स्वस्तिक झंडे लहरा रहे हैं। आज परेड के लिए इन झंडों को फहराना अनिवार्य ही था। वह स्ट्रूवेल

वाली बस्ती है। हम लोग इसे 'छोटा मास्को' कहा करते थे। हम लोग उस लँगड़े के पास उस दिन संध्या समय गये थे। वह टाइपराइटर, साइक्लोस्टाइल मशीन—पशुओं के चारे के बक्से में छिपाई हुई सारी चीजें। स्ट्रूबेल बस्ती से जा चुका है। लँगड़े ने उसकी जगह ले ली है। अभी वह हमारे लिए काम करता है।

यहीं वह जगह है जहाँ एस०ए० ने स्वयं अपने ऊपर अपना नियंत्रण खो दिया था। उन लोगों ने दिन दहाड़े अपनी मोटर साइकिलों पर हर्बर्ट ज़ीमेक का पीछा किया। फिर उसे वे माइकोवस्की अड्डे के अंदर खींच ले गये—मृत अवस्था में। केवल इक्कीस वर्ष का था ज़ीमेक।

"मोर्चे पर से वापस लौटे प्रत्येक योद्धा के लिए एक छोटा-सा मकान होना चाहिए," एक बार हिंडेनबर्ग ने कहा था। मोर्चे से लौटे अनेक बहादुर यहाँ रहते है, अपनी छोटी झोपड़ियों में। इन झोंपड़ियों को उन्हें स्वयं अपने हाथों बनाना पड़ा था। तख्ता और छत छाने के नमदा से बनी थीं ये झोपड़ियाँ। लगभग सभी युद्ध से वापस आये सिपाही बेरोजगार थे, जिस तरह स्ट्रूबेल था। वह जाड़े में भी अपनी झोंपड़ी मे ही रहता था। उसके पास मकान का केराया देने को भी पैसे न थे। यही हालत अन्य सभी ऐसे सिपाहियों की भी थी।

सीमेन्स विद्युत रेलवे ब्रिजों में से एक पुल वहाँ सड़क के आर-पार फैला हुआ है। सीमेन्स कारखाना दूसरी तरफ बाईं ओर से शुरू होता है। कारखाने के कार्यालय की नई इमारत नौ-मंजिल ऊँची है। शीशे और कांक्रीट के बक्स जैसी बनावट है उसकी। और आगे, पाँच मिनट तक चलने के बाद दूसरी ओर कार्यालय की पुरानी इमारत है। यह दूसरी विशालकाय इमारत है। विशाल चौकोर चिमनी में लगी घड़ी की एक फुट लम्बी सूइयाँ बारह बजने में बीस मिनट का संकेत दे रही थीं। हिटलर शीघ्र ही वहाँ आयेगा। एडोल्फ ठीक बारह बजे यहाँ भाषण देने वाला है। नये कार्यालयों की इमारतें पिछले चंद वर्षों में ही निर्मित

की गई थीं। कम्पनी की अतिरिक्त पूँजी का इस तरह निवेश किया गया था। मैंने खिड़कियों की लम्बी कतार पर नजर दौड़ाई। टीचर्ट कहता है कि 'राष्ट्रीय आर्थिक पुनर्निर्माण' के फलस्वरूप बहुत से यार्ड अब खाली पड़े हुये हैं। वह यहीं काम करता है। क्या वह स्वयं और उसके साथी हिटलर का भाषण सुन रहे होंगे? सड़क के दाहिने तरफ़ से सफेद मकानों की लम्बी कतारें शुरू होती हैं। सभी नव-निर्मित, आधुनिक और जरूरत के मुताबिक व्यावहारिक दृष्टि से बने। पुराने सीमेन्सस्टाड्ट आवास-गृहों में क्लर्क और व्यवस्था विभाग के सहायक रहते थे। कारखाने ने जब अपने कर्मचारियों को यहाँ बसाया उस समय उसे इस बात को जानकारी थी, कि वे क्या क्या कर रहे थे। उनके खाली समय पर भी कारखाने की छाया उन पर गहराई से पड़ती रहती थी, और कभी अपना व्यक्तिगत जीवन-निर्वाह करने का उन्हें मौका ही नहीं देती थी। हर कोई अन्य सभी व्यक्तियों को जानता था। इन नई इमारतों में से लगभग सभी को सीमेन्स कारखाने वालों द्वारा निर्मित किया गया था और इस तरह वहाँ रहने वालों की सख्या दुगनी हो गई थी। निम्न मध्यम-वर्ग की इस बस्ती का नाजियों का गढ़ बन जाना तो अवश्यम्भावी ही था।

बेरोजगारों की झोंपड़ियों की बस्ती सफेद मकानों तक फैली हुई थी। उन लोगों को हमेशा एक-दूसरे से कैसी घृणा रही है। किसी भी शहर के दो राजनीतिक और आर्थिक छोर शायद ही कभी एक-दूसरे के इतने निकट दिखते हों। जहाँ से पहले मकान शुरू होते थे वहीं सड़क के दोनों तरफ़ लकड़ी की लम्बी बल्लियाँ जमीन में गाड़ी गई थीं। उन पर हरी पत्तियाँ बँधी हुई थीं और उनके बीच एक विशाल पताका फैली हुई थी, जिस पर लिखा था :

सीमेन्सस्टाड्ट हिटलर का स्वागत करता है !

लोग पटरियों पर खड़े हुये हैं। दो, तीन और इससे भी अधिक

कतारों में लोग खड़े थे। लेकिन इस स्थान पर तो मैंने इससे भी अधिक भीड़ की आशा की थी। एस० ए० की लम्बी पंक्तियों ने सड़क को बंद कर रखा था। उन्होंने अपनी पेटियाँ खोल रखी थीं, जिनका इस्तेमाल वे एक सिपाही को दूसरे से सम्बद्ध करने के लिए कर रहे थे। एक रेडियो की दूकान के सामने काफ़ी भीड़ खड़ी थी। मैं भी उसी भीड़ में जा खड़ा हुआ। दूकान के दरवाजे पर एक सामान्य नाप से बड़ा लाउड-स्पीकर लगा हुआ था। भीड़ में अस्सी प्रतिशत तो स्त्रियाँ ही थीं। बाकी में अधिकांश स्कूली बच्चे थे, जो अपने अध्यापकों के साथ आये थे। उन लोगों ने शायद इस अवसर पर उनकी वहाँ हाजिरी दिखाने के लिए ही स्कूलों में छुट्टी कर दी थी। सभी स्त्रियाँ बिना किसी अपवाद के सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहने हुये थीं। किसी तरह वेतन को महीने के अंत तक चलाया जाता है। महीने के अंतिम दिनों में लोगों को नकली मक्खन खा कर काम चलाना पड़ता था। लेकिन ऊपरी दिखावे में चमक-दमक कायम रखने के लिए कोई भी त्याग करने के लिए लोग तैयार रहते थे।

"उनकी गाड़ी हमारे बिलकुल पास से, बिलकुल हमारे सामने से जायगी," एक स्थूलकाय, सुन्दर बालों वाली स्त्री ने आनन्दपूर्ण पूर्वाशा से अपनी पड़ोसिन से कहा।

पड़ोसिन के होंठों पर उत्तेजनापूर्ण मुस्कराहट फैल गई। वे इस तरह का व्यवहार कर रही थीं जैसे यह उनके जीवन का महानतम क्षण हो।

एक मांस की दूकान का मालिक अपनी दूकान में काम करने वाली लड़कियों के साथ दूकान से बाहर आ गया। उन लोगों ने सफ़ेद लबादे और टोपियाँ पहन रखी थीं, जिन पर दूकान का संकेत-चिन्ह अंकित था। कसाई बहुत हृष्ट-पुष्ट था।

"जब तक जलसा खत्म नहीं हो जायगा, हम लोग सड़क के पास ही खड़े रहेंगे। ऐसे जलसे रोज-रोज तो होते नहीं।" उसने अपनी

मसाले लगे मांस जैसी उँगलियों से अपने मन के भाव प्रदर्शित करते हुए एक लड़की से ऊँचे स्वर में कहा।

सब लोगों को अपनी बात सुन लेने दो; यही तो तुम चाहते हो, बुढऊ ? पंद्रह मिनट की यह देशभक्ति बाद में काफ़ी मुनाफा देगी, देगी कि नहीं ?

एकाएक सामने हलचल शुरू हो गई।

"वे लोग आ रहे हैं...वे लोग आ रहे हैं !" एक मुँह से दूसरे मुँह यह बात फैलती गई। एस० ए० के सिपाहियों ने अपनी चमड़े की पेटियाँ और दृढ़ता से जकड़ लीं और भीड़ को पीछे ढकेलने लगे। 'हिटलर जिन्दाबाद' के नारे लगाने लगे। केवल एक अकेली कार थी। उसमें गोबेल्स था। उसने उत्साहहीनता से अपनी बाँह उठा कर हिलाई—कार चली गई। कुछ मिनट बाद लाउडस्पीकर से उसकी आवाज आने लगी। 'अपने जर्मन श्रमिकों' के गृह-क्षेत्र में आज होने वाले 'हिटलर के भाषण' में निहित गूढ़ अर्थों को समझाते हुए उसने भूमिका बाँधने के लिए भाषण देना शुरू किया। वह बोल ही रहा था कि एक एक भीड़ धक्का-धुक्की करती आगे बढ़ने लगी और पटरियों के छोर तक पहुँच गई। 'हिटलर जिंदाबाद' के नारों से सारा वातावरण गूँज उठा; लोगों की बाँहें झटके के साथ ऊपर उठ गईं; मेरा हाथ भी हवा में लहरा उठा। हिटलर ! वह कार में खड़ा हो गया और जनता के अभिवादन को हाथ हिला कर स्वीकार करने लगा। उसके और हमारे बीच केवल तीन गज की दूरी थी। उसका चेहरा हवा से लाल हो गया था। स्थूल और स्पन्ज-जैसा गुलगुला लग रहा था वह। बड़ा घृणित दिख रहा था वह। तस्वीरों में वह अधिक 'तेजस्वी' लगता था। उसकी कार के ठीक पीछे दो और कारें थीं। एस० ए० के सिपाही कारों के फुटबोर्ड पर लटके हुये थे। वे जैसे भीड़ पर टूट पड़ने को तैयार दिखते थे और उनके खाली हाथ उनकी रिवाल्वर वाली जेबों पर थे। ये कारें

भी चली गईं ! नारों की आवाज उन्मादपूर्ण ध्वनियों की एक के बाद एक लहरों के रूप में पूरी सड़क पर फैलती जा रही थी। केवल तीन गज की दूरी ! इसीलिए तो कुछ लोग हत्या की बात किया करते हैं। पागलपन है ! हिटलर की मौत से स्थिति तनिक भी नहीं बदलेगी। गोरिंग, गोबेल्स, या कोई और तो उसके स्थान पर बैठ कर जनता का शोषण करता ही जायगा। और उसकी मौत की रात को ही सैनिक शिविरों में कैद हजारों बेगुनाह मौत के घाट उतार दिये जायँगे।...

मेरे निकट खड़ी स्त्री की तीखी हर्षयुक्त आवाज ने मेरे विचारों का तारतम्य तोड़ दिया। वह हर्षातिरेक में तालियाँ पीट रही थी।

"हिटलर कितना प्यारा दिख रहा है, है न ? और कितना प्रतापी भी ! कोई उससे आकर्षित हुये बिना कैसे रह सकता है ?"

लोग लाउडस्पीकर की ओर धक्का-धुक्की करते बढ़ने लगे। और अधिक लोग आ गये थे, जो भाषण सुनने के लिए धक्का-धुक्की करते आगे बढ़ रहे थे। एस० ए० का एक सिपाही मेरे बगल में ही खड़ा था। उसने अपनी लोहे की टोप की बद्धी के बटन अपनी ठोढ़ी के नीचे बंद कर रखे थे। टोपी इस तरह पहनने पर ज्यादा प्रभावशाली दिखती थी। वह अपने को बड़ा महत्वपूर्ण व्यक्ति समझ रहा था। 'हिटलर जिन्दाबाद' के नारे अभी भी लाउडस्पीकर से आ रहे थे। फिर खामोशी छा गई, और अंत में हिटलर की आवाज सुनाई पड़ने लगी।

"चौदह वर्ष का संघर्ष···"

"मार्क्सिस्टों द्वारा व्यापार-व्यवसाय में मचाई गई उथल-पुथल···"

हमेशा वही पुराना राग, वही पुरानी टेर ! और अब :

"इस महत्वपूर्ण समय पर मैं सभी जर्मन श्रमिकों से, जो अपने-अपने कारखानों में लाउडस्पीकरों के इर्द-गिर्द इकट्ठे हैं, कुछ काम की बातें करना चाहता हूँ। हम ऐसे हर विरोधी की ओर भी दोस्ती का हाथ बढ़ाने को तैयार हैं, जो जर्मनी के सम्मान और प्रतिष्ठा के लिए

हमसे कंधे-से-कंधा मिला कर खड़ा होने को तैयार है····'' उसकी आवाज़ इतनी तीखी हो गई, कि लगा जैसे आवाज़ फटने की स्थिति तक पहुँच गई हो। वह कहता जा रहा था—''मैं जानता हूँ आपको बहुत कम मज़दूरी मिलती है—मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूँ!''

अगले कुछ वाक्य मेरे कानों में पहुँचे जरूर लेकिन मैं जैसे उन्हें समझ ही नहीं सका। 'प्रत्येक विरोधी'। वह यह बात 'अपने' कहे जाने वाले श्रमिकों से कह सकता है! ''मैं जानता हूँ कि—।'' लेकिन इन बातों से श्रमिकों की तनख्वाहें नहीं बढ़ जायँगी। जो हो, वह यह समझ रहा है कि अब वह समय आ गया है जब वह एक बार फिर 'समाजवादी' ढोंग रच कर ही काम चला सकता है; जब उसके लिए यह प्रदर्शित करना जरूरी है कि उसे 'छोटे आदमियों की कठिनाइयों' के प्रति कितनी सहानुभूति है। मैं सभा-स्थल से चल पड़ा। लाउडस्पीकर से आवाज़ विलुप्त हो गई। बस कड़कड़ाहट और भनभनाहट की ही आवाज़ अब सुनाई पड़ रही थी। तो भाषण समाप्त हो गया? लेकिन वो लोग इतनी उत्तेजनापूर्वक हवा में हाथ हिलाते हुये इधर-से-उधर क्यों दौड़-भाग रहे हैं?

''लाउडस्पीकर की मशीनरी में कुछ अटक गया···षड्यंत्र··यह साजिश है···।'' कुछ लोगों के मुँह से जोर-जोर से ऐसी ही बातें निकल रही थीं। एस० ए० के दो आदमी दूकान के दरवाज़े की ओर दौड़े। दूकान का मालिक दरवाज़े पर दिखाई दिया। उसने अपनी बाँहें ऊपर उठाईं। फिर असहाय भाव से उन्हें गिर जाने दिया और घोर निराशा से अपने कंधे सिकोड़े।

''हर जगह वही हालत है—यह मेरा लाउडस्पीकर सेट नहीं है,'' उसने अपने बचाव में कहा।

भाषण में कई मिनट से व्यवधान पड़ा हुआ था। मेरे निकट खड़ा

एस० ए० का आदमी अपनी टोपी की बद्धी को घबराहट में ऐंठने लगा। उसका चेहरा विकृत हो उठा था।

"फिर षड्यंत्र—साले कम्युनिस्ट !"

मैंने अविश्वास से चेहरा घुमा कर उसकी ओर देखा।

"लेकिन यह सम्भव नहीं है—और वह भी आजकल ? लाउडस्पीकर के ऐम्प्लीफायर की सुरक्षा के लिए निश्चय ही पहरा रहा होगा !"

"षड्यंत्र के सिवा और क्या हो सकता है ?" उसने गुस्से से कहा। "लेकिन वो लोग पकड़े जायँगे, जरूर पकड़ लिये जायँगे।"

उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। और फिर हिटलर की आवाज लाउड-स्पीकर से फिर फूट पड़ी।

"···काफ़ी लम्बे अरसे तक, बिना प्रतिष्ठा और सम्मान के···"

मैं धीरे-धीरे घर की ओर चल पड़ा। तो एस० ए० के सिपाही का पहला संदेह 'कम्युनिस्टों' पर ही गया। हर जगह, हमेशा, वे इस भावना से त्रस्त रहते हैं कि उनके इर्द-गिर्द एक अदृश्य दुश्मन मौजूद है, जो उन पर कूद कर उनका गला घोंटने के मौके का इंतज़ार कर रहा है।

शाम को मेरी टीचर्ट से बात हुई। मैंने हिटलर के दौरे के संबंध में उसे सारी बातें बताईं।

"तो सीमेन्स कारखाने के टर्नर साहब, आपने हिटलर को भी देखा ? उसने प्रतीक रूप में किसी एक मजदूर से हाथ भी मिलाया या नहीं ?"

"मेरे ख्याल से तो नहीं," टीचर्ट ने जवाब दिया। "अरे चचा को सारी बातें बकते रहने दो, बस।" और वह तिरस्कारपूर्ण ढंग से हँस पड़ा। उसके मुँह के अंदर के काले गढ़े दिखने लगे।

"हमारे दल का एक भी आदमी वहाँ नहीं था। उन्होंने सभी कारखानों से बड़ी सावधानी से प्रतिनिधि चुने थे। सभी फ़ोरमैन लोग

और साथ ही विश्वसनीय नाजी चुने गये थे। हमारे यार्ड के श्रमिक वहाँ मौजूद जरूर थे, लेकिन उन्हें पीछे की ओर खड़ा रखा गया था। और लाउडस्पीकर ! ऊँचे डायनमों शेडों में से एक शेड पर लाउडस्पीकर बड़ी सावधानी से सुरक्षित जगह पर लगाये गये थे ! उन लोगों ने उसके इर्द-गिर्द एक विशेष सीढ़ी बनाई थी। एस० ए० के सिपाही सीढ़ियों की रक्षा कर रहे थे ! अब तुम समझ गये होगे कि हिटलर 'अपने' श्रमिक भाइयों से किस तरह बातें करता है, समझ गये न ?"

चुनाव वाला रविवार था।

अनिवार्य नाजी नवयुवक संगठन और एस० ए० की टुकड़ियों ने सुबह तड़के से ही मैदानों-सड़कों पर मार्च करना शुरू कर दिया। वे अपने बिगुलों पर आनन्दपूर्ण धुनें बजा रहे थे और एक साथ चुनाव-संबंधी नारे लगा रहे थे। रेडियो के प्रसारण केन्द्र आधे-आधे घंटे पर अपने कार्यक्रम रोक कर बार-बार उन्हीं प्रश्नों को दुहरा रहे थे : "जर्मन पुरुषो और महिलाओ ! आपने अपना फ़र्ज पूरा कर दिया या नहीं ? आपने अपना वोट एडोल्फ़ हिटलर की सरकार को दे दिया या नहीं ? अगर आपने अभी तक ऐसा न किया हो, तो तुरन्त यह फ़र्ज पूरा कर डालें !" इस प्रचार का यह सिलसिला हफ़्तों से चल रहा था। रेडियो, अखबारों, सिनेमा द्वारा वही प्रचार। सम्पूर्ण रीख में गोबेल्स ने लाखों-करोड़ों बार अपना चुनाव प्रचार प्रसारित किया है। आज सुबह वे प्रत्येक घर में कागज का एक टुकड़ा ले आये और कहा : "यह मकान बार्डेन मेयर के नियंत्रण में है, मकान नं० ३८। 'स्वीकारात्मक' वोट दीजिये। फिर कागज का यह टुकड़ा चुनाव पेटी में डाल आइये। इस तरह आप बाद में दिन के वक्त हमारे सवाल-जवाब के झंझट से बच जायँगे।"

टीचर्ट का भी मतदान केन्द्र वही है जो मेरा है। हमने वहाँ साथ-साथ जाने की बात तय की है। हम देखना चाहते थे कि वहाँ का क्या रंग-ढंग है। पहले पहल हमने दूसरे जिले में भेंट करने की बात सोची थी। क्रांज वाली घटना के बाद टीचर्ट ने कहा था कि यह उचित नहीं होगा कि हम लोग अब साथ-साथ दिखाई पड़ें। लेकिन हमारे मकानों में जोखिम वाली कोई चीज नहीं थी। मेरा तर्क था कि हमें साहस से काम लेना चाहिए; साहस ही सब से बड़ा बचाव है। इतने लम्बे समय तक एक ही गली में रहने के बाद अगर हम एकाएक 'अपरिचित' बन जायँगे तो निश्चय ही लोगों के मन में संदेह भड़क उठेगा। क्रांज के भंडाफोड़ की और आगे कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई दी। हमें मालूम हुआ था कि अब वह शराबखानों में उतना अधिक नहीं बैठता था। उसके पास अब उतने पैसे ही न थे। फिर भी हम लोग चौकन्ने थे, हालाँकि हमें मालूम था कि जिन जासूसों का भंडाफोड़ हो जाता था उनका नाजियों के लिए कोई महत्व नहीं रह जाता था। वे हमारे कामरेडों के साहस से जितने ही प्रभावित होते थे, उतना ही वे इन जासूसों का अन्दर-ही-अन्दर तिरस्कार करते थे। हिल्डी ने एक बार अपने भाई और उसके एस० ए० के साथियों के बीच इस तरह की बातचीत का जिक्र किया था। जो लोग स्वयं कायर होते हैं, और उनमें से अधिकांश कायर ही थे (वे कभी अकेले हमारे निकट आने का साहस नहीं करते थे), उन्हें दूसरों का साहस जितना वास्तविक अर्थों में होता है उससे भी दुगना लगा करता है। अतः ये तर्क दे कर मैंने टीचर्ट पर दबाव डाला कि वह मुझे भी अपने साथ ले चले।

और अब हम बड़ी लापरवाही से अपनी गली में घूम रहे थे।

झंडों की संख्या बढ़ गई थी। वे शताब्दियों पुराने मकानों के सब से ऊँचे खंड की खिड़की से कार्निसदार छतों के नीचे लटक रहे थे।

हम सड़क की ढलान तक आ पहुँचे। रविवारीय शांति हमारी

गली में व्याप्त थी । इस खामोशी के कारण बिजली घर की मशीनों की झनझनाहट और तेज और स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी । एक स्वस्तिक झंडा लाल ईंटों की ऊँची इमारत की विशाल खिड़कियों में से एक खिड़की से लटक रहा था । कूड़े के ढेर के इर्द-गिर्द बनाये गये लकड़ी के बाड़ पर लायड जार्ज के कथनों से भरपूर पोस्टर चिपके हुये थे ।

"ऐसा हर जर्मन निकम्मा है जो उन चीजों की माँग नहीं करता जो..."

"इस बात का आप विश्वास कर सकते हैं कि हमारे पास ये निकम्मे बहुत बड़ी संख्या में होंगे ।"

टीचर्ट मुस्कराया । उसके ऊपरी होंठ के नीचे उसके काले दाँतों की पंक्ति झलक उठी । उसने अपना सिर धीरे से दोनों खिड़कियों की ओर घुमा दिया ।

"वाल्क्यजेनोसेन—जनता के मित्रों का विशेष संस्करण," उसने उपहास के स्वर में कहा ।

मैंने उन दोनों झंडों की ओर देखा, जिनका वह जिक्र कर रहा था । वहाँ दो कामरेड रहते थे । हमने उन्हें बाहर फाँसी पर चढ़ा देने की सलाह दी थी । वर्तमान परिस्थितियों में हमें अपने कामरेडों में से किसी पर भी शक हो जाने की जरा सी संभावना को भी रोकना था ।

"इसके अपने ही फायदे हैं, पॉल । हमारे कमरे पीछे की ओर खुलते हैं ।

"मुझे ऐसा ही कहना चाहिए, क्योंकि हममें से कोई भी प्रकाश में नहीं आना चाहता था ।"

अब हम ऐसी अवस्था में पहुँच गये थे, जब सड़क की ओर खुलने वाली प्रत्येक खिड़की एस० ए० के नियंत्रण में थी । विशेषकर हमारी गली में । उस दिन सुबह एस० ए० वाले उन घरों में गये थे जिन पर झंडे दूर-दूर लगे थे और उन्होंने पूछा था कि क्या आगे के किराये-

दार यहूदी थे जिनके पास झंडे नहीं थे ? यह अच्छी बात थी कि एडी आगे के कमरे में नहीं रहता था। उसने काफी शोरगुल मचाया था।

"अच्छी चालें ? आपका चालों से क्या मतलब है ? अब हमारे कामरेड नाज़ियों का प्रचार कर रहे हैं !" यह था उसका रोषपूर्ण उत्तर, जब हमने उसे उन दो कामरेडों के बारे में बताया जो झंडे लगाने वाले थे।

हम लोग बर्लिनर स्ट्रास की ओर मुड़ गये। हिल्डी वहाँ रहती थी। शीघ्र ही किसी दिन उसके दफ्तर फोन करना था। मेरे मुकाबले में वह अक्सर फ्रांज़ से मुलाकात करती थी। वहाँ झंडे पास-पास टँगे हुये थे। वहाँ केवल निम्न मध्यम वर्ग के लोग ही रहते थे।

क्लर्क, निम्न श्रेणी के सरकारी कर्मचारी, छोटे-मोटे व्यापारी। यह विचित्र बात थी कि हमारे मजदूरों के घरों पर इस तरह निगरानी रखी जा रही थी, और वह भी विशेषकर चन्द सड़कों पर ही।

चार्लोटेनबर्ग सरकारी कर्मचारियों का एक क्षेत्र था। म्युनिसिपल परिषद, यहाँ तक कि स्वयं श्रमिक संगठनों के श्रमिक वर्ग के प्रतिनिधियों को सदैव मध्यम श्रेणी के बहुसंख्यक दल के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ा था। युद्ध के पहले के वर्षों में भी। यही वजह थी कि चार्लोटेनबर्ग के श्रमिक इतने क्रांतिकारी थे और हमेशा आक्रामक बने रहते थे। मैंने टीचर्ट की ओर देखा। उसके गालों की उभरी हुई हड्डियों पर की पीली त्वचा तनी हुई थी और उसकी कनपटी पर के घने बाल चौकोर-से दिख रहे थे। एक श्रमिक का चेहरा जैसा। उसमें कोई विशेष आकर्षण नहीं था, हम सभी के चेहरों की तरह। वे सभी एक ही साँचे में ढले थे।

"और तुम्हारी बीवी कैसी है, पॉल ?"

"उसके बारे में तुम क्या जानना चाहते हो ? वह हमारे बारे में ज्यादा नहीं जानती, जैसा कि पुराने जमाने में होता था।"

उसने कहा कि उसने जैसे जरूरी बात ही करने के लिए अपने को

अभ्यस्त बना लिया था। उसकी बीबी नाटी और चुस्त महिला थी। अब वह युवती नहीं थी। कभी भी राजनीति में उसे दिलचस्पी नहीं थी। उसका घर ही उसका संसार था। यदि उसे उसके गैरकानूनी कार्य की जानकारी हुई होगी, तो उसने उससे निश्चय ही प्रार्थना की होगी कि वह उस पर 'ऐसी मुसीबतें ढाने का खतरा न उठाये'। वे उस तरह भला कैसे रह सकते थे—अगल-बगल, फिर भी एक साथ नहीं ? कामरेड के विवाह के बारे में मेरा विचार भिन्न ही था। टीचर्ट ने अपनी जेब से एक पुर्जा निकाला।

यह ब्लाक वार्डेन को नियंत्रित करने वाला है।

"वे इससे जो फल चाहते थे, वही उन्हें मिल जाता है। यह तुम मुझसे जान लो।" उसने अपनी एक हथेली पर अपनी मुट्ठी से वार किया। "वे मतदान सूची में उन लोगों को ढूंढ़ना चाहते थे जिन्होंने मत नहीं दिये थे। और करीब-करीब प्रत्येक व्यक्ति का विश्वास था कि उसने जान लिया था कि किस तरह एक ही समय पर उन्होंने मतदान किया था !"

मैंने बस सहमति के भाव से सिर हिला दिया। जहाँ हर आदमी प्रत्येक व्यक्ति को जानता हो, उस देश की व्यवस्था कैसी होनी चाहिये ? यहाँ कस्बे में हमारा प्रचार आवश्यकता के कारण था जो नाजियों के शक्तिशाली साधनों से सीमित था।

हमने अपने क्षेत्र में छोटे-छोटे पर्चे बिखेर दिये थे जिस पर एक हथौड़ा और हँसिया बना था और 'नहीं' लिखा था। वैसा ही बर्लिन के सभी क्षेत्रों में किया गया था। हमेशा की तरह एडी को सब से कठिन कार्य करने थे—बगैर शीशे वाली आँख, बाँह पर लिपटा अन्धे व्यक्ति वाला फीता और आगे-आगे ठकठकाती हुई छड़ी। लेकिन हमने अपनी गली में एक भी पर्चा नहीं बाँटा था, और चन्द किरायेदारों के साथ जनमत संग्रह पर केवल विचार-विमर्श ही किया था। आज

कांड के बाद इतनी जल्दी हम अपने पास एस० ए० वालों को आने देना नहीं चाहते थे। आतंक के बावजूद, ये पर्चे 'नहीं' के पक्ष में मत देने के लिए एक आवाहन मात्र नहीं होंगे : उनका हिटलर के प्रत्येक विरोधी पर एक नैतिक प्रभाव पड़ेगा। इच्छा-शक्ति उसे विश्वास दिलायेगी कि हम दबाये नहीं जा सकते।

टीचर्ट ने मुझे कुहनी मारी। वह मुझे कुछ बतलाना चाहता था, लेकिन चूँकि दो एस० ए० वाले हमारे सामने थे वह मुझसे कुछ कह नहीं सका।

"हिटलर जिन्दाबाद !"

"हिटलर जिन्दाबाद !"

"तुम्हारा मतदान बिल्ला तुम्हारे पास है ?"

"मतदान बिल्ला ? नहीं।" टीचर्ट ने उत्तर दिया।

"तो तुमने अभी तक मतदान नहीं किया ?"

"नहीं।"

"बेहतर होगा कि तुम लोग तुरन्त जा कर मत दे आओ नहीं तो तुम लोग हर जगह पर रोके जाओगे !"

"वहाँ से तुम मतदान बिल्ले पा सकते हो," दूसरे एस० ए० वाले ने समझाया। वह अपने चश्मे को बेचैनी से नचा रहा था। "उन्हें लगा लेना। वह प्रमाणित करता है कि तुमने मत दे दिया है।"

उन्होंने अपनी बाँहें उठाईं और अपने रास्ते चल दिये।

"आओ, जान," टीचर्ट ने क्रोधपूर्वक कहा। जब हम कुछ आगे पहुँच गये तो बोला—"वे हमारा जवाब तुरन्त पा सकते हैं !"

एक ट्राम-स्टाप से हम गुजरे। वहाँ प्रतीक्षा कर रहे लोगों से एस०ऐ० वाले प्रश्न कर रहे थे। एक मोटी महिला उत्तेजनापूर्वक बात कर रही थी।

"लेकिन मुझे अपने रिश्तेदारों के यहाँ स्पान्डाउ जाना है !"

"पहले अपने मतदान स्टेशन जाओ। तुम स्पान्डाउ में भी टोकी

जाओगी, और तब बहुत देर हो चुकी रहेगी !" हमने एक एस० ए० वाले को कहते सुना।

"लेकिन वे डिनर के लिए मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं...।" उस महिला ने फिर अपनी बात शुरू की।

"तुम बहरी हो क्या, ऐं ? आज बिल्ले के बिना तुम कहीं नहीं जा सकतीं !" एस० ए० वाला उस पर चीखा।

उस महिला ने गुस्से से एक डिब्बा उठाया और वह चल पड़ी। अब हमने देखा कि उसके साथ एक नाटा व्यक्ति भी था। वह दूसरा डिब्बा ढो रहा था। हम उनके पीछे-पीछे चलने लगे।

"मैंने तुमसे यही कहा था। क्या मैं ट्रेन से नहीं जाना चाहती ?" उस महिला ने नाटे व्यक्ति को फटकारा।

"बेशक ! ट्रेन से ! लगता है तुमने फ्रिट्ज की बात नहीं सुनी थी जो उसने कही थी। वे किसी ऐसे व्यक्ति को बैरियर पार नहीं करने देते, जिनके पास बिल्ला नहीं होता !" मतदान स्टेशन एक हॉल में था। बाहर लोग एक लम्बी कतार में खड़े थे, जो बार के अन्दर से होती हुई अगले कमरे तक गई थी। जब हम दरवाजे पर पहुँच गये, तो हम उस कमरे में देख सकते थे। दूसरे सिरे पर अफसरान मेज के सामने बैठे थे। वे सभी नेशनल सोशलिस्ट बिल्ले लगाये हुये थे। उस कमरे के ठीक बाद ही बाईं ओर मुड़ने वाले खुले दरवाजों के पीछे तीन बक्स अलग-अलग मेजों पर रखे हुये थे। हरे पर्दे उन्हें थोड़ा अलग किये हुये थे। दरवाजे के दोनों ओर दो एस० ए० वाले खड़े थे—एक के हाथ में चन्दा एकत्र करने वाला बक्स था और दूसरे के हाथ में मतदान बिल्लों से भरी ट्रे थी। एक व्यक्ति एक मेज पर एक लम्बी सूची के पृष्ठ उलट-पलट रहा था। वह जोर-जोर से नाम ले रहा था और कभी-कभी तसदीक करने के लिए जन्म-तिथि भी पूछ रहा था। उसके निकट एक नाज़ी

अफसर बैठा था जो हर बार अपनी सूची में नामों के आगे सही का निशान लगा देता था।

उनके पास क्षेत्रीय मतदाता सूची की एक प्रति थी। इस तरह वे मत न देने वालों का पता लगा सकते थे और फिर वे उन्हें बुलाते थे।

"यह घर ब्लाक वार्डेन मीश्रर के नियंत्रण में है—"

मतदाता मतदान पर्चे से भरे लिफाफे लिये हुये दरवाजे के पीछे रखे बक्सों के पास जाते थे। पर्दे के पीछे वे क्रास (×) का चिन्ह लगाते थे। उनमें से कुछ तो इतने उत्तेजित थे कि वे पर्दे को आधा खुला ही छोड़ देते थे। वे अपनी आँखें बक्सों पर इस तरह टिकाये रहते थे, जैसे वह उन्हें चोरी जाने से रोके हों! नियमों का पालन हो रहा था। एस० ए० वाले मतदान गृह में नहीं थे—बस ड्योढ़ी पर ही थे।

टीचर्ट ने मुझे आँख मारी। वह भी मेरी ही तरह सोच रहा था। हिचकते हुये 'नहीं' मत देने वालों पर आतंकपूर्ण प्रभाव होना चाहिये। मैंने अनिच्छापूर्वक अपने पीछे खड़े लोगों को देखा। श्रमजीवी मर्द और स्त्रियाँ। उनके कपड़ों और उनके रुखड़े हाथों से यह स्पष्ट था। उनके चेहरे गम्भीर थे।

जब हम कमरे से निकलने लगते थे तो दफ्ती का बक्स लिये खड़ा एस० ए० वाला हमें बिल्ला देता था। दूसरा एस० ए० वाला चंदा एकत्र करने वाल बक्स आगे बढ़ा देता।

"हमारा काम छूट गया है," टीचर्ट उत्तर देता है।

वे हमें मुफ्त बैज देते हैं। बैज टिन के बने हैं। उन पर "हाँ" खुदा हुआ है।

बाहर पहुँच कर, टीचर्ट मेरी ओर मुड़ता है।...

"उनकी जहन्नुमी धृष्टता से मेरा मन खराब हो जाता है! जिन

बैंजों से वे हमारा मिलान करेंगे, उनके दाम हमीं से वसूल करेंगे ! मैं तो उनका बेहूदा तमगा न लगाऊँगा !"

दो दिन बाद।

हिल्डी हमें बताती है उसके भाई से उसके एस० ए० मित्रों की बड़े ज़ोर-शोर की बहसें होती रही हैं। सत्ता ग्रहण करने के लगभग एक वर्ष बाद अपने विरुद्ध पचास लाख वोट पड़ने पर उन्हें बड़ा धक्का लगा है।

"इन परिस्थितियों में, और उन्हीं के आँकड़ों के अनुसार !" टीचर्ट कहता है।

"यद्यपि कोई उनकी जाँच नहीं कर सकता।"

"चार्लोटेनबर्ग का परिणाम सब अच्छे परिणामों में से एक है," मैं कहता हूँ। "हमारे पास अड़तीस हजार विरोधी वोटर हैं। फ्रिडरिखशेन और वेडिंग जैसे श्रमिकों के बहुत बड़े क्षेत्रों में भी केवल चालीस हज़ार ऐसे वोटर हैं।"

"तैंतीस नम्बर के तूफानी दस्ते के बावजूद। शायद इसका कारण यह है, चार्लोटेनबर्ग के श्रमिकों पर थर्ड रीख बहुत ज्यादा सख्ती कर रहा है।"

इधर कुछ समय से मैं इस पुस्तक की लिखाई का काम जारी नहीं रख सका हूँ। अपने कमरे में लिख पाना अब मेरे लिए असम्भव है। मेरी पड़ोसिन ने—हम दोनों के कमरों के बीच केवल एक पतली दीवार है—मकान-मालकिन से कहा था, कि उसने घर में टाइपराइटर की आवाज़ सुनी है। जो निर्दोष सफ़ाई मैंने वृद्धा को दी थी, वही

उसने भी उसे दे दी। उसे यह बिलकुल मालूम नहीं था, कि मैं हमेशा क्या टाइप करता रहता हूँ। जहाँ तक उसका संबंध है, मैं ठीक समय पर किराया अदा करता हूँ, और एक 'अच्छा आदमी' भी हूँ।

पहले भी कई दिन ऐसी ही घटनायें हुई थीं। जब मैं लिख रहा होता था, तब कई बार अफसर लोग हमारे फ्लैट में आये थे। मैंने लिखे हुए पृष्ठ तो तेज़ी से छिपा दिये थे, लेकिन उन्होंने टाइपराइटर देख लिया था। हम जानते हैं, कि जिन अफसरों को मुआयने के लिए प्राइवेट घरों में जाना पड़ता है, उन्हें नाजियों के सख्त आदेश रहते हैं, कि वे किरायेदारों की गपशप ध्यान से सुनें। सब-कुछ बहुत ध्यान से देखें और सुनें। एक सामान्य 'प्राइवेट' व्यक्ति के पास एक टाइप-राइटर—वह भी ऐसे के पास, जो एक श्रमिकों के क्षेत्र में रहता हो—निश्चय ही ध्यान आकर्षित करेगा।

यही कारण है, कि काम करने के लिए मैं एक दूसरे कमरे की खोज में हूँ। हमारे आन्दोलन के एक समर्थक ने, जो नगर के एक दूसरे भाग में रहता है, इस काम के लिए अपना कमरा इस्तेमाल करने की इजाज़त दे दी है। मैंने इशारे से उसे बता दिया है, कि मैं एक ऐसी चीज लिख रहा हूँ, जो 'वर्जित' है। उसके साथ ईमानदारी बरतने के लिए मैंने ऐसा किया है।

अब मैं वहाँ कुछ घंटों के लिए जाता हूँ। मैंने एक ऐसा तरीक़ा निकाला है, जिससे जरूरत पड़ने पर मेरे नोट्स और पांडुलिपि तुरन्त गायब की जा सकती है।

दो दिन हुये फ्राँज को अपना स्थान बदल देना पड़ा। लैम्परेख्तों पर मुसीबत आ गई। वही परिवार, जहाँ मैं उस बर कैथी को ले गया था। फ्राँज ने उस घटना के बारे में मुझे बताया।

वह कल लैम्परेख्त के रसोईघर में खड़ा दाढ़ी बना रहा था। लैम्परेख्त की पत्नी उसके साथ परचे लाने के लिए एक ऐसे गुप्त स्थान को जाना चाहती थी, जहाँ साइक्लोस्टाइल पर छपाई की जाती थी। सुर्ख बाल और चित्ती-भरे चेहरे वाला मिस्त्री रूडी एक अन्य कामरेड के साथ उन पर्चों को छापता था। उस बार हमने अपना पत्र नाइट-क्लब में रूडी और उसके मित्र 'बाक्सर ब्रूनो' के साथ मिल कर छापा था।

फ्रांज, जिसने अपने चेहरे पर साबुन लगाना शुरू कर दिया था, उससे बोला कि वह थोड़ा इन्तजार करे, वह दाढ़ी बना ले तो चले।

"मैं पहले ही चली जाऊँ," एरना लैम्परेख्त ने उत्तर दिया—"बच्ची सो गई है, और कर्ट एक घंटे के अन्दर कोयले के यार्ड से लौटेगा। अभी न जाऊँगी, तो उसका सपर वक्त पर तैयार न हो सकेगा। मैं वितरण केन्द्र को उसके बजाय स्वयं ही परचे पहुँचा दूँगी। इससे कर्ट उस यात्रा से बच जायेगा। शाम को वह बहुत थका होता है।"

छपाई के उस स्थान को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। फ्रांज के साथ मैं अकसर वहाँ गया था। बिजली का सामान, गैस और पानी की टोटियाँ और बिजली के बल्ब खिड़की में टँगे रहते थे। और इन सब चीजों के ऊपर हरे फ्रेम में सजा हिटलर का चित्र दूकान की खिड़की में लटकता होता था।

खिड़की के शीशे पर लिखा था :

गैस और बिजली का कारखाना

और इसके नीचे कुछ और मोटे अक्षरों में—

जर्मन दूकान

दूकान का मालिक कामरेड श्वान्टे एक वृद्ध व्यक्ति है। वह मिस्त्रियों वाला एक बदरंग सूट पहने रहता है, और पुराने ढंग का निकेल के फ्रेम का

चश्मा लगाता है। दूरी के लिए उसकी आँखें बहुत कमजोर हैं, और उसका चेहरा गेहुँआ और पुराने चमड़े की तरह गहरा झुर्रीदार है। हर शनिवार को वह देहात में मछली का शिकार करने जाता है। यही उस वृद्ध अविवाहित व्यक्ति का एकमात्र शौक है। दूकान की दीवारों पर आलमारियाँ जड़ी हुई हैं, जिनमें ताँबे के तार, हर ढंग और साइज़ की कीलें, जस्ते के पाइपों के टुकड़े और इसी प्रकार की अन्य चीज़ें बेतरतीबी से ढेर की हुई हैं। सम्भवतः इसलिए कि उसके पास समय का अभाव है, वह छोटे-मोटे मरम्मत के काम कर के मामूली-सी रोज़ी कमा लेता है। "बूढ़ा श्वान्टे इस इलाके के कामरेडों को अपने ढंग से ख़ुराक वग़ैरा पहुँचाता है," साइक्लोस्टाइल का ज़िक्र करते हुए फ्रांज़ ने मज़ाक़ के तौर पर मुझसे कहा था।

पीछे के मरम्मत वाले कमरे में एक बड़ी-सी मेज़ पर वह रखी हुई है। एक बड़ी-सी आधुनिक मशीन। वह आप-ही-आप सादे पन्नों को अन्दर डालती है और रबर के रोलर के पीछे छपे हुये पन्नों को ढेर करती है, और उसमें एक ऐसी तरकीब भी है, जिससे जितने पन्ने छप चुके होते हैं, उनकी संख्या पढ़ी जा सकती है। वह तेज़ी से काम भी करती है। वह तीन मशीनों के बराबर आवाज़ ज़रूर करती है, लेकिन इससे कोई हर्ज नहीं। वह दूकान ऐसी जगह है, जहाँ मरम्मत का शोर होते रहना स्वाभाविक ही है। फ्रांज श्वान्टे की दूकान के लिए एरना के दस मिनट बाद रवाना हुआ। दूकान से कुछ दूरी पर पहुँचते ही उसने जो कुछ देखा, उससे वह चौंक पड़ा। पटरी के दूसरी ओर एक भीड़ जमा हो गई थी। क्या श्वान्टे की दूकान में कोई गड़बड़ी हो गई थी? फ्रांज़ भयभीत हो उठा। वह लोगों के पीछे पहुँच गया। उस इलाके में वह अपरिचित था। अब उसकी समझ में आया, कि मामला क्या है। श्वान्टे की दूकान के बाहर पटरी के किनारे एक काली मेरिया कार खड़ी थी!

वह काँप उठा; उसके घुटने झुके पड़ने लगे।

तो वे पकड़ लिये गये। मुसीबत आ गई उन पर। ऐसी कोई बात न करनी चाहिये, कि किसी को कोई शक हो। अगर वह पकड़ गया, तो कोई फ़ायदा न होगा। क्या एरना वहाँ पहुँच गई ? इसी तरह उसके विचार चलते रहे।

फ्राँज़ ने बाद में मुझे बताया, कि उसका सर चक्कर खा रहा था। तभी दरवाज़ा झटके के साथ खुला। हल्की हरी वर्दियाँ पहने और निकेल के चमकदार बैज लगाये हुए सिपाही बाहर निकले। गोरिंग के फ़ेल्ड-पॉलज़ी ! वे तीन असैनिकों को घेरे हुए थे, और उन्हें कार के अन्दर ढकेल रहे थे। वे तीन थे एरना लैम्परेख्त—वृद्ध स्वान्टे—और एक लम्बा, दुबला-पतला कामरेड। फ्राँज़ ने उसे केवल देखा भर था। एडी के साथ एक बार उससे मुलाकात हुई थी। लेकिन एडी कहाँ था ? उसका लाल सर तो उन लोगों के बीच नहीं था। छपाई में उसे भी तो उनका हाथ बँटाना था। क्या वह कुछ पहले ही चला गया ? वह दूसरा व्यक्ति—चौथा असैनिक—वह तो नहीं था—हाँ, वही था—सीफ़ार्ट ! और वह फेल्डपालज़ी (पुलिस) से बात कर रहा है—और उसे वे कार के अन्दर ढकेल नहीं रहे हैं ! फ्राँज़ को लक़वा-सा मार गया ! दूसरी ओर की वह कार चली गई। भीड़ धीमे स्वरों में बात करती हुई तितर-बितर हो गई। फ्राँज़ ने अपने-आप को सँभाला। अब उसे भी चल देना चाहिये। अगले मोड़ तक वह अपने-आपको शांत भाव से चलाता रहा। और फिर उसने दौड़ना शुरू कर दिया। यकायक उसकी समझ में आ गया था कि उसे क्या करना चाहिये। चौथाई-घंटे से अधिक तक वह दौड़ता रहा, दबाव खाते फेफड़े लिये। कोयले गोदाम की ओर ! एरना के पति को सावधान करने के लिए !

लेकिन बहुत देर हो चुकी थी ! बीस मिनट बाद उसने सुना, कि कि कर्ट सीधे फेल्डपॉलजी की बाहों में पहुँच गया। जब वह घर लौटा

तो वे उसके फ्लैट में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लैम्परेख्त के पड़ोसियों ने छोटी बच्ची को अपने पास रख लेना चाहा। लेकिन फेल्डपॉलजी ने इसकी इजाज़त नहीं दी। उनकी इस उदारता का परिणाम यह हुआ, कि उनके फ्लैट की भी तुरन्त तलाशी ली गई।

उसी शाम को फ्रांज़ ब्रूनो से मिलने गया, रूडी के घनिष्ट मित्र ब्रूनो से मिलने। जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला, फ्रांज़ ब्रूनो का उदास चेहरा देख कर समझ गया, कि उसको सब-कुछ मालूम हो चुका है। लेकिन उसे यह पता न था, कि वह स्वयं ही सब-कुछ नहीं जानता था। ब्रूनो उसे चुपचाप अपने कमरे के अन्दर ले गया, और फिर एक कुर्सी पर गिर कर, उसने हाथों में अपना मुँह छिपा लिया। फ्रांज़ ने खुश्क रुलाई से ब्रूनो के कंधे हिलते देखे। फ़िश्टे का घूँसेबाज़ ब्रूनो! वह बलवान व्यक्ति, जिसकी विनोदशीलता कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी जवाब नहीं देती थी। वह शांत तथा गम्भीर बना रहा था, जब एस० ए० वाले उस समय आ पहुँचे थे, जब हम 'ब्राउन बुक' पढ़ रहे थे। केवल उसी की बदौलत एस० ए० जे० कामरेडों से हमारा सम्पर्क कायम है। फ्रांज़ पर कमरे के मौन का स्नायुविक उत्तेजना से झिंझोड़ देने वाला असर पड़ा रहा था।

अन्त में उसे ख़ामोशी तोड़नी ही पड़ी।

"सीफ़ार्ट—निकम्मा—गद्दार!"

इस पर ब्रूनो ने नकारात्मक भाव से सिर हिलाया, और चढ़ी हुई आँखों से फ्रांज़ को घूरने लगा। उसका चेहरा मुड़-तुड़ गया।

मामला क्या है—क्या इसे अभी मालूम नहीं हुआ है? फ्रांज़ ने सोचा।

"वह फ़ेल्डपॉलजी के साथ गया था—और उन लोगों से बात कर रहा था। लेकिन रूडी है कहाँ?" उसने पूछा। "क्या वह औरों के साथ नहीं था?"

अस्पताल में भी उसने सीफ़ार्ट को चैन नहीं लेने दिया। उसकी गद्दारी के वर्णन-भरे परचे दीवारों पर चिपक गये। उसी वार्ड में, जहाँ सीफार्ट पड़ा था। अस्पताल से छूटने के बाद वह एक दूसरी गली मे रहने लगा। एस० ए० वालों ने इस बीच एक नियमित प्रबंध व्यवस्था सगठित कर दी। वे उसके घर में प्रवेश करने वालों को यकायक आश्चर्य-जनक ढंग से रोक कर, उनकी जेबों की तलाशी लेते थे। लेकिन ब्रूनो इससे हिम्मत हारने वाला नहीं था। चन्द दिन बाद ही सीफ़ार्ट के हॉल कमरे की दीवार पर ये शब्द गहराई से खुदे हुये थे :

होशियार ! श्रमिकों का क़ातिल सीफ़ार्ट यहाँ रहता है !

इस प्रकार सदा-उपस्थित अभियोगी ब्रूनो अपने शिकार का नगर मे पीछा करता है। इस प्रकार वह सीफ़ार्ट की आगे की गुप्तचरी की कार्यवाही को असम्भव बना रहा है। सीफ़ार्ट एक खदेड़े जाने वाले पशु के समान है, जो नहीं जानता कि उसका शत्रु कहाँ उसकी प्रतीक्षा मे घात लगाये बैठा है।

वह ब्रूनो को नहीं जानता।

ब्रूनो के प्रतिकार अभियान से कामरेडों को अपने वर्ग की शक्ति में विश्वास उपलब्ध हो रहा है।

वह उन्हें दिखा रहा है, कि एस० ए० और पुलिस के आतंक के बावजूद वे गद्दारी के विरुद्ध शक्तिहीन नहीं हैं।

अंत में सीफ़ार्ट ने हथियार डाल दिये। वह उस इलाके से एक दिन चुपचाप ग़ायब हो गया। ब्रूनो भी उसका पता लगाने में असफल रहा।

"ख़ैर, एक न एक दिन हम उसे पकड़ ही लेंगे, और तब कोई उसे बचा न सकेगा," उसने फ्रांज से कहा।

मैं विटेनबर्गप्लाज अंडरग्राउंड स्टेशन के निकट इन्तज़ार कर रहा था। केथी का ! मैंने उसके आफ़िस में उसे फ़ोन किया था। तब से कितन

समय गुज़र गया, जब मैंने पिछले बार उससे भेंट की थी ? हमारे व्यक्तिगत जीवन आजकल डूब-से गये हैं। केवल हमारे ही नहीं, सभी कामरेडों के। क्या औरों को भी ऐसा ही अनुभव होता है, जैसा मुझे ? केथी से मिलने की इच्छा इन दिनों ज्यादा जल्दी-जल्दी होती है। यह जानकारी कि कोई ऐसा है, जो हमारे संबंध की बातें समझता है, जिससे हर बात के संबन्ध में बात की जा सकती है—बिलकुल हर बात के संबंध में ! यह सत्य है, कि कामरेडों का होना अपने लिए बहुत-कुछ है। वे ऐसे लोग हैं, जिन्हों ने इस देश में अपने दिमाग़ साफ़ रखे हैं, जहाँ हर व्यक्ति और चीज़ आज भूरे रावट में परिवर्तित हो गई है। घटनाओं के उत्तेजित चक्रों और अगले दिन की अनिश्चितता से हमारी व्यक्तिगत मित्रताओं को बहुत बल मिला है। हाँ। आज हम पहले से कहीं अधिक अच्छी तरह समझते हैं, कि हम कितना कुछ खो देंगे, यदि हमे अकेला रह जाना पड़े।

सड़क के उस पार की दूकान के प्रकाशयुक्त विज्ञापन चकाचौंध उत्पन्न करते हुए चमक रहे हैं। सारा टायन्टजीन्स्ट्रास लाल और नीली रोशनियों से जगमगा रहा है। सड़क के अन्त में मेमोरियल चर्च सिर उठाये खड़ा है, विशाल और भद्दा। पैदल चलने वालों की भीड़ पटरियों पर खिड़कियों के आगे से धीरे-धीरे गुज़र रही है। मेरे बिलकुल पास दो स्कूपो सफ़ेद कफ़ों से ढकी हुई बाँहें हिला-हिला कर चौक के चारों ओर चलती कारों की लम्बी क़तारों को आदेश दे रहे हैं।

लोगों की एक भीड़ स्टेशन से बाहर निकलती है। केथी !

मैं उसका हाथ थाम लेता हूँ। वह अपनी बाँह मेरी बाँह में दृढता से फँसा देती है। हम भीड़ के अन्दर धीरे-धीरे चलते हैं। हम हफ़्तों से एक-दूसरे से मिलने की प्रतीक्षा करते रहे हैं, और हमें एक-दूसरे से कितना कुछ कहना है। लेकिन हम एक शब्द भी बोल नहीं रहे हैं। बस, हम एक-दूसरे की आँखों में आँखें डाल कर देखते हैं, और एक-दूसरे का

हाथ दबाते हैं। नहीं, अभी नहीं—बाद में। हम कहीं बैठना चाहते हैं। केथी छोटे-छोटे क़दम रखती है; मैं भी उससे क़दम मिलाने के लिए अपनी चाल धीमी कर देता हूँ। उसके हाथों की उष्णता—मुझे ऐसा लगता है, जैसे हम उस सड़क पर बिलकुल अकेले हैं। वह पीली पड़ गई है, और दुबली दिख रही है। उसका चेहरा पतला हो गया है। उसके सुन्दर केशों से ऐसा लग रहा है, या यहाँ की तेज़ रोशनी के कारण ?

मैं सोचता हूँ, कि उससे क्या कह सकता हूँ। कोई मज़ेदार बात। लेकिन जो कुछ मैं सोच पाता हूँ वह यह है :

" 'उससे छोटे दूकानदारों की आँख खुल जानी चाहिये। पहले वे यहूदियों का बहिष्कार करते हैं—'बड़ी बहु-विभागीय दूकान का नाश हो !' और अब, 'सभी नाज़ियों को सूचना दी जाती है, कि बड़ी दूकानों के कारबार में गड़बड़ी पैदा करना मना है।' "

"मैं खुद भी इसके बारे में सोचा करती हूँ। क्या लोग सचमुच इतनी जल्दी भूल जाते हैं, या केवल आँख बन्द कर लेते हैं ?"—केथी ने कहा।

सालवेशन आर्मी की एक टोली नुक्कड़ पर खड़ी गा रही है। एक स्त्री दान-पेटी आगे बढ़ा देती है। बड़े बानेट के नीचे उसका मोटा सुर्ख़ चेहरा खुशामदाना ढंग से मुस्कराता है।

"हमारे नुक्कड़ पर जो बूढ़ी औरत लोहा करती है, उसकी तुम्हें याद है न ? उसकी दूकान पर भी उन लोगों ने बहिष्कार का पोस्टर चिपका दिया है।"

मैं हामी के भाव से सिर हिलाता हूँ।

"एक बड़ी जूते की दूकान के आगे उसमें काम करने वालों की भीड़ लगी हुई थी। उनमें से एक से मैंने पूछा कि मामला क्या है। वे एक यहूदी ऐपरेंटिस की बर्खास्तगी लागू कराना चाहते थे। उस लड़की

ने बताया, कि वहाँ रहने वाले नाजी विरोध प्रकट करने के लिए उन्हें मजबूर करते हैं। और कोई भी आदमी अपनी नौकरी गवाँ देने की स्थिति में नहीं है।"

"यही हालत हर जगह है," केथी ने कहा। "मेरे आफ़िस में मेरा एक सहयोगी है, जिससे मैं कभी-कभी देर-देर तक बात करती थी। मैं जानती हूँ, कि वह वामपक्षी पार्टियों को वोट दिया करता था। अब वह मुझसे कतराता है; 'हिटलर जिन्दाबाद' कह कर मुझसे नमस्कार करता है।"

एक काफ़े के अन्दर हम खिड़की के पास की एक मेज़ पसंद करते हैं। खिड़की के पीछे राहगीरों का प्रवाह बिना रुके चलता जा रहा है। ट्रैफ़िक की आवाज़ हमारे कानों में पृष्ठभूमि में अनवरत धीमी भनभनाहट की तरह आ रही है। केथी मेरे बिलकुल समीप खिसक आती है। मुझे उसकी उष्णता की अनुभूति होती है। वह अपने प्याले में खामोशी से चम्मच चलाती है, और मुझ पर मुस्कराती हुई नज़रें डालती है।

मैं एक सिग्रेट जला कर गहरा कश लेता हूँ। बहुत सुन्दर।

केथी मेरी ओर फिर देखती है।

"माँ बीमार है। कई दिन से वह बिस्तर पर पड़ी है।"

"बीमार? कोई गम्भीर बात तो नहीं है?"

"नहीं। वही पुरानी शिकायत। वह बराबर फ़्रांज को बुलाने की माँग करती रहती है। फ़्रांज़ को मैंने नहीं बताया, कि वह बीमार है। उन्हें सुन कर चिन्ता ही होगी।"

"फ़्रांज से आखिरी बार तुम्हारी कब भेंट हुई थी?"

"कल। हिल्डी भी वहाँ थी।"

"मैंने पिछले हफ़्ते उससे भेंट की थी। वहाँ सब ठीक-ठाक है न?"

"हाँ। वे बिलकुल ठीक दिख रहे थे।"



मैं अधिक उन्मुक्तता से साँस लेता हूँ। तो फ्रांज ने रूडी के संबंध में केथी को कुछ नहीं बताया। वह इसे परेशान नहीं करना चाहता था।

हम वहाँ देर तक बिना एक शब्द भी बोले बैठे रहे। फिर मैं केथी से कहता हूँ, कि हम क्रिसमस बिताने के लिए बाहर जा सकेंगे। कहीं देहात में। उसका चेहरा प्रसन्नता से लाल हो जाता है। वह अपनी बाँह मेरी बाँह पर रख देती है। उसकी आँखें चमक उठती हैं। भविष्य की प्रतीक्षा की उत्तेजनामय भावनाओं से आन्दोलित, हम अपनी यात्रा की योजनायें बनाने लगते हैं। केथी कहती है, कि वह मेकलेनबर्ग जाना अधिक पसंद करेगी। वहाँ घने वन हैं, और अनेक झीलें। हम सम्भावित खर्च का हिसाब लगाते हैं। हम संतोषपूर्वक पाते हैं, कि हमारी "छुट्टी की बचत" की रक़म काफ़ी होगी।

मैं उसे दो सड़कों तक पहुँचाता हूँ, और फिर हम अलग हो जाते हैं।

मैं धीमे क़दमों से अपनी सड़क पर वापस आता हूँ। क्रिसमस तक बर्फ़ गिरनी शुरू हो सकती है। हम एकान्त वनों में एक-दूसरे का पीछा करेंगे। इधर-उधर घूमेंगे। एक-दूसरे पर बर्फ़ के गोले फेंकेंगे। जमी हुई झीलों पर पत्थर फेंकने में कितना मजा आता है। हम अपने स्केट भी साथ ले जा सकते हैं। और फिर हम अपनी शामें किसी गाँव में बितायेंगे। वह एक नये देश के आविष्कार जैसा होगा, जब हम गोधूलि के बाद गाँव की शान्त गली में घूमेंगे। मैत्रीपूर्ण रोशनियाँ खिड़कियों के पीछे जल रही होंगी। अचानक हमें गाँव की सराय के गर्म कमरे में पहुँचने की तीव्र इच्छा हो उठेगी। केथी!

आखिर हम एकसाथ होंगे!

दिनों—दिनों तक!

माइकोवस्की मुकदमा हफ्तों चला। प्रेस ने पहले लिखा था कि,सरकारी

वकील द्वारा मुकदमें के खुलासे के प्रस्तुतीकरण की आशा जनवरी के प्रारम्भ में की जा सकती है। शीघ्र ही एक साल हो जायेगा उस रात से अब तक, जब चांसलर की नियुक्ति हुई थी, और तैंतीस नम्बर के दस्तो ने हमारी गली में मार्च किया था। उस रात के जयंती समारोह के पहले ही फैसले की घोषणा हर हालत में हो जायेगी। वह एक 'प्रतीकात्मक-प्रतिकार' होगा। समाचार-पत्रों की रिपोर्टों से यह बिल्कुल स्पष्ट है, कि अभियोगी अभी तक यह साबित नहीं कर सके हैं, कि अभियुक्त कामरेडों ने स्टार्मलीडर माइकोवस्की और पुलिसमैन ज़ारिट्ज़ की हत्या की थी, इस तथ्य के बावजूद कि राज्य की सारी मशीनरी सक्रिय है, और उस रात की घटनायें विस्तार की नन्हीं-से-नन्हीं बातों तक काटी-छाँटी जा चुकी हैं। लेकिन नियंत्रित प्रेस तो केवल 'कम्युनिस्टों द्वारा हत्याकारी आक्रमण' के संबंध में ही लिख सकता है। इसके द्वारा 'कम्युनिस्ट क़ातिल' वाला विचार जनता के दिमाग में जमा देना अभिप्रेत है। किसी भी पत्र में इस बारे में एक पंक्ति भी प्रकाशित नहीं हुई, कि एस० ए० दस्तों ने वालस्ट्रैसी के अन्दर से मार्च किया था, यद्यपि मशाल वाले जुलूस के बाद स्टार्म क्वार्टर वापस जाने का मार्ग विरोधी दिशा में था। हमारी गली में मार्च करके प्रथमतः एस० ए० वाले ही संघर्ष का अवसर उत्पन्न करने के लिए ज़िम्मेदार थे। वे अपनी विजय के प्राथमिक जोश में हमारी गली पर अचानक हमला बोल देना चाहते थे। अभियुक्त कामरेडों ने मुक़दमें के दौरान इसका हवाला दिया होगा, क्योंकि प्रेस ने प्रतिवाद तथा जवाबी बहसों का संकेत दिया है, जो "निश्चय ही जान-बूझ कर कहे गये झूठ और तोड़ी-मरोड़ी बातें हैं"। महीनों चलती रही जिरहों से उन्होंने जो कष्ट सहा है, उसके अलावा मुकदमें से उन्हें भयानक मानसिक उत्पीड़न हुआ होगा। मुक़दमें की जो रिपोर्टें पत्रों में छपती हैं, उनमें ज़ोर देने से निर्दयतापूर्वक बचते हुये भी एक वाक्य बार-बार आता है : "मुक़दमे की

कार्रवाई मुल्तवी कर देनी पड़ी, क्योंकि एक अभियुक्त पर चीख़ने का दौरा पड़ गया...क्योंकि, जैसा अकसर हुआ है, एक अभियुक्त मिर्गी का दौरा पड़ जाने से गिर पड़ा..."

वास्तव में, राष्ट्रीय समाजवादी पत्रों ने माइकोवस्की को 'राष्ट्रीय हीरो' बना दिया है। वे हमेशा एस० ए० स्टार्म तैंतीस का जर्मनी की 'प्रतिष्ठा का तूफ़ान' तथा 'पुरातन रक्षक' तूफ़ानी दस्ता कह कर बयान करते हैं। गोबेल्स ने हाल ही में टेम्पिलहॉफ़र फ़ील्ड में नाज़ियों के 'माइकोवस्की ख़ूनी पताका' को छूकर 'पवित्र यादगार' की प्रतिष्ठा के पत्रों में प्रकाशित होने वाले चित्रों में तूफ़ानी दस्ते ३३ को अध्यक्ष के मंच के सामने खड़े किये गये गार्ड ऑफ़ ग्रानर के रूप में दिखाया जाता है। अभी तक, ६ नवम्बर १९२३ तक, स्वस्तिक पताका ही थी—वह झंडा जो म्युनिख के हमले के समय नाज़ी सेना के साथ था। और केवल एक ही 'राष्ट्रीय हीरो' था—हॉर्स्ट वेसेल। अब दूसरा 'शहीद' है माइकोवस्की, जिसे उसके ही एस० ए० सैनिकों ने गोली मारी थी। इस सब से अभियुक्त कामरेडों के संबंध में हमारी चिन्ता बहुत बढ़ गई है। इसलिए और भी अधिक कि नाज़ियों के अख़बार उनके सिरों की माँग कर रहे हैं। फिर भी, इस सब के बावजूद, माइकोवस्की मुक़दमा ही जनता की दिलचस्पी का केन्द्र नहीं है। रीखस्टाग मुक़दमा इसे अधिक-से-अधिक महत्वहीन बनाता जा रहा है। जब गोबेल्स और गोरिंग गवाही दे चुके, तो मुक़दमें के फ़ैसले की प्रतीक्षा विस्फोट की अवस्था तक पहुँच गई। क्या डिमिट्रॉफ़ द्वारा चतुराई-भरी भाषा में किये गये प्रश्नों का गोरिंग ने क्रोधित होकर यह उत्तर नहीं दिया : "मेरी राय में तुम एक बदमाश हो; तुम्हारा स्थान फाँसी का तख़्ता ही है ?" और एक दूसरे अवसर पर वह उस पर स्पष्ट क्रोध में चिल्ला पड़ा था : "निकल जा, बदमाश !"

अब आसानी से समझी जा सकने वाली ख़ामोशी के साथ जर्मन प्रेस

को गोरिंग की धमकियों को नजरंदाज कर देना पड़ा। लेकिन मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ, कि उन धमकियों की चर्चा हमारे ही बीच नहीं, बहुत बड़े हल्कों में हो रही है। लोग विदेशी पत्रों में रिपोर्टें पा जाते हैं। विदेशी पत्रों की कभी इतनी माँग नहीं रही, जितनी आजकल है। हर जगह, ट्रेनों में, काफे में, पार्कों में लोग बैठ कर विदेशी पत्र पढ़ते है। काफ़े में वे पत्र एक के हाथों से दूसरे के हाथों में घूमते रहते हैं, हर व्यक्ति उस वक्त तक बेसब्री से इन्तजार करता रहता है, जब तक दूसरा पढ़ नहीं लेता। क्योंकि विदेशी पत्र खरीदने के लिए हम सभी के पास पैसे नहीं हैं।

लेकिन डिक्टेटर गोरिंग के संबंध में जर्मन प्रेस को भी मुँह खोलना ही पड़ा। जब गोरिंग ने अपराधी कम्युनिस्ट दर्शन की चर्चा की, और डिमिट्रॉफ़ ने उससे साहसपूर्वक प्रश्न किया, कि क्या उसे मालूम है कि पृथ्वी के छठवें भाग पर यह अपराधी दर्शन ही राज कर रहा है, यानी सोवियत यूनियन, तो गोरिंग फिर बमक पड़ा। उसने कहा, कि वह जानता है कि रूसी उधार के रुक्के देकर बिलों की अदायगी करते हैं, लेकिन उसे यह पता नहीं कि ये रुक्के बाद में भँज भी जाते हैं या नहीं। अगले ही दिन जर्मन प्रेस में एक सरकारी प्रतिवाद प्रकाशित हुआ, जिसमें स्वीकार किया गया, कि "सोवियत सरकार ने आज तक जर्मनी में अपनी सारी उधार रकमें ठीक समय पर अदा की हैं।" सभी समाचार पत्रों ने यह विज्ञप्ति बहुत महीन टाइप में अपने फालतू स्थान में प्रकाशित की। लेकिन हमारे कामरेडों ने खीसों और मुस्कराहटों के साथ इसे एक-दूसरे को दिखाया। और हमीं लोग ऐसे नहीं थे, जिन्होंने इस बात की सराहना की। मैंने पंसारी की दूकान में भी लोगों को उस विज्ञप्ति के बारे में बात करते सुना। वे नाज़ी तरीकों की चर्चा भी कर रहे थे, कि किस तरह वे माल खरीदते हैं, पर उनकी कीमत अदा नहीं करते।

जनता का ध्यान डिमिट्रॉफ़ पर केन्द्रित है। जर्मनी के समस्त भागों

में सैकड़ों डिमिट्रॉफ़ पाये जायेंगे, यदि उनके मुकदमों की कार्रवाइयाँ कभी प्रकाशित की जायें। तमाम सरकारी प्रतिवाद और छिपाव भी असली आगजनी के बारे में जनता के बड़े-बड़े हल्कों में सच्चाई को पहुँचने से रोक नहीं सकते। जहाँ गैरकानूनी पुस्तिकाएँ और पत्र घुस नहीं पाते, वहाँ मास्को स्टेशन रेडियो से खबरें पहुँचा देता है। हर जगह रेडियो सुनने की शामें संगठित की गई हैं। हमारी अपनी गली में भी। हर शाम को हम मुक़दमे की कार्रवाई की रिपोर्ट सुनते हैं। फिर कामरेड लोग उसे दूसरों को ज़बानी सुना देते हैं। हिल्डी ने हमें बताया है, कि जो एस० ए० वाले उसके भाई के पास आते हैं, वे भी मास्को स्टेशन से प्रसारित की जाने वाली खबरों के बारे में बात करते हैं; कुछ तो इसलिये कि वे लाल-पीले हो उठते थे, और कुछ 'कोई नई खबर' सुनाने के ख्याल से। गोरिंग को अच्छी तरह मालूम है कि इस रेडियो सुनने के क्षेत्र का कितना अधिक विस्तार हो गया है। उसने यह आदेश जारी किया है, कि "सुनने के इरादे से विदेशी रेडियो स्टेशन लगाना राज्य के प्रति वैमनस्ययुक्त कार्य माना जायगा और इसी बिना पर दंडित होगा।" कम-से-कम जहाँ तक हमारा संबंध है, इस आदेश का मूल्य मुद्रक की रोशनाई से अधिक न रहेगा। गोरिंग के 'पार्टनर' गोबेल्स से हमें यहाँ सब से अधिक सहायता मिल रही है। उसके आदेशानुसार जर्मन वायरलेस उद्योग ने अपेक्षाकृत सस्ते दाम वाले "जन" रेडियो सेटों के निर्माण का काम हाथ में लिया है। इन छोटे सेटों को कुछ मार्क नक़द दे कर और बाकी रकम छोटी मासिक क़िस्तों में अदा करके प्राप्त करना सम्भव है। लेकिन इन सेटों पर जर्मन स्टेशनों को ही सुना जा सकता है, और यही इरादा भी था। खैर, हमारे गैरपेशा तकनीकवियों ने शीघ्र ही मालूम कर लिया, कि इन सेटों में एक अतिरिक्त पुर्जा लगा देने से, जिसकी कीमत दो मार्क से अधिक न पड़ेगी, इनका रेंज बहुत अधिक बढ़ाया जा सकता है। बहुत से कामरेड, जो महँगे सेट

खरीदने के लिए पैसा जमा नहीं कर पाते थे, अब मास्को स्टेशन को मज़े से सुन सकते हैं।

यह क्रिसमस (बड़ा दिन) की पूर्वसंध्या है। एडी से मेरे मिलने की बात है। एडी 'शीतकाल सहायता' केन्द्र को जाना चाहता है, राष्ट्रीय समाजवादी जन कल्याण केन्द्र को।

"तुम मज़े में चल सकते हो। सब लोग सड़क पर कतार में खड़े होंगे। जब मेरी बारी आये, तो अपने स्थान पर जमे रहना। कोई कुछ भाँप न पायेगा।" मेरी आपत्तियों की उपेक्षा करते हुए, एडी ने कहा—"तब तुम्हें आजकल के हालात पर लोगों की बातचीत सुनने का बड़ा अच्छा मौका मिलेगा।"

वास्तव में उसके साथ अपने जाने की बात पर मेरे विचार करने का यही एकमात्र कारण था। लेकिन हम कार्यालयों के निकट ही मिलेंगे। हमारी गली से उन कार्यालयों तक का फ़ासला दस मिनट से भी कम का ही है।

'शीतकाल सहायता'! टीचर्ट ने मुझे बताया था, कि उसके कारखाने के हर मजदूर को प्रति सप्ताह पचास फेनिग का 'त्याग' करना पड़ता है। अनेक 'स्वयमेव' कटौतियों में से एक। वेतन दिवस पर नाज़ी अफ़सर नामों की सूची घुमाते हैं, जिसके सामने रकम भरनी होती है, ताकि किसी को अपने से पहले वाले व्यक्ति से कम देने का साहस न हो। इन स्वयं चन्दा देने वालों को एक 'शीतकाल सहायता' चिन्ह दिया जाता है। कागज़ के गोल गुलाब, जिन पर चित्र बने होते हैं, और 'हम सहायता करते हैं' छपा होता है। तमाम घरों में दरवाज़ों पर ये चिपकाये गये हैं। मेरे पर भी। हर महीना उनका रंग बदला जाता है। किसी-किसी दरवाजे पर तो खासी नुमाइश-सी हो जाती है। ये चन्दा जमा करने वालों के लिए इस बात के चिन्ह होते हैं, कि यह किरायेदार 'त्याग' कर चुका है। चन्दा जमा करने वालों के झुंड मकानों में

हर समय आते-जाते रहते हैं। टीचर्ट कहता है, कि मज़दूर लोग प्रति-सप्ताह जो पचास फ़ेनिग देते हैं, उसके लिए उन्हें काग़ज वाले गुलाब नहीं मिलते। ये तो एक प्रकार से लज़िमी चन्दे हैं। बैंजो के लिए उन्हें पचास फ़ेनिग और देने पड़ते हैं। उसकी राय में अधिकांश लोग ये चन्दे इसलिए देते हैं, ताकि उनके घरों में शान्ति और अमन रहे।

हिटलर ने बड़ी तड़क-भड़क के साथ क्रॉल थियेटर में 'शीतकाल सहायता' संस्था का उद्‌घाटन किया। उसने शानदार वर्दियाँ पहने क्रप, सीमेंस, थाइसन आदि उच्च वित्तविदों तथा पार्टी के बड़े-बड़े अफसरों के सामने 'क्रियात्मक समाजवाद' पर भाषण किया। उसने 'इतिहास के महानतम कार्य' के संगठनकर्त्ता के रूप में गोबेल्स को सम्मानित किया। हमारे बेकार कामरेडों ने मुझे बताया है, कि वे एन० एस० वी० से क्या पाते हैं। वे महीने भर के लिए थोड़े-से आलू, एक हंडरवेट कोयला और एक पाउंड नकली मक्खन पाते हैं! और यह नकली मक्खन मुफ़्त भी नहीं होता। यह 'सस्ते दाम' पर बेचा जाता है। आलू और कोयले के लिए भी एक रक़म देनी पड़ती है। "पहले ज़माने में मैं यह सब सामाजिक कल्याण संस्था से पाता था, और जो सदावर्त वे बाँटते थे, वह अधिक भी होता था," एडी ने जोड़ा।

किसानों को आलू का 'चन्दा' देना पड़ता है, कोयले के व्यापारियों को कोयले का और छोटे व्यापारियों को किराने की वस्तुओं का। वे उसे भी स्वेच्छा से दिया गया चन्दा कहते हैं। कोई भी व्यापारी इन्कार करने का ख़तरा उठाने की हिम्मत नहीं कर सकता! छोटे व्यापारियों से वे जो कुछ छीनते हैं, उसे ग़रीबों को देते हैं, और इसे 'समाजवाद' कहते हैं। और नक़द चन्दे का क्या होता है? वह तो लाखों तक पहुँचता होगा!

लगता है, कि गोबेल्स ने यह समझ लिया है, कि छोटी चन्दा पेटियों ने अपना असर खो दिया है। लाउडस्पीकर वाली गाड़ियाँ अब सड़कों पर गश्त लगाती हैं। ऊँट, बन्दर तथा अन्य विचित्र जानवर

साथ लिए हुए, प्रचारक दस्ते जुलूस बना कर नगर में मार्च करते हैं। बर्लिन की सबसे अधिक व्यस्त सड़क टायन्टज़ीन्स्ट्रैसी पर एस० ए० चन्दे वाले घोड़ों पर निकलते हैं। वे घोड़ों की गर्दनों में चन्द पेटियाँ लटका देते हैं, और पटरियों पर रास्ता रोक कर खड़े हो जाते हैं। हमने भी अपनी गली में दो बार चन्दा जमा किया है। बीस मार्क वाले दो नोट मिले थे। हमने यह रक़म कार्ल करगेल और हींज प्रेउस की माताओं के पास भेज दी थी, ताकि वे उन दोनों के पास क्रिसमस के उपहार भेज सकें। प्रेउस श्रेडेनबर्ग के यातना शिविर में बन्द है, और करगेल ओरियेनबर्ग के। उन्होंने करगेल को बिना किसी कारण के यातना शिविर में ठूँस दिया। तैंतीस दस्ते वालों ने उसे इसलिये गिरफ़्तार किया, कि वे उससे जानना चाहते थे, कि फ़ैंज़ कहाँ है। एस० ए० रिज़र्व के एक्स ने मुझे इसके बारे में बताया था। कई महीनों में हम जो कुछ पता लगा सके हैं, वह इतना ही है, कि वे कहाँ है। और कुछ नहीं। मैं रुक जाता हूँ। एडी—एडी कहाँ है? लेकिन यह ग़लत नुक्कड़ है। हमने अगला नुक्कड़ ते किया था।

कम खाओ, रविवार है! किसी भी घर पर दोपहर के भोजन पर पचास फ़ेनिग से अधिक खर्च न होना चाहिये। चन्दे वाले घरों में आ कर देगचियों की जाँच करते है।

उनका कहना है कि फ़्युहरर (हिटलर) एक बार परोसा गया खाना ही खाते हैं, और इससे बचने वाला पैसा 'शीतकाल सहायता' कोष में दे देते हैं।

लेकिन देगचियों में झाँक कर वे खुद अपना ही नुक़सान करते हैं। फ़ाव ज़ीसचके को, जो हमारे ही मकान में रहती है, मैंने कभी इतनी परेशान नहीं देखा, जितनी उस खास रविवार को। वह मुझे अपने रसोईघर में लिवा ले गई। और उसने देगची का ढक्कन उठा कर खासी फटकार शुरू कर दी।

"मैंने उस चन्दे वाले को सुना दिया। 'मुझे थोड़ी-सी पेन्शन मिलती है', मैंने उससे कहा। 'मेरे खाने में पचास फ़ेनिग से ज्यादा न लगना चाहिये,' मैंने कहा—'यही न ? फ्युहरर भी इतना ही खाते हैं ? खैर, मुझे खुशी होगी, अगर क्रिसमस के समय मैं एक खाने पर पचास फ़ेनिग से ज्यादा खर्च कर सकूँ,' मैंने उससे कहा।"

फ़ाव जीसचके बड़बड़ाती और शिकायत करती रही, और मैं अपने-आप से पूछ रहा था, कि वह मुझे अपने यहाँ क्यों बुला लाई है ; वह मेरे बारे में तो कुछ जानती नहीं। फिर अचानक उसने मुझसे पूछा, कि क्या मैं 'कम खाओ' गीत जानता हूँ।

"नहीं।"

उसने अपनी पतली बूढ़ी आवाज़ में गाना शुरू कर दिया :

"एक रविवार को प्रातःकाल बोले रीबकाजलर :
एक बार परोसा खाना, एक बार परोसा खाना, पातगोभी !
बड़ा कड़ुआ मुँह बनाया मोटल गोरिंग ने :
एक बार परोसा खाना, एक बार परोसा खाना, पातगोभी !. "

बुढ्ढा ने इसे एक जर्मन लोक गीत के स्वरों में गाया। अपनी कमजोर, बूढ़ी आवाज़ में वह गाने लगी : "एक रविवार को प्रातःकाल बोले रीबकाजलर..."वह अभी भी डेगची का ढक्कन हाथ में लिये थी। वह सब ऐसा तीतर-बटेर-सा लगा, कि मैं हँसे बिना न रह सका। बेशक मैं वह गीत जानता था; हम सभी उसे कुछ समय से जानते थे।

लेकिन फ़ाव जीसचके ने उसे कहाँ सुना ?

वह रहा एडी ! अपने ज़ोरदार तरीक़े से उसने मुझसे हाथ मिलाया।

"हेलो, जान !...आओ, चलें। देखो, मैं उनसे क्या निकलवा पाता हूँ।"

वह खखार कर थूकता है।

"मैंने भी तै कर लिया है कि मुझे क्या करना होगा। अगर वे

रंगबाज़ मुझे कम देंगे, तो वे चाहे जितनी दूर की हाँकें मैं भी उन्हें सुना दूँगा।"

"अच्छा, सुनो, यह ज़ाहिर न होना चाहिये, कि हम एक-दूसरे को जानते हैं। और जो कुछ कहना सँभल कर कहना। हमें और भी होशियार रहना है।"

"बिलकुल। क्या मैं यह जानता नहीं?"

'शीतकाल सहायता' का किराना सामान वितरण केन्द्र एक खाली दूकान में स्थित है। चार-चार व्यक्तियों की एक लम्बी क्यू उसके सामने लगी है। हम उसके अन्त में खड़े हो जाते हैं, और चन्द मिनट बाद एक लम्बी क़तार के भाग बन जाते हैं। नवागन्तुक बराबर आते जा रहे है। मैं औरों पर एक नज़र डालता हूँ। वे अधिकतर श्रमिक स्त्रियाँ तथा बेरोज़गार मर्द हैं। कुछ के कपड़ों को देख कर मैं कह सकता हूँ, कि उन्होंने अच्छे वक़्त देखे हैं। अगर मैं उससे कहीं और मिलता, तो बाउलर हैट और काला कोट पहने उस छोटे-से आदमी के संबंध में सोचता कि उसकी सुरक्षित आमदनी है। कोट में बड़ा अच्छा मख़मल का कालर लगा है, और बिलकुल नया लगता है। और बाईं ओर खड़ी फ़र का जैकेट पहने वह वृद्धा? कितना गर्वीला चेहरा है उसका। यहाँ भी इसे मध्यम श्रेणी का कहा जाता है। यहाँ खड़ा होना उसके लिए 'कष्टदायक और नीचे गिराने वाला' है। अत्यधिक आवश्यकता ही उसे यहाँ खींच कर लाई है। हम अपने पैर पटकते हैं। तेज़ ठंडक है, और तेज़ हवा चल रही है।

"युद्ध के वर्षों में जैसा कुछ था, वैसा ही अभी भी है। शलजम के मुरब्बे में मिलाने को कुछ ग्राम नक़ली मक्खन प्राप्त करने के लिए मुझे क्यू लगाना पड़ता था। पिता जी युद्ध-मोर्चे पर थे, और माँ गोले-बारूद के कारखाने में काम कर रही थीं। शामों को वह बुरी तरह थकी और



भूखी घर लौटती थीं। उनका चेहरा हमेशा पीला रहता था। गंधक के कारण।

एस० ए० का एक आदमी दरवाज़ा खोलता है। लोगों की एक भीड़ अन्दर घुस पड़ती है। हम धक्कम-धक्का करते आगे बढ़ते हैं।

"जरा आगे बढ़ जाओ। तुम तो अन्दर हो।"

"हमें इस सर्दी में कब तक खड़े रहना पड़ेगा ?"

दूकान का दरवाज़ा फिर बन्द हो गया है। एडी मुझे आँख मारता है। अब वह मेरी बायीं ओर खड़ा है, क़तार के बिलकुल अन्त में। उसने ठीक ही कहा था। मैं यहाँ मजे में खड़ा रह सकता हूँ। कोई इस बात पर ध्यान न देगा, कि मैं अन्दर जाता हूँ या नहीं। जो हो, वे सब धक्कम-धक्का काते हुए आगे बढ़ते थे, जब मौक़ा पाते थे। जो आदमी अभी चिल्लाये थे, उनको मैंने ध्यान से देखा। उनमें से एक नाज़ियों का आवश्यक ट्रेड यूनियन बैज पहने था। जो लोग आगे हैं, वे कम-से-कम यहाँ एक घंटे से खड़े होंगे। हमारे आगे क़रीब साठ आदमी होंगे। एस० ए० वाले ने एक दर्जन से अधिक को अन्दर नहीं आने दिया। पटरी पर सिपाही बूट ठकठकाते हुए चले जा रहे हैं। बर्फ़ गिरने लगती है। बर्फ़ और जल की मिली-जुली फ़ुहार। अब आगे ? हमारे पीछे कितने लोग हैं ? मैं क़तारों को गिनता हूँ। सात, आठ...तीस से अधिक। उन की बारियाँ आने में कितना समय लगेगा ? यहाँ खड़े-खड़े बीस मिनट हो चुके हैं ! उस पहले वाली टोली के हटने से हम केवल दो क़दम आगे बढ़ सके हैं।

कतारों के बग़ल से एक युवक गुज़रता है। मैं केवल उसका सिर और मुलायम फ़ेल्ट हैट, जो वह पहने हुए है, देख पाता हूँ।

"हल्लो, एरिख !" वह आवाज़ लगाता है।

बाउलर हैट पहने वह छोटा-सा आदमी, जो मुझसे दो क़तार आगे है, अपने सिर को झटका देता है।

"हाँ।...यहाँ हूँ।"

"एक सेकेंड के लिए बाहर आ जाओ।"

छोटा आदमी भीड़ के अन्दर धक्कम-धक्का करता बढ़ता है। मैं उन दोनों को देख नहीं पाता, पर उनकी बातचीत सुन सकता हूँ। क्यू के अन्य लोग दोनों की ओर गर्दन घुमाते हैं।

"तुम्हें मिल गया ?"

"हाँ।"

"क्या मिल रहा है हमें ?"

"जो कुछ मिल रहा है, उसे एक हाथ में ले जाया जा सकता है। एक पाउंड प्याज, आधा पाउंड पनीर और एक मार्क का पन्सारी वाला रुक्का।"

थपथपाने की आवाज़। युवक ने थैले को थपथपाया होगा।

"प्याज़ का मैं क्या करूँ, मैं पूछता हूँ ?"

वे बात करते जाते हैं, लेकिन बाक़ी बातचीत मैं सुन नहीं पाता।

मेरे सामने बाईं ओर एक लम्बी, जीर्ण-शीर्ण स्त्री शिकायत करना शुरू कर देती है। वह अपनी बाहें नितम्बों पर रख लेती है।

"एक पाउंड प्याज्—आधा पाउंड पनीर! और इसके लिए हम यहाँ घंटों से खड़े हैं ?"

वह अपनी बाँहें घुमाने लगती है। अन्य लोग पीछे हट जाते हैं।

"उस सब का ये लोग क्या कर डालते हैं ?...क्या कर डालते हैं वह सब ?...मेरे क़साई के यहाँ से ये बहुत-सी चर्बी और मसालेदार क़ीमे के दक्स लाये थे—इतने बड़े-बड़े !"

और साइज़ दिखाने के लिए वह अपनी बायीं बाँह घुमाती है, और अन्य लोगों के देखने के लिए उसे उसी स्थिति में रखती है। हर एक की ओर वह इस तरह देखती है, जैसे उत्तर माँग रही हो।

"और वे क्रिसमस भी मनाना चाहते हैं !" सफ़ेद दाढ़ी वाला बूढा तीखे ढंग से कहता है।

"लड़ाई के दिनों में भी साला ऐसा ही था। साली खाइयों में कुछ खाने को नहीं था—लेकिन सदर मुकाम पर बढ़िया खाने की भरमार थी !"

एडी। क्या वह अपनी जबान बन्द नहीं रख सकता ? जो हो, उसे ऐसी सख्त बात न कहनी चाहिये। मैं त्योरी चढ़ा कर उसकी ओर देखता हूँ। वह खीस निकाल कर, हल्केपन से सिर हिलाता है। वह समझता है, कि उसकी बातें विशेष रूप से मौक़े के अनुरूप हैं।

"वही पुराना तमाशा है यह ! बस, एक नये कारखाने ने कारबार सँभाल लिया है।" मेरे पीछे एक आवाज़ कहती है।

छोटा आदमी धक्का-मुक्की करता हुआ, अपने पहले वाले स्थान पर आ जाता है। वह अपने कोट में पार्टी का बैज लगाये हुए है न ? उसने आखिरी बात सुन ली होगी, क्योंकि वह अपनी हैट पीछे खिसका देता है, और उत्तेजित स्वर में कहता है :

"मैं इस मामले की रिपोर्ट करूँगा, इत्मीनान रखो। इस लटज़ो के वितरण केन्द्र के संबंध में !... बर्लिन शीतकाल सहायता के डायरेक्टर को...खुद स्पीवोक को !"

"चोर चोर..." सफ़ेद दाढ़ी वाला बूढ़ा वाक्य पूरा नहीं करता। "मौसेरे भाई !" वह आगे कहना चाहता था। लेकिन उसने पार्टी का बैज देख लिया था। मैं देखता हूँ, कि उस अधूरे रह गये वाक्य ने औरों के लिए चेतावनी का काम किया है। पहले उन्होंने बूढ़े की ओर आश्चर्य से देखा था, लेकिन अब वे उस छोटे आदमी को तौल-परख रहे हैं। मैं एडी की ओर देखता हूँ, और फिर छोटे आदमी को। अपने पंजों पर मैं खड़ा हो जाता हूँ, ताकि वह मुझे देख सके। अपनी तर्जनी से मैं अपने कोट की तह पर एक छोटा-सा वृत्त बनाता हूँ। एडी मुझ पर एक लम्बी

नज़र डालता है। अन्त में ! वह हाँ के भाव से सिर हिलाता है। अन्त में वह मेरी बात समझ जाता है। कम-से-कम अब वह अपनी ज़बान बन्द रखेगा। हो सकता है, कि यह छोटा आदमी यहाँ होने वाली बातें सुनने के लिए भेजा गया हो। अब क्या कह रहा है वह ?

"बड़े वाहियात ढंग से यहाँ चीज़ें बाँटी जा रही हैं ! मैं शिकायत लिख भेजूँगा ! मैं दुरुस्तगी की माँग करूँगा !"

उसे इस बात से झल्लाहट हो रही है, कि उसे बहुत थोड़ा 'हिस्सा' मिलेगा ! लेकिन उसके स्वर में गर्व का भाव भी है ! हमारे मुक़ाबले में वह अपने-आप को एक 'आधा अफ़सर' समझ रहा है। मेरी राय ग़लत हो सकती है। अन्य लोगों के चेहरों पर आराम का भाव आ जाता है। सामने दूकान का दरवाज़ा फिर खुल जाता है। धक्कम-धक्का फिर शुरू हो जाता है। एस० ए० का एक आदमी द्वारमार्ग पर खड़ा, कतारों में खोज-भरी नज़र दौड़ा रहा है।

"पीछे अब और किसी को मत आने दो !" वह चिल्ला कर कहता है। "एक घंटे में हम काम बन्द कर देंगे।"

उसके इन शब्दों से चीखों-चिल्लाहटों का एक तूफ़ान उठ खड़ा होता है।

"क्या तुम समझते हो, कि हम यहाँ मज़ाक के तौर पर खड़े हैं ? ...एक घंटे में हम सब तो अन्दर जा न सकेंगे।...अगर तुम लोग यह काम ठीक से नहीं कर सकते, तो औरों को करने दो।"

चार-चार वाली वह क्यू यकायक गड़बड़ा जाती है, और बाईं ओर मुड़ती है। लोग एकसाथ दरवाज़े की ओर बढ़ते हैं। बेकारी वाले कार्ड लिये हुए हाथ इधर-उधर हिलते हैं।

"अगर तुम लोग फ़ौरन ख़ामोश न हो जाओगे, तो हम अब बन्द कर देंगे," एस० ए० वाला चिल्लाता है।

"ओ हो...यह तो हमारे लिए बड़ी गड़बड़ी की बात होगी...लेकिन

तुम हमारे साथ ऐसा नहीं कर सकते—नहीं कर सकते तुम ऐसा हमारे साथ !

दूकान के किवाड़ भड़ से बन्द हो जाते हैं। ताले में कुंजी खिच-खिचाती है। मैं दुकान की खिड़कियों पर दब गया हूँ। अन्दर से एक बड़ा-सा पोस्टर लगा दिया गया है।

क्रियाशील समाजवादी बनो ! एन० एस० बी० में शामिल हो जाओ !

और उसके नीचे एक छोटी नोटिस :

जरूरत है

लोहा तपाने का एक सिलंडर स्टोव
एक बच्चे की गाड़ी अच्छी हालत में

एस० ए० वाले आदमी ने पिछवाड़े के दरवाज़े से काम लिया होगा। वह गली से मुड़ कर आ जाता है, उत्तेजित भीड़ के सामने खड़ा हो जाता है, और लोगों को पीछे धकेलने लग जाता है। हुज्जत करते, बेइज्जती सहते लोग धक्के खाते हुए अपनी पुरानी जगहों पर आ जाते हैं। लम्बी, जीर्ण-शीर्ण औरत अब मेरे बग़ल में खड़ी है, और पार्टी के बैज वाला वह छोटा आदमी उसके सामने। एडी और आगे है। वह दो क़तार आगे बढ़ गया है।

"बस ये लोग यही दे सकते हैं, जब कि इनके पास इतना रुपया जमा है।" लम्बी औरत फिर शुरू कर देती है। "मेरा भाई काम कर रहा है। उसकी तनख़ाह में से 'शीतकाल सहायता' चंदा काट लिया जाता है।"

"बिलकुल ठीक।" उसके निकट खड़ी एक युवती हामी में सिर हिलाती है। "सब काट-कूट के बाद एक-चौथाई तनख़ाह निकल जाती है।"

वह अपना शाल और कस लेती है।

कुछ दिन हुए टीचर्ट ने मुझे एक तराना सुनाया था, जो फ़ैक्टरी में चालू हो गया है।

वह समान्यतः भोजन के पूर्व की जाने वाली प्रार्थना का व्यंग्य है।

"आओ, हर हिटलर, हमारे अतिथि बनो,
जो वचन दिया था हमें,
निभाओ उसको आधा ही..."

"हाँ। और फिर वह परोक्ष वाला पैसा भी तो है!" लम्बी स्त्री फिर कहती है।

"परोक्ष! क्या मतलब?" उससे कम उम्रवाली पूछती है।

लम्बी गहरी साँस खींचती है, और यह इत्मीनान करने के लिए, कि अन्य लोग भी सुन रहे हैं, इधर-उधर नज़र डालती है।

"चन्द दिन हुए पन्सारी की दूकान में एक स्त्री ने पनीर का एक छोटा बक्स माँगा—उस तरह का जो टीन के वर्क में लिपटा रहता है"—हर व्यक्ति खूब ध्यान से सुन रहा है, वह छोटा आदमी भी—"और तब उसने क़ीमत देखी, और शिकायत करने लगी कि वह फिर पहले से अधिक महँगा है। क़ीमतें बराबर बढ़ाई जा रही हैं, और यह वाजिब बात नहीं है। सहायक ने कहा, कि वह अधिक महँगा नहीं है। वह बेशक अधिक महँगा है, क्रोधित हो कर उस स्त्री ने ज़ोर देते हुए कहा; वह इस तरह ठगी जाने को तैयार नहीं! बारह फ़ेनिग, और पहले इसके दस फ़ेनिग पड़ते थे!"

लम्बी स्त्री ने हम सब की दिलचस्पी लेती नज़रों को विजय-भाव से देखा।

" 'एक खरीद लो,' सहकारी ने कहा, 'तो मैं तुम्हें सब समझा



दूँ।' और कारण क्या था, जानते हैं ? बढ़ाये हुए दो फ़ेनिग 'शीतकाल सहायता' के लिए दिये जाने थे !"

चारों ओर अर्थपूर्ण भाव से सिर हिलते हैं। सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा हँसी हँसता है। छोटा आदमी अपनी बाउलर हैट को इधर-उधर करता है। वह निश्चय ही परेशान दिखता है। ये लोग इस जगह बात करने की हिम्मत कर रहे हैं, जब कि पार्टी का बैज लगाये वह छोटा आदमी बिना बाधा दिये सुन रहा है ! दूकानों में, साप्ताहिक बाज़ारों मे मैंने अकसर स्त्रियों को क़ीमत की बढ़ोत्तरी की शिकायत करते सुना है—लेकिन यहाँ तो, ये ठीक नाज़ी कार्यालयों के सामने हैं !

"काम कैसे होते हैं, यह देखने का मौक़ा कभी-कभी मिलता है," शाल वाली युवती ने कहा, "हमने विवाह-क़र्ज़ के लिए आवेदन-पत्र दिया। इसके बारे में वे कितना कुछ कहते हैं। उन्होंने हमारी डाक्टरी परीक्षा करवाई यह देखने के लिए, कि हमारे तन्दुरुस्त बच्चे होंगे या नहीं"—वह कंधे हिलाती है—"और फिर जाति के संबंध में उनके विचारों को तुष्ट करने के लिए मेरे पति को हमारे अपने नगरों से मेरे और अपने खान्दानी शजरे मँगवाने पड़े। इसमें कई महीने लग गये, और इस पर जो खर्च बैठा, उससे हम लगभग बरबाद हो गये !"

"अच्छा, तो फिर क्या हुआ ?" ज्यादा उम्र वाली टोक कर पूछती है। कम उम्र वाली उसकी ओर देखती है। उसका चेहरा पतला और नुकीला है, एक बच्चे जैसा। और आँखें गहरी भूरी।

"और तब उन लोगों ने कहा, 'अच्छा, तो तुम बेकार हो ?...तब तो तुम्हें एक हज़ार मार्क न मिलेंगे, सिर्फ़ पाँच सौ मिलेंगे। लेकिन इसके लिए तुम्हें किसी ऐसे को लाना होगा, जो गारंटी करे, कि तुम कर्ज अदा कर दोगी !"

वह व्यंग्य भाव से हँसती है।

"और मामला गड़बड़ा गया। अगर परिवार में ऐसा कोई होता तो हमें उधार मांगने की जरूरत ही क्यों पड़ती ?"

पूरा क्यू हँस पड़ता है। मुझे उस भाव का बोध होता है, जो उन सब की हँसी में निहित है।

"और अब तो चाहे कोई उनके लिए गारंटी करने को तैयार भी हो, तो भी बेकारों को कर्ज नहीं मिलता !" युवती जोर देते हुए कहती है। "बहुतों ने तो मात्र इसी कारण विवाह करने की हिम्मत की—ऐसा ही हमारे साथ भी हुआ।" तमाम सिर झटके से सामने की ओर मुड़ जाते हैं। एस० ए० वाला आदमी खिड़की से अन्दर देख रहा है। मैं एडी की ओर सिर हिलाता हूँ। वह मुस्कराता और सिर हिलाता है। वह धक्कम-धक्का करके बड़े मजे में आगे बढ़ गया है, और अगले बैच के साथ जरूर अन्दर चला जायेगा। और तब समय आ जायेगा।

दूकान के अन्दर एस० ए० वाला कुंजी घुमाता है, दरवाजा खोलता है। लोग भड़भड़ा कर आगे बढ़ते हैं। मैं किसी के देखे बिना क़तार से बाहर खिसक जाता हूँ। एडी अन्दर चला गया है।

मैं गली के मोड़ पर इधर से उधर टहलता हूँ। पाँच मिनट और, एडी अगर फिर भी न आये, तब—लेकिन लोग बगल के रास्ते से बाहर आ रहे हैं। एडी उनमें भी नहीं है। हाँ, वहाँ है वह, आख़ीर में। वह मेरे लिए इधर-उधर नज़र दौड़ाता है, फिर धीरे-धीरे सड़क पर चलने लगता है। मैं उसे कुछ आगे निकल जाने देता हूँ। कुछ सेकेंड बाद उसकी बगल में पहुँच जाता हूँ, और उसकी बाँह पकड़ लेता हूँ। वह चौंक कर और फिर आश्चर्यान्वित हो कर उछल कर मुड़ता है।

"मैंने सोचा, कि तुम बहुत पहले ही चले गये, जान।"

"अभी इसी बारे में सोच रहा था। भयानक ठंडक है। लेकिन तुम्हारा 'हिस्सा' कहाँ है ?"

एडी कुछ लिए नहीं है। वह हँसता है, और मेरे कंधे थपथपाता है।

"उन्होंने मेरा हिस्सा रुक्कों पर दिया है। देखो न !"

वह अपनी जेब से कुछ स्लिपें निकालता है। मैं पढ़ता हूँ!

"एक पाउंड चीनी, एक पाउंड चावल, आधा-पाउंड कोको का वाउचर।" और घेलवे के तौर पर एक मार्क का किराने का वाउचर।

"तुमने कैसे..."

"खासा मज़ाक रहा !" एडी हँसता है। "बाँटने वाले अफ़सरों को मैंने लोगों से कहते सुना, कि सिर्फ़ एक मार्क वाले वाउचर रह गये है, सामान सब बँट गया। लोग बुरी तरह बड़बड़ा तो रहे थे, लेकिन वाउचर पाकर खुश भी हो रहे थे। मैं जेब से अपने कारनामे निकाल लेता हूँ। और जब वह वही सब मुझसे कहने लगता है, तो मैं उसके सामने मेज पर अपनी प्रथम वर्ग की लौह सबील, ज़ख्मियों वाला सोने का तमग़ा और अंधेपन का सर्टिफ़िकेट रख देता हूँ। 'ज़रा यह सब देखिए' मैं उससे कहना शुरू करता हूँ। 'चार साल तक मैं खंदकों में रहा हूँ। पितृ-भूमि के लिए मैं लुंज-पंज हो गया था। और अब कुछ ठीक से क्रिसमस मनाने के लिए मुझे सामान भी न मिलेगा। नहीं, इससे काम न चलेगा। यह सब आप नौसेना वालों से कहिए, मुझसे नहीं।' मैं कहता हूँ। 'मेरे दो चाचाओं से शीतकालीन सहायता चन्दा वसूल किया जाता है, और बहिन से भी। उन लोगों ने कल ही मुझसे कहा था, कि अपने चन्दे वाले पैसे वे खुद मुझे दे देंगे, ताकि मेरे पास कुछ तो हो जाय!' और जान, यह सब मैंने धीमे से नहीं, खूब चिल्ला-चिल्ला कर कहा। और मेरे ज़बान खोलते ही बाकी लोग भी आ जुटे।"

हम एक मोड़ पर घूमते हैं।

"इतने ज़ोर से मत बोलो, एडी..."

लेकिन एडी पूरे जोश में है।

"गड़बड़ी क्या है ? क्या यह सब भी मैं तुमसे नहीं कह सकता ?

हाँ, तो वहाँ सब लोग बिगड़ गये। 'तुम उन लोगों से चन्दे वाला पैसा नहीं ले सकते,' अफ़सर मुझसे कहता है, 'अगर तुम ऐसा करोगे, तो शीतकाल सहायता में गड़बड़ी पैदा करने के जुर्म में पकड़ जाओगे।' वह कुछ देर तक सोचता रहता है, और मुझसे कहता है, कि मैं एक क्रिसमस वृक्ष ले लूँ। 'मैं क्रिसमस वृक्ष ले कर क्या करूँगा? मैं उसे देगची में तो लगा नहीं सकता,' मैं उठ कर कहता हूँ। तब वह उठ कर काउंटर का दरवाजा खोलता है, और मुझसे दूसरे कमरे में आने को कहता है। और वहाँ वह मेरे लिए ये वाउचर भरता है। लेकिन मैं और लोगों से कुछ न कहूँ, वह मुझे चेतावनी देता है।..." एडी ज़ोर से हँसता है। "और मैं लोगों से कुछ कहता भी नहीं। लेकिन जब मैं बाहर आता हूँ, तो ये कागज हाथ में लिये रहता हूँ। दूकान में जमा लोग मेरे पास दौड़ कर आते हैं। 'तुम्हें कुछ मिला?' वे मुझसे पूछते हैं। मैंने कागज़ उनके सामने हिला दिये। उनमें से अधिकांश मेरे पीछे दौड़ते हुए आये। दूकान भी भरी हुई थी। गली के मोड़ पर मैंने उन लोगों से कहा, 'हाँ, मुझे कुछ तो मिला ही। तुम्हें बस यही करना है, कि मेरी ही तरह ज़ोर का झगड़ा करो।' बाद में मैंने दरवाजे पर से देखा, वे सब-के-सब अफ़सरों पर पिल पड़े!"

चक्कर लगा कर मैं अपनी गली में वापस आता हूँ। सामने गली के मोड़ पर अखबारों का एक स्टाल है। स्टाल वाला बी जेड ऐम मीटाग पत्र लटका रहा है। मोटे-मोटे शीर्षक :

टार्गलर और बुलगारियाई रिहा!
लुब्बे को मौत की सज़ा!

यह खबर जैसे मेरे अन्दर तीर की तरह घुस जाती है। मुझे शान्त रहना चाहिये।

"आज प्रातःकाल तीव्र उत्तेजना के वातावरण में सेनेट के अध्यक्ष

जज लंगर ने रीखस्टाग मुक़दमे में उपर्युक्त फ़ैसला सुनाया। जिसकी आम तौर पर अपेक्षा की जा रही थी, यह फ़ैसला उसी के अनुरूप है, क्योंकि..." बाक़ी मज़मून अख़बार की तहों में छिपा हुआ है। क्या मैं एक प्रति ख़रीद लूँ ? बाद में, जब मैं कुछ शांत हो जाऊँ।

केथी ! आज रात हम जा रहे हैं।

डिमिट्राफ़ रिहा कर दिया गया !

कितना मज़ेदार किसमस है यह ! किसी और बात से हमें इतनी प्रसन्नता नहीं हो सकती थी।

हम टीचर्ट के यहाँ हैं। उसने अर्नस्ट सच्वीबस से मुझे बुलवाया था। उसकी पत्नी ने हमें देखा ज़रूर है, लेकिन वह हमारे ग़ैरक़ानूनी काम के बारे में कुछ नहीं जानती। हम गैस लैम्प के नीचे गोल मेज़ पर बैठते हैं। फ्राव टीचर्ट बड़े रूखेपन से हमारा स्वागत करती है। वह अँगीठी की तरफ़ पीठ किये, अलग बैठी, बुनाई कर रही है। टीचर्ट अपनी कुहनियाँ मेज़ पर और सिर हाथों में टिकाये हुए है। सांध्य पत्र उसके सामने पड़ा है। उसे सच्वीबस ले आया था, और कुछ क्षण पहले उसने मुझे दिखाया था। कोई कुछ नहीं कहता।

नैतिक रूप से हत्या का अपराधी !
माइकोवस्की मुक़दमे पर अन्तिम शब्द !

हमारी गली के कितने घरों में, चार्लोटेनबर्ग की कितनी गलियों में यह ख़बर इस समय पढ़ी जा रही है ? कोई कुछ तो कहे ! मैं सच्वीबस की तरफ़ देखता हूँ। वह मेज़पोश का कोना मरोड़ रहा है। वह मेरी ओर नहीं देखता। हमें टीचर्ट के पास न आना चाहिये था, मुझे यहाँ सब-कुछ बड़ा अजीब लग रहा है। मित्रता का ऐसा अभाव ! मैं चोर नज़र से टीचर्ट की पत्नी की ओर देखता हूँ। उसकी उँगलियों के बीच सलाइयाँ खनकती हैं। वह अपने काम में पूर्णतया मग्न है। सुर्ख़ गालों

वाली छोटी-सी गोल-मटोल औरत चेहरे के अगल-बगल काली लटें, बर्फ़ जैसा सफेद ऐपरन—इस कमरे से इस स्त्री का अच्छा ताल-मेल है। यह कमरा कितना साफ़ और निरानंद है। पीतल के चमकते पेंडु-लम वाली पुरानी घड़ी, सोफ़े के सुर्ख़ गिलाफ़ पर लैस की सफ़ेद छोटी-ऊपरी झालर। टीचर्ट यकायक अपनी कुर्सी पीछे खिसका कर, खड़ा हो जाता है। वह इधर से उधर टहलने लगता है। उसकी पत्नी बुनाई बन्द कर देती है, और नज़र उठा कर उसकी ओर देखती है।

कुछ देर बाद वह फिर बैठ जाता है, और अख़बार से पढ़ कर हमें सुनाता है :

"...वालस्ट्रैसी को राजनैतिक विरोधियों से मुक्त रखने के कठमुल्ला-पन वाले विचार से सनक का, एक गश्ती और खुफ़िया दल का संगठन किया गया, राष्ट्रीय समाजवादियों के आगमन की सूचना देते हुए। जब स्टार्मलीडर माइकोवस्की के नेतृत्व में एस० ए० दस्ता गाता हुआ वाल-स्ट्रैसी के अन्दर से गुज़र रहा था, तभी आक्रमण आरम्भ हुआ..."

एक सेकेंड तक ख़मोशी रहती है। फ्राव टीचर्ट की नज़रें अभी तक उस पर जमी हुई हैं।

"...स्टार्मलीडर माइकोवस्की और पुलिसवाले जारिट्ज़ की हत्या करने के लिए अभियुक्त क़ैदियों को सज़ा क्यों नहीं हुई? दुर्भाग्यवश हमें इसका वह उत्तर देना पड़ रहा है, जो कि हमारे बहुतेरे पाठकों को निराशाजनक लगेगा, कि कार्यवाही के परिणाम से यह सिद्ध नहीं हो सका, कि अभियुक्तों में से ही किसी एक ने घातक गोली चलाई थी। वर्तमान ज़ाब्ता फ़ौजदारी अभियुक्तों को मौत की सज़ा देने की इजाज़त नहीं देता। यदि उन लोगों ने आधे-घंटे बाद वह कार्रवाई की होती, तो सवाल दूसरा ही हो जाता—यानी ३१ जनवरी को। तब राज्य तथा जन सुरक्षा क़ानून के अनुसार उन्हें मौत की ही सज़ा मिलती।"

फ्राव टीचर्ट भी पब्लिक प्राज़क्यूटर के भाषण की स्पष्ट बर्बरता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी।

"लेकिन फिर..."वह कहती है।

टीचर्ट उसे रोक देता है।

"वह तो खुद ही यह मान रहा है, कि अभियुक्तों में से किसी ने भी वह घातक गोली नहीं चलाई—"

"अटार्नी जनरल रैक ने खेद प्रकट किया है, कि वह निर्दोष व्यक्तियों को मौत की सज़ा नहीं दे सकते!" मैं बीच में जोड़ता हूँ।

"तीसरे रीख में," सच्चीबस उदास भाव से कहता है,"मानव जीवन इतने के भी योग्य नहीं"—उँगलियाँ तोड़ते हुए—"जब श्रमिकों का मामला हो!" टीचर्ट अपनी कुरसी आवाज करते हुए पीछे खिसकाता है, और कमरे में फिर टहलने लगता है। काफ़ी देर तक केवल उसके जूतों की चरमराहट ही सुन पड़ती है।

फिर सच्चीबस बोलना शुरू कर देता है, हमारी बातचीत के विषय से बिना कोई संबंध जोड़े।

"हिल्डी ने कल मुझे बताया था, कि एस० एस० और एस० ए० में लड़ाई हो गई। एस० ए० के नव वर्ष पूर्व-सन्ध्या समारोह में। बर्लिनर स्ट्रेसी में। बैम्बर्गर हॉफ़ हॉली में। एस० ए० का एक आदमी मर गया। बहुत दिनों से एस० ए० वाले एस० एस० को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं, क्यों?"

कोई कुछ नहीं कहता।

सच्चीबस ही व्यंग्य भाव से फिर खामोशी तोड़ता है।

"ऐंग्रिफ़ ने कल मृत्यु सूचना प्रकाशित की थी : 'हमारा एस० ए० कामरेड, जो अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुआ मरा।' "

टीचर्ट अपनी कुर्सी के पास आता है।

"हाँ..." वह कहता है। स्पष्टतः उसके विचार दूसरी ही तरफ़ लगे है। और क्षण भर बाद। "फ़ैसला शीघ्र ही दे दिया जायेगा।"

"माइकोवस्की मुक़दमे में?"

"हाँ। हमारी गली में अपने मार्च करने की जयंती से पहले ही वे फैसले का एलान कर देना चाहते हैं।"

हींज़ प्रेउस यातना शिविर से मुक्त कर दिया गया है। जवान काम-रेड हींज़ प्रेउस, जो बसंत ऋतु में पोस्टर चिपकाते हुए पकड़ा गया था। सैलानी हींज प्रेउस, जो गर्दन तक बाल बढ़ाये रखता है। उसने खुफिया साधनों से मेरे पास सन्देश भेजा कि वह वापस आ गया है, कि क्रिसमस के क्षमादान में उसे भी शामिल कर लिया गया था, कि वह मुझसे मिलना चाहता है। तब मैंने भेंट का स्थान निश्चित किया, और उसे चेतावनी दी कि वह किस रास्ते से आयेगा, इसके संबंध में विशेष रूप से होशियार रहे।

कल मैं उससे मिला। फ्रांज़ के यहाँ जब वह आया, तो हमें धक्का लगा लेकिन हमने उसे कुछ समझने नहीं दिया। बहरहाल फ्रांज़ ने लम्बी नजर से मेरी ओर देखा। हींज़ बहुत अधिक दुबला हो गया है। उसके गाल धँस गये हैं, और उनमें मौत जैसी पीलाहट आ गई है। वह साँवला और स्वस्थ दिखा करता था। जब हम उसके लम्बे बालों को लेकर उसे चिढ़ाते थे, तो वह हमेशा कहा करता था, "मैं माँ से कहूँगा कि वह इन्हें काट दें।" अब उसके बाल बिलकुल छोटे-छोटे कट गये हैं। इससे वह और भी ख़राब दिखता है।

उसने हमें बताया, कि जो क़ैदी छोड़े जाने वाले थे उन्हें पहले ही से शिविर के सहन में क़तार में खड़ा कर दिया गया था। गवर्नर ने उनके सामने छोटा-सा भाषण दिया। उनसे कहा, कि सरकार की इस

दया को वे कमज़ोरी न समझ लें। जो कोई सरकार के विरुद्ध दूसरी बार कार्य करता पकड़ा जायेगा, उसे वे ख़त्म कर देंगे।

इस धमकी तथा उस सब के बावजूद, जो उसे यातना शिविर में सहना पड़ा है, हींज़ प्रेउस की हिम्मत टूटी नहीं है। वह फिर हमारे साथ काम करना चाहता है। हम उसे समझाते हैं, कि ऐसा तीन महीने बाद ही हो सकता है। उसकी और हमारी भी सुरक्षा के ख्याल से। अन्त में वह समझ गया, और सहमत हो गया। फिर उसने हमें बताया, कि उसकी माँ का भेजा हुआ एक क्रिसमस पार्सल उसे मिला था, और वह अत्यधिक प्रसन्न हुआ, जब हमने उसे बताया, कि उसके लिए हमने अपनी गली में पैसा जमा किया था। वह पार्सल उसने अन्य कामरेडों को दे दिया था। उसी दिन वह रिहा हुआ था, जिस दिन उसे पार्सल मिला था। उसके बाद उसने पूछा, कि अन्य कामरेडों का क्या हाल है। उसने ठीक-ठीक जानना चाहा, कि स्थिति क्या है, हम अपना काम किस तरह जारी रख रहे हैं। लेकिन हमने उसे मोटे तौर पर ही सब बताया। इस कारण नहीं, कि हमें उस पर अविश्वास है, बल्कि इस कारण कि उसे अभी से बेमतलब चिन्ता न करनी चाहिये। उसे अगले कुछ महीनों में अपना स्वास्थ्य ठीक करना चाहिये, और कुछ नहीं।

लेकिन उसके लिए हमसे बिलकुल अलग रहना अब असम्भव था; वह इसे बर्दाश्त न कर सकेगा। हम कुछ समय तक विचार करते रहे, कि क्या हम इसके लिए राज़ी हो जायें। आखीर में हमने तै किया, कि वह हममें से किसी एक से देर-देर में मिल लिया करे—बर्लिन से बाहर, और कम-से-कम खतरे के साथ। क्योंकि हमें दूसरे इलाकों से पता चला है, कि गेस्टापो वाले यातना शिविरों से रिहा हुए कैदियों की सख्त निगरानी करते हैं।

उसने हमें यह भी बताया, कि कुछ को छोड़ कर, यातना शिविर मे कामरेड लोग दृढ़ बने हुए थे।

"क्या तुम्हें मालूम है, कि ब्रैंडेनबर्ग में मेरे साथ कौन था ?" उसने यकायक कहा, "एरिक मुसाम !"

इसके बाद उसने हमें एरिक मुसाम के बारे में सब-कुछ बताया। उसके बयान ने हमें गहराई से आन्दोलित कर दिया। मैं उसके साथ बड़ी रात तक रहा, औरों के चले जाने के बहुत बाद तक। मैंने उससे हर बात विस्तार के साथ बयान करने को कहा। मेरे प्रोत्साहन देने पर, उसने ब्रैंडेनबर्ग यातना शिविर की इमारत के नक्शे की छोटी-से-छोटी विस्तार की बात का भी खाका खींचा। दुनिया को जानना चाहिये, कि एरिक मुसाम को कैसी-कैसी यातनायें दी गईं।...

ब्रैंडेनबर्ग यातना शिविर का सहन नम्बर तीन। चंद मिनट पहले प्रातःकाल के सात का घंटा बजा था। डिवीज़न नम्बर नौ के चालीस आदमी दो क़तारों में खड़े किये गये थे, हींज प्रेउस भी उनमें था। उनके उठाये जाने, अपनी बैरेक जैसी कोठरी की सफ़ाई करने, और पानी जैसी काफी पी चुकने के बाद डेढ़ घंटे बीत चुके थे। वे सब काँपते खड़े थे, जैसे कि उन्हें इस समय भी उन चिपचिपे भूसे के बोरों की अनुभूति हो रही हो, जो उनके लिये बिस्तर का काम देते थे। वे केवल मामूली पतले कपड़े पहने हुये थे।

हींज प्रेउस ने अपना सिर कंधों के बीच नीचे तक झुका लिया। जब से उसके लम्बे बाल काट दिये गये थे, तब से उसे हमेशा अपनी गर्दन के पीछे सर्दी महसूस होती थी। उन सब के सिर के बाल क़ैदियों की तरह महीन-महीन काट दिये गये थे। यातना शिविर पुराने जेल-खाने में स्थित था। अपनी अस्वास्थ्यप्रद अवस्था के कारण जेलखाने के रूप में उसका परित्याग कर दिया गया था। लम्बा लक़लक़ सार्जेंट क़तारों के बीच घूरता हुआ इधर से उधर चला। "सावधान" का

आदेश दे-दे कर, उसने हरेक पर उसका प्रभाव देखा। ग्रेउस ने उसके चेहरे के बग़ल से पंद्रह-फुट ऊँची ईंटे की लाल दीवार को देखा। सार्जेंट ने चन्द क़दम पीछे हट कर, अपने हाथ नितम्बों पर रख लिये।

"चार-चार में बँटो !" भौंक कर आदेश मिला।

सिर हल्के झटकों के साथ तिरछे मुड़े। काश कि "कसरतें" आज बहुत सख़्त न हों, ग्रेउस ने चिन्तापूर्वक सोचा। एरिक मुसाम निश्चय ही बर्दाश्त न कर पायेगा ; वह ऐसा दिख रहा है, जैसे किसी भी मिनट गिर पड़ेगा। एक सेकेंड पहले उसे उसकी एक झलक मिली थी, जब उन्हें सिर घुमाने पड़े थे। एरिक उसके दाहनी ओर तीसरे स्थान पर था। वह झुका हुआ खड़ा था, और उसकी ठुड्डी सीने को लगभग छू रही थी। एक नया आदेश।

"टोलियों में, बायें मुड़ो...क्विक मार्च !"

एरिक मुसाम क़तार के सिरे पर था। हींज़ ग्रेउस अगले आदेश का बेचैनी से इन्तज़ार कर रहा था। काश कि वह दौड़ वाली कसरतें न कराने लगें—मुसाम की ऐसी हालत में ! और उसकी यहाँ सहायता करना ज़रा भी सम्भव नहीं। पास खड़े रहना, और उसकी सहायता न कर पाना !

नई तरतीब अभी पूरी भी नहीं हो पाई थी, कि नया आदेश सहन में गूँज उठा।

"गिरजे घर की ओर—डबुल मार्च !"

सहन की पूरी लम्बाई बीच में थी। डेढ़ सौ गज़—दीवार से गिरजाघर तक डेढ़ सौ गज़ ! महीनों से वहाँ बन्द रहने और रद्दी भोजन के कारण पौष्टिक पदार्थ उपलब्ध न होने से वे सब कमज़ोर हो गये थे। मेहनत के विचार से ही वे काँप उठते थे। दौड़ते समय ग्रेउस ने दाहनी ओर देखा। एरिक मुसाम सिर झुकाये हुए दौड़ रहा था, जैसे कि वह अपने कंधों पर भारी बोरा उठाये हो। वह क़तार की सीधाई

में नहीं रह पा रहा था। वह अन्यों से कुछ पीछे रह गया था। आगे वाले क्या पागल हो गये हैं ? वे कुछ धीमे क्यों नहीं हो जाते ? वार्डरों का बेहूदा भय ! वह उन लोगों के साथ दौड़ नहीं रहा था; वह इससे अपने को बचा रहा था।

लकड़ी की तख्तियाँ कंक्रीट पर खड़खड़ा रही थीं ! वे सब हाँफ रहे थे। प्रेउस ने देखा, कि मुसाम और भी पिछड़ा जा रहा था। उसके निकट कौन दौड़ रहा था ? कैनज़ो ! क्या उसने कुछ नहीं देखा ? क्या वह समझ नहीं पाया कि क्या करे ?

"उसे पकड़ लो—उसे पकड़ लो !" प्रेउस हिसहिसाया। उसके निकट वाले दोनों व्यक्तियों ने बात आगे बढ़ा दी। कैनजो लड़खड़ाया—झिझका। वह ज़रूर सोच रहा होगा : मुसाम को साथ ले जाया जाये, उसे पकड़ लिया जाय, जब कि वे हर हर्कत पर नज़र रख रहे हैं—देख रहे हैं कि कोई किसी की मदद तो नहीं कर रहा है......

"कैनज़ो !" प्रेउस ने तेज़ी से आवाज़ लगाई।

कैनज़ो फिर एक सेकेंड के लिए झिझका, और फिर उसने मुसाम की बाँह पकड़ ली। इस तरह वे गिरजाघर तक पहुँचे। लेकिन बिलकुल पास नहीं ! अभी वे कुछ गज़ दूर ही थे, कि नया आदेश मिला।

"टोलियों में दाहिनी ओर !"

पीछे। फिर पीछे। वे सब यही सोच रहे थे—दौड़ती नाड़ियों और धड़कते दिलों के साथ। लेकिन सोचने के लिए कभी काफ़ी समय नहीं रहता था। सारजेंट उनके पीछे-पीछे सहन के मध्य तक आया था।

"दीवार की ओर...दौड़ कर...क्विक मार्च !"

हमेशा दौड़ाई, कोई आराम नहीं। खींच ले चलो, घसीट ले चलो उसे साथ में। काम बन गया। एरिक मुसाम अन्यों के साथ सेहन के दूसरी ओर पहुँच गया। सारजेंट ने सोचा कि वह उन लोगों को काफ़ी

परेशान कर चुका, या फिर शायद वह इस बार विस्फोट की अवस्था तक बढ़ना नहीं चाहता था। जो हो, इसके बाद यह "शारीरिक प्रशिक्षण" अंतहीन धीमे कदम और टोली वाली कसरतों के साथ खत्म हो गया।

ऐसा ही हर रोज होता था। अगला आदेश बोले जाने से पहले ही वे उसे सुन लेते थे।

"बायें मुड़ो ! दायें मुड़ो !...चार-चार में बँटो !...टोलियों में !"

आज प्रातःकाल वे भूसे वाले बोरों पर नित्य से आधे-घंटे अधिक पड़े रहे। खामोशी ! बारह बजे तक खामोशी ! प्रातःकाल के लम्बे घंटे, जिन्हें अपने व्यक्तिगत मामलों से भरा जा सकता था, जब तक कि रसोईघर में काम करने का आदेश न मिले—आलू छीलने के लिए। इस शिविर में ग्यारह सौ साठ आदमी थे। चालीस आदमियों को दस हंडरेडवेट आलू छीलना पड़ता था। हर व्यक्ति को अट्ठाइस पौंड !

आज न तो हींज प्रेउस को जाना था, न एरिक मुसाम को। वे अपने भूसे के बोरों पर पड़े थे। मुसाम का सिर उसकी फैली हुई बाँहों पर टिका था। प्रेउस ने देखा, कि किस तरह छोटी, तेज साँसों से उसकी पीठ हिल रही थी।

"क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता ?" उसने कोमल स्वर में पूछा।

मुसाम ने बिना उठाये, सिर घुमाया।

"नहीं, ठीक है।...बस मुझे आराम की जरूरत है...आराम... मैं कितना दुबला हो गया हूँ।" उसने झटके के साथ उत्तर दिया।

उसके गाल धँसे हुए थे, उसका चेहरा पीला था। पतली सफ़ेद दाढ़ी आधी नोच ली गई थी। उसने अपनी आँखें बन्द कर ली थीं, जिनके चारों ओर काले धब्बे थे। उसके सिर की हड्डियाँ कनपटियों पर उभर आई थीं, जिनसे गहरी खाइयाँ बन गई थीं। हींज प्रेउस

को अनुभव हुआ, कि उसका शरीर गर्म होता जा रहा है। एरिक मुसाम। पुराना कामरेड। अब शारीरिक रूप से जीर्ण-शीर्ण, जिसकी लौह इच्छा-शक्ति ही उसे संभाले थी। इस मामले में उसने तमाम नवयुवकों को हरा दिया है। उसने अनेक यातना शिविरों को अन्दर से देखा है। हर जगह एक यहूदी की तरह ही उससे व्यवहार किया जाता था, घृणित "यहूदी आन्दोलनकर्ता पत्रकार", जिसे नित्य बड़ी भयानक यातनायें सहनी पड़ती थीं। प्रेउस कई साल से उसे जानता था। वह कुछ ऐसी सभाओं में शामिल हुआ था, जिनमें अराजकतावादी मुसाम ने उनके राजनैतिक विचारों पर हमला किया था। लेकिन वह सब तो युगों पीछे रह गया था। यहाँ वे वफ़ादार मित्र बन गये थे। एक ही प्रकार की पीड़ाओं, एक ही प्रकार के कष्टों में साझीदारी करने वाले कामरेड।

लेकिन सब-कुछ के बावजूद मुसाम का विरोध अडिग बना था। शब्द 'होशियारी" को तो वह सुनना ही नहीं चाहता था, वहाँ जैसी स्थिति थी, उसमें उससे जो भी थोड़ा-बहुत फ़ायदा उठाया जा सकता था, उसकी उसे परवाह न थी। पिछले चन्द हफ्तों के दौरान अभी मुश्किल से एक दिन बीता होगा, जब अपना विरोध प्रकट करने की इच्छा, खतरनाक रूप से बीमार व्यक्ति की शक्तिशाली इच्छा-शक्ति ने कोई कमाल नहीं दिखलाया।

"मैं जिन्दगी से ऊब गया हूँ...मैं मौत से नहीं डरता। केवल यह धीमापन बेकार जा रहा है। वे मुझे आत्महत्या कर लेने की स्थिति तक पहुँचा देना चाहते हैं। लेकिन कभी इसमें सफल नहीं हो सकते, कभी नहीं...!"

कल मुसाम ने उसे यह बतलाया था। उसकी दृष्टि एकाएक कठोर हो गई थी।

"और मैं समर्पण नहीं करूँगा...मैं उनके सामने समर्पण नही करूँगा !"

मामला इतना बिगड़ा न होता अगर इस जिद ने सर्वाधिक महत्व-हीन आदेशों पर बल न दिया होता, प्रेउस भुनभुनाया।

तो वे महत्वहीन बातें ही उसके लिए सजाओं की पूरी एक कडी का कारण बन गई थीं।

उस स्थान की सीढ़ियाँ साफ थीं, रेलिंगों पर धूल नहीं बैठी थी।

"गन्दा यहूदी। मुसाम, सीढ़ियाँ साफ कर डालो! गन्दा यहूदी। मुसाम, रेलिंग से धूल झाड़ दो!" यही थे कार्य, जिन्हें उसे बराबर ही करने पड़ते थे। यही कारण था कि प्रेउस और अन्य कामरेडों ने स्वेच्छा से ही ये काम करने को कह दिया था। कुछ समय तक यह व्यवस्था ठीक-ठीक चलती रही। और फिर 'एस० ए० कामरेड' रूबाख को सन्देह हो गया।

"क्या? सुअरो! तुम लोग आर्य होते हुये गन्दे यहूदी मुसाम की मदद करते हो!"

वारों और ठोकरों ने जातिगत भिन्नताओं को प्रकट किया।

हीन्ज़ प्रेउस ने कमरे के पार देखा। छत की मोटी बीमों के ऊपर सँकरी ढलुई खिड़कियाँ थीं। छत के ठीक नीचे डिवीजन नौ था जो एक कमरा था बीस गज लम्बा, आठ गज चौड़ा। फूस के बोरों की कतारें दोनों तरफ लगी थीं। बीच में लम्बी मेजों और बेन्चों की एक पंक्ति थी—एक के पीछे दूसरी। लाल ईंटों वाले उस विशाल मकान की छत के नीचे दो और कमरे थे। जब से वह जगह यातना शिविर बन गया था, तब से वे केवल 'पुताये' गये थे। सींखचों वाली खिड़कियों की लम्बी कतारों वाली कोठरियाँ यथेष्ट नहीं थीं।

'एस० ए० कामरेड' रूबाख! वहाँ वह शख्स बैठा हुआ था अपने पैरों को धीरे-धीरे हिलाता हुआ, और कमरे में जो कुछ हो रहा था उस

पर निगरानी रखता हुआ। वह ठीक दरवाजे के निकट ही बैठा था। वह दुहरा दरवाजा था जिसमें कमरे के अन्दर तक फैली हुई सींखचेदार जाली लगी हुई थी। वह कमरा जंगल के किसी खूँख्वार जानवर जैसा दिखता था। झाँकने के छेद दीवारों में दोनों ओर से बने हुये थे, ताकि बाहर गलियारे से प्रत्येक बात देखी जा सके। 'कामरेड' रूबाख उनके कमरे का प्रधान था। वह एक एस० ए० वाला था जो चोरी के जुर्म में गिरफ्तार हो गया था और वह अपने-आप को अन्यों की तुलना मे एक सम्माननीय जुर्म का कैदी अनुभव करता था। एस० एस० के पास उसे कक्ष-प्रधान बनाने के लिए उचित कारण थे। वास्तव में वह डिवी-जन नौ में सबसे बड़ा तो कतई नहीं था। अत्याचार के संबंध में एस० एस० वार्डेन जो भूल जाते थे, वह रूबाख पूरा कर देता था। जब कोई कमरे से बाहर जाना चाहता था तो उसे रूबाख से अनुमति लेनी पड़ती थी। और ऐसा करते समय उसे पतलून के बखियों पर हाथ रख कर सावधान की मुद्रा में खड़े होना पड़ता था।

"कामरेड रूबाख कृपा करके मुझे छुट्टी दे देंगे?"

और यही प्रक्रिया बाद में थी।

"कामरेड रूबाख, डिवीजन नौ का एक व्यक्ति छुट्टी से वापस आ रहा है।" उन्हें उस नीच और घृणित आततायी को 'कामरेड' कह कर सम्बोधित करना पड़ता था!

वह अपनी इस पक्षपातपूर्ण स्थिति से वाकिफ था और इसका फायदा भी उठाता था। जब माहवारी खाद्यान्न के पैकेट आते तो वह बिल्ली की तरह (खुश होने पर) घुरघुराने लगता और खुशकिस्मत व्यक्ति के बगल में बैठ जाता, छोटे-छोटे टुकड़े माँगता हुआ। उनमे से अधिकांश उसे कुछ टुकड़े दे देते थे। इसका एकमात्र कारण था भय! वह मुझसे जहर की तरह घृणा करता था, मेंउस सोचता था। वह मुझसे कभी कोई चीज नहीं पाता। हम एक दूसरे को अच्छी तरह समझते

थे। एक अच्छा प्रधान उनसे कैसा भेद-भाव रखता ! आलू छीलते समय डिवीजन नं० ६ के सह-कैदियों ने प्रेउस को बतलाया था कि उनके कमरे का प्रधान एक कामरेड था जो कभी जलसेना का अफसर था उसने अपने आदेश इस प्रकार जारी किये थे—"सभी कैदियों के प्रति सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण और बोलने के तेज सैनिक तरीके से अच्छा प्रभाव पड़ता है।" तब से डिवीजन ६ एस० एस० के कैदियों द्वारा आदर्श डिवीजन समझा जाने लगा। उस सुबह की 'शरीरिक शिक्षा' भी शीघ्र ही 'अफसर' कामरेड द्वारा निर्देशित की जाने लगी। वह उन्हें 'अकर्तृक दक्षता' के साथ निर्देशन देता था !

आगे उन्हें सभी यंत्रणाओं से छुटकारा मिल गया। और शीघ्र ही उसका प्रभाव खाद्यान्न के बँटवारे में अनुभव किया जाने लगा। 'आदर्श' डिवीजन ६ शीघ्र एक विशाल कम्यून में विकसित हो गया। वे खाद्यान्न पैकेट आपस में बाँट लेते और कपड़े अदल-बदल लेते। केवल इतना ही नहीं। उन्होंने छोटा-सा मार्क्सवादी गुट बना लिया था ! "प्रत्येक कार्य अकर्तृक दक्षता से सम्पन्न हो रहा है !" कामरेड हँस पड़ा था।

प्रेउस की विचार मग्नता एकाएक चौंक कर टूट गई। सामने रुबाख कूद आया था और दरवाजे के पिंजड़े जैसे उभाड़ के सामने वह सावधान की मुद्रा में खड़ा था। वह विश्राम का प्रतीक था। ताँत की बनी और लकड़ी की भी चीजें एक ओर हटा दी गईं। वे सभी अपनी-अपनी बेन्चों और फूस के तोशकों पर से कूद पड़े, और अपने गद्दों के सामने उन्होंने दो लम्बी कतारें बना लीं। कमरे में शांति छा गई। किसी ने छींक दबाने की कोशिश की। गलियारे से भारी जूतों के थाप की आवाज आई और फिर चाभियों की खनखनाहट हुई। वह दो नये सार्जेन्टों की आवाज रही होगी, प्रेउस ने सोचा, दो घण्टे का विश्राम। उसने मुसाम को देखा। मुसाम वहाँ आराम से खड़ा था। यहाँ तक कि एक पैर बाहर फैलाये हुये था। उसका सम्पूर्ण भाव सम्मान का

शब्द उसमें लिखे थे तो वह चीखना क्यों नहीं शुरू करता ? सार्जेन्ट ने अभी भी वह नाम नहीं पुकारा। उसके सामने की कतार वालों ने अपनी बेचैनी प्रकट कर दी। लेकिन जो पत्र पा चुके थे, उन्होंने उस राज के बारे में सोच कर अपने को परेशान नहीं किया। उनके विचार वहाँ से बहुत दूर पहुँच गये थे—बहुत, बहुत दूर।

"पेश्काल्के !" सार्जेन्ट ने अन्त में पुकारा।

पेश्काल्के खड़ा हो गया, जो अपने तीसरे दशक की अन्तिम अवस्था में था। उसके चौड़े, भारी कंधे दुबले-पतले शरीर पर गलती से लगे प्रतीत होते थे। उसके चेहरे पर विषाद का भाव था। पेश्काल्के ? वह वही कामरेड तो नहीं था जिसने छुट्टी के लिए आवेदन दिया था, लेकिन छुट्टी स्वीकृत नहीं हुई थी ? उसकी बीवी अस्पताल में बीमार पड़ी थी।

"यह लो," सार्जेन्ट ने कहा और पत्र आगे बढ़ा दिया।

पेश्काल्के ने उसे लेकर खोला...अपना चेहरा हाथों में छुपा लिया। कागज फड़फड़ा कर जमीन पर गिर गया। पेश्काल्के उसके निकट लेटा छोटे बच्चे की तरह सुबक-सुबक कर रो रहा था। एकाएक वह अपनी पूरी आवाज में चिल्लाने लगा, उसकी पीठ इधर-से-उधर हिली-डुली और और उसका सिर अभी भी हाथों की बड़ी सी गाँठ पर टिका हुआ था।

पत्र पढ़ने वाले सभी लोग उछल कर उसके इर्द-गिर्द आ गये। सार्जेन्ट अपनी एड़ियों पर घूमा और चला गया। हीन्ज प्रेउस ने पत्र उठा लिया और पढ़ा—"...सूचित करता है कि आपकी पत्नी की मृत्यु हो गई।"

वे पेश्काल्के को उसके फूस के गद्दे पर ले गये। वह धीरे-धीरे रिरिया रहा था। किसी ने वह पत्र मेज पर रख दिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उस पत्र से बर्फीली शीत-लहरियाँ प्रवाहित हो रही हों। पेश्काल्के अभी भी सुबक रहा था। कुछ लोग अपने गद्दों पर बैठे थे, कानों को पकड़े हुये।

एक अन्य दिन की बात है। उन्हें उनका पावरोटी का राशन मिला था—प्रति व्यक्ति पावरोटी का एक चौथाई प्रतिदिन के हिसाब से। वे सभी खाना प्राप्त करने और सोडा चखने के चक्कर में थे, और उन्हे घी से वंचित रखा जाता था। उस दिन प्रेउस की ड्यूटी रसोईघर मे थी। उसकी पतलून की जेबों में सदैव कुछ आलू पहुँच जाते थे। अब वे वाश-बेसिन वाले कमरे के अन्दर के एकमात्र स्टोव पर पकाये जा रहे थे। दो व्यक्ति चुस्ती से वहाँ पहरा देते खड़े थे। पिजड़े जैसे दुहरे दरवाजे के पास स्टोव रखा था। दोपहर के भोजन में यह बढ़ोत्तरी ज्यादा समय तक नहीं चल सकती थी। कुछ दिनों के अन्दर ही ईंधन आना बन्द हो जायगा। तब यह सब कुछ समाप्त हो जायगा। जितने आलू थे वे सब के लिए यथेष्ट नहीं थे। उसका एक भाग बराबर 'कामरेड रूबाख' को देना पड़ता था।

घूस के रूप में आलू !

दो सन्तरियों में से एक फुंकारा और चेतावनी देते हुये उसने अपनी बाँह ऊपर उठाई। बाहर गलियारे में पदचापें सुनी जा सकती थी। वे सभी अपने फूस के गद्दों के पास खड़े थे। आलू का कटोरा स्टोव पर अपने आप ही खनखना रहा था। यह आशा की जा सकती थी कि वे किसी चीज पर ध्यान न देंगे। ये दो डिवीजन के सार्जेन्ट थे—और अन्य दो ? वे नये थे ! ऐसा प्रतीत हुआ जैसे इमारत के सन्तरी बदले जा रहे थे।

चारो एस० ए० वाले उस गली में आये, जो व्यक्तियों की दो कतारो के बीच बन गई थी। रूबाख उनके पीछे चापलूसी कर रहा था।

"इस डिवीजन में कोई यहूदी है ?" नये सार्जेन्टों में से एक को प्रेउस ने पूछते सुना।

"यहूदी ? मुझे ऐसा ही कहना चाहिये !"

क्या वह वही एस० एस० वाला नहीं था जो अभी हाल ही में

'इकाल्के का पत्र ले आया था ? वही था ! घातक शब्द बोल दिया गया था। यहूदी ! लाल कृषक का चेहरा इस तरह टेढ़ा हुआ कि उस पर कुरूप विरूपता व्याप्त हो गई। वह नये लोगों को दिखला देगा कि वह कितना अच्छा व्यक्ति था !

"यहूदी, आगे आ जाओ !" वह गुर्राया।

चार आदमी आगे बढ़ आये। एरिक मुसाम भी उनमें था। उस किसान ने फ़र्श पर थूका, और फिर निकटतम व्यक्ति को एक धक्का दिया।

"उसे चाटो, यहूदी सुअर !"

दोनों नये सार्जेन्टों का अट्टहास कमरे में गूँज उठा। नाटे और कोमल काठी वाले उस व्यक्ति के चेहरे पर निराशा का भाव था, जिस पर चीखा गया था। उसकी आँखों ने फ़र्श से एस० एस० वाले के चेहरे को और वहाँ से पुनः फ़र्श को देखा। प्रेउस ने मुसाम को अपनी आँख के कोने से देखा। उसका सीना उत्तेजित अवस्था में धौंक रहा था, उसके जबड़े चल रहे थे। नाक को जकड़ लेने वाले चश्मे के पीछे उसकी आँखें छोटी और घृणा से प्रज्वलित हो रही थीं। जब उसकी बारी आयेगी तो क्या होगा...क्या ?

शेष लोग यही सोच रहे थे। उनके चेहरे बहुत गम्भीर थे। "तो, इसके बारे में क्या होगा ?"

सार्जेन्ट ने अपनी मुट्ठी उठाई। दोनों नये लोगों के सामने उसकी इज्जत खतरे में थी। नाटा, कोमल व्यक्ति अभी भी हिचकिचा रहा था, फिर वह उस सार्जेन्ट के सामने घुटनों के बल झुका और अपना मुँह फ़र्श के बिल्कुल करीब झुकाया। प्रेउस ने उसे थूक को अपनी बाँह से पोछते देखा। कृषक का चेहरा विजय भाव से दोनों नये एस० एस० वालो की ओर मुड़ गया।

"अब ठीक हुआ !"

वह उन लोगों की कतार के पीछे मुड़ गया, जो एकटक उसे घूर रहे थे।

"तुम्हें यह देखने का एक और मौका मिलेगा कि ये गन्दे यहूदी कैसे हैं!"

सभी चारों एम० ए० वाले जोर से हँस पड़े।

"तुम मूर्ख मजदूरों को अपने सरदारों को अपना वास्तविक रंग दिखलाना होगा!"

नये एस० एस० वाले मुस्करा पड़े।

"क्या तुम आर्यों ने भी वैसा ही किया है?"

कृपक के चेहरे ने प्रश्नसूचक भाव से कतार की ओर देखा। किसी ने जवाब नहीं दिया। एस० एस० वाले ने पहले व्यक्ति की बाँह कस कर जकड़ ली।

"क्या तुम आर्यों ने भी वही किया है, मैंने पूछा?"

वह व्यक्ति भय से थर्रा उठा।

"नहीं," वह फुसफुसाया।

"अब ठीक हुआ!" एस० एस० सार्जेन्ट एकाएक हँस पड़ा।

फिर वह सामने खड़े चार व्यक्तियों में से दो के पास गया और उन्हें वर्दीधारियों के गुट के पास खींच लाया। एरिक मुसाम अभी भी बिना हिले-डुले खड़ा था।

प्रेउस के मन में एक शांतिदायक विचार उठ रहा था, कि शायद आज वह भाग्यवान साबित हो।

"अपनी मालिश शुरू कर दो।"

सामने खड़े दोनों व्यक्तियों ने एक-दूसरे की ओर अत्यधिक परेशान निगाहों से देखा। उनके चेहरों पर भय, और भय के सिवा कुछ नहीं लिख रहा था। दो आदमियों पर तीस जोड़ी आँखें जमी हुई थीं। कमरे में बहुत अधिक तकलीफ़देह गर्मी थी।

"तुम भूल गये कि घूँसेबाजी का नृत्य किस तरह होता है, भूल गये न ?" असभ्य चेहरे वाले ने उन पर चीखते हुये कहा।

उसने छोटे वाले व्यक्ति को एक तरफ़ ढकेल दिया और दूसरे वाले के सामने तन कर खड़ा हो गया।

"देखो, घूँसेबाजी का नृत्य किस तरह होता है !"

उसने उस व्यक्ति के मुँह पर तीव्र प्रतिध्वनि के साथ एक घूँसा जमाया। वह लड़खड़ाया और ज़मीन पर गिर गया। फिर धीरे-धीरे वह फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। आँसू उसकी आँखों से अविरल गति से बह रहे थे। उसकी नाक से खून टपक रहा था।

"कितनी देर तुमसे मुझे बहस करनी पड़ेगी आखिर ? अगर तुम अब अपने राज़ बताना शुरू नहीं करते तो तुम्हारी भी बारी आई ही जाती है।" अत्यधिक भयभीत नाटे आदमी पर सार्जेन्ट गरजा।

दूसरे वाले एस० एस० के सार्जेन्ट ने दूसरे कैदी पर फिर घूँसे बरसाने शुरू कर दिये। लेकिन फिर भी वह शांत खड़ा रहा। जब सार्जेन्ट ने नाटे वाले आदमी को पीछे से एक घूँसा मारा तो उस पर भी घूँसों की बौछार शुरू हो गई। एस० एस० वालों की कर्कश हँसी गूँज उठी। और फिर उनमें से एक ने असभ्य चेहरे वाले की बाँह पकड़ ली।

"बस करो।"

दोनों कैदी लड़खड़ा कर खड़े हो गये। वे खून से सन गये थे। प्रेउस को लग रहा था जैसे उसके पैरों में शीशा भर गया हो और वे निर्जीव हो गये हों। मानवीय स्नायुयें ज्यादा देर तक ऐसी यातनायें नहीं सहन कर सकतीं। हफ़्ते पर हफ़्ते बीतते जाते और यातनायें हमेशा ज्यों की त्यों जारी रहतीं। उसने एरिक मुसाम पर फिर नजर डाली। उसका सिर उसके सीने पर लटका हुआ था। कुछ देर से तो शायद वह कुछ देख भी नहीं पा रहा था।

"एक बात तो बताओ, तुम यहूदियों के नाम क्या हैं ?" नये एस० एस० सार्जेन्टों मे से एक ने पूछा।

उसने शांत और कुछ-कुछ विनोदपूर्ण स्वर में पूछा—इस तरह जैसे कुछ हुआ ही न हो।

"हेईऽ ! ठीक कहा, अपने नाम बताओ !" और असभ्य चेहरे वाले ने अपने सामने खड़े कैदी पर फिर घूंसे बरसा दिये।

ग्रेउस पहले तीन नाम नहीं सुन सका। वह इंतजार करता रहा, इंतजार करता रहा, भय से त्रस्त। अब मुसाम की बारी थी—एरिक की बारी ! और फिर उसे उसकी भी आवाज सुनाई दी। उसकी आवाज में किसी अशुभ लक्षण का संकेत देने वाली शांति और क्रोध की झलक थी।

"एरिक मुसाम।"

नया एस० एस० का आदमी, जिसने उनके नाम जानने की इच्छा प्रकट की थी, नाम सुनते ही आश्चर्य से कई कदम आगे आ गया। उसने झटके से अपना सिर उतना आगे बढ़ा दिया जितना उसकी वर्दी का कालर उसकी गर्दन को आगे बढ़ने दे सकता था।

"तो यह है मुसाम—सुअर, यहूदी पत्रकार ! यहाँ, इस जगह, नौवीं डिवीजन में !"

ग्रेउस को लगा जैसे उसके गले में कुछ अटक गया हो। अब फिर सारा सिलसिला नये सिरे से शुरू होगा। जब भी गार्ड बदले जाते थे, तब पूरा सिलसिला नये सिरे से चलता था। "तो यह है मुसाम ?... मुसाम ?"

एरिक ज्यों का त्यों खड़ा रहा, चेहरे के भावों में कोई परिवर्तन किये बगैर। उसने एस० एस० के उस नये सिपाही के चेहरे पर अपनी नजरें गड़ा दीं—उसकी नजर में एक ऐसे वीर के मन का सम्पूर्ण तिरस्कार और दृढ़ निश्चय झलक रहा था, जिसका एकमात्र हथियार दृढ़ इच्छा-

शक्ति ही हो। उसकी उस दृष्टि से स्पष्ट झलक रहा था कि उसके दृढ़ संकल्प पर कोई विजय नहीं प्राप्त कर सकता।

दूसरा एस० एस० सार्जेन्ट पहले वाले के बगल में आ खड़ा हो गया।

"हाँ, यही है वह !" उसने अपना महत्व दर्शाने के स्वर में कहा, जैसे अपने संकलन की कोई दुर्लभ चीज़ दिखा रहा हो वह।

नये एस० एस० के आदमी ने अपने आश्चर्य पर काबू पा लिया। वह अपनी जेबों में कुछ खोजने लगा। फिर उसने जेब से अखबार की एक पीली पड़ गई कटिंग निकाली और उसे अन्य लोगों को दिखाया।

"यही वह चीज है, जिसे अधिकारियों ने मुझे दिया था। उन लोगों ने मुझे हिदायत की थी कि इस आदमी पर विशेष नज़र रक्खूं ! म्यूनिख सोवियत के दिनों का क्रांतिकारी न्यायालय !"

और उसने अखबार की उस कटिंग पर उँगली रख कर उस विशेष समाचार की ओर इंगित किया।

"यही है वह ! हाँ, यही है वह आदमी !"

उसकी आवाज़ बहुत ऊँचे स्वर पर पहुँच कर फट गई।

अन्य तीन वर्दीधारी उसके पीछे सट कर खड़े हुये थे। चारों के चेहरे गुस्से से तमतमा रहे थे। अेउस की रीढ़ की हड्डी में कंपकपी दौड़ गई। उसके मन में केवल एक विचार उठ रहा था—सब-कुछ समाप्त हो गया।

एरिक के शब्द कमरे में छाये सन्नाटे को चीरते हुये गूँज उठे। वह सिर ऊँचा किये खड़ा था।

"इस मामले से मेरा कतई कोई संबंध नहीं था। मैं तो इससे युगों पहले ही गिरफ़्तार कर लिया गया था !"

"इस संबंध में तो हम नीचे बात करेंगे, यहूदी सुअर।" नया एस० एस० का सर्जेन्ट गरज उठा।

उसने मुसाम की बाँह दबोच ली।

"इसे नीचे ले चलो ! इसको ले कर नीचे चलो ! अन्य नये गार्डों को इस मामले को देखना होगा !"

वे एरिक मुसाम को अपने साथ घसीटते हुये ले गये। उसका सर नीचे लटक गया; उसके जूते फ़र्श पर रगड़ उठे। लोहे की चौखट में लगा दरवाजा भड़भड़ा उठा, बाहर वाला दरवाजा भी भड़-भड़ बोल उठा। और फिर ख़ामोशी छा गई। अन्य लोग उधर ही देखते, सर नीचा किये सब-कुछ सुनते खड़े रहे। आगे और कुछ सुनाई नहीं पड़ा।

घंटों बीत गये।

संध्याकालीन जूस लाया गया। प्रेउस उसे छू भी नही सका। वे सोने के लिए लेट गये।

घंटे-पर-घंटे बीतते गये।

प्रेउस सो भी नहीं सका। वह अपने चिंतायुक्त विचारों से मुक्ति नहीं पा सका। उसका सर दर्द करने लगा।

और कई घंटे बीत गये।

एरिक मुसाम अभी भी वापस नहीं आया।

हीन्ज प्रेउस घंटों जागता पड़ा रहा। एकाएक बाहर बीच के गलियारे से प्रकाश की एक किरण आई। दरवाजा खोला गया था। वर्दियां, वर्दीधारियों की कंधे की पट्टियों के चमकते हुये बकसुये लैम्प की रोशनी में चमक उठे। वे किसी काली, निर्जीव चीज को फ़र्श पर घसीटते हुये ला रहे थे। उन्होंने उसे प्रेउस के निकट बोरे पर फेंक दिया। प्रेउस तनिक भी हिला-डुला नहीं। जैसे ही दरवाजा बन्द हुआ, वह उछल कर खड़ा हो गया। अन्य लोग भी जग गये थे। हल्की फुसफुसाहट और पुआल की तड़कड़ाहट अंधकार में गूँजने लगी। प्रेउस जमीन पर पड़े उस निर्जीव-से शरीर पर झुक गया।

"एरिक...एरिक..."

कोई जबाब नहीं। उसने अपने हाथों से उसके शरीर को टटोला,



फिर उसे हिलाया । मुसाम खामोश ही रहा । जब उसने मुसाम का सिर और चेहरे को छुआ, तो उसे अपने हाथों में कोई चिपचिपी-सी चीज लगी । और तब युगों जैसे लम्बे घन्टों की यातना और उस भयंकर क्षण का भयानक त्रास और भय रुलाई के रूप में फूट पड़ा । वह एरिक के निश्चल कंधे पर सिर टिका कर रो पड़ा ।

इस क्षण के बाद एरिक मुसाम से कभी कोई बात नहीं कर सका । उन लोगों ने मार-मार कर उसके कानों के चीथड़े निकाल दिये थे, जिससे उसके कान का अंदरूनी हिस्सा लाल चमकदार थैले के रूप में बाहर निकल कर दिखने लगा था ।

इसके बाद के कुछ सप्ताहों में एरिक मुसाम और हीन्ज प्रेउस की मित्रता और गाढ़ी हो गई । हीन्ज प्रेउस बराबर अपने साथ पेंसिल और कागज रखता था । उसने ध्वनियुक्त शब्दों का स्थान लिखे हुये शब्दों को दे दिया था ।

आज अखबारों ने माइकोवस्की मुकदमे का फ़ैसला प्रकाशित किया था । तिरेपन अभियुक्तों को उन्तालिस साल की कैद बामशक्कत और पंचानबे साल की कैद की सजा दी गई थी ।

अखबारों की खबरों में इस बात की भी चर्चा थी कि बचाव पक्ष के सैंतालिस गवाहों में से एक से भी हलफ़ उठवा कर जिरह नहीं की गई थी । लेकिन किसी भी अखबार ने बचाव पक्ष के अधिकृत वकील की बहस या अभियुक्त कामरेडों के अंतिम बयानों में से एक शब्द भी नहीं छापा ।

'वोल्कीस्कर बेयोबैक्टर' अखबार ने बड़े मोटे शीर्षक के साथ छापा था—

लाल लुटेरों में से किसी को भी मृत्यु दंड नहीं !

माइकोवस्की के कम्युनिस्ट हत्यारों के ख़िलाफ़ चल रहे मुकदमे का जो फ़ैसला सुनाया गया है उसमें नर्मी बरती गई है जो सारी आशाओं से बहुत अधिक है। यह रीखस्टाग अग्निकांड वाले मुकदमें के फ़ैसले जैसा ही समझ में न आने योग्य फ़ैसला सिद्ध होगा। इस कटुतापूर्ण भावना को, कि 'तलवार ने जो कुछ हासिल कर लिया है उसे कलम बर्बाद कर सकती है' फैलने से रोकना चाहिए। हमें पूर्ण विश्वास है कि प्रभावशाली वर्ग अभी भी इसके लिए उचित रास्ते और तरीके अपनायेंगे।

'ऐंग्रिफ' अखबार ने शीर्षक दिया था :

सबसे अधिक दंड दस साल की कैद बामशक्कत !

जिस समय फ़ैसला सुनाया जा रहा था उसी समय जन-कक्ष से विरोध में आवाजें आने लगीं थीं, जो इतनी बढ़ीं कि फैसले के अंतिम हिस्से की घोषणा होते-होते भयंकर हो-हल्ला और उपद्रव का दृश्य उपस्थित हो गया। नतीजा यह हुआ कि उस अदालत के जज को तारीख स्थगित करनी पड़ गई।

मुकदमें का फैसला कानून की केवल एक ही शर्त पूरी करता है—कि वह कानून के नरम रुख के अनुकूल है। जो भी हो, यह फैसला साधारण जनता के मन में जो निराशा उत्पन्न करेगा, और विशेष रूप से माइकोवस्की के वफ़ादार एस० ए० के आदमियों के मन में जो निराशा उत्पन्न करेगा उससे और फैसला सुनते ही अदालत में उपस्थित हंगामे भरे दृश्यों से यह पूर्ण स्पष्टता से सिद्ध हो गया है कि चन्द बेजान और औपचारिक वाक्य समूहों के संकलन के स्थान पर जर्मन

जनता की स्वाभाविक भावनाओं के अनुकूल वास्तविक जर्मन कानून की स्थापना अब कितनी आवश्यक हो गई है ।...

सब से लम्बी सजा—केवल दस वर्ष की कैद !

कुछ महीने पहले मुझे एक ऐसे कामरेड की पत्नी से बातचीत करने का मौका मिला था, जिसे बामशक्कत कैद की सजा मिली थी । उसकी पत्नी को अपने पति के पास कोई पार्सल तक भेजने की इजाजत नहीं थी । उसे हर आठ हफ्ते के बाद अपनी पत्नी का एक पत्र पूर्ण निरीक्षण के बाद प्राप्त करने की इजाजत थी । उसकी पत्नी को, केवल उसकी पत्नी को ही, हर तीन महीने के बाद उससे एक बार मिलने दिया जाता था—केवल दस मिनट के लिए और वह भी एक गार्ड के निरीक्षण में । जेल के रद्दी खाने के कारण चन्द महीनों में ही उसके पति का शरीर हड्डियों की ठठरी मात्र रह गया था । एकरसतापूर्ण कैद उसकी स्नायुविक ततुओं को खोखला किये डाल रही है । काम का अभाव होने के कारण अधिकांश कैदियों के लिए कोई काम ही नहीं था । इस तरह के मानसिक विश्राम को 'अत्यधिक मानवतापूर्ण' करार दे कर समाप्त कर दिया गया है ।

अदालत में माइकोवस्की मुकदमें के फ़ैसले के खिलाफ 'जनता ने विरोध प्रकट किया था' । यह विरोध माइकोवस्की के जिगरी दोस्तों, अर्थात एस० ए० सिपाहियों और तूफानी टुकड़ी नं० ३३ के लोगों द्वारा प्रकट किया गया था । अदालत के अध्यक्ष को फैसले की घोषणा की तारीख स्थगित कर देनी पड़ी थी । 'वोल्कीस्कर बेयोबैक्टर' को विश्वास है कि प्रभावशाली वर्ग अभी भी इसके लिए उचित रास्ते और तरीके अपनायेंगे ।

हम इस घटना और इस धमकी का महत्त्व तभी समझ सके जब

दूसरे दिन एस० ए० रिजर्व के एक व्यक्ति 'एक्स' ने इस घटना की रिपोर्ट हमें दी। तैंतीसवीं टुकड़ी ने प्रशियन न्याय मंत्री के पास विरोध प्रकट करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजे थे। विदेश मंत्री फ्रीसलर ने उनसे तुरन्त भेंट की। उन्होंने एस० ए० के आदमियों के सामने एक आश्वासनयुक्त भाषण भी दिया। अन्य बातों के अलावा उन्होंने कहा—"हम लोग एक राष्ट्रीय समाजवादी राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं, लेकिन, एस० ए० के दोस्तो, अभी हमारा लक्ष्य पूरा नहीं हुआ है। हमें राष्ट्रीय समाजवादी राष्ट्र की अदालत द्वारा सुनाये गये फैसले पर भी इसी दृष्टि से विचार करना चाहिए। इस फैसले के संबंध में हमारा क्या मत है इसकी जानकारी आपको वे लोग देंगे जो हिटलर के विश्वासपात्र हैं। उनके मंत्री इस मामले पर बड़ी सावधानी से विचार करेंगे और हमारा जो भी निर्णय होगा उसके अनुसार कदम उठाये जायँगे।"

मेरे लेखन के संबंध में नई कठिनाइयाँ उठ खड़ी हुई हैं। पाण्डुलिपि इतनी मोटी हो गई कि उसे मेरे पुराने गुप्त निवास पर रखना खतरे से खाली नहीं रह गया। इसलिए मैं उसे एक ऐसे व्यक्ति के पास ले गया जिसे हमसे राजनीतिक सहानुभूति थी। उसने भी उसे एक पखवारे के बाद वापस कर दिया। उसने सफ़ाई दी कि अब वह पाण्डुलिपि अपने पास रखना सुरक्षित नहीं अनुभव करता। इसके बाद मैं उसे एक अन्य व्यक्ति के पास ले गया, जो ऊपर से देखने में काफ़ी अच्छी स्थिति का और सम्पन्न आदमी लगता था। लेकिन अब उसने भी पांडुलिपि वापस कर दी है। उसका चौकीदार उसे ऐसी विचित्र दृष्टि से देखता है कि वह परेशान है, और वह यह भी जानता है कि पहले वह वामपंथी अखबार पढ़ा करता था। इसलिए उसने कहा कि उसके लिए और मेरे लिए भी अब यही अच्छा होगा कि मैं अपना पैकेट वापस ले जाऊँ। मैंने उपरोक्त दोनों व्यक्तियों को बता दिया था कि पुस्तक एक अवैध

विषय पर लिखी हुई है। ऐसा करना मेरे लिए आवश्यक था। मैंने उस पैकेट को बड़ी सावधानी से बाँध रखा था। लेकिन अब मुझे पूरा यकीन हो गया है कि उन दोनों ने ही उसे खोल कर देखा जरूर था। उन लोगों ने खोल कर देखा था कि उस पुस्तक में क्या लिखा है, और यह भी समझ लिया था कि अगर कभी किसी तरह पांडुलिपि उनके कब्जे में पाई गई तो फिर उनका क्या हश्र होगा।

अगर बात सचमुच ही ऐसी थी, तो यह जानकारी रखने वाला कोई भी व्यक्ति मुझे भविष्य में कभी भी किसी भी तरह खतरे में डाल सकता था। संभवतः उन लोगों ने यह भी सोचा होगा कि अगर मैं समय-समय पर लिखे हुये पृष्ठों के पुलिंदे उनके पास बराबर पहुँचाता रहा तो निश्चय ही मेरे कारण उन पर भी गेस्टापो का हमला हो जायगा। कुछ भी हो, मुझे उनके तर्कों पर कोई विश्वास नहीं हुआ। वास्तव में वे नाहक ही भयभीत हो गये थे। तो नतीजा यह हुआ कि उस रात मुझे पांडुलिपि अपने ही पास रखनी पड़ी। लेकिन मुझे अगले दिन तक अवश्य ही किसी भी कीमत पर उससे मुक्ति पा लेनी चाहिए। उसे हमारी खतरनाक बस्ती के मेरे इस कमरे में कतई नहीं रखा जा सकता।

अखबारों में खबर छपी थी :

३० जनवरी की शाम को काफ़ी देर से हत्याकांड की सालगिरह के अवसर पर माइकोवस्की स्ट्रैसी में मृतकों की याद में एक प्रार्थना सभा होगी। एस० ए० की पूरी वेस्ट स्टैंडर्ड टुकड़ी और विकी के निर्देशन में विशेष पुलिस की भी एक पूरी टुकड़ी इस समारोह में भाग लेगी। चीफ़ ग्रुप नेता होन्स माइकोवस्की के माता-पिता का स्वागत करेंगे। इसके बाद एस० ए० के सेनापति रोहम् एक भाषण देंगे।

ग्रुप नेता प्रिंस आगस्ट विलहेल्म, पुलिस के चीफ़ कमिश्नर एडमिरल ए० डी० लेवेटज़ोव, पुलिस के प्रधान बेक, जनरल गोरिंग, पुलिस के जनरल डालूज, एन० एस० के० के० के प्रधान, चीफ़ ग्रुप नेता हुनलीन, बर्लिन के लार्ड मेयर, और स्टैंडर्ड फुहरर डॉ० लीपर्ट तथा एस० एस० के सेनापति हिमलर भी समारोह में उपस्थित रहेंगे।

टीचर्ट उठ खड़ा हुआ और खूंटी पर से अपनी टोपी उतारी। उसकी पत्नी स्टोव के पास खड़ी सॉसपैन हिला रही थी। हम जब दरवाजे के पास पहुँच गये तो उसने मुड़ कर देखा।

"सावधानी से काम लेना, पॉल, प्लीज़। आज वे पाजी हज़ारों की संख्या में आयेंगे।"

टीचर्ट लौट कर उसके पास गया। उसने उसके कंधों के गिर्द अपनी बाँहें बाँध लीं।

"चिंता की कोई बात नहीं है, डियर। आज उस हंगामें को देखने के लिए बहुत से लोग इकट्ठे होंगे। चिंता मत करो। तुम आराम से सो जाना।"

उसकी पत्नी ने हामी के भाव से सिर हिला दिया। लकड़ी का चम्मच रख कर, वह हमें दरवाजे तक छोड़ने आई। हम सीढ़ियों से उतरने लगे तो वह हमें देखती खड़ी रही। मैं आज उससे दूसरी बार मिलने आया था—इसीलिए क्या वह कुछ संदेह कर रही है?

तीन आदमी दरवाजे पर खड़े धीरे-धीरे बात कर रहे थे।

"तो आप लोग भी समारोह मना रहे हैं?" उनमें से एक ने पूछा। उसने अपने हाथ अपनी चमड़े की जैकेट की जेबों में घुसा रखा था।

अन्य दो लोग व्यंग्यभाव से हँसने लगे। मैंने टीचर्ट की कमीज़ की

बाँह पकड़ कर खींची, इशारे में ही यह कहने के लिए कि किसी भी हालत में वह वहाँ रुक कर बहस-मुबाहिसे में न उलझे।

"निश्चित बात है," टीचर्ट ने जवाब में कह दिया।

हम लोग जब कुछ आगे निकल गये तो मैंने कहा—"लगता है मैं कम उम्र वाले आदमी को जानता हूँ।

"बर्नहार्ड रुट्ज," टीचर्ट बोला—"अभी दो ही दिन से वह यहाँ आया है। वह अनिवार्य कृषि मजदूर संगठन छोड़ कर चला आया है। पूर्वी प्रशिया से साइकिल चला कर यहाँ आया है—आजकल, इस जाड़े में!"

वह मेरी ओर देखने लगा।

"मेरी उससे बहुत थोड़ी-सी बातचीत हुई थी। हम लोग उसे अपने लोगों को रिपोर्ट देने की इजाजत जरूर देंगे। उसके पास हमें बताने के लिए कुछ बातें होंगी!"

"बर्नहार्ड रुट्ज? वह युवा लाल मोर्चा (यूथ रेड फ्रंट) में था न?"

"हाँ, बिल्कुल। हमें उस लड़के को फिर से क्रियाशील बनाने की कोशिश भी करनी चाहिए। लेकिन इसके लिए काफ़ी समय है। पहले तो हम उसे अच्छी तरह जाँचें-परखेंगे।"

दिया जलने के समय के बाद काफ़ी देर हो चुकी थी। सड़क के लैम्प अब मद्धिम रोशनी बिखेरते पीले बिम्ब मात्र दिख रहे थे। उनकी किरणें जाड़े की रात में जैसे डूबती, गायब होती जा रही थीं। लेकिन बिजली घर की लम्बी लहरदार खिड़कियों के अंदर तेज रोशनियाँ हमेशा की तरह जल रही थीं। जब मौसम इतना ठंडा और सीलनभरा हो जाता है तो हमारी गली में साधारणतः सरे शाम सन्नाटा छा जाता है। लेकिन आज बहुत से लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। हमें बहुत से परिचित चेहरे दिख रहे थे। हम अपनी आँखों ही आँखों में मौन भाव से कामरेडों का अभिवादन करते जा रहे थे। एकाएक टीचर्ट ने मुझे कुहनी मारी

एडी हमारी ओर आ रहा था। मैंने देखा, उसने अपनी शीशे की आँख और अपना नीला सूट पहन रखा था। वह बिलकुल 'राह चलतू' जैसा लग रहा था। जब वह हमारे बिलकुल निकट पहुँचा तो चौंक पड़ा। निश्चय ही वह यह नहीं जताना चाहता था कि वह हमें 'जानता' है। मैंने उसकी ओर भावहीन निगाहों से देखा, और धीरे से सिर हिला दिया। वह समझ गया, और आगे बढ़ गया। कुछ ही दूर आगे जा कर हमें अर्नस्ट सच्वीबस दिखाई दिया। वह एमिल स्कमिड्ट के साथ था। वे बिलकुल सही ढंग से व्यवहार कर रहे थे; वे हमें 'जानते ही न थे,' ऐसा उन्होंने जताया। मुझे उन्हें देख कर हीन्ज़ प्रेउस की याद आ गई। जिस समय वह गिरफ्तार हुआ था, एमिल स्कमिड्ट भी उसके साथ पोस्टर चिपका रहा था। वह अब यातना शिविर से रिहा कर दिया गया है—लेकिन वह आज यहाँ चहलकदमी नहीं कर रहा होगा! यदि वह यहाँ मौजूद होगा, तो यह उसकी लापरवाही ही होगी। लेकिन मैं शीघ्र ही अपने मन को सान्त्वना देने लगा। अगर यहाँ वह आया होता तो निश्चिय ही हमे दिख गया होता; यह गली कोई बहुत लम्बी तो है नहीं। ऐसा लग रहा था जैसे सभी कामरेडों के बीच एक मौन समझौता हो गया हो। उनकी उपस्थिति मात्र से हम सब को अपनी गली का पुराना स्वरूप दिखने लगा था। यह बात जरूर थी कि खिड़कियों से स्वस्तिक झंडे बहुत पास-पास लटक रहे थे। लेकिन वे वास्तव में हमारे बचाव के लिए नकाब जैसे थे।

एस० ए० वाले अपने 'जाने-पहचाने तरीकों' से समारोह की तैया-रियों को अंतिम रूप दे रहे थे।

हमने क्रूमे स्ट्रैसी पार किया और स्मारक शिलाओं की ओर बढ़ने लगे। लोगों की भीड़ स्मारक शिलाओं के सामने खड़ी थी। भीड़ सड़क के उस पार तक फैली हुई थी। रोथेकर। छः महीने पहले वह मेरे साथ गैरेज के प्रवेश-द्वार पर उस समय खड़ा हुआ था, जब स्मारक शिलाओं

का उद्घाटन किया जा रहा था। इतने सारे महीने कितनी तेज़ी से निकल गये। पिछले कुछ दिनों से मुझे उसका कोई समाचार नहीं प्राप्त हुआ है। उसका अंतिम पत्र मुझे यूगोस्लाविया से प्राप्त हुआ था। परदेश गमन कमेटी (इमीग्रेशन कमेटी) ने उसके परिवार को वहाँ भेज दिया है।

"चलो उस पार निकल चलें," टीचर्ट ने कहा।

हम लोग भीड़ में शामिल हो गये। किसी ने हमारी ओर ध्यान नहीं दिया। पिलाईयुक्त लाल काँपती झिलमिलाती रोशनियाँ वास्तव में जिन्क के तेल-पात्र से उठती लपटें थीं। जलते हुये तेल-पात्र स्मारक शिला के दोनों तरफ़ रखे हुये थे। तेल जलने की गंध उठ रही थी। अत्यधिक धुआँ था। एस० ए० के दो संतरी दीवार के सहारे निश्चल खड़े थे। उन्होंने लम्बे भूरे जाड़े के कोट पहन रखे थे, उनकी लोहे की चपटी टोप के पट्टे उनकी ठोढ़ी के नीचे बंधे हुये थे। पटरी पर दोनों संतरियों के बीच में फूलों की मालायें रखी हुई थीं, जिन पर रंग-बिरंगे फीते बंधे हुये थे। काँसे की पट्टियों पर हरी मालायें अर्पित की गई थीं और उसके ठीक ऊपर फ़र वृक्ष की हरी शाखों से बना स्वस्तिक चिन्ह लगा हुआ था। चमकदार पत्तियों वाले 'लॉरेल' पौधे संतरियों के दाँयें, बाँये रखे हुये थे।

अन्य असैनिक लोग भी हमारी ही तरह बिना किसी तरह का अभिवादन किये वहाँ आये। दूसरी तरफ़,अन्य लोग, जो अधिकांशतः वर्दीधारी थे, वहाँ आ कर रुकते, दोनों एँड़ियाँ फटाक-फटाक मिलाते और इस स्मारक के निकट पहुँचने के पहले ही हिटलरी सलामी के रूप में अपनी बाँहें ऊपर उठाते। तमाशबीन लोग आते और फिर चले जाते। पूरी गली धीरे-धीरे ऐसे दर्शकों से भर गई, जो अभी वहाँ होने वाले मार्च पास्ट को देखना चाहते थे।

मैंने टीचर्ट को कुहनी मारी। दो एस० ए० वाले हमारे निकट खड़े बातें कर रहे थे।

"...इनमें से लगभग सभी अभी भी हमारे दुश्मन है, हालांकि इन्होंने हमारे झंडे टाँग रक्खे हैं।"

"उस रात सब-कुछ जला कर खाक कर दिया जाना चाहिए था।" दूसरे एस० ए० वाले ने कहा—"सब से बुरी बात यह होती है कि आदमी यह न समझ सके कि किसका विश्वास करे और किसका न करे!"

पहले एस० ए० वाले ने कुछ और कहा, लेकिन हम उसकी बात समझ नहीं सके। वे दोनों दूसरी तरफ़ चले गये। हम भी वहाँ से चल पड़े।

माइकोवस्की आज 'शहीद' बन गया है। हालांकि एक समय वह था जब वह स्वय उनके लिए एक समस्या था और उन्हें असुविधाजनक व्यक्ति लगता था। उसने अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ चर्च जाने से साफ़ इनकार कर दिया था।

"अब हमें अपनी गली में वापस लौट चलना चाहिए। वे लोग शीघ्र ही गली के इस हिस्से को बंद कर देंगे।" टीचर्ट ने बोल कर मेरे विचारों का तारतम्य तोड़ दिया।

"हाँ।"

उन लोगों का क्रिया-कलाप बढ़ गया था। पूरे-के-पूरे समूह अब कांस्य पटिका की ओर जाते थे और फिर वापस चले आते थे। अधिकांश असैनिक लोग ही थे। अनिवार्य नाजी युवक संगठन की इक्की-दुक्की वर्दियाँ ही वहाँ दिख रही थीं। एस० ए० के सिपाही कहीं और इकट्ठे हो रहे होंगे और मार्च पास्ट की तैयारी कर रहे होंगे। शीघ्र ही वे पूरी गली की घेरेबंदी कर लेंगे। टीचर्ट ठीक कह रहा है। उस समय हम लोग क्या करेंगे? एकाएक मेरे दिमाग़ में इस समस्या का एक हल सूझ

गया । "हम लोग माँ फ्रैंकी के यहाँ चल सकते हैं, पॉल । वह कांस्य स्मारक पटिका के बगल में ही रहती हैं ।" मैंने धीरे से कहा ।

टीचर्ट मेरी ओर देखने लगा ।

"माँ फ्रैंकी...?" उसने प्रश्न किया और मेरी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगा ।

"अरे वही बूढ़ी महिला, जिसके पति डाक ले जाने वाली गाड़ी के ड्राइवर थे । जिगाल्सकी अभी भी राजनीतिक कैदियों और उन पर निर्भर लोगों की सहायता के लिए बनाये गये अन्तर्राष्ट्रीय संगठन रोटे हिल्फ़े के लिए माँ फ्रैंकी से चंदा वसूल किया करता है ।"

"तुम ठीक कह रहे हो । बहुत बढ़िया बात सूझी तुम्हें ।"

हम तेजी से चलने लगे । क्रूमे स्ट्रैसी के पीछे कांस्य पटिका के निकट और ज्यादा लोग थे । माँ फ्रैंकी के मकान का दरवाज़ा खुला हुआ था । कुछ लोग बाहर खड़े थे, जो संभवतः अन्य किरायेदार थे । मैं अन्दर गया और चन्द मिनटों में वापस आ गया । टीचर्ट बगल में खड़ा इंतज़ार करता रहा ।

"बिलकुल ठीक-ठाक है । वह अभी भी यहीं रहती हैं । हमारे वहाँ जाने में उन्हें कोई एतराज़ नहीं है ।"

हम एक एक कर के अन्दर गये । माँ फ्रैंकी हमें देख कर बड़ी खुश हुईं ।

"आप लोग मन बदलने के लिए मेरे यहाँ आये...यहाँ मेरे घर आये ...यह सोच कर ही मुझे कितनी खुशी हो रही है...।" उन्होंने यह बात दो बार दुहराई ।

हमारे आने से उन्हें अवश्य ही आश्चर्य हुआ होगा । उनका बूढ़ा सिर अभी भी आश्चर्य से काँप रहा था । उनकी आँखें प्रसन्नता से चमक रही थीं । उनके सफ़ेद बाल बड़ी सफ़ाई से कढ़े हुये थे । बालों के बीचो-बीच उन्होंने माँग निकाल रखी थी । उनके चेहरे पर अनेक छोटी-छोटी

झुर्रियाँ अंकित थीं। वे बूढ़ी थीं लेकिन बड़ी हृष्ट-पुष्ट और प्रसन्न-चित्त दिखती थीं। उनकी उम्र अवश्य ही साठ वर्ष से अधिक होगी।

माँ फ्रैंकी हमारे सामने आ खड़ी हुईं और अपने झुर्रियों भरे हाथों से संकेत करती हुई बोलीं—"आइये, आइये, इधर बैठक में आइये... सामने की तरफ़।"

माँ फ्रैंकी ने मेज़ के पास से दो कुर्सियाँ खींच कर आगे कर दीं, और फिर वहाँ से चली गईं। मैं बैठ गया। मेरे सामने मुलायम गद्देदार सोफ़े के एक कोने में एक बड़ी-सी बिल्ली आसन जमाये हुई थी।

टीचर्ट खिड़की के पास गया।

"यहाँ से हमें बड़ा अच्छा दृश्य दिख रहा है," उसने कहा, और फिर वह कमरे में वापस आ गया—"लेकिन माँ फ्रैंकी कहाँ हैं ?"

मैं खड़ा हो गया।

माँ फ्रैंकी रसोई घर में कॉफी तैयार कर रही थीं। स्टोव पर रखी केटिल सनसना रही थी।

"मैं समझता हूँ कि वह हमारे लिए नहीं है ?"

माँ फ्रैंकी हँस पड़ीं।

"बेशक यह तुम्हारे लिये है। अब चलो यहाँ से, चलो !"

मैंने पुनः मना किया, लेकिन उन्होंने कुहनिया कर मुझे रसोईघर से बाहर कर दिया।

हमने कॉफी पी। माँ फ्रैंकी प्रश्न-पर-प्रश्न पूछ रही थीं। उन्हें एक अरसे से कामरेडों के पास जाने का मौका नहीं मिला था। ज़िगाल्सकी केवल चन्द सेकेन्डों के लिए आता था। नहीं, अभी वे किसी भी हालत में सोई न होतीं। मैं यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि कितनी तेजी से वह बूढ़ा बातें कर रही थीं और उन्हें कितनी अच्छी जानकारी थी। वे अखबार नियमित रूप से पढ़ती थीं।" अगर तुम

जानना चाहते हो कि आज कल क्या हो रहा है तो तुम्हें अखबार पढ़ना चाहिये !" उन्होंने हमें आँख मारी।

"जिगाल्सकी अकसर दूसरी सामग्री भी ले आता है," उन्होंने कलात्मकतापूर्वक मुस्कराते हुये कहा—"अगर ऐसा न होता तो हमें कुछ भी मालूम न हो पाता।"

हम युवकगण उन वृद्धा से सबक ले सकते हैं। जो कुछ भी वे कर सकती थीं, करती थीं। अपना चन्दा दे देती थीं और अकसर ही पूरा एक मार्क दे दिया करती थीं। पहले उनके पति स्पार्टेकस में थे। वे हमारे प्रति वफ़ादार रही थीं, संभवतः अपने पति की स्मृति के कारण। वे डाक वाली मोटर चलाया करते थे। वहीं उन्हें निमोनिया ने जकड़ लिया, जिससे वे कभी भी ठीक नहीं हो सके। यह कई साल पहले की बात थी। यदि नाज़ियों को कुछ मालूम हो जायगा तो वे उन वृद्धा की पेन्शन बन्द कर देंगे। एक बहादुर महिला, माँ फ्रेंकी !

टीचर्ट क्षण भर खिड़की के निकट खड़ा रहा।

"अब वे गली खाली करा रहे हैं...वे गली साफ करा रहे हैं," उसने एकाएक कहा।

हम अगल-बगल खड़े थे। मौन को चीरती हुई घंटियों की टनटनाहट हमे सुनाई दी। वहाँ—एक ओर, उसी समय से कुछ आगे। हमने एक-दूसरे को बिना कुछ बोले हुये देखा। यह सब पूरे नाटक का एक भाग था—वर्ना आधी रात गये घंटियाँ बजनी शुरू न होतीं।

दाईं ओर से, सड़क के मोड़ से, जहाँ बिजली घर था, नगाड़ों के बजने की मन्द ध्वनि और अस्पष्ट गीत की आवाज सुनी जा सकती थी। मैं खिड़की से आगे की ओर झुका। पीछे की ओर वे अभी-अभी सड़क के मोड़ पर गश्त लगा रहे थे। मैं लोगों को पहचान नहीं सकता था, केवल टार्चों के प्रकाश की दो पंक्तियाँ ही देख सकता था। जब मैंने अपना सिर अन्दर कमरे में कर लिया तो मुझे ठीक अपने नीचे दाहिनी ओर लोगों

की एक टोली दिखाई दी। हमने उनके आने की आवाज नही सुनी थी। असैनिक लोग ? या रिश्तेदार ? गीत स्पष्ट होता गया।

भूरी टुकड़ियों के लिए सड़कें खाली करो,
खाली करो सड़कें तूफ़ानी सैनिकों के लिए !

और फिर जलूस का अगला भाग हमारे नीचे था। गीत सँकरी गली मे गूँज रहा था। सामने एक वर्दीधारी ने एकाएक हवा में अपना दायाँ हाथ झटके से हिलाया। वे हमारे नीचे मार्च करते हुये जा रहे थे। जलती टार्चों की लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ, ऊपर उठे हुये हाथ, वर्दीधारियों की पीठें और टोपियाँ मार्च की आवाज के उतार-चढ़ाव के साथ झूम रही थीं।

"सड़क खाली करो !"...लेकिन एक साल पहले अभी यह तुम्हारे लिये साफ नहीं की गई थी। तब तो तुम तूफान मचा कर ही ऐसा कराना चाहते थे। तुम अपने गीत गाते थे और नाल जड़े तुम्हारे जूतों की आवाज गली में गूँज रही थी। लेकिन तुम इस पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते, अभी भी नहीं—खूनी आतंक के एक वर्ष बाद भी ! तुम अभी भी हमारी गली से, दुश्मन के देश से, अपनी 'क्रांति' और अपनी 'विजय' की ओर मार्च कर रहे हो !

एस० ए० जुलूस के पीछे थोड़ा-सा खाली स्थान था, और फिर चार-चार की कतारों में भूरे रंग की लोह टोपीधारियों की लम्बे कतारें थें। लोहे की टोपियों पर सफेद स्वस्तिका चमक रही थी, राइफलें उनके निकट झुकी हुई थीं। विकी की विशेष पुलीस और गोरिंग की टुकड़ियाँ भी थीं। पुलीस डिवीजन के सामने एक शानदार घोड़े पर एक अफसर सवार था। घोड़े के छलाँग लगाने के साथ-साथ उसकी लोहे की टोपी ऊपर-नीचे झटके खा रही थी। अपने दाहिने हाथ में वह एक चमकती हुई तलवार पकड़े हुये था। जब वह पत्थर वाली दीवार के बराबर पहुँच गया, तो उसने अपनी तलवार ऊपर हवा में उठा दी।

"सावधान !"

लोहे की टोपधारियों की कतारों में अचानक एक हरकत दिखाई पड़ी। हाथों ने एक साथ राइफलें पकड़ लीं। यह स्मारक की सलामी नहीं थी। हमें डराने-धमकाने के लिए यह एक नई कोशिश थी। फासिस्टवादी राज्य की शक्ति का प्रदर्शन।

"डिवीजन, रुक जा !"

"दायें मुड़ !"

लोहे के टोपधारियों के चेहरे अब स्मारक दीवार की ओर थे। यह टुकड़ी बाईं ओर थी। दाईं ओर से एक अकेला एस० ए० डिवीजन आया। संक्षिप्त और स्पष्ट आदेश पुनः सुनाई पड़े। एस० ए० डिवीजन दाईं ओर महत्वपूर्ण ढंग से मौजूद रहा।

"तेंतीस नम्बर की टुकड़ी," टीचर्ट फुसफुसाया।

मार्च-पास्ट अभी भी समाप्त नहीं हुआ था। झंडे लिये हुई टोलियाँ दायीं ओर बायीं ओर से आईं और से उन्होंने दीवार के निकट अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

पूर्ण मौन छा गया। अफसर के घो ने हिनहिना कर अपने पैर पटके। आवाज हम तक बिलकुल साफ आ रही थी। एकाएक दाईं ओर से हूटिंग करने वालों ने मौन भंग कर दिया। चन्द सेकेन्ड बाद नये आदेश दिये गये। "एस० ए०, सावधान !...दायें देख !"

पुलीस अफसर ने भी अपने आदेश दिये। राइफल के कुंदे सड़क की पटरी के पत्थरों पर टिक गये। वर्दीधारियों की एक छोटी-सी टोली ने, जिनकी वर्दी के कालरों और टोपियों से प्रकाश की चौड़ी रेखाएँ चमकती हुई प्रस्फुटित हो रही थीं, कतारों का निरीक्षण किया। एक नाटा मोटा व्यक्ति उनके आगे-आगे चल रहा था। उसने शिथिलतापूर्वक अपनी दाईं बाँह ऊपर उठा दी। रोह्‌म ! उसके पीछे पास ही में काली वर्दी वाला—हिमलर। झूमते कदमों वाला मोटा व्यक्ति—गोरिंग।

उसे रोहम को आगे रहने देना चाहिये !

नगाड़ों का गड़गड़ाहट।

एक आवाज वहाँ व्याप्त मौन पर छाने लगी।

उस व्यक्ति ने अपने हाथ हिलाये। उसने बुजुर्गों का स्वागत किया 'सम्मानित के अतिथिगण'। वह हीन्स था।

मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं और अपना माथा खिड़की के ठंडे शीश से टिका दिया।

और फिर एक अन्य दृश्य वहाँ उपस्थित हो गया—स्पष्ट और एकदम भिन्न !...

भूरे रंग की फ़ौजी बदरंग वर्दियाँ और नाविकों के नीले रंग की वर्दियाँ पहने लोग आ रहे थे। असैनिक लोग फटे-पुराने, गन्दे कपड़े पहने हुये थे। उनके चेहरों के घावों से खून बह रहा था। उनकी खोपड़ियाँ टूटी हुई और उनके शरीरों पर गोली और छुरे की चोटें थीं।

स्पार्टेकस लड़ाकू।

रूह्‌र की लाल सेना के श्रमिक।

हैम्बर्ग अवरोध केन्द्र के श्रमिक।

जर्मन विद्रोही।

सैकड़ों, हजारों और दसियों हजार हत्या कर दिये गये योद्धा। उनके बीच में एक छोटी सी टोली। उनके आगे एक व्यक्ति और नन्हीं सी महिला। उस व्यक्ति के बाल छोटे तथा घने थे, और वह चश्मे पहने हुये था। उस महिला के बाल घने और काले थे।

कार्ल लीबक्नेच्ट ! रोजा लक्सेमबर्ग !

अन्य सुपरिचित चेहरे उनके पीछे थे। लेवीने, लैन्डायूएर, सिल्ट। और उस मौन जलूस के पीछे हमारी अपनी गली के और पिछले बारह महीनों के कामरेड थे। हैन्स क्लैफर्ट, ऑटो ग्रुनेबर्ग, पॉल स्कल्ज और अन्य बहुतेरे। अब जुलूस रुक गया। बीच का हिस्सा ठीक हमारे नीचे

था। घने छोटे बालों और चश्मे वाले व्यक्ति ने अपनी बाँह ऊपर उठाई।

"क्या यह वही है जिसके लिए हमने जानें दी थीं ?"

"नहीं !" हजारों लोगों की आवाज आई।

उस व्यक्ति ने घूम कर हमारी ओर संकेत किया।

"लेकिन तुम अभी भी जिन्दा हो !"...

एस० ए० का सेनापति रोह्म रास्ते के उस पार बने मंच पर चमकते माइक के सामने खड़ा था। उसकी बाँहें नितम्बों पर टिकी थीं।

"सम्मान और स्वतंत्रता का प्रतीक रीख...ऊपर बैठे हुये आप दोनों हीरो हमारे चैम्पियन और मानिटर हैं..."

मैंने चोरी से टीचर्ट को देखा। जब नीचे किये हुये हथियार फिर से ऊपर उठाये गये, तो टीचर्ट उदास-सा मुड़ गया। उसने कमरे में कुछ कदम आगे बढ़ाये।

मौन।

जब बाहर से हॉर्स्ट वेसेल के गीत के प्रारम्भिक स्वर तैरते हुये आये, तो टीचर्ट खिड़की की ओर मुड़ा और उसने तेजी से खिड़की के पल्ले बन्द कर दिये।

"उन्होंने गाया...और हमारा...और हमारा..." माँ फ्रेंकी ने झटके के साथ कहा।

क्षण भर हम मौन बैठे रहे। रह-रह कर मैं नीचे सड़क पर दृष्टि-पात कर रहा था।

अन्त में वे चले गये !

माँ फ्रेंकी ने हमें घर की चाभी दे दी।

"खुश रहो, बच्चो। इसे रख लो!" यही उनके अंतिम शब्द थे।

१ फरवरी, १९३४

आज रिचर्ड हूटिंग और उसके भवन सुरक्षा दल के कामरेडों का मुकदमा शुरू हो गया। जैसा मैंने इस पुस्तक के प्रारम्भिक भाग में जिक्र किया था, उन पर पिछले साल की १७ फरवरी को एस० ए० से हुये एक संघर्ष में एस० एस० की टुकड़ी के सरदार वॉन दर आहे को गोली मारने का जुर्म लगाया गया था। वह संघर्ष चर्लोटेनबर्ग में नाजियों द्वारा चलाये गये अनेक दण्ड अभियानों में से एक के दौरान हुआ था। हमारे कामरेडों ने अपनी रक्षा करने का प्रयत्न किया। उनके पास कोई हथियार नहीं था। एस० ए० ने गोलियाँ चलाईं थीं। आहे घातक रूप से आहत हो गया था। हम जानते थे कि टुकड़ी नं० ३३ ने और पिछले महीनों के दौरान पुलीस ने इस घटना के सबंध में चौबीस कामरेडों को गिरफ्तार कर लिया था। एस० ए० और एस० एम० के साथ-साथ सितम्बर के प्रारम्भ में गेस्टापो ने एकाएक सड़क को घेर लिया था और कई मकानों पर छापा मारा था।

केवल उस मौके पर ही पन्द्रह गिरफ्तारियाँ हुई थीं। लेकिन अब अखबारों में छप रहा था कि केवल पन्द्रह ही मुजरिम थे।

हमारे पास इस बात की केवल एक ही सफाई थी। क्योंकि जैसा भयकर यह लग ही रहा था, अन्य छहों की हत्या कर दी गई थी। वर्ना वे भी अवश्य ही अन्य लोगों के साथ मुजरिम होते।

मैं दो खोये हुये कामरेडों को अच्छी तरह जानता था। उनके नाम वॉस और ट्रेशर थे।

ग़ैरकानूनी कार्य के लिए मैंने फिर कभी साइकिल का इस्तेमाल न

करने का निर्णय किया। एक बार एस० ए० ने मुझ पर गोली चलाई थी, जब मैं टायरों में छिपी अवैध सामग्री ले जा रहा था।

कल की स्थिति ऐसी थी कि मैं बाल-बाल बचा।

मैं साइकिल पर सावार हो कर पास के क्षेत्र को जा रहा था—अपने गुटों के लिए पर्चे लाने के लिए—गोपनीय साहित्य डिपो को इन दिनों हमें पर्चे बहुतायत से दिये जा रहे थे। वे सभी पर्चे कुशलतापूर्वक छद्म वेष में रहते थे— कभी-कभी एक रेल यात्रा के विज्ञापन के रूप में जिसके कवर पर एक सुन्दर महिला का चित्र होता था। या 'हवाई आक्रमणों से सुरक्षा के नियमों' के रूप में। प्रत्येक का कवर भिन्न होता था, और पहले और अन्तिम पृष्ठों पर आमतौर से नाज़ी प्रकाशनों की वास्तविक सामग्री होती थी।

गोपनीय साहित्य डिपो एक सुनसान सड़क पर स्थित था। जब मैं सड़क से मुड़ा तो मेरे मन में विचार अन्दर उठा कि वहाँ साइकिल पर चढ़ना महत्त्वपूर्ण था। वहाँ के सभी मकान आधुनिक और अलग-अगग थे, जिनमें से अधिकांश में असैनिक कर्मचारी रहते थे जो साइकिल नहीं चलाते थे! और फिर मैंने एकाएक देखा कि उस मकान के बाहर एक अन्य सायकिल पहले ही से खड़ी थी। कम्बख्त! दो साइकिलें! सामग्री लेने के लिए कोई और व्यक्ति कामरेड के पास जरूर आया होगा। लेकिन अगर मैं साइकिल पर चढ़ा-चढ़ा इधर-उधर तब तक आता-जाता रहा, तो यह और भी संदेहास्पद लगेगा। आखिर मैंने अन्दर जाने और अपनी साइकिल उस साइकिल के बगल में छोड़ देने का निश्चय किया। पूर्व-निश्चित इशारा—एक असामान्य घंटी की आवाज—एक नवयुवती ने दरवाजा खोला। मैंने उसे पहचान का शब्द बतलाया और उसने मुझे अन्दर बुला लिया। एक सेकन्ड बाद कामरेड प्रकट हुआ। वह मुझे पुराने समय से जानता था। मैंने उसे तुरन्त बता दिया कि मैं साइकिल से आया था, फिर मैंने पूछा कि क्या बाहर दूसरी सायकिल संयोगवश

खड़ी थी...? हाँ, दूसरे कामरेड पीछे के कमरे में हैं। यह बड़ी बेअक्ली की बात हुई। उसे मुझे किसी दूसरे समय पर आने को कहना चाहिये था। मैंने शिकायत की। इसमें उसकी गल्ती नहीं है, कामरेड ने मुझे बतलाया। दूसरे व्यक्ति को एक दिन पहले ही आना चाहिये था। खैर, अब इस संबंध में कुछ करने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। मैंने उसे जल्दी करने को कहा। मेरे लिए वहाँ से यथासम्भव जल्दी-से-जल्दी ही चले जाना अच्छा होगा। फिर वह पर्चे ले आया और मैंने उन्हें अपने कपड़ों के नीचे छुपा लिया। इसमें केवल चन्द मिनट लगे।

जब मैं अपनी साइकिल में लगे ताले की चाभी अपनी जेब में टटोल रहा था, तो मैंने अपनी साइकिल के चेन में चिपका कागज का एक पुर्जा देखा। मैंने धीरे-धीरे ताला खोला, अपने दूसरे हाथ से पुर्जा खोला, अपने शरीर की हरकत को छिपाता हुआ।

दो साइकिलें !

बाहर देखो ! खतरा !

उस पुर्जे पर यही लिखा था। मैंने उसे मरोड़ा और मुँह पोंछने का बहाना करता हुआ मैं उसे निगल गया। फिर मैंने अपनी साइकिल घुमाई और धीरे-धीरे साइकिल को बढ़ाया, जब कि मेरा मस्तिष्क बुरी तरह सोच रहा था और आँखें सड़क पर खोज कर रही थीं।

पहले दो शब्दों में वही शिकायत थी, जो मैंने स्वयं की थी; चेतावनी नीचे थी। क्या यह कामरेडों का काम था—या वह किसी पाँचवें दस्ते वाले की कोरी कल्पना थी ? अगर वैसी बात थी, तो मुझे वह पुर्जा निगलना नहीं चाहिये था, बल्कि उसे गिर जाने देना था। चन्द मिनटों से अधिक मैं ऊपर नहीं था।...

क्या वे दोनों वहाँ पहले आये थे ? काफी दूरी पर दो व्यक्ति थे जो सड़क पर संयोगवश ही आते-जाते प्रतीत हुये। और वहाँ दाहिनी तरफ, कोने पर सड़क के दोनों तरफ दो अन्य व्यक्ति खड़े थे। जाल में

मै फँस गया ! सड़क खाली थी। कोई एक व्यक्ति भी नहीं दिख रहा था। और मेरे पास पर्चे थे—जो दो वर्ष कड़े कैद की सजा कराने के लिए तो काफी थे। अब क्या हो ? वेवकूफी का प्रश्न ! साइकिल पर चढे कि गिरफ्तार हुये। मैं धीरे-धीरे साइकिल को नाले की ओर ढकेल कर ले गया और फिर उस पर सवार हो गया। दूसरी तरफ उनमें से एक व्यक्ति ने रुक कर मेरी ओर देखा। वह भारी कोट, बाउलर टोपी पहने था और उसके चेहरे पर कठोरता थी—गेस्टापो ! मेरे पैर पैडिलों को मशीन की तरह ढकेल रहे थे। मेरे सिर में शहद की मक्खियो के झुण्ड की तरह भनभनाहट हो रही थी। पाँच गज—आठ गज—वे मुझे 'रुक जाने' को क्यों नहीं कहते ? क्यों...? मैं कोने पर पहुँचा और धीरे-धीरे दाहिनी ओर मुड़ गया। वहाँ वाला व्यक्ति अपने कोट की जेबों में हाथ डाले खड़ा हुआ था ; उसने लापरवाही से अपनी मुलायम हैट को अपने माथे पर से पीछे ढकेल दिया। हमने एक-दूसरे की आँखों में काफी समय तक देखा। वह हैरी था ! वह इस क्षेत्र में पार्टी समिति के सदस्यों में से एक था। हैरी ! तो दूसरी तरफ वाला भी कोई कामरेड ही होना चाहिये। तो उन्होंने ही वह चेतावनी लिखी थी ! लेकिन मेरे पीछे के दो व्यक्ति गेस्टापो गुप्तचर थे। मुझे इसका पक्का विश्वास था। इन दिनों ऐसी घटनाओं के कारण निश्चय ही किसी भी व्यक्ति में यही भावना उठेगी—और यदि ऐसा नहीं था, तो फिर वह पुर्जा क्यों था ?

मैं पैडिल मारता जा रहा, मारता जा रहा था। किसी ने मुझे रोका नहीं। मुझे यह समझने में कुछ समय लगा कि हर गड़बड़ी के बावजूद भाग्य ने पुनः मेरा साथ दिया था। मैं अनुभव कर रहा था कि जैसे समय रहते ही मुझे फाँसी के तख्ते पर से खींच लिया गया हो।

एक घंटे तक मैं पूरे कस्बे में साइकिल पर घूमता रहा। कई बार मैंने साइकिल से उतर कर दूकान की खिड़कियों को देखा। मैं अपनी गली में तभी वापस गया जब मुझे पक्का विश्वास हो गया कि कोई भी

मेरा पीछा नहीं कर रहा था और वास्तव में मुझ पर निगाह नहीं रखी जा रही थी। लेकिन मैं इस घटना पर कितना भी सोचता रहा, सारी कड़ियों को मैं एक साथ जोड़ नहीं पा रहा था।

लेकिन शीघ्र ही मुझे सारे तथ्य मालूम हो गये। कामरेड अपने संतरियों के जरिये बराबर गोपनीय साहित्य डिपो पर निगरानी रखते थे। गेस्टापो उस दिन पहली बार वहाँ गये थे—लेकिन उन्होंने उस समय छापा नहीं मारा था। छापा उन्होंने अगले दिन मारा—लेकिन जब वे वहाँ पहुँचे तो डिपो 'साफ' हो चुका था और वह केवल एक सम्मानित फ्लैट मात्र था। उस मकान की पूरी तलाशी हुई, लेकिन तलाशी असफल रही। कामरेड गिरफ्तार भी नहीं किया गया। उसे तुरन्त हमारे काम से 'बरी' कर दिया गया।

लेकिन गैरकानूनी काम करते समय साइकिल पर मैं उसके बाद नहीं चला। अब आगे से बर्लिन ट्रान्सपोर्ट कम्पनी मुझे अपने वफादार यात्रियों की सूची में शामिल कर लेती थी। किराये का पैसा कहीं न कहीं से जमा करना ही होता था। मैं भविष्य में केवल 'सम्मानपूर्ण' कपड़े पहन कर बाहर जाता था। नाजियों को उस समय अपने जनता के मित्रों पर कम शक होता था जब वे अच्छी तरह कपड़े पहने होते थे।

यह आश्चर्यप्रद बात थी कि कितनी जल्दी मैंने अपना उत्साह पुनः प्राप्त कर लिया।

फिर भी क्या यह वास्तव में आश्चर्यजनक बात ही थी? यही बात मैंने अन्य कामरेडों में भी देखी थी—और यह बात अच्छी भी थी! गैरकानूनी काम हमें रोज ही खतरे में डाल देता था। लेकिन यदि आपकी सुरक्षा लगातार खतरे में ही रहे तो आपका खतरे से भय कुछ सीमा तक खत्म हो जाता है। हमने समझ लिया कि अगर हम ऐसी परिस्थिति में फँस जायँ तो हमें अपने को शांत रखने की कोशिश करनी चाहिये। अधिकांश कामरेडों को ऐसा करने में सफलता ही मिली। वे जानते थे कि

वर्षों की कैद और अकसर तो उनका जीवन ही उनकी असफलता के लिए उनकी सजा थी।

अर्नेस्ट सच्वीबस अभी ही वहाँ गया था। वह मेरे लिए उस दिन के दो अखबार ले आया था। मुझे एक लेख लिखना था—आहे मुकदमे पर एक विज्ञप्ति तैयार करनी थी जो उसी दिन रात को छपनी थी।

कई महीनों से हम रिचर्ड हूटिग और उसके भवन सुरक्षा दल के संबंध में चिन्तित थे। अब हमारा भय वास्तविकता में परिणत हो गया था। वे आहे मुकदमे में मौत की सजा सुनाना चाहते थे!

मैंने पुराने अखबारों के एक ढेर में से उन अखबारों को उठा लिया, जिन पर मैंने चिन्ह लगा रखे थे। उनमें मुकदमे की रिपोर्टें थीं। उन्हे रखने का वह सबसे अधिक सुरक्षित तरीका था। उनकी कतरनें बहुत अधिक खतरनाक हो सकती थीं।

२४ जनवरी, १९३४। नॉस्टाउश्गाब।

इस मुकदमे का ध्येय जर्मनी में चलाये जा रहे आन्दोलन के विरुद्ध किये गये एक महान अपराध का प्रायश्चित कराना ही नहीं है, बल्कि कानून के हाथ में मौजूद पूरी शक्ति के साथ चार्लोटेनबर्ग में बोल्शेविक उपद्रव को हमेशा के लिए पूरी तरह साफ कर देना भी है।

१० फरवरी, १९३४। बर्लिनर मार्गेनपोस्ट।

यह निर्णय जूरी पर ही छोड़ दिया जाना चाहिये कि क्या अदालत यह फैसला देती है कि एस० एस० के आदमी वॉन देर आहे को लगी घातक गोली गवाह यानी एस० ए० के आदमी ऐमर के गलत निशाने का फल थी।...

१० फरवरी, १६३४ (उसी दिन) । वालिकश्कर बेयोबेस्टर ।

शस्त्र-विशेषज्ञ निश्चयपूर्वक यह उत्तर देने में असफल रहा कि वह गोली किस प्रकार के हथियार से चलाई गई थी । उसे दिखाई गई पिस्तौलों पर बहुत जंग लगी थी और उनमें कोई खास विशेषता नहीं थी जो उसे कोई राय कायम करने में मदद दे सकी होती ।

मुझे अपने लेख में अखबारों के इन उद्धरणों पर कुछ व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ ही जोड़नी थीं । क्योंकि वे साबित करते थे कि किस प्रकार मुकदमा चल रहा था और उस मुकदमें का केवल एक ही ध्येय था—जो था फाँसी की सजा । मैं इस बात का भी जिक्र कर दूँगा कि इस मुकदमे के संबंध में चौबीस कामरेड गिरफ्तार हुये थे और अदालत में केवल अठारह कामरेड ही उपस्थित हुये थे । इसका मतलब यह था कि छः की हत्या हो चुकी थी, वर्ना वे भी कटघरे में खड़े होते ।

"...सैकड़ों मृत ! सैकड़ों मृत ! अगले चन्द दिनों में यह तय हो जायगा । अगले चन्द दिनों में, मैं तुम्हें बतलाता हूँ !"

टीचर्ट इधर-उधर चहलकदमी कर रहा था ।

"बेशक ऐसा ही होगा ! क्या तुम सोचते हो कि उनकी स्थिति भी वैसी ही है जैसी हमारी ? उनके पास मशीनगनें हैं ! उनके पास हथ-गोले हैं !"

टीचर्ट मेज के पास एडी के सामने रुक गया । मेज पर अख़बार फैले हुये थे ।

मोटे-मोटे शीर्षक !

आस्ट्रिया में विद्रोह के कुछ गढ़ों का सफाया !

कार्ल मार्क्स इमारत पर सरकारी टुकड़ियों
द्वारा हमला ! हीमवेर्ह को भारी क्षति

"मसोलिनी सीमा पर सेना एकत्र कर रहा है ! हिटलर संभवतः

आस्ट्रिया में मार्च करने की तैयारी कर रहा है ! हम सभी आशा कर रहे हैं कि आस्ट्रिया के कामरेडों की विजय होगी, एडी, लेकिन इसका निर्णय दूसरे पक्ष में भी हो सकता है । यह..."

"इसकी परवाह मत करो कि ये लिक्खाड़ क्या लिखते हैं । श्रमिकों ने पहला वार किया है और हम यहाँ चुपचाप बैठे हैं । हम उनकी मदद के लिए कुछ भी नही कर सकते ! यह बात हम सब को परेशान करने के लिए काफी है !"

"चीखो मत !"

"मेरी भी तो सुनो, सुनोगे ? शान्तिपूर्वक बात करो, क्या तुम ऐसा नही कर सकते ? तुम जानते हो कि इसका हमारे लिए क्या मतलब हो सकता है !" 'रेडीमेड' ने एडी के चेहरे के सामने अपनी बाँह घुमाई ।

टीचर्ट पुनः कमरे की एक छोर-से-दूसरी छोर तक चहलकदमी करने लगा । एडी ने अपना सिर अपने हाथों में टिका लिया । यही सारी शाम होता रहा; वास्तव में यह तभी से हो रहा था जब से आस्ट्रिया की पहली रिपोर्ट आई थी । हर व्यक्ति दूसरे पर प्रश्नों के अम्बार लगा रहा था । हर एक के मन में आशाएँ थीं । हम ध्येय के संबंध में घंटों बहस करते रहे—एक दूसरे पर चीखते रहे । हममें से पाँच व्यक्ति उस दिन मिले थे !

"श्रमिक बहादुरी से लड़ रहे हैं", अर्नस्ट सच्वीबस ने पुनः बात छेड़ी—"लेकिन क्या हिम्मत, मशीनगनें, सब कुछ उनके पास है ? एक आम हड़ताल जरूरी है—सब-कुछ ठप्प हो जाना चाहिये । तुमने अभी ही यह पढ़ा है, कारखानों में काम हो रहा है !"

एडी ने गुस्से से अखबारों को मेज से उठा कर फेंक दिया ।

"जरा इसे पढ़ो ! इसे पढ़ो ! आखिर वे साले कम-से-कम अपनी रक्षा तो कर रहे हैं ! लेकिन जब एडोल्फ आया था, तब हम निकम्मों ने क्या तीर मार लिया था ? कुछ नहीं हुआ, कुछ नहीं । और अगर वे

नहीं भी जीते, तो भी कम-से-कम उन्होंने संघर्ष तो किया। उन्होंने कोशिश तो कर ही ली !"

एडी ठीक कर रहा था। सैनिक हार हो जाना इससे कहीं अच्छा था कि फासिस्टवादियों का बिना कोई विरोध किये उन्हें ताकत हथिया लेने दिया जाय। यह हमेशा के लिए अपमानजनक होगा; हमने स्वयं यह देखा समझा था।

"आस्ट्रिया के कामरेड श्रमिकों की ताकत अजमा रहे हैं। वे अपनी ही गलती से सीखेंगे; और उसका भविष्य की लड़ाइयों में उपयोग होगा. ।"

"भविष्य की लड़ाइयों में ? इससे तुम्हारा क्या मतलब है ? वे अभी भी लड़ रहे हैं !"

"हम जानते हैं, एडी, कि तुम क्या सोच रहे हो। लेकिन यह जानकर ही कि हम क्या कर रहे हैं, हमें उसके बारे में भी बात करनी होगी, वर्ना इन चीजों के बारे में बातें करना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है।"

एडी ने पुनः अपना सिर अपने हाथों मे छिपा लिया।

"कुछ क्षेत्रों में दूकानें खुली हैं। बिजली घर अभी भी चल रहे हैं, ट्रेनें चल रही हैं ! तुम जानते हो इसका क्या अर्थ है ? यह कि अपनी फासिस्टवादी प्रतिक्रियावादी आस्ट्रियन सेना की सहायता से डालफस सरकार हमला कर सकती है। श्रमिक अपने अड्डों पर ही बंधे हुये हैं। और वे श्रमिक फ्लैटों की कालोनी और उनके घरों पर भारी-भारी तोपों से बमबारी कर रहे हैं !"

टीचर्ट ने कमरे की एक छोर से दूसरी छोर तक चहलकदमी करना बन्द कर दिया।

"तुम श्रमिकों को यह बतला कर फुसला नहीं सकते कि तोपें अन्तिम जरूरत के लिए होती हैं क्योंकि फासिस्टवादियों ने प्रजातंत्र का विनाश करना शुरू कर दिया है। वे पिछले चन्द वर्षों के दौरान उसे बराबर नष्ट करते रहे हैं। श्रमिकों ने अब बिना आदेश के ही अपनी

तोपों का प्रयोग करना शुरू कर दिया है। इन्तजार करने का समय अब जा चुका है। वे समझ गये हैं कि संकट आ गया है।"

एडी ने झटके से सिर ऊपर उठा लिया।

"मैंने क्या कहा था ? क्या मैं यही बात बराबर नहीं कहता रहा हूँ !"

"लेकिन अर्नेस्ट यह पहले ही कह चुका है। आधा-तीहा काम करने में कोई फायदा नहीं है। इसकी योजना पहले ही बनानी चाहिये थी !"

"परिणाम चाहे जो हो, एक बात जरूर है, कि वे हम सब के सामने उदाहरण रख रहे हैं। हम जर्मन श्रमिक उनसे भी सीख सकते हैं। तुमने बिल्कुल ठीक कहा था। हम इतना आगे नहीं बढ़े। लेकिन हमारे पीछे तो श्रमिकों का बहुसंख्यक भाग भी नहीं है। हम..."

"मैं तुमको बतलाऊँगा कि हमने क्या किया है। हम समाज-वादी जनतंत्रवादियों की बराबर बेइज्जती करते रहे हैं. यही हमने किया है !"

"बेशक हमने गलतियाँ की हैं, लेकिन फिर भी हम संयुक्त मोर्चे को चेतावनी देने के सम्बन्ध में बिल्कुल गम्भीर थे।" सच्चीबस ने बीच ही में कहा।

"हम भी अपनी गलतियों से सीख रहे हैं, एडी। लेकिन इससे परिस्थितियाँ तो बदल नहीं जायँगी। हम हिटलर को ताकत में आपने से रोकना चाहते थे ! यह हम अपने ही बूते नहीं कर सके। अब हम सिर्फ संयुक्त मोर्चा बना रहे हैं। हमारे सामने सब से कठिन संघर्ष आने वाला है। हम..."

"हम अब बहस रोक दें, तो बेहतर हो। आप लोग सिर्फ एक ही बात बार-बार कह रहे हैं !" 'रेडीमेड' ने बीच में टोका—"ग्यारह बज चुके हैं।"

हमारी गली सुनसान हो गई थी। बिजली घर में मशीनें अभी भी चल रही थीं।

उस दिन नाऊ की दूकान पर एक नाजी कह रहा था—"गृह युद्ध! जर्मन, जर्मनों को ही मार रहे हैं! एडोल्फ हिटलर के वाल्क्सजेमीन्शाफ्ट हमसे यह सब करवाते रहे हैं। जितना भी खून बहा है, उसके लिए डाल-फस जिम्मेदार है, और यह सब इसलिये कि वह विचार की स्वतंत्रता नहीं देता।"

जैसे हमारे साथ स्थिति भिन्न हो! खून! जो हजारों लोग मार डाले गये, क्या वह रक्तपात नहीं था? क्या रिचर्ड हूटिंग में हाड़-मांस और खून नहीं था?

आहे मुकदमें में—मौत की सजा माँगी जा रही थी।

रीखस्टाग अग्निकांड के मुकदमें ने माइकोवस्की मुकदमें से ध्यान बँटा दिया।

आस्ट्रिया का विद्रोह आहे मुकदमें के लिए वही काम कर रहा था।

मेरे सामने सायंकालीन अखबार पड़ा हुआ था। मैं पृष्ठ को घूरता जा रहा था, घूरता जा रहा था। मुझे चक्कर अनुभव हो रहा था। कमरा मेरे चारों ओर घूमता हुआ प्रतीत हो रहा था।

मुकदमें का फैसला हो गया—रिचर्ड हूटिंग को फाँसी की सजा!

शांति भंग करने और हत्या के प्रयत्न के अपराध में रिचर्ड हूटिंग की मौत की सजा हो गई और उसे जीवन भर के लिए नागरिक अधि-

कारों से वंचित कर दिया गया। चौदह अन्य कैदियों को चौरान्बे वर्ष के लिए दासता-दंड और अठारह वर्ष कैद की सजा हो गई !

...विशेष न्यायालय को उसी प्रकार का मुकदमे का फैसला देना पड़ा जैसा माइकोवस्की मुकदमें का था। लेकिन इस मुकदमें में सजा सुनाने में केवल छः दिन लगे। इस अवधि के दौरान सौ गवाह गुजरे, क्योंकि सुनवाई में सभी असम्बद्ध बातों को हटा दिया गया था।

अन्य बातों के साथ-साथ सरकारी वकील दोम्ब्रोवस्की ने कहा, "ऐसे ही मुकदमों के बिना पर और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये कि इन एक जैसे आक्रमणों से बराबर पूर्व निश्चित कार्यवाहियाँ प्रमाणित होती हैं, प्रस्तुत किये गये प्रमाणों से बहुत अधिक चिपके बिना और जिरह के परिणाम पर ध्यान दिये बिना ही अभियोक्ता को अनिवार्य निर्णय लेने में कोई हिचक नहीं है। अभियोक्ता यह नहीं सोचता कि यह प्रमाणित हुआ है कि वॉन देर आहे को हूटिग ने गोली मारी थी। वॉन देर आहे चोट लग कर गिरने के बाद पुनः अपने पैरों पर खड़ा हो गया था और उसे खड़े-खड़े ही घातक गोली लगी थी। लेकिन इस टोली के सरदार को कानून की कठोरतम सजा मिलनी चाहिये। अभियोक्ता का विश्वास है कि कानून निर्माता हूटिग द्वारा किये गये कार्य के लिए मौत की सजा ही देना चाहते रहे होंगे। अन्य मुजरिमो को केवल एक साल से ले कर पन्द्रह साल सख्त कैद की सजा ही दी गई, क्योंकि इस विशेष अदालत ने इन कैदियों के साथ काफी उदारता के साथ पेश आने का निश्चय किया है।"

•

रीख के उच्चतम न्यायालय के प्रमुख न्यायाधीश, राष्ट्रपति ने निम्नलिखित टिप्पणी की :

"अदालत द्वारा दिये गये निर्णय अपूर्ण हैं क्योंकि सबूत पक्ष

में शक्तिहीन थे ? क्या कोई ऐसा सम्भावित तरीका नहीं था, जिससे हम रिचर्ड की रक्षा कर सकते ?

१७ फरवरी, १९३४ (अगले दिन)

वाल्किश्कर बेयोबेश्टर ने भी आहे मुकदमें की खबर में इस बात की पुष्टि की थी कि रिचर्ड ने आहे को गोली नहीं मारी थी।

निर्विवाद ढंग से यह प्रमाणित नहीं हो सका कि हूटिंग या और किसी ने वह गोली चलाई थी। कुछ भी हो, हूटिंग ने ही उस गोली को बनाया था जिसने आहे के जीवन को समाप्त कर दिया था। इस बात पर ध्यान देने की जरूरत नहीं कि वह गोली किसकी रिवाल्वर से निकली थी।

श्रेनिन्कमियर द्वारा नौकरी में रखा गया कामरेड 'रेडीमेड' नियत नुक्कड़ पर पहले ही से खड़ा था।

"अकेले ही ?"

"अन्य दो को मैंने बुन्के भेज दिया था। यहाँ हम तीनों का इन्तजार करना सुरक्षित नहीं था।"

हम धीरे-धीरे चलने लगे। हमेशा की तरह वहाँ गाड़ियाँ बराबर आ-जा रही थीं। कारें लम्बी-लम्बी कतारों में चल रही थीं। पैदल चलने वालों की धीरे-धीरे बढ़ती भीड़ पटरियों पर धक्का-धुक्की करती हुई अपना रास्ता बना रही थी।

'रेडीमेड' एक अच्छे वर्ग के परिवार का युवक जैसा दिखता था। अच्छी तरह दाढ़ी बने चिकने-चिकने गाल, चमकते हुये काले-काले बाल। उसने जाड़े वाले अपने भारी कोट का कालर ऊपर उठा रखा था,

लेकिन उसने हैट नहीं लगा रखी थी। उस क्षेत्र में 'अच्छे वर्ग' के युवक इसी तरह निकलते थे।

"कुन्के भेज दिया? वह तो खर्चीली जगह है और वहाँ हम बातें भी कर सकेंगे?"

"बेशक। संगीत के कारण वह हमेशा खचाखच भरा रहता है। मेरे पास अपनी कॉफी का बिल चुकाने के लिए यथेष्ट पैसे हैं।"

"ठीक है।"

मैक्स और एरविन मुझसे चाहे जो कुछ चाहते हों, वे दोनों 'रेडीमेडी' के सहयोगी थे। उन्होंने जो कुछ उसे बतलाया था वह केवल इतना कि वे मुझसे बात करना चाहते थे। इसका प्रबन्ध करने के लिए वह सर्वोत्तम व्यक्ति था।

अब 'रेडीमेड' कई महीनों से उन्हें अखबार दे रहा था। वे हमेशा छपी सामग्रियाँ माँगते थे। वह उनके लिए 'व्यापार करने के लिए सर्वोत्तम वस्तु थी। उन्होंने पाठक मण्डलियों का संगठन किया था—प्रत्येक सदस्य को नाम-मात्र के चन्दे का भुगतान करना पड़ता था और जब पर्चा पढ़ लिया जाता था, तो वे उसे बेच देते थे। वे कभी-कभी प्रति कापी दो मार्क या इससे भी अधिक पा जाते थे। वे 'रेडीमेडी से सब तय कर लेते थे, जिसके पूरे चेहरे पर खुशी छाई रहती थी जब वह मेरे पास पैसे लाता था। हम उनके प्रयोग के लिए यदा-कदा उन्हें सैद्धान्तिक पुस्तकें दे देते थे। राजनैतिक दृष्टि से मैक्स एरविन से कहीं अधिक बढ़ा हुआ था। हम मैक्स के यहाँ दो बार गये थे। उसने अपना सजा हुआ कमरा तर्क-वितर्क के लिए हमारी सुविधा पर छोड़ दिया था।

काफ़े खचाखच भरा था। बड़े से कमरे में मेजों के बीच मैं आगे-आगे बढ़ा। लोग जोर-जोर से बातें कर रहे थे। चन्द मेजों पर पास-पास जोड़े बैठे हुए थे। वे छोटी गुलाबी टोपियाँ और मिलते-जुलते

रंग के फैशनेबुल ऐप्रन पहने हुये थे । सामने मंच पर बैन्ड बज रहा था । लेकिन अन्य दोनों कहाँ थे ? पीछे की ओर कोने में पड़ी संगमरमर की गोलमेज पर थे वे । उन्होंने एक अच्छी मेज चुनी थी ।

"नमस्कार, कार्ल । अच्छी सीट है, क्यों ?"

वे दोनों प्रसन्न थे । वे मुझे केवल कार्ल के रूप मे ही जानते थे ।

"निश्चित ही । ...तुम हमेशा की तरह अभी भी चुस्त हो ।"

'रेडीमेड' ने दो प्याले काफी का आर्डर दिया । अगली मेज पर कौन था ? एक बुजुर्ग व्यक्ति । वह अपने स्थूलकाय साथी से बात करने में व्यस्त था । वे बिलकुल हानिप्रद नहीं थे । लेकिन उस ओर—एक एस० ए० वाला था । तूफानी नेता । वह भी अपनी नाटी और रँगी-पुती पत्नी के साथ व्यस्त था और किसी भी हालत में वह इस शोर गुल में हमारी बातें सुन न पायेगा ।

मैक्स ने मेज पर चन्द सिक्के सरका दिये । गर्वपूर्णभाव से वह मुस्कराया ।

"हम यह काम पहले कर लें । छः मार्क । पिछली बार का भुगतान है ।"

"सधन्यवाद ग्रहण किया ।"

"हम कब...?" एरविन ने पूछा ।

"अगले हफ्ते । हमेशा की तरह ।" मैंने स्वीकारात्मक भाव से 'रेडी-मेड की ओर सिर हिलाया ।

"ठीक ।"

मौन । मैक्स ने बियर की एक चुस्की ली । एरविन एक पेन्सिल से खेल रहा था । वास्तव में उनकी बाँह में कुछ खास चीज होगी । काम होते रहने के लिए उसे रुकने की जरूरत होगी । मैक्स ने हाल में मुझे बतलाया था कि वह एक यहूदी था । उत्सुक रासेनफार्शर से वहाँ गल्ती हो जायगी । लाल रंग के सुनहरे और सीधे बाल । और वह लम्बा

और दुबला-पतला भी था। उसके नाक-नक्श भी दुरुस्त थे जिनसे उसका चातुर्य प्रकट होता था। वह बहादुर था। वह अगर पकड़ा गया तो उसकी जाति के कारण वे और भी बुरी तरह पेश आयेंगे।

"तो, कार्ल, हम आपसे कुछ सलाह करना चाहते हैं," अन्त में मैक्स ने कहा।

"मैं सुन रहा हूँ। सब कह डालो।"

मैक्स एक सेकन्ड मौन रहा।

"हम परिवार में शामिल होना चाहते हैं," उसने शांतिपूर्वक कहा।

एरविन ने स्वीकारात्मक भाव से सिर हिलाया।

"हाँ, इसी बारे में हम तुमसे बात करना चाहते थे।"

आश्चर्य से मेरा कॉफी का चम्मच गिर गया और मैं आँखें फाड़ कर उन दोनों को घूरता रहा। ये पार्टी में शामिल होना चाहते थे? उसके सिवा मैं और किसी भी बात के लिए तैयार था। मैं बुरी तरह उत्तेजना अनुभव कर रहा था।

'रेडीमेड' भी आश्चर्यचकित था और उसने एक के बाद दूसरे पर दृष्टिपात किया। मैं मौन था। वे चाहते थे...शायद मैक्स; लेकिन एर-विन? मैं एरविन को गौर से देख रहा था जैसे उसे कभी न देखा रहा हो। सफ़ाचट सिर, कमजोर हाथ। उसका चेहरा अभी भी बचपनापूर्ण था, और उम्र बीस से कम होगी। एरविन को युवक आंदोलन में होना चाहिये था। लेकिन वह हमारे क्षेत्र में रह रहा था। वहाँ युवक आंदो-लन कमजोर था और अभी वह संगठित किये जाने की अवस्था में था। मैक्स की उम्र ज्यादा थी और वह चालाक भी ज्यादा था।

लेकिन क्या उन्हें यह मालूम था कि उसका मतलब क्या था—उस समय पार्टी में शामिल होने का? तुरन्त ही उन्हें काम में लगा देने की जरूरत नहीं थी; वे अपनी वफादारी साबित कर चुके थे।

हमें क्षति हो चुकी थी—नये सदस्यों की जरूरत भी थी।

वे अभी भी हमें देख रहे थे।

जब कभी भी नये लोग हमारे पास आते थे तो हमें खुशी होती थी, विशेषकर उन दिनों। लेकिन अकसर अखबार बेचने से कहीं अधिक काम करना होता था। उन्हें 'काम' का यथेष्ट अनुभव नहीं था। इस कारण वे काम में पूरी तरह नहीं लगाये जा सकते थे। वह स्वयं उनके और हमारे भी हित में नहीं था। मैंने यह बात उन्हें समझा दी।

और क्या वे समझ रहे थे कि उन दिनों परिवार के लिए अपना काम जारी रख पाना कितना कठिन हो रहा था ? मैं निराशावादी नहीं होना चाहता था, लेकिन क्या वे समझ सके थे कि उनकी क्या दुर्गति हो सकती थी ? हां, वे उससे बिल्कुल वाकिफ थे, यह मैक्स का जवाब था। उन्होंने कुछ समय तक इस पर सोचा-समझा था। लेकिन उन्हें चित्रों को बेचने मात्र से संतोष नहीं होता था, और वे जिस स्थिति मे थे उसे जारी नहीं रख सकते थे। अब यह जरूरी था कि हर व्यक्ति काम में अपनी पूरी शक्ति लगा दे।

मैंने एरविन के लिए तुरन्त व्यवस्था कर देने का वादा कर दिया, क्योंकि वह हमारे क्षेत्र में रहता था। उसे 'रेडीमेड' से संदेश मिल जायगा। मैक्स के मामले में समय लगेगा। वह दूसरे क्षेत्र में रहता था, इसीलिये पहले मुझे वहां के अपने 'सहकर्मियों' से सम्पर्क करना चाहिये था। मैं मैक्स के साथ मुलाकात की व्यवस्था कर दूंगा। तभी मैं उसके क्षेत्र में कामरेडों से उसका परिचय करा सकूंगा। वे दोनों इस जवाब से संतुष्ट हो गये और उन्होंने चुपचाप हाथ मिलाये।

हमने बिल का भुगतान किया।

मैक्स और एरविन पहले चले गये।

एस० ए० का तूफानी सरदार अभी भी पास की मेज पर बैठा था। वह अपनी पत्नी के हाथ को सहला रहा था।

मैक्स को सदस्य बनाने की व्यवस्था करने में मुझे कठिनाई हुई। उसके क्षेत्र के संबन्धित कामरेड ने माँग की थी कि मैं तीन परिचयदाता दूं। इस तथ्य के बावजूद वह कठोर बना रहा कि वह मुझे जानता था और मैंने बतलाया था कि मैक्स हमारे साथ महीनों से काम करता रहा था। उसने इस बात पर बल दिया कि चूँकि हमारा कार्य गैरकानूनी था इसीलिये उसकी और भी आवश्यकता थी। अन्त में मुझे उसकी शर्तें पूरी ही करनी पड़ीं।

मेरी और मैक्स की मुलाकात आठ दिन बाद हुई। उसने खुशी से चमकता चेहरा लिए हुये कहा कि उसे काम में लगा लिया गया था। छपने के बाद उस क्षेत्र का अखबार उसी के यहाँ रख दिया जाता था और फिर वहाँ से बाँट दिया जाता था। तो कामरेडों ने उस पर पूरा भरोसा कर लिया था। मैंने मैक्स से अपने शक का जिक्र नहीं किया। उसने उन्हें केवल गलत समझ लिया होता और यह सोचा होता कि मैंने उस पर अविश्वास किया था। लेकिन मुझे सम्बद्ध कामरेड से यह बात करनी ही थी। पहले उसने तीन परिचयदाताओं की माँग की थी, और फिर चन्द दिनों बाद हमारे अखबार मैक्स के यहाँ ही रखने लगा था। यह तो काम करने का तरीका नहीं था। हमारे गैरकानूनी कार्य में मैक्स अनुभवहीन ही था। फिर भी बहुतेरे कामरेडों को वह जान लेगा। वे अपने आपको और अपने अखबार के गढ़ को खतरे में डाल रहे थे। मैं जानता था कि अपने सजे-सजाये कमरे में मैक्स बिल्कुल सुरक्षित था। वह गेस्टापो के शक से बिल्कुल मुक्त था। मैं अच्छी तरह जानता था कि 'संदेह रहित' फ्लैटों के अभाव में हमारे काम में कितनी गड़बड़ी होती थी। यह

कदम उठाने के लिए कामरेडों को इसी बात ने प्रेरित किया होगा। लेकिन सिर्फ फ्लैटों के अभाव के कारण उन्हें लापरवाह बन जाने की हिम्मत नहीं करनी चाहिये थी।

हमारी क्षेत्रीय समिति ने भी एवाल्ड गुट के दो सोशल-डिमाक्रेट कामरेडों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया था। ये कामरेड भी कठिन-कठिन कार्य सम्पन्न करना चाहते थे, और उन्हें कठिन काम मिल भी गये। मैं यह देख कर खुश था कि सोशल-डिमाक्रेट कामरेड ऐसी हिम्मत दिखा रहे थे, लेकिन इसके साथ ही मैंने काम सौंपने की इस पद्धति का विरोध भी किया।

हम उनकी सुरक्षा के लिए उत्तरदायी थे, विशेषकर इसलिये कि उन दोनों कामरेडों की तुलना में हम गैरकानूनी कार्य में कहीं अधिक अनुभवी थे। पहले उन्हें प्रशिक्षित किया जाना चाहिये, और फिर धीरे-धीरे उन्हें अन्दरूनी कार्य सौंपने चाहिये। लेकिन इन गलतियों के बावजूद मैं आत्मविश्वास का अनुभव कर रहा था। हम यह अनुभव करने लगे थे कि पार्टी पुनः संगठित हो रही थी।

उस दिन मैंने अपनी गली में एक नया इश्तहार देखा :

जर्मन स्कूली बच्चे अनुकृत बम की खोज में !

सभी जर्मन स्कूली बच्चों को हवाई हमले के विरुद्ध सुरक्षा में भाग लेना चाहिये।...निम्नलिखित कर्त्तव्य हैं...मान लो चार्लोटेनबर्ग पर दुश्मन का हवाई हमला हो जाय...दुश्मन के जहाजों का स्क्वैड्रन मकानों की कालनी पर सड़कों के ऊपर उड़ानें भर रहा हो,...फिर उनका ध्यान सड़कों की ट्रैफिक की ओर लग जाय...हमले के लक्ष्य चार्लोटेनबर्ग बिजली घर पर समय के अन्दर धुयें का पर्दा आच्छादित हो जाने के कारण निशाना चूक जाय...बहुत से बम गिराये जायें...सड़कों पर

बिना फटे हुये बम पड़े हों...इन काल्पनिक स्थानों पर लुफ्टशुट्ज़बन्ड द्वारा चिन्ह लगा दिये गये हैं।...

जर्मन स्कूली बच्चो, अपना कर्त्तव्य निभाओ !

नकली बम खोजो।...सर्वोत्तम नकली बम खोजने वाले को पुरस्कार दिये जायेंगे...विशेष विवरण प्राप्त करो...

बाल सैनिक ! अकसर मैंने अखबारों में पढ़ा था—

उन्हें महायुद्ध में बचा एक बम मिला...फिर वह फट गया...तीन की धज्जियाँ उड़ गईं।...

स्कूली बच्चे पूरी तरह भूरी कमीज वालों की शिक्षा पद्धति पर निर्भर थे। सभी कामरेडों को अपने बच्चों को वहाँ सब बतलाने को रहना था। फासिस्टवादी अध्यापक प्रति दिन उन्हें प्रोत्साहित करते थे नाज़ी बाल संगठन और नाज़ी युवक संगठन में शामिल होने के लिए। उन्हें 'असैनिकों' को निम्न श्रेणी वाला समझने की शिक्षा दी जाती थी। अनवरत 'पिकनिकें' नाज़ी शिक्षा को पूरी करती थीं। वहाँ वे कटीले तार से रेंगकर निकलना, गोले-बारूद के डिब्बे सम्भालना और उसी तरह के 'अभ्यास' करना सीखते थे। जब वे घर लौटते तो हमेशा उनके कपड़े फटे और गन्दे होते थे। ये 'सबक' उनके खेल के मैदान में भी जारी रहते थे। जलते हुये मकान रसायन पदार्थों द्वारा बुझाये जाते थे। जो बच्चे टोलियों के नेता बना दिये जाते थे, उन्हें उस समय स्कूल छोड़ने की अनुमति दे दी जाती थी जब उन्हें लम्बे मार्च करने होते थे, जिस कारण वे अन्य बच्चों से भी कम पढ़-लिख पाते थे, फिर भी उन्हें उनकी परीक्षाओं में पास करना ही पड़ता था क्योंकि वे 'अफसर' होते थे।

नाज़ी बच्चों की रोमांचकारी अभिरुचि का दुरुपयोग अपने लिए कर

रहे थे। बच्चों के संगठनों को जब भी वे चाहें, सड़कों पर संकीर्ण राष्ट्रीय सैनिक गीत गाते हुये मार्च करने की अनुमति थी। पुलिस वाले उनके लिए सारी ट्रैफिक भी रोक देते थे। उन्हें कितना महत्वपूर्ण अनुभव कराया जा रहा था! वर्दी, कंधे की पट्टियाँ और खंदक वाले जूते बच्चों के लिए कितने अधिक महत्वपूर्ण होते थे। यह उन्हें अन्य बच्चों के सामने डींग मारने और सड़कों पर 'बड़ों' की तरह खेल करने का अवसर प्रदान करता था।

इस प्रभाव के फलस्वरूप हमारे कामरेडों के बच्चे अपने जन्मदिनों पर वर्दी के साज-सामान की माँग करते थे। चूँकि अभी वे बहुत छोटे होते थे, उनके माता-पिता विचार करने के अपने ढंग के सम्बन्ध में उनसे बात नहीं कर सकते थे। वे डरते थे कि वे उसके बारे में दूसरों से बात करेंगे और उनके ही बच्चे उन्हें खतरे में डाल देंगे। मैं ऐसे कामरेडों को जानता था जो अपने बच्चों के कारण कभी भी गैरकानूनी सामग्री घर नहीं ले जाते थे। लेकिन वे हमारी मार्गदर्शक पुस्तकों को कहीं छुपा रखते थे। वे शामों को उन पुस्तकों में से पढ़ कर अपने बड़े बच्चों को सुनाते थे। 'मुझे अपने बच्चे को कम से कम इतना तो जरूर ही बतलाना चाहिये। वह नाजी स्कूल के कूड़ा-करकट के सिवाय और कुछ नहीं पढ़ता!'—एक कामरेड ने मुझसे कहा था।

अपने विजय के युद्ध के लिए नाजी एक सम्पूर्ण राष्ट्र को बचपन से ले कर बुढ़ापे तक प्रशिक्षित करना चाहते थे।

टीचर्ट सूचना देता है, कि सीमेंस वर्क्स पूरी तेजी से युद्ध सामग्री बना रहा है। कुछ विभागों में तीन-तीन शिफ्टों में काम हो रहा है। नये धातु विशेषज्ञ रखे गये हैं—औजारसाज, खरादी, मिस्त्री आदि। कुछ बाहर के काम के लिए भेजे जाते हैं। "एसेम्बलिंग के काम।" नये हवाई अड्डे! उन्हें शपथ दिलाई जाती है—धमकी दी जाती है, कि अगर वे कोई राज प्रकट होने देंगे, तो उन्हें सख्त सजायें मिलेंगी। जर्मन

व्यापार के कतिपय भागों में झूठी खुशहाली—युद्ध सामग्री। जर्मनी, सुदूर पूर्व को युद्ध सामग्री पहुँचाने वाला जर्मनी, हम सोचा करते थे। आज थर्ड रीख सोवियत यूनियन के विरुद्ध अपने-आप को सशस्त्र कर रहा है।

हमारे बहुत-से कामरेड फिर कारखानों में ले लिये गये। फ़ासिस्ट युद्ध कारखानों में ! हमें उनकी जरूरत पड़ेगी !

हमारे ऊपर फिर एक भारी वार किया गया है।

फ़ांज जेंडर, हमारा फ़ांज गिरफ़्तार कर लिया गया है—कल शाम को हमारी अपनी गली में। फ़ांज—हमारी गली में ! अब हमें मालूम हो गया है, कि ऐसा कैसे हुआ। हमने हर जगह सावधानी से पूछ-ताछ की। सब-कुछ विस्तार से पता लगाना जरूरी था, क्योंकि हम यह नहीं जानते कि तेंतीस दस्ते वाले केवल फ़ांज को ही पकड़ने आये थे, या अन्य कामरेड भी शीघ्र ही पकड़े जाने वाले हैं। हम जानते थे, कि फ़ांज कामरेडों के साथ पड़ोस के इलाके में था। मोबिट में। वह परचे छापने के एक नये तरीक़े पर बातचीत करने गया था। इस तरीक़े से इधर कुछ समय से उसके इलाक़े में काम लिया जा रहा है। यह तरीक़ा बहुत सस्ता है, और इससे अधिक प्रतियाँ भी छप सकती हैं। हमें अब मालूम हुआ है, कि फ़ांज कुछ मिनट के लिए अपनी बूढ़ी माँ से बात करने हमारी गली में आया था। हिल्डी से उसे सूचना मिली थी, कि माँ महीनों से बीमार है। उसकी बहिन केथी ने यह बात उसे नहीं बताई थी। वह जहाँ था हमारी गली में वहाँ से आधे-घंटे से कम में आ सकता था। अपनी माँ से मिलने का प्रलोभन स्वाभाविक ही था। काफ़ी देर तक उसने अपने-आप से संघर्ष किया होगा। कोई गड़बड़ी न होगी; वह केवल कुछ ही मिनट तो रुकेगा; और फिर उसे देखेगा ही कौन, क्योंकि अँधेरा तो हो ही गया है ? यह सब हम अनुमान कर सकते हैं। लेकिन हम यह समझ

नहीं पा रहे हैं, कि फ्रांज़, जिसने सब को बहुत-बहुत सावधान रहने के लिए प्रशिक्षित किया था, हमारी गली में आया ही क्यों ? वह जानत. था, कि एस० ए० वाले साल भर से उसकी तलाश कर रहे थे।

अफ़्रीकन्दर नामक होली में, जो फ्रांज़ के घर के ठीक सामने है, लाउडस्पीकर सैनिक संगीत बजा रहा था। बार के पीछे मोटी मालकिन बुनाई करती बैठी थी। उसके दाहनी ओर तीन आदमी एक गोल मेज़ पर ताश खेल रहे थे। दूर बायीं ओर दूसरे कोने में एक अकेला ग्राहक बैठा था। वह अपने आधे खाली हुए बियर के गिलास को घूर रहा था। उसका गंजा सिर उसके हाथों पर टिका था। अँगूठों के ऊपर गोभी जैसे कान उभरे थे। वह फ्रांज़ था, एक बराबर का ग्राहक। मालकिन मन में उसके बिल का हिसाब लगा रही थी। तीन विह्स्की, चार बियर, दो सिगार।

फ्रांज़ यकायक उठ खड़ा हुआ, मुँह से बुझा हुआ सिगार निकाला, और खोज-भरी दृष्टि से चारों ओर देखने लगा। मालकिन ने हाथ का मोखा बार पर फेंक दिया, और वह उठ कर उसके पास गई। उसने एक दियासलाई जलाई। "यह लीजिये।"

फ्रांज़ ने उसकी ओर पथराई नजरों से देखा। उसने दियासलाई उससे ले ली, और खिड़की की ओर घुमाई, और सिगार सुलगाया। एक सेकेंड बाद उसने दियासलाई गिरा दी। उसके मुँह के कोने से सिगार खिसक कर नीचे गिर गया। मुँह बाये हुए, वह बाहर घूरता रहा। मालकिन ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। फ्रांज़ के विचित्र व्यवहार से उन तीनों का ध्यान भी आकृष्ट हुआ। वह यकायक सँभला, और दरवाज़े की ओर भागा।

"मैं बाद में पैसा दूँगा...बाद में आऊँगा।" वह बड़बड़ाया।

मालकिन विरोध करने के लिए उसके पीछे दौड़ी। लेकिन वह बाहर पहुँच चुका था। दरवाजा बन्द करने के लिए भी वह नहीं रुका। इस बीच उन तीन व्यक्तियों में से एक उठ खड़ा हुआ था। उसने फ्रांज़ को रोज़िमेनस्ट्रैसी की तरफ़ भागते देखा। चूँकि हमारी गली में कोई असामान्य बात नहीं दिख रही थी, इसलिये वे फ्रांज़ के विचित्र व्यवहार का कारण नहीं समझ सके। (फ्रांज़ एक सेकेंड पहले अपने घर में घुसा होगा। जो ग्राहक दरवाज़े की ओर गया था, वह उसे जानता था। उसने हमें बताया, कि उसने उसे नहीं देखा था।)

"उसकी सनक रोज़ बढ़ती जा रही है।...लेकिन पैसा वह जरूर चुका देगा।" होटल की मालकिन ने और लोगों से कहा।

शीघ्र ही एस० ए० वाले हमारी गली में दौड़ते हुए आ पहुँचे। भूरी वर्दियों की भीड़ शीघ्र ही फट कर एक जंजीर बन गई, जो गली के सिरे वाले दो मकानों से लेकर पावर वर्क्स और रिलीफ़ बैरक्स के बीच के तंग रास्ते तक फैली थी। फिर एस० ए० की एक टोली फ्रांज के घर में घुस गई, और उसने सहन तक तमाम सीढ़ियों और दरवाजों पर कब्ज़ा जमा लिया।

फ्रांज़ के घर में कोई असामान्य बात नहीं देखी गई थी। लेकिन इन चन्द मिनटों में ही वह शान्त गली खड़खड़ा उठी। खिड़कियों की लम्बी क़तारें चेहरों से भर गईं। लोगों की टोलियाँ द्वारमार्गों में खड़ी थीं, और भूरे घेरे की ओर घृणा की दृष्टि से देख रही थीं। वे काफ़ी दूरी पर खड़े थे, लेकिन ऐसा लगा कि उनके विरोध का भूरी क़मीज़ वालों पर असर पड़ा। एस० ए० वालों ने स्पष्टतः इसका अनुभव किया। उन्होंने बेचैनी से अपने सिर घुमा लिये, और मकानों तथा खिड़कियों की क़तारों की ओर देखने लगे। व्यापारी अपनी दुकानों की खिड़-

कियों से दर्पण से झाँक रहे थे—केवल मेवाफ़रोश अपवाद था, जो अपनी दूकान के द्वारमार्ग में तना खड़ा था। एक ही चिन्तायुक्त विचार सबके मस्तिष्कों में दौड़ रहा था। यह किसके लिए है ?...वे इतना अचानक क्यों आये हैं...कौन खतरे में है ? कौन ?...कौन ?

फ्रांज़ ने अपने घर के द्वार पर घंटी बजाई। किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला। केथी अभी तक दफ़्तर में थी, और उसकी माँ बिस्तर पर पड़ी थी, उठ सकने में असमर्थ। पड़ोसिन फ्राव शल्ज़ ने उसे घंटी बजाते सुना। उसे आश्चर्य हुआ, जब उसने फ्रांज को देखा। हाँ, फ्लैट में एक कुंजी है ; वह दिन में उसकी माँ की देख-भाल करती है, उसने बताया। मरीज़ा ने अस्पताल जाने से इन्कार कर दिया, और केथी सारे दिन बाहर रहती है। केथी को उसे यह सब बहुत पहले ही बता देना चाहिये था, फ्रांज़ ने कहा। उसने अभी अपनी प्रेमिका से सुना है। पहले तो वह केवल इशारे भर करती थी, लेकिन उसके बार-बार पूछने पर उसे सब-कुछ बता देना पड़ा। वह चंद मिनटों के लिए अपनी माँ से मिलना और बात करना चाहता था ; वह लगभग तुरन्त ही वहाँ से चल देगा। वह फ्लैट से बाहर आया, और पड़ोसिन से यह कहने के लिए रुका, कि उसने अपनी माँ को अस्पताल जाने के लिए राज़ी करने की कोशिश की थी। यही उसके लिए सबसे अच्छी बात होगी। जैसा उसने सोचा था, माँ की हालत उससे कहीं ज़्यादा खराब थी ; वह भयानक रूप से दुबली और कमज़ोर हो गई थी। फिर वह तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरने लगा। एक सेकेंड बाद पड़ोसिन ने निचली सीढ़ियों पर एक धमाके की आवाज़ सुनी।

एक क्रोधित आवाज़ बड़े ज़ोर से चिल्ला रही थी :

"आखिर हमने तुम्हें पकड़ ही लिया ! हमने पकड़ लिया तुम्हें, ओ कुतिया के बच्चे !"

जब भूरी क़मीज़ वाले गली में आये, तो द्वारमार्गों में खड़े लोगों में एक हर्कत दिखाई दी ; खिड़कियों वाले सिर भयभीत हो कर झटके के के साथ ऊपर उठे । उनके गले भर आये । वह फ्रांज़ जैंडर था—उनका अपना फ्रांज़ ! गली का हर व्यक्ति उसे बहुत अच्छी तरह जानता था ।

गली में खमोशी छाई रही । लोग अपने दरवाज़ों के सामने मौन खड़े थे । लेकिन कसी हुई मुट्ठियों के कारण उनकी जेबें फूली थीं । तमाम खिड़कियाँ दर्शकों से भरी थीं । गहरे मौन भाव से हमारी गली ने फ्रांज़ से विदा ली । ऐसा लग रहा था, जैसे एक बार हाथ मिलाने के लिए हर तरफ़ बाँहें फैली हों !

फ्रांज़ को भी इसकी अनुभूति हुई होगी । उसका चेहरा शान्त था । उसके होंठों पर एक मुस्कान भी टिमटिमा रही थी । उसने गली के पार से खिड़कियों की ओर सिर हिलाया ।

एस० ए० वाले उसे तेजी से ढकेलते हुए ले गये—माइकोवस्की बैरेक्स की ओर, रोज़िमेनस्ट्रैसी की ओर । बच्चे उस जलूस के साथ-साथ दौड़ रहे थे । वही आखिरी मौका था, जब फ्रांज़ ने हमारी गली को देखा—जब हमारी गली ने फ्रांज़ को देखा ।

उसी शाम को जब मैंने यह खबर सुनी, तो मेरे मस्तिष्क में पहला विचार यह आया कि टीचर्ट को चेतावनी दे देनी चाहिये । टीचर्ट को, क्योंकि वह फ्रांज़ वाले घर में ही रहता है, और चूँकि हम नहीं जानते, क हममें से और किसको तेंतीस दस्ते वाले पकड़ना चाहेंगे ।



सीमेंसस्टाड्ट से ट्रामें थोड़ी-थोड़ी देर में चलती हैं। सभी भरी होती हैं। दिन के इस समय, सीमेंस वर्क्स में छुट्टी होने के समय अनेक अतिरिक्त गाड़ियाँ भी भीड़ को सँभाल नहीं पातीं। मैं अड्डे पर खड़ा हूँ, और वहाँ से गुजरते हुए यात्रियों पर सरसरी नजर डाल रहा हूँ। टीचर्ट कहाँ है? शायद कुछ खरीदने के लिए वह पहले ही किसी अड्डे पर उतर गया?

क्या यह बेहतर होगा, कि अपनी गली के नुक्कड़ पर उसका इन्तज़ार किया जाय? बहुत अधिक प्रकट रूप से। और अगर वह दूसरे सिर से आया, तो वह खतरे के लिए बिना तैयार हुए अपने फ्लैट में चला जायेगा।

गाड़ी पर गाड़ी आती है, रुकती है, और खाली होकर चली जाती है।

वहाँ नहीं है—और दूसरी वाली में भी नहीं है। मिनट पर मिनट परेशान करते हुए गुजर रहे हैं।

मैं इधर से उधर टहल रहा हूँ—घंटों से, ऐसा मुझे लगता है।

एक और ट्राम आती है। और इसमें है—टीचर्ट!

उसे ताज्जुब होता है। वह अपनी खाने की टोकरी को इधर-उधर करता है।

"तुम यहाँ?" बस इतना ही वह कहता है।

ऐसा लगता है, कि अब 'क्यों' प्रश्न निकला ही चाहता है। लेकिन वह बिना और कोई शब्द कहे मेरी बगल में चलने लगता है। मैं बहुत उदास हूँ। मैं तेज़ी से उसकी ओर देखता हूँ। उसकी भौंहों के बीच एक गहरी रेखा है। पिछले चन्द दिनों में वह ज्यादा पीला पड़ गया है। गालों की हड्डियाँ और उभर आई हैं। लगता है, कि रिचर्ड का फ़ैसला सुनाये जाने के बाद से उसकी उम्र कई साल बढ़ गई है। और अब मुझे यह खबर भी उसे देनी पड़ेगी।

"क्यों...निश्चय ही वह कोई अच्छी खबर न होगी ?" वह अन्त में कहता है।

मैं उसकी तरफ़ नहीं देखता। हर क़दम मेरे सिर पर हथौड़े की तरह चोट करता हुआ लगता है।

"उन लोगों ने फ़्रांज़ को पकड़ लिया।"

टीचर्ट रुक जाता है।

"फ़्रां—ज़ !" वह इस तरह बोलता है, जैसे उसने नाम ठीक से न सुना हो।" क्या उसके इलाके का पता लग गया, या क्या...कैसे..."

वह मेरी बाँह पकड़ लेता है।

"हमारी गली में—एक घंटा पहले !"

टीचर्ट अपने हाथ से अपना माथा पोंछता है।

"हमारी गली में...हमारी गली में..." वह इस तरह बोलता है, जैसे समझ न पा रहा हो।

मैं उसे खींच ले जाता हूँ। हम लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की हिम्मत नहीं कर सकते।

"पड़ोसिन ने उसके लिए फ़्लैट का दरवाज़ा खोला था। उसने बताया, कि वह अपनी माँ से मिलना चाहता था।"

टीचर्ट कुछ नहीं कहता ; आगे की ओर एकटक देखता है।

"बिलकुल अचानक उन लोगों ने मकान को घेर लिया।...शायद..."

मैं लड़खड़ाता हूँ, लेकिन टीचर्ट ने समझ लिया है। वह निराशा के भाव से सिर हिलाता है।

"इसीलिये मैं इस समय तुमसे मिलना चाहता था।"

हम इधर-उधर घूमते हैं। टीचर्ट अब भी खामोश रहता है। वह अपने होंठो को दबाता है, और भारीपन से साँस लेता है।

"किसी से पड़ोसिन से कहलाना चाहिये, कि वह केथी को रोके। हममें से किसी का जाना तो बड़ा खतरनाक है। उसकी माँ को कुछ

न मालूम होना चाहिये—कम-से-कम अभी नहीं..."

"जान," टीचर्ट बस इतना ही कहता है। वह मेरा हाथ दबाता है।

मैं उसकी नजर बचाता हूँ। केथी—अपने ही आप उसे इसे सहन करना होगा। मैं हिम्मत नही कर सकता—अभी नहीं—

"मैं जा रहा हूँ। मैं इसे समाप्त ही कर देना चाहता हूँ। और अगर मैं भी—खैर देखा जायगा कि क्या होता है।"

वह फिर हाथ मिलाता है। मैं उसके पीछे देखता हूँ, फिर मकानो के ब्लाक के बगल से दूसरी दिशा में चल देता हूँ।

हम विभिन्न दिशाओं से पहुँचेंगे। लेकिन इससे हम बचेंगे नही—अगर अब हमारी भी बारी है।

जब से उसकी माँ बीमार पड़ी थी, केथी सो नहीं पा रही थी। वृद्धा प्रायः सवेरे तड़के ही सो पाती थी। फ्रांज के आने के पहले वह अस्पताल जाने के लिए करीब-करीब राजी हो गई थी। लेकिन फ्रांज से भेंट होने के बाद से वह फ्लैट छोड़ने से इन्कार कर रही थी; बीमार व्यक्तियों वाली जिद के साथ वह कहती थी, कि वह अपने बेटे के पुनः आगमन के लिए घर पर इन्तजार करेगी। केथी ने उसे समझाया, कि अस्पताल में भी वह अकसर उससे मिलने आ सकता है। लेकिन नही, वह घर पर ही रहने की जिद पकड़े हुए थी। उसके बाद के दिन केथी के लिए शारीरिक कष्ट ही नहीं, मानसिक यंत्रणा वाले दिन भी साबित हो रहे थे। उसकी माँ अब फ्रांज के बारे में कितना अधिक बात करती थी। कैसा वह दिख रहा था, कैसे उसने वादा किया, कि वह शीघ्र ही फिर आयेगा। केथी इस बात की हिम्मत नहीं कर सकती थी, कि वृद्धा को उसकी वास्तविक भावनाओं का आभास भी मिले, कि उसे इशारे से भी यह मालूम हो, कि फ्रांज किस स्थिति मे था।

फ्रांज़ कहाँ है, और उसके साथ कैसा व्यवहार किया जा रहा है ? केथी ने उसके बारे में हर जगह पता लगाने की कोशिश की है। स्थानीय थाने में, जो इस संबंध में हर प्रकार की जिम्मेदारी से इनकार करता है, एलेकजेंडर प्लाज़ पुलिस सदर मुकाम में, राजनैतिक नाज़ी पुलिस से प्रिंज-अलब्रेख्त-स्ट्रैसी में नाज़ी ख़ुफ़िया पुलिस (गेस्टापो) से, और कोल-म्बयाहॉल में। सब उसके साथ रूखे ढंग से पेश आये। फ्रांज़ जेंडर ? यह नाम उनके लिए अपरिचित था। नहीं वे जाँच नहीं कर सकते; ऐसे ही उनके पास काफ़ी काम है। हम भी केथी की कोई सहायता नहीं कर सके; अगर हम उसके बारे में पूछ-ताछ शुरू कर देते, तो इससे सन्देह पैदा हो जाता। हमने केथी को सलाह दी, कि वह हिल्डी से यह कहे कि फ्रांज पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया है, एस० ए० द्वारा नहीं। ऐसा न करने से वह अपने आप को और भी दोष देती, क्योंकि उसी ने फ्रांज़ को उसकी माँ का हाल बताया था। फ्रांज़ की गिरफ़्तारी के बाद से हिल्डी दुस्साहस की अवस्था में पहुँच गई है। वह केवल उसके लिए कुछ करने की ही बात करती रहती है। हर बार केथी उससे कहती है, कि वह नहीं जानती कि फ्रांज़ कहाँ है। अगर हिल्डी फ्राज के बारे में पूछ-ताछ करेगी, तो वह इस मामले में फँस जायेगी। और अगर हिल्डी यह जान जाती, कि तेंतीस दस्ते वालों ने उसे गिरफ्तार किया है, तो वह अपने भाई से सूचना प्राप्त करने की कोशिश जरूर करती। हमें उसके भाई, एस० ए० दस्ते के नेता, के सामने उसका भेद प्रकट न होने देने की व्यवस्था करना है।

तेंतीस दस्ते वाले ! क्या फ्रांज़ अभी भी माइकोवस्की बैरेक्स में है ? एस० ए० वालों ने केथी को बैरकों में घुसने नहीं दिया। वह उससे कुछ घंटों के बाद मिल सकती है, ड्यूटी वाले ने उससे उपहासपूर्वक कहा था। कहाँ है, कहाँ है फ्रांज़ ? सबेरे जब केथी उठती है, तो यही "कहाँ" उसका पहला विचार होता है।

एक दिन सवेरे वह तड़के ही उठ जाती है। कपड़े पहनती है, और माँ के लिए रसोईघर से बेसिन और तौलिया लेने जाती है। हॉल के अन्दर से लौटते समय उसकी नजर सदर दरवाजे पर लगे तार की पत्र-पेटी पर पड़ती है। कोई सफ़ेद चीज़ उसमें पड़ी है। एक पत्र ? इस समय, इतने तड़के ? यह कल शाम को आखिरी डाक से आया होगा, और अंधेरे में दिखाई न पड़ा होगा। लिफ़ाफ़े पर छपा स्टाम्प है। सरकारी पत्र ? फ्राव एलिस जेंडर के लिए। केथी समझ नहीं पाती कि क्यों, लेकिन वह पत्र उसके हाथ में सीसे जैसा भारी हो जाता है। एक सरकारी पत्र ! अनिश्चय से वह पत्र को हाथ में घुमाती है, और फिर छिदे हुए किनारे को फाड़ती है। '...अस्पताल में मृत्यु हो गई... दिल की कमजोरी के कारण मृत्यु हुई...लाश दफ़न करने के लिए दी जाएगी तारीख...'

केथी इन पंक्तियों को बार-बार पढ़ती है। इन्हें गुनगुनाकर अपने-आप को सुनाती है, बिना यह जाने कि वह ऐसा कर रही है। मर गया —लेकिन कौन ? मर गया...वह पत्र उसके लिए नहीं है। वह आप-ही-आप उसे घुमाती है। फ्राव एलिस जेंडर के लिए...

एलिस जेंडर...एलिस...उसकी माँ के लिए ! वह उस कागज को टकटकी बाँध कर घूरती है—मर गया...ऊपर लिखा है—एक नाम . फ्राज़ जेंडर !

फ्रांज—फ्रांज !

"के...थी, के...थी !"

अपनी कमजोर, काँपती आवाज में उसकी माँ उसे पुकार रही है। केथी उठ खड़ी होती है। बाहें ढीली किये मुड़ा-तुड़ा पत्र हाथ में लिए, वह एक सेकेंड खड़ी रहती है। वह बाँह उठाती है। बाँह सख्त और भारी लगती है, जैसे वह उसकी हो ही नहीं। वह फिर पत्र की ओर देखती है।

"के···थी ! के···थी ! कहाँ ··हो तुम ?"

केथी अपने-आप को सँभालती है । उसकी माँ ! उसे अभी तक अपनी माँ को कुछ बताने का साहस नहीं हुआ; उससे छिपाने का यह एक और कारण है । उस पत्र को वह एक ड्रायर में छिपा देती है । उसकी माँ अपनी कुहनियों पर टिकी है । उसने खड़ी होने की बेकार कोशिश की होगी । उसका चेहरा पीला है, गालों की हड्डियाँ उभरी हुई हैं ।

वह केथी की ओर दोषारोपण के भाव से देखती है ।

"मैं तुम्हें बुलाती रह जाती हूँ...बुलाती रह जाती हूँ... और तुम आतीं ही नहीं," वह कहती है ।

वह वाश-बेसिन और तौलिये की तरफ़ इशारा करती है । हाथ-मुँह धोने का पात्र और तौलिया केथी बिस्तर पर लाती है ।

"तुम्हें...तो अब जल्द ही...काम पर...जाना होगा न ?" फ़ाव जैंडर पूछती है ।

हाँ, उसे आफ़िस तो जाना है । लेकिन वह जायगी नहीं; अब उसे किसी चीज़ की कोई परवाह नहीं ।

"आज हमारी...छुट्टी है," वह उत्तर देती है ।

अपनी माँ से अपने-आप को यह कहते सुन कर, उसे स्वयं आश्चर्य होता है । माँ तौलिया रख देती है, और खोज-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखती है ।

"तुम इस तरह बात क्यों कर रही हो ?...तबीयत ठीक नहीं है क्या ?" माँ पूछती है । "तुम कितनी पीली दिख रही हो !"

"मुझे कुछ नहीं हुआ है—आज हमारी छुट्टी है," केथी कहती है ।

हर सूरत में उसे अपनी माँ के सन्देह को दूर करना चाहिए ।

सबेरे ही बिजली जैसी तेजी से फ्रांज की मृत्यु की खबर हमारी गली में एक से दूसरे घर में फैल जाती है । गली शोक मना रही है । मातमी काला चिह्न नहीं दिख रहा है, लेकिन हमारे कामरेड की मृत्यु की छाया

हर चेहरे पर व्यक्त है। बातचीत में, मौन दृष्टियों में उसकी उपस्थिति अनुभव हो रही है। फ्रांज अपनी गली से विदा ले रहा है। वह घरों में प्रवेश करता है। वह दरवाजा नहीं खटखटाता, घंटी नहीं बजाता; कोई दरवाजा नहीं खुलता, लेकिन हर जगह वह प्रवेश कर रहा है।

एक वृद्धा रो रही है। उसने—उस युवक ने अकसर उसकी सहायता की थी। सामान पहुँचा दिया था, कोयला ला दिया था।

एक कामरेड सोच रहा है।

"क्या तुम्हें अब भी याद है?...न्यूकालन की सभा वाली लड़ाई .. फ्रीडरिखशेन, हॉल में मारपीट? क्या अब भी याद है तुम्हें? गुड लक, फ्रांज! सब से अच्छे लोगों में से एक थे तुम..."

हर जगह लोग फ्रांज से विदा ले रहे हैं—हमेशा के लिए।

हमारी गली लम्बी है।

उसमें अनेक घर हैं।...

मैं बर्लिनर स्ट्रैसी में धीरे-धीरे चल रहा हूँ। हिल्डी उस तरफ़ रहती है। आज शाम को टीचर्ट से यह जरूर पूछना है, कि क्या उसे मालूम है कि वह कैसी है—जरूर पूछना है, भूलना नहीं है। अब जब कि उसने फ्रांज को खो दिया, हमें उसकी देख-रेख और भी करनी चाहिये। एक घड़ीसाज की दूकान में बिजली की एक घड़ी पर मेरी नजर पड़ती है। बहुत समय है; बारह से पहले मुझे वहाँ नहीं पहुँचना है। मैं पास की एक सीट पर बैठ जाता हूँ। अनन्त प्रवाहों में आवागमन जारी है। सूरज अभी ही काफ़ी गर्म हो गया है। पेड़! चन्द दिन पहले टहनियों पर पीले अंकुर ही दिख रहे थे। अब वे नन्हीं-नन्हीं पत्तियाँ बन गये हैं। परिवर्तन इतनी शीघ्रता से आता है, क्या उसे प्रायः घटित होते देखा जा सकता है? घास के मैदान में लेटना कितना भला लगता है—कीड़ों

का झुंडों में रेंगना...फ्रांज ! वह यह सब अब कभी न देख सकेगा—हमारे साथ पिकनिक पर कभी न चल सकेगा। अचानक मुझे सब कुछ फिर याद आ गया। तब से मैं केथी से केवल एक बार मिला हूँ, ग्रूनेवाल्ड में। वह चार्लोटिनबर्ग एस० ए० स्टैंडर्ड के डाक्टर से मिलने गई थी। वह कैसरडैम में एक शान्दार फ्लैट में रहता है। "बलिष्टतम व्यक्ति भी हृदय की गति रुक जाने से मर सकता है," उसने व्यंग्यपूर्वक कहा था। अकेले उसे ही मुर्दाघर में फ्रांज को देखने की अनुमति मिली थी। उन लोगों ने उसे एक खिड़की से ही देखने दिया था। लाश सफ़ेद चादरों मे लिपटी कुछ गज के फ़ासले पर पड़ी थी। चेहरे का एक छोटा-सा भाग ही खुला रहने दिया गया था, और उस पर भी पाउडर की मोटी पर्त चढ़ी थी। वह उसे पहचान नहीं सकी थी, यह जान नहीं सकी थी, कि वह वही था कि नहीं। उसने सिसकियो के बीच मुझे यह सब बताया था। मैं एक शब्द भी बोल नहीं सका, केवल उसके बाल सहलाता रहा। मैं कोई ऐसी बात सोच नहीं सका जिससे उसे तसल्ली होती। फ्रांज अब कभी न लौटेगा।

इसके बाद हम बिलकुल मिल न सकेंगे; उसकी निगरानी जरूर होगी। उधर भी स्थिति काफ़ी कठिन थी।

मेरे विचार फिर विशाल वाल्ड कब्रिस्तान की तरफ़ जा रहे हैं। सैंकड़ों मजदूर, जिन्होंने रास्ते में ट्रैफिक को अव्यवस्थित कर दिया था, और जो अब कब्र को घेरे खड़े थे। बहुतों ने अपनी अल्प पूंजी किराये या थोड़े से फूल खरीदने में लगाई थी। घृणा तथा शोक से भरे वे चेहरे फिर मेरी आँखों के सामने आ रहे हैं। स्त्रियाँ रो रहीं हैं। इसके अतिरिक्त गहरी खामोशी छाई है। खुफ़िया पुलिस गेस्टापो के पहरेदारों के धमकाते चेहरों के द्वारा उत्पन्न की हुई खामोशी। यूथ लीग वाला युवा कामरेड लपक कर खुली कब्र के पास आता है, और बोलना शुरू कर देता है। वह दो-चार वाक्य ही बोल

भाता है, कि गेस्टापो की बाहें उसे खींच ले जाती हैं। फिर भी सैंकड़ों आवाजें चिल्ला उठती हैं : "बदला ! लाल मोर्चा !"...

मैं आँखे खोलता हूं। दिन चढ़ आया है।

तुम हमारे साथ अब नहीं हो, फ्राज, मेरे सबसे अच्छे दोस्त और कामरेड...

चिड़ियाघर रास्ते के उस पार है। विशाल लोहे के फाटक के सामने लोग खड़े हैं। वे सब हाथियों को देख रहे हैं। ठीक सामने सब से पुराना हाथी जम्बो अपनी सूंड़ से शक्कर के ढोंके ले रहा है। फिर वह अपने विशाल शरीर पर बालू छिड़कता है, और हवा में पानी की बौछार उड़ाती है। मेरे करीब खड़े अन्य लोग इस दृश्य का मजा ले रहे हैं। बड़े भी, और बच्चे भी। मैं अपनी जेब से अपना पत्र नखतासगैब निकालता हूँ। उसे दाहने हाथ में लिये रहता हूं, चारों ओर नजर रखता हुआ। स्टेशन की घड़ी की सूइयाँ ठीक बारह पर हैं। वह कामरेड अब किसी भी क्षण आ पहुँचेगा। वह अभी यहाँ आया न होगा। कोई और अखबार नहीं लिये हुए है। मैं उस कामरेड को नहीं जानता, लेकिन मुझसे उसका वर्णन विस्तार से किया गया है। वह भी एक अखबार लिये रहेगा, और पहचान के शब्द कह कर मेरे पास आयेगा। अन्य लोगों की तरह मैं भी इधर-उधर खेलते हाथियों को देख रहा हूँ, लेकिन मैं बराबर चारों तरफ नजर दौड़ा रहा हूँ। सुनहरे फ्रेम वाला चश्मा पहने, एक छोटा जर्द आदमी शीघ्र ही आता है। पिंजड़े के पास वह भी अन्य लोगों में मिल जाता है। यह वही है ! इस प्रकार के काम के लिये मेरे अन्दर अत्यधिक तीव्र बोध विकसित हो गया है। वर्णन ठीक बैठ रहा है—उसके हाथ में बर्लिनर नोरसेनजीटंग है। मैं देखता हूँ, कि वह अपने चारों ओर खड़े लोगों पर तेजी से नजर दौड़ा रहा है। लेकिन कुछ देर प्रतीक्षा करना ही बेहतर होगा; हो सकता है, कि यह मात्र संयोग ही हो। मैं हाथियों को देखना जारी रखता हूँ, लेकिन

अपने पत्र के मुखपृष्ठ को इस तरह और आगे घुमा देता है, कि उसे आसानी से देखा जा सके। कुछ मिनट गुजर जाते हैं। मेरे निकट खड़ी स्त्री चली जाती है। वह छोटा आदमी बाद में उसके स्थान पर आ जाता है।

अनुमान अच्छा निकला : होशियार।

"आपके ख्याल में उसकी उम्र क्या होगी ?" छोटा आदमी तुरन्त पतली आवाज में प्रश्न करता है।

लगता है, कि वह प्रश्न बड़ी लापरवाही से किया गया है। कोई उत्तर नहीं देता; सब सामने देख रहे हैं।

"कहना मुश्किल है। अस्सी, या फिर शायद सौ साल।" मैं शान्त भाव से कहता हूँ।

लेकिन अब भी, हो सकता है, कि यह यों ही किया गया प्रश्न हो। उत्तर—अब उत्तर !

वह हँसता है। उसके होठों के बीच एक सोने का दाँत चमक उठता है।

"अगर पक्के तौर पर जानना ही हो, तो आपको ऐसे विशाल जानवर को पालतू बना कर रखना होगा—एक हिन्दुस्तानी राजा की तरह। है न ?" वह मजाक करता है।

मेरे बगल में खड़ी स्त्री हँस पड़ती है।

उत्तर ठीक था—विशेष रूप से "हिन्दुस्तानी राजा" बिलकुल ठीक है।

चन्द सेकेंड बाद हम कुछ आगे जा कर मिलते हैं। छोटा आदमी मुझे अपना पत्र दे देता है।

"वह इसके अन्दर है," वह रुखाई से कहता है।

उसकी आवाज अब गम्भीर है। एक बिलकुल भिन्न व्यक्ति अब मेरे साथ चल रहा है।



"आपके इलाक़े से हमारे लिए कोई खबर है ?"

"नहीं। पिछली मौत के कारण हमारे कामरेड कुछ हतोत्साह हो गये हैं। हालांकि शीघ्र ही सब ठीक-ठाक हो जाना चाहिये।"

और क्षण भर रुक कर बोला :

"वह हमारे सब से अच्छे कामरेडों में था।"

छोटा आदमी हामी के भाव से सिर हिलाता है। फिर वह हाथ मिलाता है।

"तो, एक हफ़्ते में, इसी समय," वह कहता है। "लेकिन हम कहीं और मिलेंगे। मुझे अब आपसे मिलने का काम सौंपा गया है।"

इसके बाद हम मिलने का स्थान तै करते हैं, और तुरन्त अलग हो जाते है।...

मैं शाम को टीचर्ट के घर पर हूँ। उसने मुझे बताया है, कि उसकी पत्नी रिश्तेदारों से मिलने गई है।

हम बर्लिन ज़िले की प्रेस विज्ञप्ति पढ़ते हैं, जो सवेरे मुझे उस छोटे आदमी से मिली थी। डिमिट्राफ़, पोपाफ़ और टैन्यू के मास्को पहुँचने और वहाँ उनके स्वागत-सत्कार की विस्तृत रिपोर्ट है। हमें प्रसन्नता होती है।

"और अब थालमैन की बारी है ! वह उसी तरह बचाया जा सकता है, जैसे डिमिट्राफ़ को बचाया गया था। विशाल विरोध प्रदर्शन— यहाँ भी और विदेशों में भी।" टीचर्ट यकायक कहता है।

थॉलमैन ! पिछली बार हमने उसे बुलोप्लाट्ज़ वाले प्रदर्शन में देखा था।

"जॉन शियर और तीन अन्य व्यक्तियों की हत्या का कामरेडों ने बड़ा अच्छा जवाब दिया। उन्होंने शोनेबर्ग में दो रेलवे पुलों के बीच

झंडे लगा दिये। 'जान शियर की हत्या का बदला लो !' वहाँ हमेशा बड़ी भीड़-भाड़ रहती है। सवेरे काम पर जाते हुए दो सौ मजदूरों ने वह झंडे देखे। दमकल वाले बाद में आये, और उन्हें उतार ले गये।"

मौन।

ऐसे घर और ऐसी पत्नी वाला टीचर्ट जब इस तरह बात करता है, तो हमेशा बड़ा अजीब-सा लगता है।

वह अपनी वास्कट की जेब टटोलता है, एक छोटा-सा काग़ज़ निकालता है, और उसे मुझे देता है।

अख़बार की एक कटिंग है।

फाँसी दे दी गई !

कालम के ऊपर मोटे टाइप में छपा है, और उसके नीचे छोटे टाइप में :

'आदेश का तुरन्त पालन कर दिया गया।'

मैं अख़बार के उस टुकड़े को मोड़-तोड़ कर ग़ुस्से से फेंक देता हूँ।

"थर्ड रीख के अख़बार !" टीचर्ट कहता है।

वह उठ खड़ा होता है। हमारे पत्र 'रोटे फ़ाहने' की बिलकुल ताज़ा प्रति निकाल लाता है।

मैं चौंक पड़ता हूँ।

"यह तुम्हारे पास अभी भी है—यहाँ घर पर ?"

"अभी कल ही हिल्डी से वापस मिला है।" वह इत्मीनान दिलाता है। "तुम्हें इसे दिखाने के कुछ कारण हैं !"

मैं अख़बार को देखता हूँ। कुछ पृष्ठों पर मज़मून काट दिये गये हैं, अन्यों पर रेखांकित किये गये हैं। सोवियत यूनियन में समाजवाद के निर्माण विषयक एक लेख के हाशिये पर बड़े-बड़े अक्षरों में "कूड़ा" लिखा है।

नाज़ी अफ़सरों के अन्तर्गत कुशासन संबंधी एक लेख पर यह सम्मति दी गई है, "बिलकुल ठीक। वैसा ही गड़बड़, जैसा मार्क्सवादी प्रणाली के अन्तर्गत !"

मैं प्रश्नसूचक भाव से टीचर्ट की ओर देखता हूँ। वह हँसता है, जिससे उसके आगे के दाँतों के दो काले ठूँठ फिर मेरा ध्यान आकृष्ट करते हैं।

"यह नाज़ी पार्टी के सदस्यों की आलोचना है !"

"हिल्डी ने दी है..."

"जो पत्र वह पाती है, उनमें से कुछ वह नाज़ियों को देती है !"

वह गम्भीर हो जाता है।

"इसका बड़ा अच्छा नतीजा होता है, जैसा तुम देख रहे हो। लेकिन उसका आजकल यह काम करने का तरीक़ा चिन्ताजनक है !"

"क्यों ?"

"फ्रांज की मौत के बाद से उसका दिमाग़ बिलकुल बिगड़ गया है। वह ग़ैरक़ानूनी काम में अपने-आप को डाल कर सब-कुछ भूलने की कोशिश कर रही है। हर बार वह मुझसे विनती करती है, कि मैं उसे और परचे दूँ, और काम दूँ।"

टीचर्ट मेरी ओर झुकता है।

"वह पहले भी नाज़ियों को हमारे परचे देती थी। लेकिन उन्हें यह जताये बिना, कि वह परचे किसके पास से आते हैं। उन्हें वह उनकी पत्र-पेटियों में खोंस देती थी। पते अपने भाई से प्राप्त कर लेती थी। उसके नोट्स से। लेकिन ऐसा लगता है, कि अब उसने कुछ नाज़ियों को खुल्लम-खुल्ला हमारे परचे दिये हैं—कम-से-कम पिछला अंक। वह मानती तो नहीं, लेकिन आखिर यह उसे वापस कैसे मिला ?"

हिल्डी। उसने पहले भी ऐसा किया था—लेकिन इसके बारे में मुझे कभी किसी ने कुछ बताया नहीं था। फ्रांज को यह बात जरूर मालूम रही होगी।

"हम फ़िलहाल उसे अपने परचे नहीं दे सकते। देने से परिणाम बुरा होगा!"

"इस बात में मैं तुम्हारी रजामंदी चाहता था," टीचर्ट कहता है। "जो हो, हमें कुछ समय तक उसे काम से अलग रखना है। वह बिलकुल टूट गई है।"

मैं एक सेकंड सोचता हूं।

"मैं केथी को बता दूँगा। वे कभी-कभी आपस में मिल सकती हैं। कामर्शल स्कूल के समय से ही वे एक-दूसरे को जानती हैं—यह काफी अच्छी सफ़ाई होगी।"

उसने बताया, कि हिल्डी कहती है, कि पिछले चन्द दिनों से उसका भाई कड़ुआ मुँह बनाये रहता है। अब वह घर पर राजनीति पर बात-चीत नहीं करता, हालांकि वह पहले लम्बे प्रचारात्मक भाषण दिया करता था। उसने एक बार कहा था, कि उसका स्टार्मलीडर उसे एक नौकरी दिलाना चाहता था। जेल के वार्डन की नौकरी। उसने इनकार कर दिया था। उसने उत्तर दिया था, कि वह तालासाज है, और कुछ नहीं। हिल्डी का ख्याल है, कि उसके भाई का भी अब नाजी आन्दोलन से विश्वास उठता जा रहा है। जब वह शिकायत करती है, कि उसके वेतन से बहुत अधिक कटाव हो रहा है, या उसकी मां क़ीमतें बढ़ने का गिला करती है, तो वह अब सरकार की सफ़ाई नहीं देता जैसा कि पहले किया करता था। इस सब ने हिल्डी को लापरवाह बना दिया होगा।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है। दस्ते का नेता, फ़ेलिक्स!

अगले अखबार की तकनीकी बातें तै करने के लिए मैं रुक गया हूँ, जैसा कि मैं सामान्यतः करता हूं। टीचर्ट अग्रलेख लिखने का वादा करता है।

काफ़ी रात गये मैं घर से विदा होता हूं। हमारी गली सुनसान लगती है। दूर-दूर लगे हुए गैस के लैम्प एकमंजिले या दोमंजिले बोसीदा

मकानों पर मंद प्रकाश डाल रहे हैं। ये मकान यहाँ एक शताब्दी से अधिक से खड़े हैं। काई-लगी, जीर्ण-शीर्ण खपरैल की छतें ऐसी लगती हैं, जैसे दीवारों से खिसक कर गिरा ही चाहती हैं।

बिजलीघर की मशीनों की मन्द, अनथक घनघनाहट जारी है।

राजनैतिक बंदियों तथा उनके आश्रितों की सहायता के लिये संगठित संस्था रोट हिल्फ़े के एक कार्यकर्ता ने मुझे आज कुछ टाइप किये हुए पन्ने दिये। एक उच्च क़ानूनी अफ़सर की आहे मुक़दमें पर रिपोर्ट, जिसमें रिचर्ड हूटिंग को मौत की सज़ा सुनाई गई थी। इस रिपोर्ट को विदेशी प्रेस तक पहुँचाने के लिए आगे बढ़ाना है।

बड़ी सराहनीय कुशलता से रिचर्ड हूटिंग सत्य प्रगट करने में सफल हुआ, हालाँकि वह जानता था, कि ऐसा करने का परिणाम उसके लिए क्या होगा। उसने गुप्त सुनवाई की माँग की, ताकि वह अपनी गवाही में सच्चे तथ्य प्रकट कर सके। उसने जिरह में अपने साथ तथा अपने कामरेडों के साथ किये गये बुरे बर्ताव का वर्णन किया। जिरह इस प्रकार थी :

हूटिंग तथा अन्य अभियुक्तों में से एक अध्यक्षता करते पुलिस कमिश्नर के सामने बैठे थे।

पुलिस कमिश्नर ने पहले हूटिंग से पूछा : "क्या तुमने कोई गोली चलायी थी ?"

हूटिंग : "नहीं।"

तब अन्य अभियुक्त, जिनमें अट्ठारह-वर्षीय हरबर्ट कैरियस भी था, गेंडे की खाल से बने कोड़ों से हूटिंग तथा पुलिस कमिश्नर की उपस्थिति में बड़ी ही निर्दयता से पीटे गये।

कमिश्नर ने फिर प्रश्न किया : "क्या हूटिंग ने गोली चलाई थी ?"

उत्तर : "हाँ।"

कमिश्नर, अन्य अभियुक्तों से : "क्या हूटिंग झूठ बोल रहा है ?"

उत्तर : "हाँ।"

कमिश्नर : "कोड़ा उठाओ, और उसे सफ़ेद झूठ कहने के लिए पीटो।"

हूटिंग ने ज़ोर दे कर कहा, कि जब इस तरह जिरह की जाती है, तो बात यहाँ तक पहुँचने पर अभियुक्त हमेशा अपनी गवाही काट देते हैं। उन्होंने पीटने से इनकार कर दिया। अब वास और ड्रेसर मार डाले गये और पिटाई हफ्तों बराबर जारी रही, तभी पुलिस हूटिंग के विरुद्ध उसे फँसाने वाली गवाही प्राप्त कर सकी, जो वह चाहती थी। हूटिंग ने अदालत को यह भी बताया, कि किस तरह कोलम्बियाहॉस में एस० ए० वालों ने लोगों को पीटा। सामान्यतः हिलने-डुलने में असमर्थ हो कर, क़ैदी ज़मीन पर पड़ा रहता था। उसके दोनों ओर दो-दो एस० ए० वाले खड़े हो जाते थे, और गैंडे की खाल के कोड़ों से उसकी पीठ पर इस तरह वार करते थे, कि 'वी' जैसा कोड़े का निशान बन जाता था। वास, जिसने अन्य लोगों को फँसाने से इनकार कर दिया था, पीट-पीट कर ख़त्म कर दिया गया। इस प्रकार की जिरहों में से एक जिरह के घंटे भर बाद वह मर गया।

"जब मैं पीट-पीट कर अधमरा कर दिया गया, तो मैंने अपनी क़मीज़ फाड़ कर अलग कर दी, और एस० ए० टोली से चिल्ला कर कहा, 'लो मुझे गोली मार दो, लेकिन मेरे साथियों को छोड़ दो।'

"एस० ए० के सिपाहियों पर इसका ऐसा असर पड़ा, कि उन्होंने यन्त्रणायें कुछ ढीली कर दीं," हूटिंग ने अदालत से कहा।

उसने आगे कहा, कि कोलम्बियाहॉस में उसे जो अनुभूतियाँ हुईं,

इसके बाद उसने निश्चय कर लिया, कि वह अपने जीवन के अन्त तक कम्युनिस्ट बना रहेगा।

हूटिंग की इस ध्वंसक शहादत पर सरकारी वकील ने केवल इतना ही कहा, कि संभवतः यह सत्य है, कि अभियुक्तों के साथ बहुत नर्मी का व्यवहार नहीं किया गया।

पॉल लाम ! कोड़े लगा कर वह मार डाला गया, क्योंकि उसने हूटिंग को फँसाने से इनकार किया। हम उसे हमेशा "नानबाई बॉस" कहते थे। अस्पताल से निकलने के बाद उसने मुझे छुरे के घावों के निशान दिखाये थे, जो १६३२ में एस० ए० वालों ने उसे लगाये थे। उसे हमेशा रविवार को मेरी टोली में शामिल होने की इच्छा रहती थी, और हमारे पत्र के लिए प्रचार करने की भी। "तुम्हारी आवाज़ कितनी तेज़ है, जान," वह कहा करता था—"दो ब्लाकों की दूरी से तुम्हें सुना जा सकता है। तुम आसानी से कुछ और दूरी से बोल सकते हो।" उसका चौड़ा, ज़र्द चेहरा लम्बे काले बालों सहित बहुत साफ़-साफ़ मेरे सामने आ जाता है। चलते समय वह कैसे अपने हाथों को झुलाता चलता था। वह कुछ झुक कर चलता था, क्योंकि उसके पैर घुटनों पर कुछ मुड़े हुए थे। ऐसा शायद रोटी पकाने की नाँद पर घंटों काम करने से हो गया था। नानबाई बास—रिचर्ड हूटिंग। हम सब डिमिट्राफ़ नहीं हैं। हम सब उसकी तरह नहीं बोल सकते। लेकिन सारे जर्मनी में हज़ारों डिमिट्राफ़ संघर्ष कर रहे हैं।

वे विदेशी पत्रों में रिपोर्ट छपाना चाहते हैं ! शायद रिचर्ड हूटिंग अब भी बचाया जा सके !

मैं घंटों गलियों में घूमता रहता हूँ, और वही विचार मेरे दिमाग़ में चक्कर काटता रहता है। थका हुआ, दर्द करता सिर लिये, मैं अपनी

गली को वापस लौटता हूँ, कि तभी यकायक मुझे पता लगता है, कि एक आदमी पिछली दो गलियों से मेरा पीछा करता रहा है। वह मेरे साथ हमारी गली में मुड़ता है। मैं एक सेकेंड के लिए एक द्वार मार्ग में खड़ा हो जाता हूँ, और फिर बाहर झाँकता हूँ। वह आदमी आगे बढ़ जाता है, और गली की मोड़ पर गायब हो जाता है। कोई देर से घर लौटने वाला होगा, मैं सोचता हूँ। रात के डेढ़ बज चुके हैं।

मैं कपड़े उतारता हूँ, और तकियों में सिर गड़ा देता हूँ।

मैं बिस्तर पर उछल पड़ता हूँ। कोई मेरे कमरे का दरवाज़ा खट-खटा रहा है। फिर खटखटाहट होती है। मेरे सिर में भनभनाहट की अनुभूति होती है। सिर कितना दर्द कर रहा है। मेरा पायजामा, जैकेट नम हो कर पीठ से चिपक गया है। मैं कनपटियों को हाथों से दबाता हूँ, अपने-आप को जागने के लिए मजबूर करता हूँ—खड़ा हो जाता हूँ। अलार्म घड़ी बता रही है, कि अभी चार ही बजे हैं। और यह खटखटा-हट !

खानातलाशी—पुलिस ! भय से मुझे लक़वा-सा मार जाता है। मेरे हाथ काँप रहे हैं; मैं उन्हें स्थिर नहीं रख सकता। रिपोर्ट यहाँ अभी मेरे पास है—वह रिपोर्ट ! और कोई चीज़ ? नहीं। रिपोर्ट अच्छी तरह छिपाई हुई है ! धीरे-धीरे मैं दरवाजे के पास जाता हूँ, और उसे खोलता हूँ। बाहर गलियारे में मकान-मालकिन खड़ी है। अपने नाइट-गाउन पर उसने ड्रेसिंग गाउन डाल रखा है। पतले सफ़ेद बालों की चोटी कंधे पर लटक रही है।

"भगवान के लिए यह बताइये, हर पेटरसन, कि क्या गड़बड़ी हो गई ? आप कितनी ज़ोर से चिल्ला रहे थे !" वह चिन्तित स्वर में कहती है।



"मेरे साथ गड़बड़ी ? कुछ भी तो नहीं। मुझे अफ़सोस है, कि मैंने आपको परेशान किया !" मैं ज़बरदस्ती अपने-आप से कहलाता हूं।

वृद्धा सिर हिलाती हुई, अपने कमरे कमरे की ओर चली जाती है। लेकिन मैं खिड़की के बाहर घूरता खड़ा रहता हूँ।

गली धुंधले मटियाले परदे में छिपी हुई है।

हफ़्तों से ऐसा ही चल रहा है। रात के समय नींद में भूरी कमीजें मेरा पीछा करती हैं; दिन में मैं सीढ़ियों पर पड़ते हर क़दम को, घंटी की हर टनटनाहट को सुनता रहता हूँ। मेरे स्नायु उत्तेजित हो उठे हैं। मुझे जल्द ही कुछ समय तक आराम करना चाहिये। मैं किस चीज़ के बारे में चिल्ला रहा था ? मुझे साफ़-साफ़ याद नहीं; नानबाई बास के बारे में कुछ रहा होगा। इन दुःस्वप्नों के बीच क्या मकान-मालकिन अकसर मेरी चिल्लाहट सुनती है ? इससे उसके सामने मेरा भेद खुल सकता है।

मैं देर तक मुड़ी-मुड़ाई चादरों और फ़र्श पर पड़े परों के तकिये को ताकता रहता हूँ। मैं कांप उठता हूं; मेरे दांत बज उठते हैं; चिप-चिपाता-सा जैकेट बदन से चिपका हुआ है।

एस० ए० का रिज़र्व सिपाही एक्स दो दिन हुए अर्नेस्ट सच्वीबस के सामने हाज़िर हुआ—सुगन्धियों के कारखाने में उसके काम पर। एक्स, जिसने माइकोवस्की बैरेक्स में करगेल को दी गई यंत्रणाओं के बारे में मुझे बताया था। (तैंतीस नं० के दस्ते ने करगेल को इसलिये गिरफ़्तार किया था, कि वे जानना चाहते थे फ्रांज़ जेंडर कहाँ है। फ्रांज़ मर चुका है, लेकिन करगेल अभी भी ओरेनियनबर्ग यातना शिविर में बन्द है।)

एक्स इस समय मेरे सामने बैठा है। वह कुछ बोल नहीं रहा है। बस चुपचाप बैठा, सिग्रेट के कश ले रहा है। मैं उससे आग्रह नहीं

करता, फिर भी यह विचार मन में आता है कि यह हमारी एक जन संस्था से संबंध रखता था, वैसा का वैसा ही बना हुआ है, मुझे वर्षों से जानता है, फिर भी इसे अपने मन की बातें कहने में कठिनाई होती है।

"चार्लोटेनबर्ग स्टार्म्स से कुल एक सौ बीस एस० ए० वाले गिरफ्तार हुए हैं—शिकायत करने और अनुशासनहीनता के कारण। ये कोनिगिन-एलिज़बेथ-स्ट्रैसी में, चार्लोटेनबर्ग पुलिस बैरेक्स में बन्द हैं। उनके साथ 'प्रतिष्ठित कैदियों' वाला व्यवहार किया जाता है। उन्हें एक-दूसरे से बात करने, ताश खेलने और धूम्रपान करने की इजाज़त है। लेकिन उनके सिर भी दिन में दो घंटे ऐंठे ही जाते हैं। सहन में क़वायद भी करनी पड़ती है।

"एक सौ बीस। पक्के तौर पर मालूम है तुम्हें ?"

"हाँ ! मैंने कुछ से यह भी सुना है कि वे किसलिये पकड़े गये हैं।"

एक्स अपनी सिग्रेट का सिरा बुझा देता है।

"वह पुराने कार्यकर्त्ताओं में था। अपने स्टार्म दस्ते के संस्थापन में उसने सक्रिय भाग लिया था। स्टार्म ने उसे काम दिलाया था। वर्षों वह बेकार रहा था। दूसरे ही सप्ताह के अंत में उसने अपनी फ़ैक्टरी में झगड़ा कर लिया। वेतन बहुत कम मिलता था और गुलामी पहले से भी बुरी थी !"

(टीचर्ट ने भी अपनी फ़ैक्टरी की ऐसी ही एक घटना मुझे बताई थी।)

"और एक दूसरे व्यक्ति की बात सुनो। उसके साथ उल्टी ही बात हुई। उसे एक अच्छी नौकरी मिल गई। वह मार्च, १९३३ में एस० ए० में सम्मिलित हो गया, क्योंकि वह अपनी नौकरी नहीं गँवाना चाहता था। निरंतर क़वायद से वह परेशान हो उठा। उसकी प्रेमिका ने उसे छोड़ दिया, क्योंकि रविवारों को उससे मिलने के लिए उसे समय ही नहीं मिलता था। उसने क़वायदों में आना ही बन्द कर दिया। इसके

लिए उसे आठ-आठ दिन की गिरफ्तारी की सजा मिली। एलेक्जेंडर-प्लाट्ज़, पुलिस-सदर मुकाम। अब पुलिस बैरेक्स में इसलिये उसका इलाज हो रहा है, कि वह 'मार्च में परिवर्तित हुए' लोगों में है।"

एक्स अपने पैर एक-दूसरे पर रखता है; उसकी उँगलियाँ उसके खंदकों वाले भारी बूट पर ठक-ठक करती हैं।

"लेकिन अधिकांश को उन्होंने दूसरी क्रान्ति के लिए प्रचार करने के अभियोग में गिरफ्तार किया है।"

हमने इसके बारे में सुना है। तुम्हें विस्तार की बातें मालूम हैं क्या?"

"बस, वही जो वे आपस में कहते-सुनते हैं: 'एस० ए० से इतना खतरनाक काम करा तो लिया गया, लेकिन हमें धोखा दिया गया। हमारा समाजवाद अफसरों के पास है; वे हमारी पीठों पर चढ़ कर मजेदारी के स्थानों पर पहुँच गये हैं। बस, यही परिवर्तन उन लोगों ने जर्मनी में किया है।' इसी प्रकार की बातचीत होती है।"

वह मेज़ से एक कागज़ उठा लेता है, और उसके पतले-पतले टुकड़े कर डालता है।

"क्या तुम लोगों का भी उसमें हाथ था?"

"शायद। मुझे इसके बारे में कुछ मालूम नहीं है," मैं अनिश्चितता के साथ कहता हूँ।

वह कागज के एक टुकड़े को अपने हाथ में इधर-उधर मरोड़ता है, और अपनी दृष्टि उस पर जमाये रहता है।

"हुँ: ! अच्छा, हाँ। मैंने यह क़िस्सा भी सुना है। उनमें से एक आदमी, जिसे उन लोगों ने बाद में गिरफ्तार कर लिया, स्टार्म के कार्यालय में साइक्लोस्टाइल पर छपा एक पर्चा ले कर आया था। 'कैम्यूनिस्ट एस० ए० वाला!' किसी ने उसे उसकी पत्र-पेटी में डाल दिया था। उसने कुछ उद्धरण पढ़े। नेताओं के शान-बान से रहने के ढंग पर लेख थे। उसमें नाम भी दिये हुए थे। उसने यह भी कहा, कि पहले भी

कम्युनिस्टों ने बहुत-सी अच्छी बातें कही थीं। 'लेकिन कम्युनिस्टों को दबाने का वह कारण नहीं था। नहीं-नहीं, उसके कारण नहीं !"

(बेशक, मैं उस पत्र के बारे में जानता हूँ। वह उन एस० ए० वालों द्वारा छापा जाता है, जो हमसे सहानुभूति रखने लगे हैं।)

बहुत देर तक वह खमोश रहता है।

"डायरेक्टर टामस को तुम जानते हो ?" अचानक वह प्रश्न करता है।

"नहीं। क्यों ?"

"उसके मामले के कारण एस० ए० दस्ते में बड़ी उत्तेजना फैल गई थी। उसके कारण भी कुछ पुराने नेता पुलिस बैरेकों में बन्द हैं।"

वह फिर कागज से खेलता है। कोई बात कहने में वह कितनी देर लगाता है !

डायरेक्टर टामस एक नाजी कमिश्नर था। वह बर्लिन ट्रांसपोर्ट कम्पनी में नियुक्त था। यकायक वह गायब हो गया। कुछ दिनों बाद अखबारों में यह सूचना प्रकाशित हुई, कि डायरेक्टर टामस हैवेल में डूब गये। शीघ्र ही यह भेद खुला, कि उसने वह सूचना स्वयं अखबारों में छपवाई थी। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया, एक बन्दरगाह पर। बर्लिन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के सहायता कोष की रक़म उसके पास थी—दो लाख मार्क..."

"और एस० ए० के आदमी क्यों गिरफ्तार किये गये ?"

"वे ट्राम कंडक्टर थे। उनके प्लांट स्टेशन में एक नोटिस चिपकाई गयी थी, कि डायरेक्टर टामस की मृत्यु हो गई है, उनकी अन्त्येष्टि फ़लाँ दिन होगी। लेकिन किसी भी कर्मचारी को जाने नहीं दिया गया। और इससे निश्चय ही, उन्हें आश्चर्य हुआ। नाजी अफ़सरों की सामान्यतः कैसी शानदार अन्त्येष्टि होती है..."

"अच्छा !...कहते जाओ।"

"असली बात अब आ ही रही है। गबन का किस्सा शीघ्र ही फैल

गया। एस० ए० वाले काम करते हुए उसके बारे में बात करते; अपने नाज़ी साथियों के पास जा कर भी वे इसकी सफ़ाई माँगते। पुराने एस० ए० वाले होने के नाते, वे इसे अपना कर्त्तव्य समझते थे।...और तब उनके मुँह बन्द कर दिये गये। 'सड़ियल शिकायतबाज़; इन्हें पुलिस बैरकों में बन्द करो'..."

एक्स का मत था, कि इन्हीं गिरफ़्तारियों के कारण वे घटनायें एस० ए० वालों के बीच बातचीत का विषय बन गयीं। पूरी टोलियाँ की टोलियाँ असन्तुष्ट हो गई थीं, और उन्हें सख्त दबाव से ही साथ रखा जा सकता था। नाज़ी नेता यह भी जानते थे।

मैंने एक्स से पूछा, कि क्या ऐसा नहीं हो सकता, कि वह इन असन्तुष्ट एस० ए० वालों से कभी-कभी बात कर लिया करे और हमारे विचारों के बारे में उन्हें बताया करे। इस असन्तोष से फ़ायदा उठाना हमारा काम है। हमें इसे अपने रास्ते पर मोड़ना चाहिये। कम-से-कम उसे हमें असंतुष्ट एस० ए० वालों के नाम तो बताने ही चाहिये। हम इनके पास अपने परचे भेजेंगे, और बाद में हम उन लोगों से मिल भी सकते हैं। एक्स ने इनकार कर दिया। यह काम उसके लिए बहुत खतरनाक था; उसे अपने परिवार का भी ख्याल रखना था। विस्तार की और बातें उसे आगे ज़रूर मालूम होंगी और वह सब वह हमें बतायेगा। लेकिन इससे अधिक हम उससे आशा नहीं कर सकते। मैंने उससे कहा, कि एस० ए० वालों की भावनाओं के सबंध में ये रिपोर्टें हमारे लिए कितनी महत्वपूर्ण हैं। (ब्रेउस ने भी मुझे बताया था, कि ब्रैंडेनबर्ग यातना केन्द्र और जनरल-पेप-स्ट्रॅसी के फ़ील्ड पुलिस बैरेक्स में एस० ए० क़ैदी हैं। अन्य इलाकों के कामरेड भी यही बताते हैं।)

एक्स एस० ए० के साथ हमारे दल का सम्पर्क-माध्यम है। यह पहला मौका था, जब हमने चार्लोटेनबर्ग की एस० ए० टोली में विघटन

खबर छिपाये रखी है, कि फ्रांज़ मर गया। घर के सभी किरायेदारों ने यही किया। लेकिन तब क्या होगा, जब अंत में वृद्धा को सब मालूम होगा ?'

"आखिरी बार तुम्हीं से फ्रांज़ की भेंट हुई थी। फ्रांज़ ने क्या कहा था ? फिर कब आने को कहा था ?" फ्राव जेंडर ने पूछा।

"उसने कहा था कि वह जल्द ही वापस आयेगा," उसने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया। "हाँ, बहुत जल्दी।"

"जल्दी, जल्दी ! फ्राव जेंडर ने कहा। "लेकिन समय तो बहुत बीत गया।"

वह सीढ़ियों के जंगले के पास गयी, और उस पर अपना पूरा बोझ डाल कर टिक गयी।

"लेकिन तुम्हें बाहर न जाना चाहिये, सचमुच न जाना चाहिये !" पड़ोसिन ने कहा।

"लेकिन मैं जाना चाहती हूँ, मुझे जाना ही चाहिये।"

पड़ोसिन उसके पीछे देखती रही, विरोध के भाव से सिर हिलाते हुए। वृद्धा एक-एक क़दम रख रही थी, और उसका हाथ एक रेलिंग से दूसरी पर फिसल रहा था।

डेरी में बाँह पर सौदे का थैला लटकाये, सिर्फ़ एक ही अन्य स्त्री थी। वह दूकानदारिन से बात कर रही थी, जो पनीर के पतले-पतले टुकड़े काट रही थी। जैसे ही दरवाज़ा खुला, दूकानदारिन ने तेज़ी से चाकू रख दिया, और काउंटर के पीछे से दौड़ कर बाहर आ गयी।

"फ्राव जेंडर, तुम यहाँ !" आश्चर्य-चकित हो कर उसने कहा। "तुम इतनी जल्दी चलने-फिरने लगीं ? यह ठीक नहीं।"

उसने वृद्धा को थाम लिया, और फिर उसके लिए एक कुरसी खींच दिया।

"अब बैठ जाओ। और थोड़ा आराम कर लो। बैठो।"

फ़ाव जैंडर बैठ गयी।

"मुझे फिर से सब काम शुरू करना है, तुम जानती ही हो।" उसका दम फूल रहा था।

डेरी की मालकिन फिर से पनीर काटने लगी। स्त्री-ग्राहक वृद्धा के पास गयी।

"तो आप ही फ़ाव जैंडर हैं," उसने विचारमग्नता से कहा। और फिर दया भाव से : "तो फ्रांज़ आपका ही बेटा था ?"

"हाँ। क्या तुम उसे जानती हो, मेरे फ्रांज़ को ?"

"मैं उसे अच्छी तरह जानती थी। उससे अकसर मेरी भेंट होती थी। मुझे वह खूब याद है।" उस स्त्री ने उत्तर दिया।

"फ़ाव मेयियर ! फ़ाव मेयियर ! आपको कुछ और चाहिये क्या ?" दूकानदारिन ने काउंटर के पीछे से टोका। फ़ाव मेयियर मुड़ी। उसे आश्चर्य हुआ, कि डेरी वाली इस तरह चिल्ला क्यों रही है। डेरी वाली शीशे की आलमारी के पीछे, जिसमें विभिन्न खाद्य पदार्थ प्रदर्शित थे, खड़ी थी, नकारात्मक भाव से सिर हिला रही थी, और चेतावनी के तौर पर मुँह पर उँगली रखे थी। लेकिन फ़ाव मेयियर यह सब इशारे समझ नहीं पा रही थी। डेरी वाली बराबर सिर हिलाती और अपने मुँह को उँगली से थपथपाती रही।

"बात क्या है ?" फ़ाव मेयियर ने अन्त में पूछा। "हाँ, मुझे एक क्वार्टर सलामी और एक क्वार्टर जबान का क़ीमा दे दो।"

उसने शीशे की आलमारी की ओर इशारा किया।

"तुम उसे जानती हो ?" फ़ाव जैंडर ने उससे कोमल स्वर में पूछा।

"हाँ, मैं उसे जानती थी। वह बहुत भला था। बड़े अफ़सोस की बात है।" फ़ाव मेयियर ने कहा।

इस पर डेरी वाली फिर चिल्लाई, "फ़ाव मेयियर !... फ़ाव मेयियर !"

फ़ाव मेयियर को अब गुस्सा आ रहा था।

"हाँ, वह ठीक है—वह, जो वहाँ है!" चिढ़ कर उसने कहा।

डेरी वाली बराबर इशारे किये जा रही थी। लेकिन उसकी ग्राहिका अब बिलकुल ध्यान नहीं दे रही थी।

"बड़े लम्बे अरसे से वह यहाँ नहीं आया—और वह जल्दी आना चाहता था," फ़ाव जैंडर ने बतलाया। गुप्त रूप से वह अपने-आप में मुस्कराई।

"कौन?" दूसरी स्त्री ने शुबहे के भाव से पूछा।

"क्यों, फ्रांज, मेरा बेटा?" वृद्धा ने शान्त स्वर में कहा, जैसे वह अपने-आप से बात कर रही हो।

फ़ाव मेयियर तब वृद्धा के बिलकुल पास आ गयी, और उसने सीधे उसकी आँखों में देखा। उसने डेरी वाली के काउंटर पर चाकू की मूठ से ठक-ठक करने पर कोई ध्यान नहीं दिया।

"तुम्हारा फ्रांज?" उसने तेजी से कहा। "अब वह आ नहीं सकता। छः हफ्ते हुए हमने उसे दफ़न कर दिया!"

दूकान में गहरी खामोशी छा गयी। डेरी वाली मुँह बाये, कंधे झुकाये खड़ी थी; चाकू उसके हाथ से छूट गया था। फ़ाव जैंडर के हृदय-क्षेत्र में ऐंठन-भरी हरकत हुई, और उसकी उँगलियाँ ब्लाउज नोचने लगीं। इस तरह वह कई लम्बे क्षणों तक बैठी रही। अकड़ी और घूरती हुई। (इन क्षणों में उसने वह बातें समझ ली होंगी, जो पिछले कुछ हफ्तों में हुई थीं; पड़ोसियों का सदा सहायता के लिए तत्पर रहना, अन्य किरायेदारों के करुणा-भरे चेहरे, केथी के उत्तेजित ढंग, उसके इतनी पीली और उदास रहने का कारण।)

यकायक वृद्धा अपनी कुरसी से उछल कर खड़ी हो गयी। उसका चेहरा विकृत हो गया; वह गला फाड़ कर चीख उठी। दूसरी ग्राहिका मदद लाने के लिए भागी। फ़ाव जैंडर उस समय भी चीख रही थी

जब लोग उसे उठा कर बाहर ले गये—सहन में, सीढ़ियों पर। और फिर सारा घर खामोश हो गया।

परेशान चेहरे लिये, होंठों को दबाये, लोग अपने दरवाजों और खिड़कियों पर खड़े थे।...

मैं विज्ञापन स्तम्भ के सामने खड़ा हूँ। अन्य विज्ञापन स्तम्भों जैसा यह भी है। ऊपरी आधे भाग पर एक लम्बा पोस्टर चिपका है। एक स्त्री दिखाई गई है, जिसका शरीर एक सिग्रेट का बना है। उसके नीचे बडे-बड़े अक्षरों में "बर्लिनेरिन" और "बड़ी गोल जूनो" लिखा है। और उसके निकट सिनेमा के भड़कीले पोस्टर "प्रेम और चुम्बन," "वेरोनिका," "एनमेरी," "कम्पनी की दुलहन"।

मैं वह सब बार-बार पढ़ता हूँ। मैं बीच में लगे पीले पोस्टर को पढ़ता नहीं रह सकता। मैं यह नहीं कर सकता।

आम सूचना

क़ानूनी प्रेस सर्विस घोषित करती है, कि बर्लिन के रिचर्ड हूटिंग को, जिसका जन्म बाटेनडॉर्फ़ में १८ मार्च, १९०८, को हुआ था, बर्लिन ट्राइब्यूनल की विशेष अदालत के १६ फ़रवरी, १९३४ के फ़ैसले द्वारा मृत्यु दंड दिया गया। मृत्यु दंड आज प्रातःकाल प्लाटजेंसी जेल के सहन में कार्यान्वित कर दिया गया।

बर्लिन, १४ जून, १९३४।

मुझे पता नहीं, कि मैं कितनी देर से इस नोटिस के सामने खड़ा हूँ, लेकिन अब मैं यहाँ और अधिक खड़ा नहीं रह सकता।

बायाँ पैर, दायाँ पैर, बायाँ पैर, दायाँ पैर, ये हरकतें मेरी इच्छा-शक्ति से असंपृक्त रही हैं। लोग मेरे पास से तेज़ी से गुजर रहे हैं; ट्रैफ़िक की आवाजें बहुत दूर से आती प्रतीत हो रही हैं।

धीरे-धीरे मैं अपनी गली में वापस आता हूँ। मार्च १९०८ में जन्म हुआ—प्लाटज़ेनसी में आज सबेरे मृत्यु दंड दे दिया गया—उम्र छब्बीस वर्ष। सूरज तेज़ी से चमक रहा है। उसकी किरणें चमकती-दमकती खिड़कियों पर प्रतिबिम्बित हो रही हैं। कारों की लम्बी कतारें पास से गुज़र रही हैं; ट्रैफ़िक पुलिसवाला अपनी बाँहें हिला रहा है; पैदल चलने वाले तेज़ी से आ-जा रहे हैं। सब-कुछ सामान्य है।

मैं शहर गया था। वह पोस्टर वहाँ कहीं चिपकाया नहीं गया है। केवल यहाँ चार्लोटेनबर्ग में, हमारे बीच। हमें धमकाने और आतंकित करने के विचार से। तीसरे पहर मैं फिर अपनी गली में जाता हूँ। वे हमारे साथ यहाँ टहलते थे; हम अकसर यहाँ खड़े होते थे। मैं बर्लिनर स्ट्रैसी के नुक्कड़ पर खड़ा होता हूँ, और गली के नीले तथा सफ़ेद नाम को देखता हूँ।

माइकोवस्कीस्ट्रैसी

इस गली का एक दिन नाम पड़ेगा :

रिचर्ड-हूटिंग-स्ट्रैसी

यद्यपि वह हमारी गली में नहीं रहता था, लेकिन वह हमारे साथ यहाँ संघर्ष में शरीक रहता था।

मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ता हूँ।

उसकी मोटी भौंकती-सी आवाज़, सुन्दर बिखरे बाल, घनी भौंहें। उन्होंने पादरी को हूटिंग की जेल की कोठरी में पिछली रात को भेजा था। उसने पादरी से मिलने से इनकार कर दिया था। उसने गोरिंग के पास अर्ज़ी भेजने से भी इनकार कर दिया था। मैं विज्ञापन स्तम्भ के पास वापस जाता हूँ। जेब से एक कागज़ का टुकड़ा निकालता हूँ, और

तेजी से उसे गीला करता हूँ। उसे मैं 'आम सूचना' पर तिरछा चिपका देता हूँ। बच्चों के छपाई के खिलौने से उस पर अंकित है—

मरने वाले भी हमसे बात कर सकते हैं !

हमारा संघर्ष जारी है !

हम बदला लेंगे !

अगले दिन। एडी हमारे पास खबर लाता है। रिचर्ड हूटिंग की अन्तिम इच्छा यह थी, कि उसका ताबूत उसकी गली के अन्दर से ले जाया जाय।

भूरी क़मीज़ वाले उसकी यह इच्छा पूरी करना चाहते हैं। क्यों न पूरी करें ? कितनी ही जनाज़ेवाली कारें बर्लिन की व्यस्त गलियों के अन्दर से नित्य गुज़रती हैं।

हमने यह खबर सुन ली है !

हमारी ओर से तलबी की बात एक मुँह से दूसरे मुँह में होती हुई गली के तमाम कामरेडों के पास पहुँच गई है। वहाँ उपस्थित रहो !

नियत समय पास आता है। दो-दो, तीन-तीन करके हम उस छोटी-सी श्रमिक वर्ग वाली गली में जाते हैं, जहाँ रिचर्ड हूटिंग रहता था। वह पंद्रह मिनट की दूरी पर स्थित है।

एडी और एमिल शिमड्ट मेरे आगे-आगे चल रहे हैं। हमारी टोली के अन्य कामरेड काम पर गये हैं। उन्हें इस बारे में कुछ मालूम नहीं है। हींज प्रेउस के साथ, जो अभी हाल ही में यातना शिविर से छूट कर आया है, मुझे इस बात के लिए उसे राज़ी करने के निमित्त बहस करनी पड़ी, कि वह वहाँ उपस्थित न रहे। हम खामोशी से चल रहे हैं। तमाम चेहरों पर घृणा और शोक अंकित है। हम सब अनुभव कर रहे हैं, कि रिचर्ड हूटिंग आज हमसे विदा ले रहा है। जैसे वह अपने भवन रक्षा दलों को और हमें अन्तिम आदेश दे रहा हो : "अन्तिम संघर्ष के लिए क़तार बाँध कर खड़े हो जाओ !"

हम सब जानते हैं, कि हर क़दम हमें लुकी-छिपी भूरी पुलिस के और निकट ला सकता है। लेकिन हम उसका सामना करने को तैयार हैं, जैसे वह जीवन भर तैयार रहा था।

पुलिस के दल उस तंग गली में इधर-से-उधर टहल रहे हैं। एस० ए० की छोटी-छोटी टोलियाँ नुक्कड़ों पर खड़ी हैं। इन्हें इस बात का शुबहा नहीं था, कि हमें इस शव-यात्रा कि खबर मिल जायेगी। वर्दी-पोश अपने चेहरों के तनाव-भरे भावों के साथ खिड़कियों की ओर देखते हैं। खिड़कियाँ बन्द हैं। लेकिन लोग मकानों के बाहर खड़े हैं। स्त्रियाँ सौदे के थैले लिये हुए हैं; कुछ अपने बच्चों के हाथ पकड़े हुए हैं। मर्द उनके पास स्थिर खड़े हैं। उनके हाथ पतलूनों की जेबों में ठुँसे हैं। गली तंग और छोटी है। हम यहाँ पहले आने वाले नहीं हैं। 'पैदल चलने वाले' छिट-पुट गोलों में इधर से उधर आ-जा रहे हैं। और भी लोग बगल की गलियों से आते जा रहे हैं। एडी और एमिल श्मिड्ट अब गली के बीच से दूसरी ओर जाते हैं। मैंने उनसे कहा था, कि यदि हममे से कोई यहाँ गिरफ्तार किया जाय, तो वे क्या करें। लोग एक-दूसरे से अलग हो कर पटरियों पर टहल रहे हैं। उनकी टोपियाँ उनके चेहरों पर झुकी हुई हैं, और उनके हाथ फटे-पुराने कपड़ों में छिपे हुए हैं। 'पैदल चलने वाले!' सैकड़ों! हम अदृश्यता से एक-दूसरे की ओर सिर हिलाते है, और मौन दृष्टि-विनिमय करते हैं। अनेक कामरेड, जिनसे मेरा सम्पर्क टूट गया था, यहाँ उपस्थित हैं। मैं उन्हें तभी से जानता हूँ, जब हम गैर 'क़ानूनी' नहीं थे। ऑटो, ऐलबर्ट, विली, वे सभी अभी भी यहाँ हैं, अभी भी यहाँ हैं!

सैकड़ों व्यक्ति इधर-से-उधर टहल रहे हैं—फिर भी गली में गहरी खामोशी है। दो लड़के पक्की सड़क पर एक गड़ारी लुढ़का रहे हैं। वे अपनी तेज़ बचकाना आवाज़ों में एक-दूसरे को पुकारते हैं। एक आब-

कारी का आदमी वियर के पीपे पटरी पर बिछे पुआल के बोरों पर फेंकता है। इससे होने वाली आवाज हर बार गूँजती है।

चौड़े कंधों वाले वे दो आदमी ? गेस्टापो के एजेंट ! हल्की हैटें, बढ़िया ग्रीष्म सूट; यहाँ हर व्यक्ति उन्हें एक नज़र में पहचान लेता है। उनमें से छोटी उम्र वाला छोटी-सी दाढ़ी रखे हुए है। दूसरा सफ़ाचट है। फूला हुआ चेहरा, बैल जैसी गर्दन—पक्के ठग का चेहरा। वे भी इधर-से-उधर टहल रहे हैं। चलते-चलते वे तीखी दृष्टि से चेहरों को देखते हैं। दाहिनी ओर मोची है ! उसकी दूकान का दरवाज़ा पूरा खुला है। उसने अपना सामान रोशनी के और निकट खिसका लिया है। एक बुरी तरह मरम्मत-तलब बूट को वह बड़ी मेहनत से रगड़ रहा है। मेवाफ़-रोश ! यकायक उसे पता चलता है, कि उसकी फलों की टोकरियों तथा प्रदर्शन खिड़कियों में कुछ फेर-बदल की ज़रूरत है। गली में अनवरत चहल-पहल जारी है। इस सब के बावजूद मुझे लगता है, कि समय स्थिर हो कर रह गया है जैसे हम सब साँस रोके हुए हैं। मेरे स्नायु उत्तेजित हो उठे हैं। मिनट घंटों की तरह गुज़र रहे हैं। अब ! बायीं ओर, गली के अन्त में वर्दियाँ प्रकट होती हैं। नीली पुलिस वर्दियाँ, और उनमें कुछ भूरी भी। ताबूत की गाड़ी। दो एस० ए० वाले घोड़ों की लगामें पकड़े हुए हैं। पटरियों की भीड़ें जैसे जड़ पत्थर हो जाती हैं। तमाम सिर सड़क की ओर घूम गये हैं। नाले में भी लोग ठसाठस खड़े हैं। लोग दरवाजों से निकल कर भीड़ में मिलते जा रहे हैं। यकायक ऊपर की खिड़कियाँ फटाफट खुल जाती हैं, जैसे किसी खतरे की घंटी ने किरायेदारों को चेतावनी दी हो।

सामने बायीं ओर लोग सिर से अपनी टोपियाँ उठा रहे हैं। क़तारों में हरकत लहराती जा रही है। ख़ामोशी। श्वासहीन खमोशी। घोड़ों के खुर चटचटा रहे हैं। ताबूत गाड़ी—वर्दियाँ धीरे-धीरे बढ़ती आ रही हैं। मेरे पीछे एक स्त्री जोर से सिसक पड़ती है। अब ताबूत गाड़ी हमारे

बराबर पर आ गई है। मेरी आँखें चौड़ी हो जाती हैं। मेरे गले में कुछ अटक जाता है। और तब लाल फूलों का एक गुच्छा हवा में उड़ता है, ताबूत गाड़ी से टकराता है, और पक्की सड़क पर गिर जाता है। मैं झटके से सिर घुमाता हूँ। हमारे ऊपर की खिड़कियों से—एक और गुच्छा आ रहा है!

"कामरेड हूटिंग, तुम हमारे लिए मरे हो! हम तुम्हारा बदला लेंगे।" एक अन्य खिड़की से एक स्त्री तीखे स्वर में चीख पड़ती है। यकायक हम सब अलग-अलग व्यक्ति नहीं रह जाते। एक क्षण में हम सब एक शरीर, एक मुख हो जाते हैं। सैकड़ों आवाज़ें एक आवाज़ बन कर चीख पड़ती हैं:

"बदला! बदला! लाल मोर्चा!"

एस० ए० वाले घोड़ों की लगामें खींचते हैं। ताबूत गाड़ी झटके से रुक जाती है, और सड़क के बीच में अकेली छोड़ दी जाती है। वर्दियाँ पटरियों की ओर झपटती हैं। वे भीड़ पर कोड़े बरसाने लगते हैं, लोगों को ठोकर मार कर जमीन पर गिरा देते हैं।

● ● ●